



जीव के चार भेद-१ नारकी, २ तिर्यञ्च, ३ मनुष्य, ४ देव, अथवा १ चक्षु दर्शनी, २ अचक्षु दर्शनी, ३ अवाधि दर्शनी, ४ केवल दर्शनी ।

जीव के पांच भेद-१ एकेन्द्रिय, २ द्वेन्द्रिय, ३ त्रेन्द्रिय, ४ चारिन्द्रिय, ५ पंचेन्द्रिय, अथवा १ संयोगी, २ मन योगी, ३ वचन योगी, ४ काय योगी, ५ अयोगी ।

जीव के छः भेद-१ पृथ्वी काय, २ अपकाय, ३ तेजस्काम, ४ वायु काय, ५ वनस्पति काय, ६ त्रस काय, अथवा १ सकपायी, २ क्रोध कपायी, ३ मान कपायी, ४ माया कपायी, ५ लोभ कपायी, ६ अकपायी ।

जीव के सात भेद-१ नारकी, २ तिर्यञ्च, ३ तिर्यञ्चायी, ४ मनुष्य, ५ मनुष्यायी, ६ देव, ७ देवांगना ।

जीव के आठ भेद-१ मलेशयी, २ कृप्य लेशयी, ३ नील लेशयी, ४ कापोत लेशयी, ५ तेजो लेशयी, ६ पद्म लेशयी, ७ शुक्र लेशयी, ८ अलेशयी ।

जीव के नव भेद-१ पृथ्वी काय, २ अप काय, ३ तेजस्काम, ४ वायु काय, ५ वनस्पति काय, ६ द्वेन्द्रिय, ७ त्रेन्द्रिय, ८ चारिन्द्रिय, ९ पञ्चेन्द्रिय ।

जीव के दस भेद-१ एकेन्द्रिय, २ द्वेन्द्रिय, ३ त्रेन्द्रिय, ४ चारिन्द्रिय, ५ पञ्चेन्द्रिय, ६ अयोगी, ७ मन योगी, ८ वचन योगी, ९ काय योगी, १० अयोगी ।

जीव के दस भेद-१ एकेन्द्रिय, २ द्वेन्द्रिय, ३ त्रेन्द्रिय, ४ चारिन्द्रिय, ५ पञ्चेन्द्रिय, ६ अयोगी, ७ मन योगी, ८ वचन योगी, ९ काय योगी, १० अयोगी ।



३ मनुष्य के तीन तो तीन, और ४ देवता के एकसौ अठायु ।

नारकों के भेदः—१ घम्ना, २ वंता ३ सीला, ४ अंजना ५ रिष्टा, ६ नषा, और ७ मायवती, इन सातों नरकों में रहने वाले ( नेरियों ) जीवों के अपर्याप्ता व पर्याप्ता एवं १४ भेद ।

तिर्यञ्च के ४८ भेदः— १ पृथ्वी काय, २ अपकाय, ३ तेजस्काय, ४ वायु काय, ये चार सूक्ष्म और चार बादर ( स्थूल ) एवं ८ इन आठ के अपर्याप्ता और पर्याप्ता एवं १६ ।

वनस्पति के छः भेदः—१ सूक्ष्म, २ प्रत्येक, और ३ सामारण इन तीन के अपर्याप्ता व पर्याप्ता ये ६ मिल कर २२ भेद, १ वैशन्द्रिय, २ त्रीन्द्रिय ३ चारिन्द्रिय इन ३ का अपर्याप्ता और पर्याप्ता ये छः मिलकर २८ ।

तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय के २० भेदः—१ जलचर, २ स्थलचर, ३ उचर, ४ मुचर, ५ क्षेत्र । ये पाँच गर्भज और पाँच संमूर्द्धिम एवं १० इन १० के अपर्याप्ता और पर्याप्ता ये २० मिल कर तिर्यञ्च के कुल १६+६+६+०=३८ भेद हवे

मनुष्य के ३:३ भेदः—१२ जन्मभूमि के मनुष्य, ३ जन्मभूमि के जन्म २० अंश व ३ कण १-१ अंश के मनुष्य मनुष्य के अन्धन व ६+३+३=१२





रुपी अजीव के ५३० भेद-५ वर्ण, २ गन्ध, ५ रस, ५ संस्थान, ८ स्पर्श, इन २५ में में त्रिममें त्रिनमें घोल पाये जाते हैं वे सब भिन्ना कर कुल ५३० भेद होते हैं ।

विस्तार ५ वर्ण-१ काला, २ नीला, ३ लाल, ४ पीला, ५ सफेद, इन पांचों वर्णों में २ गन्ध, ५ रस, ५ संस्थान, और ८ स्पर्श, ये २० घोल पाये जाते हैं इस प्रकार  $५ \times २० = १००$  घोल वर्णाश्रित हुए ।

२ गन्ध-१ सुरभि गंध २ दुरभि गंध इन दोनों में ५ वर्ण, ५ रस, ५ संस्थान और ८ स्पर्श ये २३ घोल पाये जाते हैं इस प्रकार  $२ \times २३ = ४६$  घोल गंध आश्रित हुए ।

५ रस-१ मिष्ट, २ कटुक, ३ तीक्ष्ण, ४ गट्टा, ५ कषायित इन ५ रसों में ५ वर्ण, २ गंध, ८ स्पर्श, और ५ संस्थान ये २० घोल पाये जाते हैं इस तरह  $५ \times २० = १००$  घोल रसाश्रित हुए ।

५ संस्थान-१ परिमंडल संस्थान-गुड़ी के आकार घट, २ वर्तुल संस्थान-लहूँ समान, ३ शंश संस्थान-सिपाही समान, ४ चतुस्र संस्थान-चौकी समान, ५ आयत संस्थान-लम्बी लक्ष्मी समान, इन संस्थानों में ५ वर्ण, २ गंध, ५ रस, ८ स्पर्श ये २० घोल पाये जाते हैं इस तरह  $५ \times २० = १००$  घोल संस्थान आश्रित हुए ।

८ स्पर्श-१ कर्कश, (कठोर) २ कोमल, ३ गुरु, ४ शून्य, ५ उष्ण, ६ श्लेष्म, ७ रुच, ८ एक

स्पर्शों में ५ घण्टे, २ गन्ध, ५ रस, ६ स्पर्श और ५ संस्नान इस प्रकार २३-२३ बोल पाये जाते हैं । अर्थात् आठ स्पर्शों में से दो स्पर्श कम कहना कर्कश का पृच्छा होवे तो कर्कश और धोमल, ये दो छोड़ना । इसी प्रकार लघु का पृच्छा होवे तो लघु व गुरु छोड़ना, शीत का पृच्छा होवे तो शीत व उष्ण छोड़ना, स्निग्ध का पृच्छा होवे तो स्निग्ध व रुक्ष छोड़ना, ऐसे हरेक स्पर्श का समझ लेना । एक-एक स्पर्श के २३-२३ के हिसाब से  $२३ \times २ = १ = ४$  बोल स्पर्श आश्रित हुये ।

१०० वर्ण के, ४६ गन्ध के १०० रसकें, १०० संस्नान के और १=४ स्पर्श के इस प्रकार सब मिलाकर ५३० भेद रही अजीव के हुये । इनमें अरुची अजीव के ३० भेद मिलाने से कुल ५६० भेद अजीव के जानना । इस प्रकार अजीव के स्वरूप को समझ कर इन पर से जो मोह उतारेगा वो इस भव में व पर भव में निरबाध परम सुख पावेगा ।

॥ इति अजीव तत्त्व ॥



( ३ ) पुण्य तत्त्व के लक्षण तथा भेद.

पुण्य तत्त्व—जो शुभ कर्णी के व शुभ कर्म के उदय में शून्य उज्वल पुट्टल का बन्ध पड़े व जिनके फल भोगने समय आत्मा को मंटे लगे उस पुण्य तत्त्व कहते हैं ।





इस नव में व पर भव में निराबाध सुखों की प्राप्ति होवेगी ।

॥ इति पुन्य तन्त्र ॥



( ४ ) पाप तन्त्र के लक्षण तथा भेद.

पाप तन्त्रः—जो अशुभ कार्यों से, अशुभ कर्म के लक्ष्य से, अशुभ, भेला पुद्गल का बंध पड़े व जिनके फल भोगते समय आत्मा को कड़वे लगे उसे पाप तन्त्र कहते हैं ।

पाप के १२ भेदः—१ प्राणातिशय २ मृदावाद ३ अदवादान ४ मैथुन ५ परिग्रह ६ क्रोध ७ मान ८ माया ९ लोभ १० राग ११ द्वेष १२ व्रजेष्ट १३ अन्या-  
ख्यान १४ वैशुन्य १५ परस्परिवाद १६ राति अराति १७ नाया मृदा १८ मिथ्या दर्शन शून्य इन १२ भेद प्रकार से जीव पाप उपार्जन करता है वह २२ प्रकार से भोगता है ।

२२ प्रकार से भोगे जाने हैं—१ मति ज्ञानावर-  
ण २ ध्रुव ज्ञानावरण ३ अवाधि ज्ञानावरण ४ मनः  
पर्यव ज्ञानावरण ५ केवल ज्ञानावरण ६ निद्रा ७ निद्रा-  
निद्रा ८ प्रचला ९ प्रचला प्रचला १० धियादि निद्रा  
११ बहु दर्शनावरण १२ अचतु दर्शनावरण १३  
अवाधि दर्शनावरण १४ केवल दर्शनावरण १५  
अरात वेदनी १६ विनायक वेदनी १७ अवेदनी

बंधी क्रोध १८ मान १९ माया २० लोभ २१ अत्या-  
 खानी काघ २२ अपत्याख्यानी मान २३ अत्या-  
 माया २४ अत्या० लोभ २५ पत्याख्यानी क्रोध २६  
 प्रत्या० मान २७ प्रत्या० माया २८ प्रत्या० लोभ २९  
 संज्वल का क्रोध ३० संज्वल का मान ३१ संज्वल का  
 माया ३२ संज्वल का लोभ ३३ दाम्य ३४ शनि ३५  
 अरति ३६ मय ३७ शोक ३८ दुर्गच्छा ३९ शो वेद ४०  
 पुरुष वेद ४१ नपुंसक वेद ४२ नरक आयुष्य ४३ नरक  
 गति ४४ विषय गति ४५ ऐक्येन्द्रिय पना ४६ पंद्रिप  
 पना ४७ त्रीन्द्रिय पना ४८ चौरिन्द्रिय पना ४९ अज्ञान  
 नाराच संपदन ५० नाराच संपदन ५१ अर्थ नाराच संप-  
 यन ५२ कीलिका संपदन ५३ सेवार्थ संपदन ५४ न्यधेय  
 परिमंडल संस्थान ५५ शादिक संस्थान ५६ वामन संस्थान  
 ५७ कुब्ज संस्थान ५८ हृण्डक संस्थान ५९ अशुभ वर्ष  
 ६० अशुभ गन्ध ६१ अशुभ रस ६२ अशुभ स्पर्श ६३  
 नरकानुपूर्वी ६४ निर्भयानुपूर्वी ६५ अशुभ गति ६६ उर-  
 घात नाम ६७ स्थावर नाम ६८ सूदन नाम ६९ अरपाति  
 पना ७० साधारण पना ७१ अभिर नाम ७२ अशुभ  
 नाम ७३ दुर्गम्य नाम ७४ दुःखर नाम ७५ अनोदय  
 नाम ७६ अयशो कीर्ति नाम ७७ नीच गोत्र ७८ दानान्त-  
 राय ७९ सामान्तराय ८० भोगान्तराय ८१ उपभोगान्त-  
 राय ८२ वीर्यान्तराय एवं ८२ प्रकार से पाप के फल भोग

जाते हैं । ये पाप जान कर जो पाप के कारण को छोड़ेंगे  
वे इस भव में तथा पर भव में निराशय परम सुख पावेंगे ।

॥ इति पाप तत्त्व ॥

( ५ ) आश्रव तत्त्व के लक्षण तथा भेद.

आश्रव तत्त्व-जीव रूपी तालाब के अन्दर अत्रत  
तथा अपत्याख्यान द्वारा, विषय कषाय का सेवन करने से  
इन्द्रियादिकु नालों के अन्दर से जो कर्म रूरी जल का प्रवाह  
आता है उसे आश्रव कहते हैं ।

यह आश्रव जघन्य २० प्रकार से और उत्कृष्ट ४२ प्रकार  
से होता है ।

जघन्य २० प्रकार-१ श्रोतेन्द्रिय असंवर २ चक्षु  
इन्द्रिय असंवर ६ घ्राणेन्द्रिय असंवर ४ रसेन्द्रिय असंवर  
५ स्पर्शेन्द्रिय असंवर ६ मन असंवर ७ वचन असंवर  
८ काय असंवर ९ वस्त्र वर्तनादि भण्डोपकरण अयत्ना से  
लेवे तथा रक्त्वे १० सुर्वा कुशाग्र मात्र भी अयत्ना से  
काम में लेवे ११ प्राणानिपात १२ मृपावाद १३ अदत्तादान  
१४ मैथुन १५ परिग्रह १६ मिथ्यात्व १७ अत्रत १८ प्रमाद  
१९ वपय २० अशुभ योग ।

विशेष गीति से आश्रव के ४२ भेद.

५ आश्रव, ५ इन्द्रिय विषय ४ कषाय ३ अशुभ योग.



५ उच्चार पासवण खेल जल मंषायण परिठावणिया समिति ।

तीन गुप्तिः-६ मन गुप्ति ७ वचन गुप्ति = काय गुप्ति ।

२२ परिपहः-६ चुवा परिपह १० वृवा परिपह ११ शीत १२ ताप १३ डंस-मत्तर १४ अन्त १५ अराति १६ स्त्री १७ चरिया १८ निमिडिया १९ शय्या २० आक्रोरी २१ वध २२ याचना २३ अज्ञाम २४ रोग २५ वृण स्पर्श २६ मैल २७ सत्कार पुरस्कार २८ प्रज्ञा २९ अज्ञान ३० दर्शन ( इन २२ परिपह का जय )

१० यति धर्मः-३१ शांति ३२ निर्लोभता ३३ सरलता ३४ क्रोमकृता ३५ अन्वोपधि ३६ सत्य ३७ संयम ३८ तप ३९ ज्ञान दान ४० नल्लवर्थ ( इन १० यति धर्म का पालन करना )

१२ भावनाः-४१ अनित्य भावनाः-संसार के सब पदार्थ धन, यौवन, शरीर, कुटुम्बादिक अनित्य, अस्थिर हैं व नाशवान हैं इस प्रकार विचार करना ।

४२ अशरण भावनाः-जीव को जर रोग पीड़ादिक उत्पन्न होवे तब कोई शरण देने वाला नहीं. लक्ष्मी, कुटुम्ब परिवार आदि कोई माथ में नहीं आता ऐसा विचार करना ।

४३ संसार भावनाः-जीव कने करके नभार में चंरती लाख जीव यो ने के अन्दर नव नवो समान अटके पित्त भर



अनेक लब्धिये भी प्राप्त होती है। ऐसा समझ कर तपस्या करने का विचार करे ।

५० लोक भावनाः—चौदह राज प्रमाणे जो लोक है उसका विचार करे ।

५१ बोध भावनाः—राज्य देव, पदवी, ऋद्धि कल्पद्रुमादि ये सर्व सुलभ हैं, अनंती वार मिले पर बोध बीज समवित का मिलना दुर्लभ है ऐसा सोचे ।

५२ धर्म भावनाः—सर्वज्ञ ने जो धर्म प्ररुपा है वह संसार स्रष्टा ने पार उतारने वाला है । पृथ्वी निरावलम्ब निराधार है । चन्द्रमा और सूर्य समय पर उदय होते हैं । मेष समय पर क्षुष्ट करते हैं । इस प्रकार जगत् में जो अच्छा होता है, वह सब सत्य धर्म के प्रभाव से, ऐसा विचार करे । पंच चारित्र ५३ सामायिक चारित्र ५४ छेदोपन्यासिक चारित्र ५५ परिहार विशुद्ध चारित्र ५६ सूक्ष्म संपराय चारित्र ५७ यथाख्यात चारित्र इस प्रकार ५७ भेद संवर के जान कर आचार्य करने से निरादाय ( पीड़ा रहित ) परम सुख की प्राप्ति हांगी ।

॥ इति संवर तत्त्व ॥





प्रकृति वात पितादि की घातक होती है। जैसे ही आठों कर्म जिस जिस गुण के घातक हो वो १ प्रकृति बन्ध । जैसे वह मोदक पच, मास, दो मास तक रह सक्ता है सो २ स्थिति बन्ध । जैसे वह मोदक बटुक तीक्ष्ण रस वाला होता है जैसे कर्म रस देते हैं सो ३ अनु भाग बन्ध । जैसे वह मोदक न्युनाधिक परिमाण वाला होता है जैसे कर्म पुद्गल के दल भी छोटे दहे होते हैं सो ४ प्रदेश बन्ध । इस प्रकार बन्ध का ज्ञान होने पर जो यह बन्ध तोड़ेगा वह निरापाध परम सुख पावेगा ।

॥ इति बन्ध तत्त्व ॥



### ६ मोक्ष तत्त्व के लक्षण तथा भेद

बन्ध तत्त्व का उलटा मोक्ष तत्त्व है अर्थात् सकल आत्मा के प्रदेश से सर्व कर्मों का छूटना, सर्व बन्धों से मुक्त होना, सकल कार्य की सिद्धि होना तथा मोक्ष गति को प्राप्त होना सो मोक्ष तत्त्व ।

मोक्ष प्राप्ति के चार साधनः-१ ज्ञान २ दर्शन ३ चाग्नि ४ तप ।

सिद्ध पन्ध्रह तरह के होते हैं:-१ तीर्थ सिद्धा २ अतीर्थ सिद्धा ३ तीर्थकर सिद्धा ४ अतीर्थकर सिद्धा ५ स्वयं बोध सिद्धा ६ प्रत्येक बोध सिद्धा ७ बुद्ध बंधि

सिद्धा = स्रो लिङ्ग सिद्धा ६ पुरुष लिङ्ग सिद्धा १० नपु-  
 संक लिङ्ग सिद्धा ११ स्वयं लिङ्ग सिद्धा १२ अन्य लिङ्ग  
 सिद्धा १३ गृहस्थ लिङ्ग सिद्धा १४ एक सिद्धा १५ अनेक  
 सिद्धा ।

### मोक्ष के नव द्वार

१ सद् २ द्रव्य ३ क्षेत्र ४ स्पर्शना ५ काल ६ भाग  
 ७ मात्र = अंतर ८ अन्य बहुत्व ।

१ सद् पद प्ररूपणाद्वारा-मोक्ष गति पूर्व समय में  
 थी, वर्तमान समय में है व आगामी काल में रहेगी उसका  
 स्थिति है, आकाश कुमुदवत् उमकी नास्ति नहीं ।

२ द्रव्य द्वार:-सिद्ध अनन्त हैं, अमव्य जीव  
 अनन्त गुण अधिक हैं एक वनस्पति काय के जीवों के  
 जोड़ कर दूसरे २२ दंडक के जीवों से सिद्ध अनन्त हैं ।

३ क्षेत्र द्वार:-सिद्ध शिला प्रमाण ( विस्तार में )  
 है यदि सिद्ध शिला ४५ लाख योजन लम्बी व पौली  
 मध्य में आठ योजन की जाही है । किनारों के पास  
 सिद्धा के पौल में भी पदली है । शुद्ध मोना के सम  
 गुण, पन्ड, रण्णा, रत्न, पौडी का पट, मोती का क  
 व र्धन म ग क जल में अधिक उज्वल है । उमकी परि  
 १ २०, ३० ४० योजन, १ मात्र १ उदक धनुष्य  
 पन ड ६०० न नों है सिद्ध क नदन का स्थान मि  
 २० ६ १० ४०० क टन गाड क अट्ट भाग में

( अर्थात् ३३३ धनुष्य ३२ अंगुल प्रमाणे क्षेत्र में सिद्ध भगवान रहते हैं )

४ स्पर्शना द्वारः—सिद्ध क्षेत्र से कुछ अधिक सिद्ध की स्पर्शना है ।

५ काल द्वारः—एक सिद्ध आश्री इनकी आदि है परन्तु अन्त नहीं, सर्व सिद्ध आश्री आदि भी नहीं व अन्त भी नहीं ।

६ भाग द्वारः—सर्व जीवों से सिद्ध के जीव अनन्त वे भाग हैं व सर्व लोक के असंख्यात्वे भाग हैं ।

७ भाव द्वारः—सिद्धों में घायिक भाव तो केवल ज्ञान, केवल दर्शन और घायिक समकित्व है और पारि-  
र्यामिक भाव—यह सिद्ध पना है ।

८ अन्तरभावः—सिद्धों को फिर लौटकर संसार में नहीं आना पड़ता है, जहां एक सिद्ध तहां अनन्त और जहां अनन्त वहां एक सिद्ध इसलिये सिद्धों में अन्तर नहीं ।

९ अल्प बहुत्व द्वारः—सब से कम नष्टक सिद्ध, उनसे स्त्री संख्यात मुदी सिद्ध और उनसे पुरुष संख्यात गुण । एक नमद में नष्टक १० सिद्ध होते हैं, स्त्री २० हैं । पुरुष १०० सिद्ध होते हैं ।

मांछ में ध्यान जानें हैं—१ अल्प सिद्धक २  
३ वदर ३ वन ४ संतो ५ पद श्री ६ वज्र अथवा नाराच संप-



( अर्थात् ३३३ धनुष्य ३२ अंगुल प्रमाणे क्षेत्र मं सिद्ध भगवान् रटते हैं )

४ स्पर्शना द्वारः—सिद्ध क्षेत्र से कुछ अधिक सिद्ध की स्पर्शना है ।

५ काल द्वारः—एक सिद्ध आश्री इनकी आदि है परन्तु अन्त नहीं, सर्व सिद्ध आश्री आदि भी नहीं व अन्त भी नहीं ।

६ भाग द्वारः—सर्व जीवों से सिद्ध के जीव अनन्त वे भाग हैं व सर्व लोक के असंख्यात्वे भाग हैं ।

७ भाव द्वारः—सिद्धों में छाधिक भाव तो केवल ज्ञान, केवल दर्शन और छाधिक समकित्व है और पारि-  
यामिक भाव—यह सिद्ध पना है ।

८ अन्तरभावः—सिद्धों को फिर लौटकर संसार में नहीं आना पड़ता है, जहां एक सिद्ध तहां अनन्त और जहां अनन्त वहां एक सिद्ध इसलिये सिद्धों में अन्तर नहीं ।

९ अल्प बहुत्व द्वारः—सब से कम नपुसंक सिद्ध, उससे स्त्री संख्यात गुणी सिद्ध और उससे पुरुष संख्यात गुणे । एक समय में नपुसंक १० सिद्ध होते हैं, स्त्री २० और पुरुष १० = सिद्ध होते हैं ।

मोक्ष में कौन जाते हैंः—१ भव्य सिद्धक २ वदर ३ वस ४ संज्ञी ५ पर्याप्ती ६ वज्र ऋषभ नाराच संघ-

विद्या = श्री तिङ्ग विद्या ६ द्रव्य तिङ्ग विद्या १० ननु  
 मङ्गल तिङ्ग विद्या ११ नयं तिङ्ग विद्या १२ अन्य ति  
 वेद्या १३ गृह्य तिङ्ग विद्या १४ षक विद्या १५ इने  
 वेद्या ।

**मोक्ष के नव द्वार**

१ सद् २ द्रव्य ३ चेत्र ४ अन्तर्ना ५ काल ६ म  
 ७ मात्र = अन्तर्ना के अन्तर्ना ।

१ सद् पद प्ररूपणाद्वारः-मोक्ष गति पूर्व मन  
 थी, वर्तमान समय में है व आगामी काल में रहेगी उ  
 अस्तित्व है, आकाश कुमुदवत उमर्का नामि नहीं ।

२ द्रव्य द्वारः-मिद अन्तर्ना है, अमध्य जीव  
 अन्तर्ना गुरु अधिक हैं एक वनरानि काय के जीवों  
 छोड़ कर दूसरे २३ दंतक के जीवों में मिद अन्तर्ना

३ चेत्र द्वारः-मिद शिला प्रनाथ ( विन्ता  
 है यह मिद शिला ४५ लाख योजन लम्बी व प  
 मध्य में अठ योजन चौड़ी है । किनागे के प  
 मदिद्या के पंथ में भी पतली है । गृह्य मोना के  
 शंभु, चन्द्र, इन्द्रा, मन्त्र, चौड़ी का १८, भागी व  
 व सं १ म रा के इन में अधिक उत्पन्न है । उनकी  
 १, ४०, ३०, २८३ योजन, १ गा. १ ३३३ घ  
 पने उ अन्तर्ना न रहेगी है मिद क नहेन का स्थ  
 शिला के उभय योजन के द्यन गा. क छुट्टे ना

( अर्थात् ३३३ धनुष्य ३२ अंगुल प्रमाणे क्षेत्र में सिद्ध भगवान रहते हैं )

४ स्पर्शना द्वारः—सिद्ध क्षेत्र से कुछ अधिक सिद्ध की स्पर्शना है ।

५ काल द्वारः—एक सिद्ध आश्री इनकी आदि है परन्तु अन्त नहीं, सर्व सिद्ध आश्री आदि भी नहीं व अन्त भी नहीं ।

६ भाग द्वारः—सर्व जीवों से सिद्ध के जीव अनन्त वे भाग हैं व सर्व लोक के असंख्यात्वे भाग हैं ।

७ भाव द्वारः—सिद्धों में चायिक भाव तो केवल ज्ञान, केवल दर्शन और चायिक समकित्व है और पारि-  
रामिक भाव—यह सिद्ध पना है ।

८ अन्तरभावः—सिद्धों को फिर लौटकर संसार में नहीं आना पड़ता है, जहां एक सिद्ध तहां अनन्त और जहां अनन्त वहां एक सिद्ध इसलिये सिद्धों में अन्तर नहीं ।

९ अल्प बहुत्व द्वारः—मन से कम नपुंसक सिद्ध, उनमे स्त्री संख्यात गुरी सिद्ध और उनसे पुरुष संख्यात गुण । एक मनस में नपुंसक १० सिद्ध होते हैं, स्त्री २० और पुरुष १० = सिद्ध होते हैं ।

मोक्ष में कौन जाने हैं—१ भव्य सिद्धक २ वादर ३ वन ४ मंजो ५ पर्यायी ६ वज्र अष्टम नाराच संघ-



सिद्धा = स्रो लिङ्ग सिद्धा ६ पुरुष लिङ्ग सिद्धा १० नपु-  
 मंके लिङ्ग सिद्धा ११ स्वयं लिङ्ग सिद्धा १२ अन्य लिङ्ग  
 सिद्धा १३ गृहस्य लिङ्ग सिद्धा १४ एक सिद्धा १५ अनेक  
 सिद्धा ।

**मोक्ष के नव द्वार**

१ सद् २ द्रव्य ३ क्षेत्र ४ स्पर्शना ५ काल ६ भाग  
 ७ मार ८ अंतर ९ अन्य बहुत्व ।

१ सद् पद प्ररूपणाद्वारा-मोक्ष गति पूर्व समय में  
 भी, वर्तमान समय में है व आगामी काल में रहेगी उसका  
 अस्तित्व है, आकाश कुमुदवत् उसकी नास्ति नहीं ।

२ द्रव्य द्वार:-सिद्ध अनन्त हैं, अमर्त्य जीव  
 अनन्त गुण अधिक हैं एक वनस्पति काय के जीवों के  
 श्राद्ध का दूगरे २२ दंडक के जीवों में सिद्ध अनन्त हैं ।

३ क्षेत्र द्वार:-सिद्ध शिला प्रमाण ( विस्तार में )  
 है यह सिद्ध शिला ४५ लाख योजन लम्बी व पौली  
 मध्य में आठ योजन की जाती है । किनारों के पान  
 क्षीणता के पौष में भी पतली है । गूढ मोना के समान  
 जंगल, पण्ड, बगुला, गन्, पौंदा का पट, मोती का ह  
 व र्धन व पन क जल व अर्धक उज्वल है । उसकी पारि

## पचीस क्रिया ।

१ काईया क्रियाः—के दो भेद १ अणुवरय काईया  
२ दुपउच काईया ।

१ अणुवरय काईया—जव तक यह शरीर पाप से  
निवर्ते नहीं, वहां तक उसकी क्रिया लगे ।

२ दुपउच काईया—दुष्ट प्रयोग में शरीर प्रवर्ते तो  
उसकी क्रिया लगे ।

२ आहिरणियाः—क्रिया के दो भेद १ संजोजना  
हिरणिया २ निव्वत्तणहिरणिया ।

१ खद्ग मुशल शस्त्रादिक प्रवर्तवे तो संजोजना  
हिरणिया क्रिया लगे ।

२ नये अद्विक्कण शस्त्रादिक संग्रह करे तो  
निव्वत्तणहिरणिया क्रिया लगे ।

३ पाउसिया क्रियाः—के दो भेद १ जीव पाउसिया  
२ अजीव पाउसिया ।

१ जीव पर ट्रेप करे तो जीव पाउसिया क्रिया लगे ।

२ अजीव पर ट्रेप करे तो अजीव पाउसिया क्रिया  
लगे ।

४ पारिणवसियाः क्रिया के दो भेद १ महव्य पारिणव-  
सिया २ पणव्य पारिणवसिया ।



## पञ्चीस क्रिया ।

१ काईया क्रियाः—के दो भेद १ अणुवरय काईया  
२ दुपउत्त काईया ।

१ अणुवरय काईया—जव तक यह शरीर पाप से  
निवर्ते नहीं, वहां तक उसकी क्रिया लगे ।

२ दुपउत्त काईया—दुष्ट प्रयोग में शरीर प्रवर्ते तो  
उसकी क्रिया लगे ।

२ आदिगरणियाः—क्रिया के दो भेद १ संजोजना  
दिगरणिया २ निव्वत्तणादिगरणिया ।

१ खड्ग सुशल शस्त्रादिक प्रवर्तवे तो संजोजना  
दिगरणिया क्रिया लगे ।

२ नये अद्विक्काण शस्त्रादिक संग्रह करे तो  
निव्वत्तणादिगरणिया क्रिया लगे ।

३ पाउसिया क्रियाः—के दो भेद १ जीव पाउसिया  
२ अजीव पाउसिया ।

१ जीव पर टप करे तो जीव पाउसिया क्रिया लगे ।

२ अजीव पर टप करे तो अजीव पाउसिया क्रिया  
लगे ।

४ पानिनावाणियाः क्रिया के दो भेद १ महज पानिनावाणिया  
२ पानिनावाणिया क्रिया लगे ।

१ मयं ( खुद ) अपने आपको तथा दूसरों को परिनापना उपजावे तो महत्त्व पारितावणिया क्रिया लगे।

२ दूसरों के द्वारा अपने आपको तथा अन्य किसी को परिनापना उपजावे तो परहत्त्व पारितावणिया क्रिया लगे।

५ पाण्डुर्याइया क्रिया:-के दो भेद १ सहत्त्व पाण्डुर्याइया २ परहत्त्व पाण्डुर्याइया

१ अपने हाथों से अपने तथा अन्य दूसरों के प्राण हरन कर तो महत्त्व पाण्डुर्याइया क्रिया लगे।

२ किसी अन्य द्वारा अपने तथा दूसरों के प्राण हरन हो तो परहत्त्व पाण्डुर्याइया क्रिया लगे।

६ अन्नप्राण क्रिया:-के दो भेद १ जीव अन्नप्राण क्रिया २ अजीव अन्नप्राण क्रिया

१ जीव का अन्य मयान नहीं करे तो जीव अन्नप्राण क्रिया लगे।

२ अजीव ( निर्गदिक ) का मयान नहीं करे तो अजीव अन्नप्राण क्रिया लगे।

७ अन्नप्राण क्रिया के दो भेद १ जीव अन्नप्राण

२ अजीव का आरम्भ करे तो अजीव आरंभिया क्रिया लगे ।

८ पारिग्गहिया क्रिया-के दो भेद-१ जीव पारिग्गहिया २ अजीव पारिग्गहिया ।

१ जीव का परिग्रह रखे तो जीव पारिग्गहिया क्रिया लगे ।

२ अजीव का परिग्रह रखे तो अजीव पारिग्गहिया क्रिया लगे ।

९ मायावत्तिया क्रिया-के दो भेद १ आयभाव वंक्षया २ परभाव वंक्षया ।

१ स्वयं अभ्यन्तर वांक्षां ( कुटिल ) आचरण आचरे तो आयभाव वंक्षया क्रिया लगे ।

२ दूसरों को ठगने के लिये वांक्षां ( कुटिल ) आचरण आचरे तो पर भाव वंक्षया क्रिया लगे ।

१० मिच्छादंसण वत्तिया क्रिया-के दो भेद १ उणाइरित मिच्छादंसण वत्तियार तवाइरित मिच्छा दंसण वत्तिया ।

१ कम जादा अट्टान कर तथा प्ररूपे तो उणाइरित मिच्छा दंसण वत्तिया क्रिया लगे ।

२ विपरीत अट्टान कर तथा प्ररूपे तो तवाइरित मिच्छादंसण वत्तिया क्रिया लगे ।

११ दिष्टिया क्रिया—के दो भेद १ जीव दिष्टिया २ अजीव दिष्टिया ।

१ अथ गजादिक-को देखने के लिये जाने से जीव दिष्टिया क्रिया लगे ।

२ चित्रामणादि-को देखने के लिये जाने से अजीव दिष्टिया क्रिया लगे ।

१२ पुष्टिया क्रिया—के दो भेद १ जीव पुष्टिया २ अजीव पुष्टिया ।

१ जीव का स्पर्श करे तो जीव पुष्टिया क्रिया लगे ।

२ अजीव ने स्पर्श तो अजीव पुष्टिया क्रिया लगे ।

१३ पाशुचर्या क्रिया—के दो भेद १ जीव पाशुचर्या २ अजीव पाशुचर्या ।

१ जीव का घृणान्तिव तथा उस पर ईर्ष्या करे तो जीव पाशुचर्या क्रिया लगे ।

२ अजीव का घृणान्तिव तथा उस पर ईर्ष्या करे तो अजीव पाशुचर्या क्रिया लगे ।

१४ सामन्तो वणिवाइया क्रिया—के दो भेद १ जीव सामन्तो वणिवाइया २ अजीव सामन्तो वणिवाइया ।

१ जीव का समुदाय रक्ते तो जीव सामन्तो वणिवाइया क्रिया लगे ।

२ अजीव का समुदाय रक्ते तो अजीव सामन्तो वणिवाइया क्रिया लगे ।

१५ साहाय्यिया-के दो भेद १ जीव साहाय्यिया २ अजीव साहाय्यिया ।

१ जीव का अपने हाथों के द्वारा हनन करे तो जीव साहाय्यिया क्रिया लगे ।

२ खड्गादि के द्वारा जीव को मारे तो अजीव साहाय्यिया क्रिया लगे ।

१६ नेसाध्यिया क्रिया-के दो भेद १ जीव नेसाध्यिया २ अजीव नेसाध्यिया ।

१ जीव को डाल देवे तो जीव नेसाध्यिया क्रिया लगे ।

२ अजीव को डाल देवे तो अजीव नेसाध्यिया क्रिया लगे ।

१७ आणवणिया क्रिया-के दो भेद १ जीव आणव-  
णिया २ अजीव आणवणिया ।

१ जीव को मंगावे तो जीव आणवणिया क्रिया लगे ।

२ अजीव को मंगावे तो अजीव आणवणिया क्रिया लगे ।

१८ वेदारणिया क्रिया-के दो भेद १ जीव वेदारणिया २ अजीव वेदारणिया ।

१ जीव को वेदारे तो जीव वेदारणिया क्रिया लगे ।

२ अजीव को वेदारे तो अजीव वेदारणिया क्रिया लगे ।

१९ अणभोग वस्तिया क्रिया-के दो भेद १ अणउत आयणता २ अणउच



१ असावधानता से बह्यादिक का ग्रहण करने से असावधानता क्रिया लगे ।

२ उपयोग बिना पात्रादि को पूजने से असावधानता क्रिया लगे ।

२० अणवकंठ्य वक्तिया क्रिया-के दो भेद १ आद-शरीर अणवकंठ्य वक्तिया २ परशरीर अणवकंठ्य वक्तिया ।

१ अपने शरीर के द्वारा पाप करने से आदशरीर अणवकंठ्य वक्तिया क्रिया लगे ।

२ अन्य के शरीर द्वारा पाप कर्म करने से परशरीर अणवकंठ्य वक्तिया क्रिया लगे ।

२१ ऐन्द्र वक्तिया क्रिया-के दो भेद १ माया वक्तिया २ लोभ वक्तिया ।

१ माया में ( करुण पूर्वक ) राग धारण करे तो माया वक्तिया क्रिया लगे ।

२ लोभ में राग धारण करे तो लोभ वक्तिया क्रिया लगे ।

२२ द्वास वक्तिया क्रिया-के दो भेद १ कोदे २ मागे ।

१ कोदे क्रिया लगे ।

२ मागे क्रिया लगे ।

२३ लोभ क्रिया के दो भेद १ लोभ २ मागे ।

१ लोभ क्रिया लगे ।



## छः काय के बोल

छ काय के नाम—१ इन्द्र ( इन्दी ) स्यावर, २ प्रद्य ( बंभी ) स्यावर, ३ शिष्य ( सप्पी ) स्यावर, ४ सुमति ( समिति ) स्यावर, ५ प्रजापति ( पयावच्च ) स्यावर, ६ जंगम स्यावर ।

छ काय के गोत्र—१ 'पृथ्वी काय, २ 'अपकाय, ३ 'विजम काय, ४ 'वायु काय, ५ 'धनस्पति काय, ६ 'ग्रम काय ।



### पृथ्वी काय

पृथ्वी काय के दो भेद—१ सूक्ष्म २ बाह्य (स्पृष्ट) ।

सूक्ष्म पृथ्वी कायः—मय लोक में मरे हुवे हैं जो इनने में इनाय नहीं, मारने में मरे नहीं, अग्नि में जले नहीं, जल में डूबे नहीं, आँसों में दीग्ये नहीं व जिसके दो टुकड़े होवे नहीं इसे सूक्ष्म पृथ्वी काय कहते हैं ।

बाह्य ( स्पृष्ट ) पृथ्वी कायः—लोक के देगु भाग में जो हुवे हैं जो इनने में इनाय, मारने में मरे, अग्निमें जले, जल में डूबे आँसों में दीग्ये व जिसके दो टुकड़े हो जावे

.....



६ इन्द्र नील रत्न १० चन्द्र नील रत्न ११ गेरुकी ( गरुड )  
 रत्न १२ हंस गर्भ रत्न १३ पोलाक रत्न १४ सीगन्धिक  
 रत्न १५ चन्द्र प्रभा रत्न १६ बैरुकी रत्न १७ जल कान्त  
 रत्न १८ सूर्य कान्त रत्न एवं सर्व ४७ प्रकार की पृथ्वी  
 काय ।

इसके सिवाय पृथ्वी काय के और भी बहुत से मंद  
 हैं । पृथ्वी काय के एक कंकर में असंख्यात जीव मगवंत  
 ने सिद्धान्त में फरमाया है । एक पर्याप्त की नेत्रा से  
 असंख्यात अपर्याप्त है । जो इन जीवों को दया पालेगा  
 वह इस भव में व पर भव में निराबाध परम सुख पावेगा ।

पृथ्वी काय का आयुष्य जघन्य अन्तर्मुहूर्त का  
 उत्कृष्ट नीचे लिखे अनुसारः—

कोमल मिट्टी का आयुष्य एक हजार वर्ष का ।  
 शुद्ध मिट्टी का आयुष्य बारह हजार वर्ष का ।  
 बालु रेत का आयुष्य चौदह हजार वर्ष का ।  
 मंन सिल का आयुष्य सोलह हजार वर्ष का ।  
 कंकरों का आयुष्य अठारह हजार वर्ष का ।  
 वज्र हीरा तथा धातु का आयुष्य शचीश हजार वर्ष का ।  
 पृथ्वी काय का संस्थान मसुर की दाल के समान है ।  
 पृथ्वी काय का " कुल " बारह लाख केगड़ जानना ।









वायु काय के १७ भेदः—१ पूर्व दिशा की वायु २ पश्चिम दिशा की वायु ३ उत्तर दिशा की वायु ४ दक्षिण दिशा की वायु ५ ऊर्ध्व दिशा की वायु ६ अधो दिशा की वायु ७ तिर्यक् दिशा की वायु ८ विदिशा की वायु ९ चक्र पद्मे सो भंवर वायु १० चारों कोनों में फिरे सो मंडल वायु ११ उर्द्ध चढ़े सो गुंडल वायु १२ वाजिन्य जैसे आवाज करे सो गुंज वायु १३ घृषों को उखाड़ डाले सो भंज ( प्रभंजन ) वायु १४ संवर्तक वायु १५ घन वायु १६ तनु वायु १७ शुद्ध वायु ।

इसके सिवाय वायु काय के अनेक भेद हैं । वायु के एक फटके में भगवान ने असंख्यात जीव परमाये हैं । एक पर्याप्त की नेथा में असंख्यात अपर्याप्त है । सुले सुंद घोलने से, चिमटी बजाने से, अहुलि आदि का कड़िका करने से, पंखा चलाने से, रोटिया कातने से, नली में फूकने से, मूष ( सुपदा ) भाटकने से, मूमल के खांडने से, घंटी बजाने से, डोल बजाने से, पीपी आदि बजाने से इत्यादि अनेक प्रकार से वायु के असंख्यात जीवों की यात होती है । ऐसा जान कर वायु काय के जीवों की दया पालन में जीव उन्मत्त नय में व पर मंड में निराशा



( ३८ )

५ मीलामां ६ आसापालव ७ आम ८ महुए ९ भयन  
१० जामन ११ वेर १२ निम्बोली (री) इत्यादि ।

बहु अही-१ जामफल २ सीताफल ३ अनार ४  
बील फल ५ कौठा ( कधीठ ) ६ कैर ७ निम्बू ८ टीमरु  
९ बद के फल १० पीपल के फल इत्यादि बहु अही के  
बहुत से भेद हैं ।

२ गुच्छ-नीचा व गोल वृक्ष हो उमे गुच्छ कहे हैं  
जैसे १ रिंगनी २ भोरिंगनी ३ जवामा ४ तुलसी ५ आव-  
ची बावची इत्यादि गुच्छ के अनेक भेद हैं ।

३ शुद्ध-फूलों के वृक्ष को शुद्ध कहते हैं । १ जाई  
२ जुई ३ डमरा ४ मरवा ५ केतकी ६ केवड़ा इत्यादि  
शुद्ध के अनेक भेद हैं ।

४ लता-१ नाग लता २ अशोक लता ३ चंपक  
लता ४ भोई लता ५ पद्म लता इत्यादि लता के अनेक  
भेद हैं ।













३ शीष ४ जलोक ५ कीड़े ६ पोरे ७ लट = अलसिये  
 ८ कुमी १० चरमी ११ फातर ( जलजन्तु ) १२ चुहेल १३  
 मेर १४ एल १५ वांतर ( बारा ) १६ लालि आदि वे-  
 इन्द्रिय के अनेक भेद हैं । वेइन्द्रिय का आयुष्य जघन्य अन्त-  
 र्मुहूर्त का, उत्कृष्ट धारह वर्ष का । इनका " कुल " सात लघु  
 करोड़ जानना ।

त्री-इन्द्रिय-जिसके १ काय २ मुख ३ नासिका ये  
 तीन इन्द्रिय होवे उसे त्री-इन्द्रिय कहते हैं । जैसे-१ जूँ २  
 लीख ३ खटमल ( मांकड़ ) ४ चांचड़ ५ कंधवे ६ घनेरे  
 ७ उदई ( दीमक ) = इल्ली ( भिमेल ) ८ भुंड १० वीड़ी  
 ११ मकोड़े १२ जीपोड़े १३ जुँघा १४ गर्घये १५ कान  
 खजुरे १६ सवा १७ ममोले आदि त्री-इन्द्रिय के अनेक  
 भेद हैं । इनका आयुष्य जघन्य अन्तर्मुहूर्त, उत्कृष्ट ४६ दिन  
 का । इनका " कुल " आठ लघु करोड़ जानना ।

चौरिन्द्रिय-जिसके १ काय २ मुख ३ नासिका ४  
 चक्षु ( आंख ) ये चार इन्द्रिय होवे उसे चौरिन्द्रिय कहते  
 हैं । जैसे-१ भँवरे २ भँवरी ३ बिच्छु ४ मक्खी ५ तीड़  
 ( टोढ़ ) ६ पतङ्ग ७ मच्छर = मसल ८ डांस १० मम  
 ११ तमरा १२ करोलिया १३ कंमारी १४ तीड़ गोडा १५  
 कुंदी १६ केवडे १७ बग १ = कपली आदि चौरिन्द्रिय के  
 अनेक भेद हैं । इनका आयुष्य जघन्य अन्तर्मुहूर्त, उत्कृष्ट  
 ४० लाख का । इनका " कुल " नव लघु करोड़ जानना ।



## नरक का विवेचन ।

१ पहली रत्न प्रभा नरकः-का विंड एक लाख अस्सी हजार योजन का है । जिनमें से एक हजार का दल नीचे व एक हजार का दल ऊपर छोड़ बीच में एक लाख ७८ हजार योजन का पोलार है । जिसमें १३ पाथड़ा व १२ आंतरा है इन में ३० लाख नरकावास है जिनमें असंख्यात नेरिये और उनके रहने के लिये असंख्यात कुम्भिये हैं । इस के नीचे चार पोल है । १ बीस हजार योजन का घनोदधि है । २ असंख्यात योजन का घनवाय है ३ असंख्यात योजन का तनुवाय है ४ असंख्यात योजन का आकाशास्तिकाय है ।

२ शर्करा प्रभा नरकः-का विंड एक लाख बीस हजार योजन का है । जिनमें से एक हजार योजन का दल नीचे व एक हजार योजन का दल ऊपर छोड़ कर बीच में एक लाख और तीस हजार का पोलार है इन में ११ पाथड़ा व १० आंतरा है जिनमें असंख्यात नेरियो के रहने के लिये २५ लाख नरकावास और असंख्यात कुम्भिये हैं । इस के नीचे चार पोल १ बीस हजार योजन का घनोदधि व २ असंख्यात योजन का घनवाय व ३ असंख्यात योजन का तनुवाय है व असंख्यात योजन का आकाशास्तिकाय है ।

३ चाल प्रभा नरक -का विंड एक लाख और २० हजार योजन का है । जिनमें से एक हजार योजन का

ल नीचे व एक हजार योजन का दल ऊपर छोड़ कर बीचमें एक लाख और २६ हजार योजन का पोलार है । इनमें ६ पाधड़ा = आंतरा है जिनमें असंख्यात नेरियों के रहने के लिये १५ लाख नरकावास व असंख्यात कुम्भिये हैं । इस के नीचे चार धोल—१ बीस हजार योजन का घनोदधि है २ असंख्यात योजन का घनवाय है ३ असंख्यात योजन का तनुवाय है ४ असंख्यात योजन का आकाशास्ति काय है ।

४ पंक प्रभा नरकः—का पिंड एक लाख और बीस हजार योजन का है । जिसमें से एक हजार योजन का दल नीचे व एक हजार योजन का दल ऊपर छोड़ कर बीचमें एक लाख और अठारह हजार योजन का पोलार है । जिनमें ७ पाधड़ा व ६ आंतरा है । इनमें असंख्यात नेरियों के रहने के लिये दश लाख नरकावास व असंख्यात कुम्भिये हैं । इस के नीचे चार धोल १ बीस हजार योजन का घनोदधि है, २ असंख्यात योजन का घनवाय है, ३ असंख्यात योजन का तनुवाय है, ४ असंख्यात योजन का आकाशास्ति काय है ।

५ वृद्ध प्रभा नरकः का पिंड एक लाख अठारह हजार योजन का है । जिसमें से एक हजार योजन का दल नीचे व एक हजार योजन का ऊपर छोड़ कर बीचमें एक लाख सोलह हजार का पोलार है जिनमें २ पाधड़ा व ७ आंतरा

हे । इनमें असंख्यात नेरियों के रहने के लिये तीन लाख नरकावास व असंख्यात कुम्भिये हैं । इसके नीचे चार पोल—१ बीस हजार योजन का घनोदधि है, २ असंख्यात योजन का घनवायु है, ३ असंख्यात योजन का तनुवायु है, ४ असंख्यात योजन का आकाशाश्रितकाय है ।

६ तमम् प्रभा नरकः—का पिंड एक लाख सोलह हजार योजन का है । जिनमें से एक हजार योजन का दल नीचे व एक हजार योजन का दल ऊपर छोड़ कर बीच में एक लाख चौदह हजार का पोलार है जिनमें ३ पायण्ड व २ आतग है । इन में असंख्यात नेरियों के रहने के लिये ६६६६५ नरकावास व असंख्यात कुम्भिये हैं इस के नीचे चार पोल १ बीस हजार योजन का घनोदधि २ असंख्यात योजन का घनवायु ३ असंख्यात योजन का तनुवायु ४ असंख्यात योजन का आकाशाश्रित काय है ।

७ तमः तमम् प्रभा नरकः का पिंड एक लाख अठारह हजार योजन का है । ५२११ हजार योजन का दल नीचे व ५२११ हजार योजन का दल ऊपर छोड़ कर बीच में तीन हजार योजन का पोलार है । जिनमें एक लाख ११ हजार

असंख्यात योजन का घनवाय है ३ असंख्यात योजन का तनुवाय है ४ असंख्यात योजन का आकाशास्ति काय है इस के बारह योजन नीचे जाने पर अलोक आता है ।

नरक की स्थिति अधन्य दश हजार वर्ष की, उत्कृष्ट ३३ सागरोपम की । इनका " कुल " पच्चीस लाख करोड़ जानना ।



## २ तिर्यच का विस्तार

तिर्यच के पांच भेद १ जलचर २ स्थलचर ३ उपर ४ भुज्जपा ५ खेचर इन में से प्रत्येक के दो भेद १ संमूर्द्धिम २ गर्भज ।

१ जलचर—जल में चले मो जलचर तिर्यच जैसे—  
१ मच्छ २ कच्छ ३ मृगामच्छ ४ कहुमा ५ ग्राह ६ भेड़क ७ सुमुमाल इत्यादिक जलचर के अनेक भेद हैं । इनका कुल १२॥ लाख करोड़ जानना ।

२ स्थलचर—जमीन पर चले मो स्थलचर तिर्यच इन के विशेष नामः—

१ एक खुरघाले—घोड़े, गधे, खच्चर इत्यादि

२ दो खुरघाले—कटे हुए खुरघाले गाय

भेन देन, बकरे दिग्ग राज मन्निदे अ ६ ।

३ गंडीपद—( सोनार के एरुण जैसे गे पांव वाले ) कंट, गेट, आदि ।

४ श्वानपद—(पंजे वाले जानवर ) घाघ, सिंदू चीता, दीपदे ( घन्वे व ले चीते ) कुत्ते, बिंद्री, लाली, गीदड़, जरख, रीछ, बन्दर इत्यादि । स्थलचर का " कुत्त " दस लाख करोड़ जानना ।

३ उरपर—( सर्प ) के भेदः—हृदय बल से जर्मन पर चलने वाले सो उरपर । इनके चार भेद १ अहि २ अजगर ३ अमालिया ४ महूरग ।

१ अहि—पाँचों ही रंग के होते हैं—१. २ नीला ३ लाल, ४ पीला ५ सफेद ।

२ मनुष्यादि को निगल जावे सो अजगर ।

३ अमालिया—यह दो षड्डी में १२

( ४८ कोम ) लम्बा हो जाता है चक्रवर्ती ( पलदेवादि ) की राजधानी के नीचे उत्तर होना है । इसे मरुम नामक दाह होता है जिसमें आम पाम की ४८ कोम की २ गल जाती है जिसमें आम पाम के ग्र म, नगर, येना, सर दर कर मर जाते हैं । इसे अमालिया कहते हैं ।

४ उच्छृणु एक दिन राजा क लम्बा शरीर वाला महूरग भेद का फलन ... .. अदाइ द्वीप के ... ..

... .. जानना ।

४ भुजपर—( सर्प )—जो भुजाओं ( हाथों ) के बल चले सो भुजपर कहलाते हैं । इनके विशेष नाम—१ कोल २ नकुल ( नोलिया ) ३ चूडा ४ विस्मगा ५ ब्राह्मणी ६ मिलहरी ७ काकोड़ा ८ चंदन गोह ( ग्राह ) ९ पाटला गोह ( ग्राह विशेष ) इत्यादि अनेक नाम हैं । इनका “कुल” नव लाख करोड़ जानना ।

५ खेचर—प्राकाश में उड़ने वाले जीव खेचर ( पक्षी ) कहलाते हैं । इनके चार भेदः—१ चर्म पंखी २ रोम पंखी ३ समुद्रग पंखी ४ वीतव ( विस्तृत ) पंखी ।

१ चर्म पंखी—बगुला, चामचिंडी कान-कटिया, चमगीदड़ इत्यादि चमड़े की पांख वाले सो चर्म पंखी ।

२ मयुर ( मोर ), कन्नर, चक्रते ( चिड़ी ), कौवे, कुमेही, भैना, पोपट, चील, बुगले, कोयल, डेल, शकर, हौल, तोते, तीतर, बाज इत्यादि रोम ( बाल ) की पांख वाले सो रोम पंखी ये दो प्रकार के पक्षी अढ़ाई हौप के बाहर भी मिलते हैं और अन्दर भी ।

३ समुद्रग पंखी—डुबने जैसे भीड़ी हुई गोल पांख वाले सो समुद्रग पंखी ।

४ विचित्र प्रकार की लम्बी व पान पांख वाले सो विचित्र पंखी यदुन पहार के पक्षी अत्र अत्र



के बाहर ही मिलते हैं । खेचर ( पक्षी ) का " कुल " चारह लाख करोड़ जानना ।

गर्भज तिर्यच की स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्ट तीन पक्षीपम की, समृद्धिज तिर्यच की स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्ट पूर्व करोड़ की ( विस्तार दण्डक से जानना )



### ३ मनुष्य के भेद

मनुष्य के दो भेद १ गर्भज २ समृद्धिज ।

गर्भज के तीन भेद १ पन्द्रह कर्मभूमि के मनुष्य २ तीस अकर्म भूमि के मनुष्य ३ छपन्न अन्तर द्वीप के मनुष्य ।

१ पन्द्रह कर्म भूमि मनुष्य के १५ क्षेत्र

१ मरुत २ ऐरावत ३ महाविदेह ये तीन क्षेत्र एक साथ योजन वाले जम्बू द्वीप के अन्दर हैं । इसके ( चारों ओर ) बाहर ( शुद्धी के आकार ) दो लाख योजन का लवण समुद्र है । इसके बाहर चार लाख योजन का घातगी शगट त्रिममे २ मान २ ऐरावत २ महाविदेह एवं ६ क्षेत्र हैं । इसके बाद छठ लाख योजन का कालोदधि समुद्र है । इसके बाद छठ लाख योजन का अन्न पुष्कर है । इसके बाद छठ लाख योजन का अन्न पुष्कर है । इसके बाद छठ लाख योजन का अन्न पुष्कर है ।



( ५२ )

योगदान ऊंचा २५ योगदान पृथ्वी में उठा ( गहरा ) १०५२  
१२ [ १२ कला ] योगदान चौड़ा, २४६३२ योगदान और ३

कला लम्बा होने सोने का 'गुणहेमन्त' पर्यंत है। इनकी  
बाद ५३५० योगदान और १५ कला की है, धनुष्य पीठी का  
२५०३० योगदान और ४ कला की है, इन पर्यंत के पूरे  
वर्ष में भोगयोग, भोगयोग योगदान जाजिरी हार्म  
इस दृष्टि [ गणना ] निराली हुई है। एक २ शाखा प  
मान मान अन्तर् द्वीप है जमनी [ गलेटी ] में ऊपर टाढा क  
अन्त ३०० योगदान जान पर ३०० योगदान लम्बा व चौ  
गहरा अन्तर् द्वीप आता है वही में पाठ में योगदान जा  
पर, पाठ का योगदान लम्बा व चौड़ा दूसरा अन्तर् द्वी  
आता है। वही में १०० योगदान आगे जाने पर ५०  
व ५० लम्बा व चौड़ा तीसरा अन्तर् द्वीप आता है। वही  
१०० व ५० अन्तर् द्वीप जान पर १०० योगदान लम्बा व चौ  
थे पर अन्तर् द्वीप आता है। वही में ७०० योगदान अ  
ने पर ५०० योगदान का लम्बा व चौड़ा चौथा अन्  
द्वीप आता है। वही में ५०० योगदान आगे जान पर ५०  
व ५० लम्बा व चौड़ा पांचवा अन्तर् द्वीप आता है। वही  
५०० योगदान लम्बा व चौड़ा छठवा अन्तर् द्वीप आता है।





१० गुरु शोगन वडिगाडिपाण सुता-वीर्य के एने  
गुरुन पुनः गीने होवे उममें ।

११ विगव जीन कनेरे सुता-मनुष्य के गुरु  
शोगन में ।

१२ इन्धि पूरित संजोमे सुता-श्री पुरुष के  
संजोमे में ।

१३ नगर निधमनिपाण सुता-नगर की गटर आदि में ।

१४ गुरु अगरे ठाणे सुता-गर्भ मनुष्य सम्बन्धी  
अगुणी रवानरु में ।

गनेर मनुष्य की स्थिति जगन्ध अन्तर्गुहने की,  
उत्पत्ती नान वस्योपम की । संपूर्द्धिम मनुष्य की स्थिति  
जगन्ध अन्ध सिद्धे की, उत्पत्ती भी अन्तर्गुहने की । मनुष्य  
का " गुरु " काइ लक्षण कनेइ जानना ।

उ संव के संव ।

१० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

१ अन्तर्गुहने के २) संवः ? दस अगु गुरु  
३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००



सो योजन का दल ऊपर छोड़ कर, बीच में आठ सो योजन का पोलार है। जिसमें सोलह जाति के व्यन्तर के नगर हैं। ये नगर कुछ तो भरत क्षेत्र के समान हैं। कुछ इन से बड़े महाविदेह क्षेत्र समान हैं। और कुछ जंजु द्वीप समान बड़े हैं।

पृथ्वी का सो योजन का दल जो ऊपर है, उसमें से दश योजन का दल नीचे व दश योजन का दल ऊपर छोड़ कर, बीच में अरती योजन का पोलार है। इन में दश जाति के जूभिका देव रहते हैं जो संध्या समय, मध्य रात्रि को, सुबह व दोपहर को ' अस्तु ' ' अस्तु ' करते हुए फिरते रहते हैं ( जो हंसता हो वो हंसते रहना, रोता हो वो रोते रहना, इस प्रकार कहते फिरते हैं ) अतएव हम समय ऐसा बना नहीं बोलना चाहिये। पडाड़, पर्वत व पृथ्व ऊपर तथा पृथ्व नीचे व मन को जो जगह अच्छी लगे वहां ये देव आकर बैठते हैं तथा रहते हैं।

उपोतिषी वेद्यः—इन्हे दश भेद १ चन्द्रमा २ सूर्य ३ ग्रह ४ नक्षत्र ५ तारे। ये पांच उपोतिषी देव अटारि द्वीप में बसते हैं व अटारि द्वीप के बाहर ये पांच अना ( स्थिर ) देव हैं। इन देवों की गाथाः—





उत्पन्न हुए हैं । वे कैसे ? तीर्थ हर, केनली, माधु, साधो के थपवाद बोलने से ये किन्दिपी देव हुए हैं ।

चारह देवलोक—१ सुधर्मा देवलोक २ इशान देवलोक ३ सनंत कुमार देवलोक ४ महेन्द्र देवलोक ५ व्रत्र देवलोक ६ लातिक देवलोक ७ महाशुक्र देवलोक ८ सहषार देवलोक ९ आणत देवलोक १० प्राणा देवलोक ११ आरण्य देवलोक १२ अच्यून देवलोक ।

चारह देवलोक कितने ऊँचे, किस आकार के, व इन के कितने कितने विमान हैं, इसका विवेचन ज्योतिषी चक्र के ऊपर असंख्यात योजन की करोड़ा करोड़ प्रमाणे ऊँचा जाने पर पहेला सुधर्मा व दूसरा इशान ये दो देवलोक आते हैं जो लगड़ाकार हैं । व एक एक अर्ध चन्द्रमा के आकार ( समान ) हैं और दोनों मिल कर पूर्ण चन्द्रमा के आकार ( समान ) हैं । पहले में ३२ लाख और दूसरे में २८ लाख विमान हैं । यहाँ से असंख्यात योजन की करोड़ा करोड़ प्रमाणे ऊँचे जाने पर तीसरा सनंत कुमार व चौथा महेन्द्र ये दो देवलोक आते हैं । जो लगड़ा ( टाँचा ) के आकार हैं । एक एक अर्ध चन्द्रमा के आकार का है । दोनों मिल कर पूर्ण चन्द्रमा के आकार ( समान ) हैं । तीसरे में पाण्ड लाख व चौथे में आठ लाख विमान हैं । यहाँ से असंख्यात योजन का करोड़ा करोड़ प्रमाणे ऊँचा जाने पर पाँचवा व्रत्र देवलोक आता है । जो पूर्ण चन्द्रमा के



### नव लोकांतिक देव ।

पांचवे देवलोक में आठ कृष्ण राजी नामक पर्वत है जिसके अन्तर में ( चीच में ) ये नव लोकांतिक देव रहते हैं। इनके नाम-गाथाः-

सारस्वत, माद्व, वह्नि, वरुण, गज तोया ।

तृतीया अश्ववाहा, अंगीया, श्वेव, रीठा, य ॥

अर्थः—१ सारस्वत लोकांतिक २ आदित्य लोकांतिक ३ वह्नि लोकांतिक ४ वरुण ५ गज तोया ६ तुषिय ७ अश्ववाहा ८ अंगीया ९ श्वेव १० रीठा । ये नव लोकांतिक देव जब तीर्थदार महाराज दीक्षा धारण करने वाले होते हैं, उस समय कानों में कुण्डल, मस्तक पर मुकुट, पाँद पर चातु श्वेव, कण्ठ में नवमरुत धार पहन कर पुष्परिषों के समकामहित आकर इस प्रकार बोलते हैं—“अहो त्रिलोक नाथ तीर्थ मार्ग प्रवर्तियों, मोक्ष मार्ग शालु करो।” इस प्रकार बोलने का—इन देवों का जीत व्यवहार (परंपरा से विवाच्यता आता) है ।



### नव ध्याय श्लोक

गाथाः—सद, सुमद, मज्ज, सुम, सुम, सुम, सुम ।

सुम, सुम, सुम, सुम, सुम, सुम, सुम ।

सुम — सुम, सुम, सुम, सुम, सुम, सुम, सुम ।

सुम, सुम, सुम, सुम, सुम, सुम, सुम ।

श्रीक. आती है। ये देवलोक गागर देवदे के समान है। इनके नामः—१ भद्र २ सुभद्र ३ गुजान, इम पडली श्रीक में १११ विमान हैं। यहां से असंख्यात योजन के करोड़ा करोड प्रमाणे ऊंचा जाने पर दूसरी श्रीक. आती है। यह भी गागर देवदे के ( आकार ) समान है। इनके नाम ४ सुमानम ५ प्रिय दर्शन ६ सुदर्शन इस श्रीक में १०७ विमान हैं। यहां से असंख्यात योजन के करोड़ा करोड़ प्रमाणे ऊंचा जाने पर तीसरी श्रीक. आती है, जो गागर देवदे के समान है। इनके नाम ७ अभोष = सुप्रतिबुद्ध ८ यशोधर इस श्रीक. में १०० विमान हैं।

### पांच अनुत्तर विमान

नववीं श्रेणिक के ऊपर असंख्यात योजन की करोड़ा करोड प्रमाणे ऊंचा जाने पर पांच अनुत्तर विमान आते हैं। इनके नामः—१ विजय २ विजयंत ३ जयंत ४ अपराजित ५ सर्वार्थ सिद्ध। ये सर्व मिल कर = ४, ६७, ०२३ विमान हूवे। देव की स्थिति जघन्य दश हजार वर्ष की, उत्कृष्ट ३३ सागरोपम की। देव का "कुल" २६ लाख करोड़ जाननः।

### सिद्ध शिला का वर्णन।

सर्वार्थ सिद्ध विमान की ध्वजा पताका से १२ योजन ऊंचा जाने पर सिद्ध शिला आती है। यह ४५ लाख योजन की लम्बी चौड़ी व गोल और मध्य में ८ योजन की जाड़ी, और चारों तरफ से क्रम से घटती २ किनारे पर

मवस्त्री के पंख से भी अधिक पतली है । शुद्ध सुवर्ण से भी अधिक उज्वल, गोचीर समान, शंख, चंद्र, बंक ( इगुला ) रत्न, चांदी, मोती का द्वार, व चीर सागर के जल से भी अत्यन्त उज्वल है । इस सिद्ध शिला के के वारह नाम-१ इपत् २ इपत् प्रभार ३ तनु ४ तनु तनु ५ सिद्धि ६ सिद्धान्त ७ मुक्ति ८ सुवर्णालय ९ लोकाग्र १० लोकस्तुभिका ११ लोक प्रति बोधिका १२ सर्व प्राणी भूत जीव सत्त्व सौख्य शक्ति । इसकी परिधि ( घेराव ) १, ४२, ३०, २४६ योजन, एक कोस १७६६ घनुष पोने छे आहुत जाजेरी है । इस शिला के एक योजन ऊपर जाने पर-एक योजन के चार हजार कोस में से ३६६६ कोस नीचे छोड़ कर शेष एक कोस के छे भाग में से पांच भाग नीचे छोड़ कर शेष एक भाग में सिद्ध भगवान विराज मान हैं । यदि ५०० घनुष की अवगाहना वाले सिद्ध हुये हो तो ३३३ घनुष और ३२ आहुत की ( क्षेत्र ) अवगाहना होती है । सात हाथ के सिद्ध हुये हो तो चार हाथ और गोलह आहुत की ( क्षेत्र ) अवगाहना होती है । व दो हाथ के सिद्ध हुये हो तो एक हाथ या आठ आहुत की ( क्षेत्र ) अवगाहना होती है । ये सिद्ध भगवान कैम हैं ? अवर्णी, अगन्धी अरणी, अन्वर्णी, जन्वर्णी, मन्वर्णी, रन्वर्णी, अन्विक गुण महिन है । ऐसे सिद्ध भगवान का भोग मनस मनस पर इना नमस्कार होवे

सं. ३३३

नाम	वृत्त संज्ञा	आयुष्य	पत्नी	संख्या	वर्ग संख्या
१. श्री. राम	१० लाल	२२०००	श्री. राम	१	१००००
२. श्री. क. व.	७ लाल	३०००	श्री. क. व.	१	३००००
३. श्री. व. व.	३ लाल	३००००	श्री. व. व.	१	३००००
४. श्री. व. व.	७ लाल	३००००	श्री. व. व.	१	३००००
५. श्री. व. व.	३ लाल	३००००	श्री. व. व.	१	३००००

१२ वीं  
४६ दिवस

सं. ३३३

नाम	कुल फरोडा	'आयुष्य ६ मास	वर्ण	संस्थान
१. १. १. १.	६ लाख	{ ज. १०००० व. { उ. ३३ सागर	" "	" "
१. १. १. १.	२५ लाख	{ उ. ३३ सागर	" "	" "
१. १. १. १.	५३॥ लाख	{ ३ वल्योपम	" "	" "
१. १. १. १.	१२ लाख	{ ३ वल्योपम	" "	" "
१. १. १. १.	२६ लाख	{ ज. १०००० व. { उ. ३३ सागरो पम	" "	" "

१. १. १. १. ३ जघम्य १ भव ।

॥ इति छः काय का बोल सम्पूर्ण ॥

## २५ बोल ।

१ पहले बोले 'गति चार-१ नरक गति २ तीर्थव गति ३ मनुष्य गति ४ देव गति ।

२ दूसरे बोले 'जाति पांच-१ एकैन्द्रिय २ वंश-न्द्रिय ३ त्रीन्द्रिय ४ चारिन्द्रिय ५ पंचेन्द्रिय ।

३ तीसरे बोले 'काय छः-१ पृथ्वी काय २ अप काय ३ तेजस् काय ४ वायु काय ५ वनस्पति काय ६ व्रस काय ।

४ चौथे बोले 'इन्द्रिय पांच-१ श्रोत्रेन्द्रिय २ चक्षु इन्द्रिय ३ घ्राणेन्द्रिय ४ रसेन्द्रिय ५ स्पर्शेन्द्रिय ।

५ पांचवे बोले 'पर्याप्ति छः-१ आहार पर्याप्ति २ शरीर पर्याप्ति ३ इन्द्रिय पर्याप्ति ४ श्वासाश्वास पर्याप्ति ५ भाषा पर्याप्ति ६ मनः पर्याप्ति ।

६ छठे बोले 'प्राण दश-१ श्रोत्रेन्द्रिय २ प्राण ३

१ जहा पर जीवों का आवागमन ( जाना जाना ) होवे वह गति है ।

२ एक सां होना-एकाकार होना जाति है ।

३ समूह तथा बहु प्रदेशी वस्तु को काय कहते हैं ।

४ शब्द, रूप, रस, गन्ध, स्पर्श आदि धनुषों का जिसके द्वारा ग्रहण होता है उसे इन्द्रिय कहते हैं । ये पांच हैं-१ कान २ आंख ३ नाक ४ जिन ५ स्पर्श ( गले में पैर तक-घट )

५ आहारदि रूप पुटल का परिणाम करने की शक्ति ( यन्त्र ) को पर्याप्ति कहते हैं ।

६ प्राण शब्द यन्त्र के मदद करने वाले वायु ( प्राण ) को प्राण कहते हैं ।



चक्षु इन्द्रिय बल प्राण ३ घ्राणेन्द्रिय बल प्राण ४ रसेन्द्रिय बल प्राण ५ स्पर्शेन्द्रिय बल प्राण ६ मनः बल प्राण ७ वचन बल प्राण ८ काय बल प्राण ९ श्वासेश्वास बल प्राण १० आगृह्य बल प्राण ।

७ सातवें वाले शरीर पांच-१ औदारिक २ वैक्रिय ३ आहारिक ४ तेजसू ५ कार्मण ।

८ आठवें वाले योग पन्द्रह-१ मत्स्य मन योग २ असम्य मन योग ३ मिथ्र मन योग ४ व्यवहार मन योग ५ मत्स्य वचन योग ६ असम्य वचन योग ७ मिथ्र वचन योग ८ व्यवहार वचन योग ९ औदारिक शरीर काय योग १० औदारिक मिथ्र शरीर काय योग ११ वैक्रिय शरीर काय योग १२ वैक्रिय मिथ्र शरीर काय योग १३ आहारिक शरीर काय योग १४ आहारिक मिथ्र शरीर काय योग १५ कार्मण वायु योग । चार मनका, चार वचन का व मत वायु का चार प-ट्टक योग ।

९ नववें वाले उपयोग चारह ।

पांच ज्ञान का-१ प्रति ज्ञान २ श्रुत ज्ञान ३ अविज्ञान ज्ञान ४ मनः पर्याय ज्ञान ५ केवल ज्ञान ।

७ ज्ञान का अर्थ ज्ञान ही है वा ज्ञान का अर्थ ही है । ज्ञान का अर्थ ही है । ज्ञान का अर्थ ही है । ज्ञान का अर्थ ही है ।

८ ज्ञान का अर्थ ज्ञान ही है वा ज्ञान का अर्थ ही है । ज्ञान का अर्थ ही है । ज्ञान का अर्थ ही है । ज्ञान का अर्थ ही है ।

९ ज्ञान का अर्थ ज्ञान ही है वा ज्ञान का अर्थ ही है । ज्ञान का अर्थ ही है । ज्ञान का अर्थ ही है । ज्ञान का अर्थ ही है ।

७

तीन अज्ञान का-१ मति अज्ञान २ श्रुत अज्ञान  
३ विभंग अज्ञान ।

चार दर्शन के-१ चक्षु दर्शन २ अचक्षु दर्शन  
३ अवधि दर्शन ४ केवल दर्शन एवं चारह उपयोग ।

१० दशवें वाले 'कर्म आठ-१ ज्ञानावरणीय  
२ दर्शना वरणीय ३ वेदनीय ४ मोहनीय ५ आयुष्य ६ नाम  
७ गोत्र और = अन्तराय ।

११ इग्यारहवें वाले गुण 'स्थानक चौदह ।

१ मिथ्यात्व गुणस्थानक २ सास्त्रादान गुणस्थानक  
३ मिथ्य गुणस्थानक ४ झ्रती समष्टि गुणस्थानक ५ देश  
व्रती गुणस्थानक ६ प्रमत्त संयति गुणस्थानक ७ अप्रमत्त  
संयति गुण स्थानक = (निदृष्टी) निवर्तीवादर गुण स्थानक  
८ ( अनिदृष्ट ) अनिवर्ती वादर गुण स्थानक १० सूक्ष्म  
संपराय गुण स्थानक ११ उपशान्त मोहनीय गुण स्थानक  
१२ क्षीण मोहनीय गुणस्थानक १३ सयोगी केवली गुण  
स्थानक १४ अयोगी केवली गुण स्थानक ।

१२ पारहणें वाले पांच इन्द्रिय के २३ "विषय

१० जीव को पर भद्र के गुणों, विभाव दशा में बनावे व कल्प रूप  
में दिखावे को कर्म है ।

११ सत्त्व की शक्ति को उद्वृत्ति व अद्विष्ट के अकारण को नकारवाने कर्म  
है । सत्त्व के गुणों को नकारवाने कर्म है ।

१२ अज्ञान के गुणों को नकारवाने कर्म है । अज्ञान के गुणों को  
नकारवाने कर्म है ।

१ श्रोत्रेन्द्रिय के तीन विषय-१ जीव शब्द  
२ अजीव शब्द ३ मिश्र शब्द ।

२ चक्षु इन्द्रिय के पांच विषय-१ कृष्ण वर्ण  
२ नील वर्ण ३ रक्त वर्ण ४ पीत ( पीला ) वर्ण ५ श्वेत  
( सफेद ) वर्ण ।

३ घ्राणेन्द्रिय के दो विषय-१ सुगन्धि गन्ध  
२ दुर्गन्धि गन्ध ।

४ रसेन्द्रिय के पांच विषय-१ तीक्ष्ण ( तीखा )  
२ कटुक ( कड़वा ) ३ कषायित ( कषायला ) ४ क्षीण  
( खटा ) ५ मधुर ( मिष्ट मीठा ) ।

५ स्पर्शेन्द्रिय के आठ विषय-१ कर्कश २ मृदु  
३ गुरु ४ लघु ५ शीत ६ उष्ण ७ स्निग्ध ( चिकना )  
८ रूच ( लुगा ) एवं २३ विषय ।

१३ नेत्रहृवें धोले "मिथ्यात्व दश-१ जीव को  
अजीव समझे तो मिथ्यात्व २ अजीव को जीव समझे  
मिथ्यात्व ३ धर्म को अधर्म समझे तो मिथ्यात्व ४ अधर्म  
को धर्म समझे तो मिथ्यात्व ५ साधु को असाधु समझे  
तो मिथ्यात्व ६ असाधु को साधु समझे तो मिथ्यात्व  
७ सुमार्ग ( शुद्ध मार्ग ) को कुमार्ग समझे तो मिथ्यात्व  
८ कुमार्ग को सुमार्ग समझे तो मिथ्यात्व ९ सर्व दुःख

१० अज्ञान ११ अविद्या १२ अज्ञान १३ अविद्या १४ अज्ञान १५ अविद्या १६ अज्ञान १७ अविद्या १८ अज्ञान १९ अविद्या २० अज्ञान २१ अविद्या २२ अज्ञान २३ अविद्या

१३



नेरियों का एक दण्डक १, दश भवनपति देव क दस  
दण्डक, ११, पृथ्वी काय का एक, १२, अप काय का  
एक, १३, तेजस् काय का एक, १४, वायु काय का एक  
१५, धनस्पति काय का एक, १६ वेदन्द्रिय का एक, १७  
श्रीन्द्रिय का एक, १८, शौरिन्द्रिय का एक, १९, त्रिपै  
वंशन्द्रिय का एक २०, मनुष्य का एक, २१, वाणव्यन्तर क  
एक, २२, ज्योतिषी का एक, २३, वैमानिक का एक, २४

१७ सत्तरवें षोले = उरया छः-१ कृष्ण लेरया  
नील लेरया ३ काषीण लेरया ४ तेजो लेरया ५  
लेरया ६ शुभन लेरया ।

१८ अठारवें षोले दृष्टि सांन-१ सम्बर  
(सुस्पग) दृष्टि २ मिध्याम्य दृष्टि ३ मिथ दृष्टि ।

१९ उर्ध्व,सर्वे षोले Xध्यान चार-१ आर्त ध्य  
२ गीट ध्यान ३ धर्म ध्यान ४ शुक्ल ध्यान ।

२० बीसवें षोले षट् ( छ ) अद्रव्यके ३० भिद ।  
१ गमांमि काय के पांच भिद-१ द्रव्य मे एक

क्याय तथा काय क स प जीव के गुणागुण जाय को क्षेत्र  
करत है । क्याय तथा क्याय रूप तथा संसृता का कला ही उरया है  
" यत्मा यत्मा को कृती को नष्ट यत्मा यत्मा को  
कहा जाता है । प ४



करुं नहीं, कराऊं नहीं, अनुमोदूं नहीं, वचन से । ३ करुं नहीं, कराऊं नहीं, अनुमोदूं नहीं, काया से ।

अंक एक पत्तीस का-तीन करण व दो योग से, त्याग करे । मांगा तीन—

१ करुं नहीं, कराऊं नहीं, अनुमोदूं नहीं, मन से, वचन से । २ करुं नहीं, कराऊं नहीं, अनुमोदूं नहीं, मन से काया से । ३ करुं नहीं, कराऊं नहीं, अनुमोदूं नहीं, वचन से, काया से ।

अंक एक नेंतीस का-तीन करण व तीन योग से त्याग लेवे । मांगा एक—

१ करुं नहीं, कराऊं नहीं, अनुमोदूं नहीं, मन से वचन से, काया से । एवं ४६ मांगा सम्पूर्ण ।

२५ पञ्चीशवं बोले 'चारिभ्र पांच-१ सामायिक चारित्र २ छेदोपस्थानिक चारित्र ३ परिहार विशुद्ध चारित्र ४ सूक्ष्म संपराय चारित्र ५ यथारूपाव चारित्र ।

। इति पञ्चीस बोले सम्पूर्ण ॥



१ आत्मक पर भाव से २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

परिणत

## सिद्ध द्वार

१ पहिली नरक के निकले हुवे एक समय में जघन्य एक सिद्ध होवे, उत्कृष्ट दश सिद्ध होते हैं ।

२ दूसरी नरक के निकले हुवे एक समय में जघन्य एक सिद्ध, उत्कृष्ट दश सिद्ध होते हैं ।

३ तीसरी नरक के निकले हुवे एक समय में जघन्य एक सिद्ध, उत्कृष्ट दश सिद्ध होते हैं ।

४ चौथी नरक के निकले हुवे एक समय में जघन्य एक, उत्कृष्ट चार सिद्ध होते हैं ।

५ भवन पति के निकले हुवे एक समय में जघन्य एक, उत्कृष्ट दश सिद्ध होते हैं ।

६ भवन पति की देवियों में से निकले हुवे एक समय में जघन्य एक, उत्कृष्ट पांच सिद्ध होते हैं ।

७ पृथ्वी काय के निकले हुवे एक समय में जघन्य एक, उत्कृष्ट चार सिद्ध होते हैं ।

८ अपकाय के निकले हुवे एक समय में जघन्य एक, उत्कृष्ट चार सिद्ध होते हैं ।

९ वनस्पति काय के निकले हुवे एक समय में जघन्य एक, उत्कृष्ट छः सिद्ध होते हैं ।

१० तिर्यच रभज के निकले हुवे एक समय में जघन्य एक, उत्कृष्ट दश सिद्ध होते हैं ।



११ निर्घण्टी में से निकले हुये एक समय में जपन्य एक, उत्कृष्ट दश मिद्ध होते हैं ।

१२ मनुष्य गर्भ में से निकले हुये एक समय में जपन्य एक, उत्कृष्ट दश मिद्ध होते हैं ।

१३ मनुष्य की में से निकले हुये एक समय में जपन्य एक, उत्कृष्ट बीस मिद्ध होते हैं ।

१४ प्राण व्यन्तर में से निकले हुये एक समय में जपन्य एक, उत्कृष्ट दश मिद्ध होते हैं ।

१५ प्राण व्यन्तर की देवियों में से निकले हुये एक समय में जपन्य एक, उत्कृष्ट पांच मिद्ध होते हैं ।

१६ ज्वे निषी के निकले हुये एक समय में जपन्य एक मिद्ध, उत्कृष्ट दश मिद्ध होते हैं ।

१७ ज्यातिपी की देवियों में से निकले हुये एक समय में जपन्य एक, उत्कृष्ट बीस मिद्ध होते हैं ।

१८ वैशानिक के निकले हुये एक समय में जपन्य एक मिद्ध, उत्कृष्ट १०८ मिद्ध होते हैं ।

१९ वैशानिक की देवियों में से निकले हुये एक समय में जपन्य एक, उत्कृष्ट बीस मिद्ध होते हैं ।

२० अलिङ्गी एक समय में जपन्य एक, उत्कृष्ट १०८ मिद्ध होते हैं ।

२१ अलिङ्गी एक समय में जपन्य एक, उत्कृष्ट १०८ मिद्ध होते हैं ।



३३ नदी प्रमुख जल के अन्दर एक समय में जघन्य एक, उत्कृष्ट तीन सिद्ध होते हैं ।

३४ तीर्थ सिद्ध होने तो एक समय में जघन्य एक, उत्कृष्ट १०८ सिद्ध होते हैं ।

३५ अतीर्थ सिद्ध होने तो एक समय में जघन्य एक, उत्कृष्ट दस सिद्ध होते हैं ।

३६ तीर्थकर सिद्ध होने तो, एक समय में जघन्य एक, उत्कृष्ट बीस सिद्ध होते हैं ।

३७ अतीर्थकर सिद्ध होने तो एक समय में जघन्य एक, उत्कृष्ट १०८ सिद्ध होते हैं ।

३८ स्वयं बोध ( बुद्ध ) सिद्ध होने तो एक समय में जघन्य एक, उत्कृष्ट चार सिद्ध होते हैं ।

३९ प्रति बोध सिद्ध होने तो, एक समय में जघन्य एक, उत्कृष्ट दश सिद्ध होते हैं ।

४० बुध बोधी सिद्ध होने तो, एक समय में जघन्य एक, उत्कृष्ट १०८ सिद्ध होते हैं ।

४१ एक सिद्ध होने तो, एक समय में जघन्य एक, उत्कृष्ट एक सिद्ध होते हैं ।

४२ अनन्त सिद्ध होने तो, एक समय में जघन्य एक, उत्कृष्ट १०८ सिद्ध होते हैं ।

४३ अनन्त सिद्ध होने तो, एक समय में जघन्य एक, उत्कृष्ट १०८ सिद्ध होते हैं ।



५५ छडे आरे में एक समय में जघन्य एक, उत्कृष्ट दम सिद्ध होते हैं ।

५६ अमपिणी में एक समय में जघन्य एक, उत्कृष्ट १०८ सिद्ध होते हैं ।

५७ उत्तपिणी में एक समय में जघन्य एक, उत्कृष्ट १०८ सिद्ध होते हैं ।

५८ नोत्रपिणी नो अमपिणी में एक समय में जघन्य एक, उत्कृष्ट १०८ सिद्ध होते हैं ।

ये ५८ बोन अन्तर रहित एक समय में जघन्य, उत्कृष्ट त्रों सिद्ध होते हैं मो कहे हैं । अब अन्तर रहित आठ समय तक यदि सिद्ध होते तो कितने होते हैं ? मो कहते हैं ।

१	पदने	समय	में	जघन्य	एक	उत्कृष्ट	१०८	सिद्ध	होते	हैं ।
२	दुगरे	"	"	"	"	"	१०२	"	"	
३	नी.मरे	"	"	"	"	"	६६	"	"	
४	नी.वे	"	"	"	"	"	८४	"	"	
५	वां.वां	"	"	"	"	"	७२	"	"	
६	छडे	"	"	"	"	"	६	"	"	
७	मा.वे	"	"	"	"	"		"	"	



२ वैक्रिय शरीर ३ आहारिक शरीर ४ तेजम् शरीर ५ कार्माण शरीर ।

इनके लक्षणः-औदारिक शरीर-जो मड़ जाय, पड़ जाय, गल जाय, नष्ट होजाय, बिगड़ जाय व मरने बाद कलेवर पड़ा रहे। उमे औदारिक शरीर कहते हैं।

२ ( औदारिक वा उलटा ) जो सड़े नहीं, पड़े नहीं गले नहीं, नष्ट होवे नहीं व मरने बाद बिस्तर जाने उमे वैक्रिय शरीर कहते हैं।

३ चौदह पूर्व घागी मुनिषों को जब शङ्का उत्पन्न होती है, तब एक हाथ की काया का पुनला घना कर महाविदेह क्षेत्र में श्री श्रीमंदार स्वामी ने प्रश्न पूछने को भेजे। प्रश्न पूछ कर पीछे आने बाद यदि आलोचना करे तो आराधक व आनाधना नहीं करे तो बिराधक कहलाते हैं। इसे आहारिक शरीर कहते हैं।

४ तेजम् शरीर:-जो आहार करके उमे पचाये वो तेजम् शरीर ।

५ कार्माण शरीर:- ईश्वर के प्रदेश । हम के पुद्गल जो मिले हुए हैं ।

अथ शरीर के अंग । इनके लक्षण । इनके प्रत्येक अंग के लक्षण । इनके अंग के लक्षण । इनके अंग के लक्षण ।

के असंख्यातवै भाग उत्कृष्ट हजार योजन जाजेरी—( वनस्पति-  
आश्री ) ।

वैक्रिय शरीर की—भव धारणिक वैक्रिय की जघन्य  
अहुल के असंख्यातवै भाग उत्कृष्ट ५०० धनुष्य की ।

उत्तर वैक्रिय की जघन्य हुल के असंख्यातवै  
भाग उत्कृष्ट लक्ष योजन की ।

आहारिक शरीर की जघन्य मूढा हाथ की उत्कृष्ट  
एक हाथ का ।

तेजम् शरीर व कामाण्य शरीर की अवगाहन जघन्य  
अहुल के असंख्यातवै भाग उत्कृष्ट चौदह राज लोक प्रमाणे  
तथा अपने अपने शरीर अनुसार ।

(३)संघयन द्वारः—संघयन छः—१वज्र ऋषभ नाराच  
संघयन २ ऋषभ नाराच संघयन ३ नाराच संघयन ४ अर्ध  
नाराच संघयन ५ कीलिका संघयन ६ सेवार्च संघयन ।

१ वज्र ऋषभ नाराच संघयन—वज्र अर्थात् किल्ली,  
ऋषभ याने लपेटने का पाटा अर्थात् ऊपर का वेष्टन,  
नाराच याने दोनों ओर का मर्कट बंध अर्थात् सन्धि-श्रीर  
संघयन याने हाइको का मंचय- अर्थात् जिस शरीर में हाइके  
दो पृष्ठ में, मर्कट बंध में बंधे हुवे हों, पाटे के समान हाइके  
बीटे हुवे हो व तीन हाइको के अन्दर वज्र की किल्ली लगी  
हुई हो वो वज्र ऋषभ नाराच संघयन अर्थात् जिस शरीर







की दृष्टियां, हड्डों की संधियां व ऊपर का घेएन वज्र का होवे व किछी भी वज्र की होवे ) ।

२ अक्षय नाराच संधयन—ऊपर लिखे अनुसार । अंतर केवल इतना कि इसमें वज्र अर्थात् किछी नहीं होती है ।

३ नाराच संधयन—जिसमें केवल दोनों तरफ मर्कट बंध हांते हैं ।

४ अर्ध नाराच संधयन—जिसके एक तरफ मर्कट बंध व दूसरी ( पड़दे ) तरफ किछी होती है ।

५ फीलिका संधयन—जिसके दो दृष्टियों की संधि पर किछी लगी हुई होवे ।

६ सेवार्च संधयन—जिसकी एक हड्डी दुमरी हड्डी पर चढ़ी हुई हो ( अथवा जिसके हाड़ अलग अलग हो, परंतु घमड़े से बंधे हुए हो ) ।

(४) संस्थान द्वार—संस्थान छः—१ समचतुरस्र संस्थान २ त्रिभुज परिमण्डल संस्थान ३ गादिक संस्थान ४ वामन संस्थान ५ कुब्ज संस्थान ६ हृण्डक संस्थान ।

१ पाँच में लगा कर मन्त्रक तक साथ शरीर गुन्द्राकार अथवा गोभायनान होवे तो समचतुरस्र संस्थान ।

२ तिस शरीर का नाभि से ऊपर तक का हिस्सा गुन्द्राकार हो तो त्रिभुज संस्थान हो ( वट

३ वामन संस्थान—जिसमें दो हाड़ों के बीच में एक हाड़ लगी हो )

४ कुब्ज संस्थान—जिसमें दो हाड़ों के बीच में एक हाड़ लगी हो )

५ हृण्डक संस्थान—जिसमें दो हाड़ों के बीच में एक हाड़ लगी हो )

३ जो केवल पांव में लगा कर नाभि ( या कटि ) तक सुन्दर होवे सो सादिक संस्थान ।

४ जो ठेगना ( ५२ अङ्गुल का ) हो सो वामन संस्थान ।

५ जिस शरीर के पांव, हाथ, मस्तक, श्रोत्रा न्यूनाधिक हो व कुवट निकली होवे और शेष अवयव सुंदर होवे सो कुञ्ज संस्थान ।

६ हृण्डक संस्थान—रुंद, मूढ, मृगा पुत्र, रोहवा के शरीर के समान अर्थात् सारा शरीर बेडौल होवे सो हृण्डक संस्थान ।

(५) कषाय द्वार—कषाय चार—१ क्रोध २ मान ३ माया ४ लोभ ।

(६) संज्ञा द्वारः—संज्ञा चार—१ आहार संज्ञा २ भय संज्ञा ३ मैथुन संज्ञा ४ परिग्रह संज्ञा ।

(७) लेश्या द्वारः—लेश्या छः—१ कृष्ण लेश्या २ नील लेश्या ३ कापोत लेश्या ४ तेजो लेश्या ५ पद्म लेश्या ६ शुक्र लेश्या ।

(८) इन्द्रिय द्वारः—इन्द्रिय पांच—१ ध्रुतेन्द्रिय २ चक्षु इन्द्रिय ३ घ्राणेन्द्रिय ४ रसेन्द्रिय ५ स्पर्शेन्द्रिय ।

(९) समुद्घात द्वारः—समुद्घात सात—१ वेदनीय समुद्घात २ कषाय समुद्घात ३ मारणांतिक समुद्घात

४ वैक्रिय समुद्रघात ५ तेजस् समुद्रघात ६ आहारि  
समुद्रघात ७ केवल समुद्रघात ।

(१०) संज्ञो असंज्ञो द्वारः-जिनमें विचार करने की  
( मन ) शक्ति होवे सो संज्ञी और जिनमें ( मन ) विचा  
करने की शक्ति नहीं होवे सो असंज्ञो ।

(११) वेद द्वार-वेद तीन-१ स्री वेद २ पुरुष वे  
३ नपुंसक वेद ।

(१२) पर्याप्ति द्वार-पर्याप्ति छः-१ आहार पर्याप्ति  
२ शरीर पर्याप्ति ३ इन्द्रिय पर्याप्ति ४ श्वाशोश्वास पर्याप्ति  
५ मनः पर्याप्ति ६ भाषा पर्याप्ति ।

( १३ ) दृष्टि द्वार-दृष्टि तीन-१ समयतु दृष्टि  
२ विषयान्त दृष्टि ३ मम मिथ्यारव ( मिथ ) दृष्टि ।

(१४) दर्शन द्वार-दर्शन चार-१ पशु दर्शन २ भयतु  
दर्शन ३ अविधि दर्शन ४ केवल दर्शन ।

(१५) ज्ञान अज्ञान द्वार-ज्ञान पाँच-१ ननि ज्ञान २ ध्रुत  
ज्ञान ३ अविधि ज्ञान ४ मनः पर्यव ज्ञान ५ केवल ज्ञान ।  
अज्ञान तीन-१ मति अज्ञान २ ध्रुत अज्ञान ३ विभंग ज्ञान ।

(१६) योग द्वार-योग पन्द्रह-१ मल्ल मन योग  
२ अमल्ल मन योग ३ मिथ मन योग ४ अविधि मन योग  
५ योग ६ अमल्ल मन योग ७ मिथ मन योग  
८ अविधि मन योग ९ अविधि मन योग १० अविधि मन योग  
११ अविधि मन योग १२ अविधि मन योग १३ अविधि मन योग  
१४ अविधि मन योग १५ अविधि मन योग ।



२० स्थिति द्वारः--स्थिति जघन्य अन्तर सुहृत् की उरुहृष्ट तैवीग सागरोपम की ।

२१ मरण द्वारः--ममोदिया मरण, असमोदिया मरण । ममोदिया मरण जो भींटी की चाल के समान चाले व असमोदिया मरण जो दक्षी के समान चाले ( अथवा बन्दूक की गोला समान )

२२ घबराव द्वारः--चौबीस द्वा दण्डक में जावे-पहले करे अनुवार ।

आगति द्वारः--चार गति में मे भावे १ नरक गति में मे २ निर्बन्ध गति में मे ३ मनुष्य गति में मे ४ देव की गति में मे ।

गति द्वारः--पांच गति में जावे १ नरक गति में २ निर्बन्ध गति में ३ मनुष्य गति में ४ देव गति में ५ विद्व गति में ।

॥ इति समुद्रमग्य शोकीस द्वार ॥

नारकी का एक तथा देवता के नरक दण्डक

अर्थ २४ दण्डक लिखने

...

२ बाण घ्यन्तर के देव व देवियों की अवगाहना जघन्य अंगुल के असंख्यातवें भाग उत्कृष्ट सात हाथ की।

ज्योतिषी देव व देवियों की अवगाहना जघन्य अंगुल के असंख्यातवें भाग उत्कृष्ट सात हाथ की।

वैमानिक की अवगाहना नीचे लिखे अनुसार:-

पहले तथा दूसरे देवलोक के देव व देवियों की जघन्य अंगुल के असंख्यातवें भाग, उत्कृष्ट सात हाथ की। तीसरे, चौथे देवलोक के देव की जघन्य अंगुल के असंख्यातवें भाग, उत्कृष्ट छः हाथ की। पाँचवें, छठे देवलोक के देवों की जघन्य अंगुल के असंख्यातवें भाग, उत्कृष्ट पाँच हाथ की।

सातवें, आठवें देवलोक के देवों की जघन्य अंगुल के असंख्यातवें भाग, उत्कृष्ट चार हाथ की।

नववें, दशवें, इग्यारहवें व बारहवें देवलोक के देवों की जघन्य अंगुल के असंख्यातवें भाग, उत्कृष्ट तीन हाथ की। नव शैवेक ( त्रीयथेक ) के देवों की जघन्य अंगुल के असंख्यातवें भाग, उत्कृष्ट दो हाथ की।

चार अनुत्तर विमान के देवों की जघन्य अंगुल के असंख्यातवें भाग, उत्कृष्ट एक हाथ की।

पाँचवें अनुत्तर विमान के देवों की जघन्य अंगुल के असंख्यातवें भाग, उत्कृष्ट एक हाथ की। ( एक मठ कम ) हाथ की।

देवलोक पर्यन्त उत्तर













मदन पति व द्वापत्यन्तर में चार लेश्या १ कृष्ण  
२ नील ३ कापोत ४ तेजो ।

ज्योतिषी, पहेला व दूसरा देवलोक में—१ तेजो लेश्या ।  
तीसरे, चौथे व पांचवें देवलोक में—१ पद्म लेश्या ।  
छठे देवलोक से नव श्रेणिक (श्रीयवेक) तक १ शुक्ल लेश्या ।  
पांच अनुत्तर विमान में—१ परम शुक्ल लेश्या ।

८ इन्द्रिय द्वारः—

नरक में पांच व देवलोक में पांच इन्द्रिय ।

९ समुद्र धाम द्वारः—

नरक में चार समुद्रधात १ वेदनीय २ कषाय  
३ मारणांतिक ४ वैक्रिय ।

देवताद्यो में पांच—१ वेदनीय २ कषाय ३ मारणांतिक  
४ वैक्रिय ५ तेजम् ।

मदन पति में बारहवें देवलोक तक पांच समुद्रधात  
नव श्रेणिक में पांच अनुत्तर विमान तक तीन समुद्रधात  
१ वेदनीय २ कषाय ३ मारणांतिक ।

१० संज्ञा द्वारः—

पदनी नरक में संज्ञा व ० अमंज्ञा और शेष नरकों  
में संज्ञा ।

\* समुद्र निर्वाह का यह रूप मति के उपाय होने से, कषायका उपाय के  
रूपसे है । अर्थात् इसे कषय चर्चित तथा विनाश करके उपाय होता है ।  
इस अर्थसे वे कषयका चर्चिते ।



ग्रीयवेक तक तीन ज्ञान व तीन अज्ञान । एवं अनुत्तर विमान में केवल तीन ज्ञान, अज्ञान नहीं ।

१६ यो १ द्वारः-

नरक में तथा देवलोक में इग्यारह इग्यारह योग-  
१ सत्य मनयोग २ असत्य मनयोग ३ मिश्र मन योग  
४ व्यवहार मनयोग ५ सत्य वचन योग ६ असत्य वचन योग  
७ मिश्र वचन योग ८ व्यवहार वचन योग ९ वैक्रिय शरीर  
काय योग १० वैक्रिय मिश्र शरीर काय योग ११ कर्मण शरीर  
काय योग ।

१७ उपयोग द्वारः-

नरक, व भवन पति से नव ग्रीयवेक तक उपयोग  
नव-१ मति ज्ञान उपयोग २ श्रुत ज्ञान उपयोग ३ अविधि  
ज्ञान उपयोग ४ मति अज्ञान उपयोग ५ श्रुत अज्ञान उप-  
योग ६ विमंग ज्ञान उपयोग ७ चक्षु दर्शन उपयोग  
८ अचक्षु दर्शन उपयोग ९ अविधि दर्शन उपयोग ।

पांच अनुत्तर विमान में ६ उपयोग तीन ज्ञान और  
तीन दर्शन ।

१८ आहार द्वारः-

नरक व देवलोक में दो प्रकार का आहार १ अजस  
२ रोम छः ही दिशाओं का आहार लेते हैं । परन्तु लेते  
हैं एक प्रकार का-नेरिये अचित्त आहार करते हैं किन्तु  
अशुभ और देवता भी अचित्त आहार करते हैं किन्तु शुभ ।



१६ उत्पत्ति द्वार और २२ नयन द्वार:-

पटली नरक से छठी नरक तक मनुष्य व तिर्यच पंचन्द्रिय-इन दो दण्डक के आते हैं-३ दो ही ( मनुष्य, तिर्यच ) दण्डक में जाते हैं ।

सातवीं नरक में दो दण्डक के आते हैं-मनुष्य व तिर्यच, व एक दण्डक में-तिर्यच पंचन्द्रिय-में जाते हैं ।

अथन पति, वाण्य प्यन्तर, ज्योतिषी तथा पहले दूसरे देवलोक में दो दण्डक-मनुष्य व तिर्यच के आते हैं व पांच दण्डक में जाते हैं १ पृथ्वी २ अथ ३ वनस्पति, ४ मनुष्य ५ तिर्यच पंचन्द्रिय ।

तीसरे देवलोक से आठवें देवलोक तक दो दण्डक मनुष्य और तिर्यच-का आते और दो ही दण्डक में जाते ।

नवमें देवलोक से अनुत्तर विमान तक एक दण्डक मनुष्य का आते और एक मनुष्य-ही में जाते ।

२० स्थिति द्वार:-

पहले नरक के नैरिषों की स्थिति अथन्य दश हजार वर्ष की, उत्कृष्ट एक सागर की ।

दूसरे नरक की ज० १ सागर की, उ० ३ सागर की ।

तीसरे नरक की ज० ३ सागर की, उ० ७ सागर की ।

चौथे नरक की ज० ७ सागर की, उ० १० सागर की ।

पांचवें नरक की ज० १० सागर की, उ० १७ सागर की ।

छठे नरक की ज० १७ सागर की, उ० २२ सागर की ।

मातर्वे नरक की ज० २२ सागर की, उ० ३३ सागर की ।

दक्षिण दिशा के अगुर कुमारके देव की स्थिति जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्ट एक सागरोपम की । इनकी देवियों की स्थिति जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्ट ३॥ पद्मोपम की । इनके नवनिर्माण के देवों की स्थिति जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्ट १॥ पद्मोपम की । इनकी देवियों की स्थिति जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्ट तीन पद्मधी ।

उत्तर दिशा के अगुर कुमार के देवों की स्थिति जघन्य दश हजार वर्ष की, उत्कृष्ट एक सागर जालेरी । इनकी देवियों की स्थिति ज. दश हजार वर्ष की, उ. ४॥ पद्म की । नवनिर्माण के देव की ज. दश हजार वर्ष उ. देव उष्ण (रुम) दा पद्मोपम की, इनकी देवियों की ज. दश हजार वर्ष की उ. देव उष्ण (रुम) एक पद्मोपम की ।

वाण अग्नि के देव की स्थिति ज. दश हजार वर्ष की, उ. एक पद्म की । इनकी देवियों की ज. दश हजार वर्ष की, उ. सर्व पद्म की ।

अन्न देव की स्थिति ज. पात्र पद्म की उ. एक पद्म और एक लक्ष वर्ष की । देवियों की स्थिति ज. पात्र पद्म की उ. सर्व पद्म और पचास हजार वर्ष की ।

सूर्य देव की स्थिति ज. पात्र पद्म की उ. एक पद्म और एक हजार वर्ष की । देवियों की ज. पात्र पद्म की उ. सर्व पद्म और शतका वर्ष की ।

ब्रह्म ( देव ) की स्थिति ज. पात्र पन्थ की उ. एक पन्थ की । देवी की ज. पात्र पन्थ की उत्कृष्ट अर्ध पन्थ की ।

नक्षत्र की स्थिति ज. पात्र पन्थ की उ. अर्ध पन्थ की । देवी की ज. पात्र पन्थ की उ. पात्र पन्थ जाड़ेगी ।

तारा की स्थिति ज. पन्थ के आठवें भाग उ. पात्र पन्थ की । देवी की ज. पन्थ के आठवें भाग उ. पन्थ के आठवें भाग जाड़ेगी ।

पान्ते देवलोक के देव की ज. एक पन्थ की उ. दो सागर की । देवी की ज. एक पन्थ की उ. मातृ पन्थ की । अरविगृहिता देवी की ज. एक पन्थ की उ. ५० पन्थ की ।

दूतरे देवलोक के देव की ज. एक पन्थ जाड़ेगी उ. दो सागर जाड़ेगी, देवी की ज. एक पन्थ जाड़ेगी उ. नव पन्थ की । अरविगृहिता देवी की ज. एक पन्थ जाड़ेगी उ. संस्रजन पन्थ की ।

दो सागर	देवलोक के देव की ज.	२ सागर की उ.	७ सागर
दो दे	" " " " " २	" जाड़ेगी " उ " ज.	
दो दे	" " " " " ७	" की " १० " की	
एके	" " " " " १०	" " " १४ " "	
साठवें	" " " " " १४	" " " १८ " "	
आठवें	" " " " " १८	" " " २२ " "	
नव	" " " " " २२	" " " २६ " "	
संज्ञ	" " " " " २६	" " " ३० " "	

इम्पारवे	"	"	"	"	२०	"	"	"	२१	"	"
बारवे	"	"	"	"	२१	"	"	"	२२	"	"
पहेली ग्रीयवेक	"	"	"	"	२२	"	"	"	२३	"	"
दुमरी	"	"	"	"	२३	"	"	"	२४	"	"
तोसरी	"	"	"	"	२४	"	"	"	२५	"	"
चौथी	"	"	"	"	२५	"	"	"	२६	"	"
पांचवी	"	"	"	"	२६	"	"	"	२७	"	"
छट्टी	"	"	"	"	२७	"	"	"	२८	"	"
सातवीं	"	"	"	"	२८	"	"	"	२९	"	"
आठवीं	"	"	"	"	२९	"	"	"	३०	"	"
नवीं	"	"	"	"	३०	"	"	"	३१	"	"
चार अनुत्तर विमान,	"	"	"	"	३१	"	"	"	३३	"	"
पांचवे अनुत्तर विमान की ज. उ. ३३ सागरोपम की ।											

२१ मरण द्वार:-

१ समोदिया और २ असमोदिया ।

२३ आगति और २४ गति द्वार:-

पहेली नरक से छट्टी नरक तक दो गति-मनुष्य और तिर्यच-का आवे और दो गति-मनुष्य, तिर्यच में जावे । सातवीं नरक में दो गति-मनुष्य, तिर्यच का आवे और एक गति-तिर्यच में जावे ।

मवन पति, वाण व्यन्त, ज्योतिषी यावत् आठवे देवलोक तक दो गति-मनुष्य और तिर्यच का आवे और दो गति-मनुष्य और तिर्यच में जावे ।

नवे देवलोक मे श्वार्ध निद्र गक. एक गति-मनुष्य  
का श्वार्ध और एक गति-मनुष्य-में जावे ।

॥ शनि नारपी तथा द्वेष लोक का २४ ब्रह्मण्डक ॥

॥ पांच एकेन्द्रिय का पांच दण्डक ॥

वायु काय का श्लोक शेष चार एकेन्द्रिय में शरीर  
तीन १ श्वार्धारिक २ तेजम् ३ फार्मण् ।

वायुकाय में चार शरीर १ श्वार्धारिक २ वैक्रिय  
३ तेजम् ४ फार्मण् ।

श्वयगाह्न द्वारः—

पृथ्व्यादि चार एकेन्द्रिय की श्वयगाहना जघन्य  
शंगुल के असंख्यातवें भाग उत्कृष्ट शंगुल के असंख्यातवें  
भाग ।

वनस्पति की श्वयगाहना जघन्य शंगुल के असंख्यातवें  
भाग उत्कृष्ट हजार योजन जाजेरी कमल नाल आशी ।

३ संघयन द्वारः—

पांच एकेन्द्रिय में सेवार्त संघयन ।

४ संस्थान द्वारः—

पांच एकेन्द्रिय में हण्डक संस्थान ।

५ कपाय द्वारः—

पांच एकेन्द्रिय में कपाय चार ।

६ संज्ञा द्वारः—

पांच एकेन्द्रिय में संज्ञा चार ।





एकेन्द्रिय तीन विकलेन्द्रिय, मनुष्य व तिर्यच एवं दश दण्डक ।

तेजस् काय, वायु काय में दश दण्डक का भावे-  
पात्र एकेन्द्रिय, तीन विकलेन्द्रिय, मनुष्य, तिर्यच-एवं दश  
और नव दण्डक में जावे, मनुष्य छोड़ कर शेष ऊपर समान ।

२० स्थिति द्वारः—

पृथ्वी काय की स्थिति जघन्य अन्तर सुहृत् की  
उत्कृष्ट शरीर हजार वर्ष की ।

अग्नि काय की जघन्य अन्तर सुहृत् की उत्कृष्ट शरीर  
हजार वर्ष की । तेजस् काय की ज. अन्तर सुहृत् की उ.  
तीन अक्षरशक्ति की । वायु काय की ज. अन्तर सुहृत् की  
उ. तीन हजार वर्ष की । वनस्पति काय की ज. अन्तर  
सुहृत् की उ. दश हजार वर्ष की ।

२१ मरण द्वारः—

इनमें समोद्विषा माण और असमोद्विषा मरण दोनों  
होते हैं ।

२२ आगति द्वार २४ गति द्वारः—

पृथ्वी काय, अग्नि काय, वनस्पति काय, इन तीन एकेन्द्रिय  
में तीन—१ मनुष्य २ तिर्यच ३ देव-गति का भावे और  
१ मनुष्य २ तिर्यच-दो गति में जाय । तेजस् और वायु  
काय में १ मनुष्य २ तिर्यच दो गति का भावे और  
तिर्यच-एक गति में जाय ।

॥ इति त्रिषु एकेन्द्रिय का काय दण्डक संख्या ॥





४ सुज्ञपर ( मर्ष ) की प्रत्येक धनुष्य की ( दो में नव धनुष्य तक की )

५ मंदार की प्रत्येक धनुष्य की ( दो में नव धनुष्य की )  
३ संघयन द्वारः—

तीन विकलेन्द्रिय ( वेदन्द्रिय त्रैन्द्रिय चौरिन्द्रिय )  
और तीर्थेण समूर्द्धिम पंचेन्द्रिय में संघयन एक-लेषार्थ ।

४ संस्थान द्वारः—

तीन विकलेन्द्रिय और समूर्द्धिम पंचेन्द्रिय में संस्थान  
एक-हृण्डक ।

५ कषाय द्वारः—

कषाय चार ही पावे ।

६ संज्ञा द्वारः—

संज्ञा चार ही पावे ।

७ लक्षणा द्वारः—

लक्षणा तीन पावे १ कृष्ण २ नील ३ कापीत ।

८ इन्द्रिय द्वारः—

वेदन्द्रिय में दो इन्द्रिय—१ स्वर्गेन्द्रिय २ रमेन्द्रिय  
( मूत्र ) त्रैन्द्रिय में तीन इन्द्रिय १ स्वर्गेन्द्रिय २ रमेन्द्रिय  
३ प्राणोन्द्रिय । चौरिन्द्रिय में चार इन्द्रिय—१ स्वर्गेन्द्रिय  
२ रमेन्द्रिय ३ प्राणोन्द्रिय ४ मलु इन्द्रिय ।

निर्येव समूर्द्धिम में पांच इन्द्रिय—१ स्वर्गेन्द्रिय  
२ रमेन्द्रिय ३ प्राणोन्द्रिय ४ मलु इन्द्रिय ५ चौरिन्द्रिय ।



## १६ योग द्वार

इनमें योग पावे चारः—१ औदारिक शरीर काय योग  
२ औदारिक मिथ्र शरीर काय योग ३ कर्मण शरीर  
काय योग ४ व्यवहार वचन योग ।

## १७ उपयोग द्वार

वे इन्द्रिय, त्री इन्द्रिय के अपर्याप्ति में पांच उपयोग  
१ मति ज्ञान २ भ्रुत ज्ञान ३ मति अज्ञान ४ भ्रुत अज्ञान  
५ अचक्षु दर्शन पर्याप्ति में तीन उपयोग-दो अज्ञान और  
एक-अचक्षु-दर्शन । चौरिन्द्रिय और तिर्यच समूर्क्षिम  
पंचेन्द्रिय के अपर्याप्ति में छः उपयोग १ मति ज्ञान उप-  
योग २ भ्रुत ज्ञान उपयोग ३ मति अज्ञान उपयोग ४ भ्रुत  
अज्ञान उपयोग ५ चक्षु दर्शन ६ अचक्षु । पर्याप्ति में चार  
उपयोग-दो अज्ञान और दो दर्शन ।

## १८ आहार द्वार

आहार छः दिशाओं का लेवे, आहार तीन प्रकार  
का ओजस् २ रोम ३ कवल और १ सचित २ अचित  
३ मिथ्र ।

## १९ उत्पत्ति द्वार २२ चवन द्वार

वे इन्द्रिय, त्री इन्द्रिय, चौरिन्द्रिय में, दश दण्डक-  
पांच एकेन्द्रिय, तीन विकलेन्द्रिय, मनुष्य और तिर्यच-का  
भावे और दश ही दण्डक में जावे । तिर्यच समूर्क्षिम पंचे-  
न्द्रिय में दश दण्डक का भावे— ( ऊपर कहे हुवे ) और

गो वैमानिक इन दो दण्डक को छोड़ कर शेष २२  
में जावे ।

## २० स्थिति द्वार

पंचेन्द्रिय की स्थिति जघन्य अन्तर मुहूर्त की उत्कृष्ट  
वर्ष की । त्रीन्द्रिय की स्थिति जघन्य अन्तर मुहूर्त  
कृष्ट ४६ दिन की । चौरिन्द्रिय की ज० अन्तर मुहूर्त  
कृष्ट छः मास की । तिर्यंच समूर्द्धिम पंचेन्द्रिय की  
प्रनुसार—

—पुन्य वक्रोड़ चउराशी, तेरन, वायालीस, बहुचेर ।

सहसाई वासाई समुद्धिमे आउयं होइ ॥

जलचर की स्थिति जघन्य अन्तर मुहूर्त की उत्कृष्ट  
पूर्व वर्ष की । स्थलचर की जघन्य अन्तर मुहूर्त की  
गोराशी हजार वर्ष की । उरपर ( सर्प ) की जघन्य  
मुहूर्त की उत्कृष्ट ५२ हजार वर्ष की, भुज पर  
( ) की जघन्य अन्तर मुहूर्त की उत्कृष्ट ४२ हजार वर्ष  
खेचर की जघन्य अन्तर मुहूर्त की उत्कृष्ट ७२ हजार  
वर्ष की ।

## २१ मरण द्वार

असमोहिया मरणः-वीटी की चाल के समान जिम  
की गति हो ।

असमोहिया मरण बन्दूक की गोली के समान  
जिमकी गति हो ।

### २३ आगति द्वार २४ गति द्वार

ये इन्द्रिय, त्री इन्द्रिय, चौरिन्द्रिय में दो गति-मनुष्य और तिर्यच का आवे और दो गति मनुष्य तिर्यच में जावे । तिर्यच समूह में पंचेन्द्रिय में दो-मनुष्य और तिर्यच-गति का आवे और चार गति में जावे १ नरक २ तिर्यच ३ मनुष्य ४ देव ।

॥ इति तीन विकलेन्द्रिय और तिर्यच समूहम् ॥



### तिर्यच गर्भज पंचेन्द्रिय का एक हंडक

( १ ) शरीरः-तिर्यच गर्भज पंचेन्द्रियमें शरीर ४ः—

१ आदोरिक २ वैक्रियक ३ तत्रस ४ कार्मण

( २ ) अथगाहना ।

गाथाः ज्ञेयण सहस्रं च गाड आर्ह ततो ज्ञेयण सहस्रं  
गाड पुःर्चं मुजये षण्णुह पुःर्चं च पत्नीसु ।

जलचरकी-जघन्य अंगुल के अमंख्यातवें भाग,  
उत्कृष्ट एक हजार योजन की ।

स्थलचरकीः-जघन्य अंगुल के अमंख्यातवें भाग,  
उत्कृष्ट छ गाडकों ।

उरपरीसर्पहीः-जघन्य अंगुल के अमंख्यातवें  
भाग, उत्कृष्ट एक हजार  
योजन की ।



( १५ ) ज्ञान द्वारः-ज्ञान तीनः- १ मति ज्ञान २ श्रुतज्ञान  
३ भवधि ज्ञान । अज्ञान भी तीन  
१ मति अज्ञान २ श्रुत अज्ञान ३ विभंग  
ज्ञान ।

( १६ ) योग द्वारः-योग तेराः--१ सत्य मनयोग २ अम-  
त्य मनयोग ३ मिश्र मनयोग ४ व्य-  
वहार मनयोग ५ सत्य वचनयोग ६  
असत्य वचनयोग ७ मिश्र वचन  
योग ८ व्यवहार वचन योग  
९ भौदारिक शरीर काय योग १०  
श्रौदारिक मिश्र शरीर काययोग ११  
वैक्रिय शरीर काययोग १२ वैक्रिय  
मिश्र शरीर काययोग १३ कर्मण  
शरीर काययोग ।

( १७ ) उपयोग द्वारः-तिर्थच गर्भेज में उपयोग ६ (नो)  
१ मति ज्ञान उपयोग २ श्रुतज्ञान  
३ भवधि ज्ञान उपयोग ४ मति  
अज्ञान उपयोग ५ श्रुत अज्ञान उप-  
योग ६ विभंग ज्ञान उपयोग ७ चतु  
दर्शन उपयोग ८ अचतु दर्शन  
उपयोग ९ भवधि दर्शन उपयोग ।

( १८ ) आहारः-आहार तीन प्रकार का ।



( १६ ) उत्पत्तिद्वारः--( २२ ) चवन द्वारः--चौबीस  
दंडक में उपजे, चौबीस दंडक में  
जावे ।

(२०) स्थिति द्वारः--जलचर कीः--जघन्य अन्तर मुहूर्त  
उत्कृष्ट करोड़ पूर्व  
वर्ष की ।

सलचर कीः--जघन्य अन्तर्मुहूर्त  
उत्कृष्ट तीन पन्थ की ।

उरपरि सर्प कीः--जघन्य अन्तर्मुहूर्त  
उत्कृष्ट करोड़ पूर्व  
वर्ष की ।

भुजपरि सर्प कीः--जघन्य अन्तर्मुहूर्त  
उत्कृष्ट करोड़ पूर्व  
वर्ष की ।

खेचर कीः--जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट  
पन्थ के असंख्यातवें  
भाग की ।

(२१) मरण द्वारः--समोहिया मरख असमोहिया मरण ।

(२३) जागति द्वार (२४) गति द्वारः--विर्यच गर्भेज  
पंचेन्द्रिय में चार गति के जीव जावे  
अर चार गति में जावे ।

। निर्यन पंचान्द्रिय का दंडक सम्पूर्ण

## मनुष्य गर्भेज पंचेन्द्रिय का एक दंडक

१ शरीरः—मनुष्य गर्भेज में शरीर पांच ।

२ अवगाहना द्वारः—अवसर्पिणी काल में

मनुष्य गर्भेज की अवगाहना पहिला आरा लगते तीन गाउ की, उतरते और दो गाउ की, दूसरा आरा लगते दो गाउ की, उतरते एक गाउ की ।

तीसरे आरे लगते १ गाउकी उतरते आरे ५०० धनुष्य की  
 चौथे आरे ,, ५०० धनुष्यकी ,, ,, सात हाथ की  
 पांचवें ,, ,, ७ हाथ की ,, ,, एक हाथ की  
 छठे ,, ,, १ ,, ,, ,, ,, मूढा हाथ की

उत्सर्पिणी काल में

पहिले आरे लगते मूढा हाथ की उतरते आरे १ हाथ की  
 दूसरे ,, ,, १ ,, ,, ,, ,, ७ हाथ की  
 तीसरे ,, ,, ७ ,, ,, ,, ,, ५०० हाथ की  
 चौथे ,, ,, ५०० धनुष्य की ,, ,, १ गाउ की  
 पांचवें ,, ,, १ गाउ की ,, ,, २ ,, ,,  
 छठे ,, ,, २ ,, ,, ,, ,, २ ,, ,,

मनुष्य वैकिय करे तो जपन्य अंगुल के संख्यातवें

भाग उत्कृष्ट लघु जोजन जाजेरी ( अधिक )

३ संघयन द्वार—संघयन छः ही पावे

४ संस्थान द्वार—संस्थान ,, ,, ,,

५ कषाय द्वारः—कषाय चार ,, ,,







## १७ उपयोग द्वार

उपयोग चार १ मति अज्ञान उपयोग २ अत अज्ञान उपयोग ३ चक्षु दर्शन उपयोग ४ अचक्षु दर्शन उपयोग

## १८ आहार द्वार

आहार दो प्रकार का—ओजसू, रोम० वे-सचित, अचित, मिश्र तीनों ही तरह का लेते हैं ।

## १९ उत्पत्ति द्वार

मनुष्य संमूर्द्धिम में आठ दण्डक का आवे १ पृष्ठा काय २ अप काय ३ वनस्पति काय ४ वे इन्द्रिय ५ श्री इन्द्रिय ६ चौरिन्द्रिय ७ मनुष्य ८ तिर्यच पंचेन्द्रिय ।

## २२ चयन द्वार

ये दश दण्डक में जावे—पांच एकेन्द्रिय तीन विक्रनेन्द्रिय मनुष्य और तिर्यच ।

## २० स्थिति द्वार

इनकी स्थिति जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर सुहूर्ने की।

२१ मरण द्वार—मरण दो प्रकार का—समोहिषा, असमोहिषा ।

२३ आगति द्वार—इन में दो गति का आवे—मनुष्य तिर्यच ।

२४ गति द्वार—दो गति में जावे—मनुष्य और तिर्यच



- ११ वेद ,, -इनमें वेद दो १ स्त्री वेद, २ पुरुष वेद ।  
 १२ पर्याप्ति द्वारः-इनमें पर्याप्ति ६, अपर्याप्ति ६ ।  
 १३ दृष्टि द्वारः- ॐ पांच देव कुरु, पांच उत्तर कुरु  
 में दृष्टि दो-१ सम्यग् दृष्टि २  
 मिथ्यात्व दृष्टि ।

पांच हरिवास पांच सम्पक वास, पांच हेमवय, पांच  
 हिरण्य वय-इन वीश अकर्मभूमि में व छप्पन्न अन्तरद्वीप  
 में दृष्टि १ मिथ्यात्व दृष्टि ।

१४ दर्शन द्वारः-इनमें दर्शन दो १ चक्षु दर्शन २  
 अचक्षु दर्शन ।

१५ ज्ञान द्वारः- ॐ पांच देव कुरु, पांच उत्तर कुरु  
 में दो ज्ञान-मति और श्रुत ज्ञान और  
 २ अज्ञान-मति अज्ञान और श्रुत  
 अज्ञान, शेष वीश अकर्म भूमि व  
 छप्पन्न अन्तर द्वीप में दो अज्ञान १  
 मति अज्ञान और २ श्रुत अज्ञान ।  
 १६ योग द्वार

इन में योग ११:-१ सत्य मन योग २ असत्य-मन  
 योग ३ मिथ्य मन योग ४ व्यवहार मन योग ५ सत्य

\* ३० अकर्म भूमि में २ दृष्टि २ ज्ञान तथा २ अज्ञान होते हैं और २१  
 अन्तर द्वीप में ही १ मिथ्यात्व दृष्टि व २ अज्ञान होने हैं ऐसा कई मथोमें  
 वर्णन आता है ।





## २० स्थिति द्वार

हेमवय, हिरण्य वय में जपन्य एक पन्य में देश उषी, उत्कृष्ट एक पन्य की ।

हरिवास रम्यक वास में जपन्य दो पन्य में देश उषी उत्कृष्ट दो पन्य की, देव कुरु उत्तर कुरु में जपन्य तीन पन्य में देश उषी उत्कृष्ट तीन पन्य की ।

छप्पन्न अन्तर द्वीप में जपन्य पन्य के असंख्यातवे माग में देश उषी उत्कृष्ट पन्य के असंख्यातवे भाग ।

## • २१ मरण द्वार

मरण २: - १ समोहिया और २ असमोहिया ।

## २३ आगति द्वार

इनमें दो गति का भावे- १ मनुष्य और २ त्रिपैष ।

## २४ गति द्वार

ये एक गति-मनुष्य में जावे ।

॥ इति युगलियों का बंटक संपूर्ण ॥

७७५५५५

## ❀ सिद्धों का विस्तार ❀

१ शरीर द्वार:-सिद्धोंके शरीर नहीं ।

२ अवगाहना द्वार:-५०० धनुष्य देयमान वाले नो सिद्ध हुवे हैं उनकी अवगाहना ३३३ धनुष्य और ३२ अंगुल ।

सात हाथ के जो सिद्ध हुवे हैं उनकी अवगाहना चार हाथ और सोलह अंगुल की ।

दो हाथ के जो सिद्ध हुवे हैं उनकी एक हाथ और आठ अंगुल की ।

३ संघयन द्वारः—सिद्ध असंघयनी ( संघयन नहीं ) ।

४ संस्थान द्वार— ,, असंस्थानी ( संस्थान नहीं ) ।

५ कषाय द्वार— ,, अरुमायी ( कषाय नहीं ) ।

६ संज्ञा ,, — ,, में संज्ञा नहीं ।

७ लेश्या ,, — ,, ,, लेश्या ,, ।

८ इन्द्रिय ,, — ,, ,, इन्द्रिय नहीं ।

९ समुद्घात,,— ,, ,, समुद्घात ,, ।

१० संज्ञी ,, — सिद्ध नहीं तो संज्ञी और न असंज्ञी ।

११ वेद ,, — सिद्ध में वेद नहीं ।

१२ पर्याप्ति द्वार—सिद्ध न पर्याप्ति है और न अपर्याप्ति है ।

१३ दृष्टि द्वार—सिद्ध—सम्यग् दृष्टि ।

१४ दर्शन द्वार—सिद्ध में केवल एक दर्शन—केवल दर्शन ।

१५ ज्ञान द्वारः—सिद्ध में केवल ज्ञान ।

१६ योग द्वारः—सिद्ध में योग नहीं ।

१७ उपयोग द्वारः—सिद्ध में उपयोग दो १ केवल ज्ञान २ केवल दर्शन ।

१८ आहार द्वारः—सिद्ध में आहार नहीं ।

१९ उत्पत्ति द्वारः— " " उत्पत्ति नहीं ।

२० स्थिति द्वारः-सिद्ध की आदि है परन्तु अन्त नहीं ।

२१ मरण द्वारः-सिद्ध में मरण नहीं ।

२२ चवन " :- सिद्ध चवते नहीं ।

२३ आगति " :-सिद्ध में एक गति-मनुष्य-का आवे ।

२४ गति " :- " " गति नहीं ।

ऐसे श्री सिद्ध भगवन्त को मेरा तीनों काल पर्यन्त नमस्कार हीवे ।

॥ इति श्री सिद्ध भगवन्त का विस्तार सम्पूर्ण ॥



—: ॥ इति चौबीस दण्डक सम्पूर्णः—





है जैसे राजा का मंडारी मंडार ( सजाना ) को रखता है ।

आठ कर्म की प्रकृति तथा आठ कर्मों का बन्ध कितने प्रकार से होता है व कितने प्रकार से वे भोगे जाते हैं, तथा आठ कर्मों की स्थिति आदिः—

### १ ज्ञानावरणीय कर्म

ज्ञानावरणीय कर्म की पांच प्रकृति १ मति ज्ञानावरणीय २ भ्रत ज्ञानावरणीय ३ अवधि ज्ञानावरणीय ४ मनःपर्यव ज्ञानावरणीय ५ केवल ज्ञानावरणीय ।

ज्ञानावरणीय कर्म छ प्रकारे बाँचे—१ नाश-प्रतिग्नियाए—ज्ञान तथा ज्ञानी का अवर्णवाद बले तो ज्ञानावरणीय कर्म बाँधे २ नाश निन्दवर्णियाए—ज्ञान देने बले के नाम को ज्ञिबावे तो ज्ञानावरणीय कर्म बाँधे ३ नाश अन्तःशेषण—ज्ञान में ( प्राप्त करने में ) अन्तःशेष ( बाधा ) बाले तो ज्ञानावरणीय कर्म बाँधे ४ नाश पटमेषण—ज्ञान तथा ज्ञानी पर ट्रेप करे तो ज्ञानावरणीय कर्म बाँधे ५ नाश आभाषणाए—ज्ञान तथा ज्ञानी की अमानता ( निरम्हार, निरादर ) करे तो ज्ञानावरणीय कर्म बाँधे ६ विमेषादक्षा ज्ञामेषण—ज्ञानी के माप छोटा ( झूटा ) विवाद को ज्ञानावरणीय कर्म बाँधे ।

॥ ज्ञानावरणीय कर्म १० प्रकारे भोगये ॥

१ धान ध रान २ धान विज्ञान भावाण ३ नेत्र



छ मदिने बाद फिर आवे उप समय डिब्बा जहां रक्ता होने वहां में लाकर घर में रखे पश्चात् काल करे। ऐसी निद्रा लेने वाला जीव मर कर नरक में जावे। इसे स्था-नर्द्धि निद्रा कहते है।

३ चक्षु दर्शनावर्णीय ७ अचक्षु दर्शना वर्णीय ८ अश्रुधि दर्शनावर्णीय ९ हवन दर्शनावर्णीय।

❀ दर्शना वर्णीय कर्म छ प्रकारे बांधे ❀

१ दमण पांडुगियाण-सम्यक्त्व तथा सम्यक्त्वी के अमणसाद धान ता दर्शनावर्णीय कर्म बांधे।

२ दमण निगद्वगियाण-बाध बीज सम्यक्त्व दाह क नाम का छिद्रा ध ता दर्शनावर्णीय कर्म बांधे।

३ दमण अतगयण-पाँद छोड़ समहित प्रवण व ता हा उम अन्तनाय दव ता दर्शनावर्णीय कर्म बांधे।

४ दमण पांडुनयण-समहित तथा सम्यक्त्वी के द्वय कर ता दर्शना वर्णीय कर्म बांधे।

५ दमण आस यणाण समहित तथा सम्यक्त्वी के असातना कर ता दर्शना वर्णीय कर्म बांधे।

६ दमण विभवयण साधना सम्यक्त्वी के सा सुटा व सुटा ककट कर ता दर्शना वर्णीय कर्म बांधे।

दर्शना वर्णीय कर्म नव प्रकारे बांधे

१ नद २ नद ३ प्रवत ४ प्रवता प्रवः





३ जीवाणु कंदियाण ४ सत्ताणु कंदियाण ५ बहुगुं पाण्णाणं  
 भूषणं जीवाणं मन्नाणं अद्गुण्णियाण ६ असोयणियाण  
 ७ अद्गुण्णियाण ८ अट्टोवणियाण ९ अपीट्टणियाण  
 १० अरिणियाणियाण ।

। असात्ता वेदनीय यात्त प्रकारे पांथे ।

११ वा दुग्णियाण १२ पर सोयणियाण १३ वा भुक्-  
 णियाण १४ अट्टोवणियाण १५ परपीट्टणियाण १६ वापरिण  
 वणियाण १७ बहुगुं पाण्णाणं भूषणं जीवाणं मन्नाणं कुयणि  
 याण १८ अद्गुण्णियाण १९ अद्गुण्णियाण २० ट्टोवणियाण २१  
 पीट्टणियाण २२ परिताणियाण ।

वेदनीय कर्म सोत्तद प्रकारे सोत्त उक्त सोत्त  
 प्रकृत अद्गुण्णियाण ।

वेदनीय कर्म करि विवन्ति शात्ता वेदनीय की  
 विवन्ति ज्ञानाय दा समाय की उद्गुण्णिय वद्गुण्णिय कोटा करोटी  
 म.समयव को, अद्गुण्णिय काल कर ना ज्ञानाय अन्तर सुद्गुण्णिय  
 का उद्गुण्णिय १॥ इति १॥ ॥ ॥

कर्म अद्गुण्णियाण अद्गुण्णियाण अद्गुण्णियाण अद्गुण्णियाण अद्गुण्णियाण  
 अद्गुण्णियाण अद्गुण्णियाण अद्गुण्णियाण अद्गुण्णियाण अद्गुण्णियाण  
 ( अद्गुण्णियाण ) अद्गुण्णियाण अद्गुण्णियाण अद्गुण्णियाण ( अद्गुण्णियाण )  
 अद्गुण्णियाण ।

अद्गुण्णियाण अद्गुण्णियाण अद्गुण्णियाण अद्गुण्णियाण अद्गुण्णियाण  
 अद्गुण्णियाण अद्गुण्णियाण अद्गुण्णियाण अद्गुण्णियाण अद्गुण्णियाण  
 अद्गुण्णियाण अद्गुण्णियाण अद्गुण्णियाण अद्गुण्णियाण अद्गुण्णियाण



- ६ " " मान-दृष्टिका स्थम्भ समान  
 ७ " " माया-मोटे के सींग समान  
 ८ " " लोम-नगर की गटर के कर्दम (कादा)

समान ।

इन चार की गति तिर्यच की, स्थिति एक वर्ष की,  
 घात करे देश व्रत की ।

९ प्रत्याख्याना वरणीय क्रोध-बेलु (रेत) की मीठ  
 (दीवार) समान

- १० " " मान-लकड़ के स्थम्भ समान  
 ११ " " माया-गौमुत्रिका (बेल क्षुतर्षी) समान  
 १२ " " लोम-गाडा का आजन (कज्जल) "

इन चार की गति -मनुष्य की, स्थिति चार माह की,  
 घात करे माघुष्य की ।

१३ संज्वलन को क्रोध-जल के भन्दर लकीर समान

- १४ " " मान-वृण के स्थम्भ समान  
 १५ " " माया- वांग की छोई (खिलका) समान  
 १६ " " लोम -पतंग तथा हलदी के रंग समान

इन चार की गति दर की, स्थिति पन्द्रह दिनों की,  
 घात करे केवल व्रत की ।

१ न. कषाय चारित्र्य माहर्तय की नव प्रकृति ।

२ इन्द्रिय - रीति ३ आर्ति ४ मय ५ शांति ६ दुःखेच्छा

७ श्री वद ८ पुरुष वद ९ नपुंसक वद ।

ॐ मोहनोय कर्म के प्रकारों का विवरण ॐ

१ मोहनोय के तीन भाग हैं मोहन भाग ४ मोहन  
 भाग ५ मोहन भाग मोहनोय के तीन भागों में मोहनोय ।

ॐ मोहनोय कर्म के प्रकारों का विवरण ॐ

१ मन्वन्तरीय मोहनोय २ विष्णुवन्तरीय मोहनोय ३ मन्वन्तरीय  
 विष्णुवन्तरीय ( मन्वन्तरीय ) मोहनोय ४ मन्वन्तरीय विष्णुवन्तरीय  
 मोहनोय ५ मन्वन्तरीय विष्णुवन्तरीय मोहनोय ।

॥ मोहनोय कर्म की स्थिति ॥

उपरोक्त कर्म के द्वारा जो उन्मत्त ७० करोड़ों करोड़  
 मन्वन्तरीय की, मन्वन्तरीय काल उपरोक्त कर्म के द्वारा जो  
 उन्मत्त मन्वन्तरीय काल के ।

ॐ आयुष्य कर्म का विस्तार ॐ

आयुष्य कर्म की चार प्रकृतियाँ:- १ नरक का आयुष्य  
 विष्णु का आयुष्य २ मनुष्य का आयुष्य ३ देव का आयुष्य ।

आयुष्य कर्म सोलह प्रकारों का विवरण

१ नरक का आयुष्य चार प्रकारों का विवरण है आयुष्य  
 चार प्रकारों का विवरण २ मनुष्य का आयुष्य चार प्रकारों का विवरण  
 ३ देव का आयुष्य चार प्रकारों का विवरण ।

नरक आयुष्य चार प्रकारे बांधे—१ महा आत्मन  
२ महा पण्डित ३ महा मांस का आहार ४ पंचेन्द्रिय बध।

तिर्यक आयुष्य चार प्रकारे बांधे—१ कपट २ महा  
कपट ३ मृषावाद ४ खोटा तेल खोटा माप।

मनुष्य आयुष्य चार प्रकारे बांधे—१ भद्र प्रकृति  
२ भिनय प्रकृति ३ मानुकोप दया ) ४ अमत्सर ( इपां  
रहित )।

देव आयुष्य चार प्रकारे बांधे—१ सराग संयम २ संयमा  
संयम ३ बालनपोष कर्म ४ अकाम निर्जरा।

। आयुष्य कर्म चार प्रकारे भोगवे।

१ नर्म्ये नरक ।। भोगवे २ निर्वैव, निर्वैव का भोगवे  
३ मनुष्य, नुष्य क भोगवे ४ देव, देव का भोगवे।

आयुष्य कर्म की स्थिति

नरक व देव की स्थिति जयन्त्य दश हजार वर्ष और  
अन्तर मूर्त्त की उच्छृष्ट तीर्थ सागर और कंगोड पूरे का  
तीर्थ सागर अधिक।

मनुष्य व निर्वैव की स्थिति जयन्त्य अन्तर मूर्त्त की  
उच्छृष्ट तीन वर्ष और कंगोड पूरे का तीर्थ सागर अधिक।

नाम कर्म का स्थिति

न न न न न न न न - - - गुण न म न अगुण नाम



(३) शरीर नाम के पांच भेदः—१ औदारिक शरीर  
२ वैक्रिय शरीर ३ आहारिक शरीर ४ तैजस् शरीर ५  
कार्मण शरीर ।

(४) शरीर अंगोपांग के तीन भेदः—१ औदारिक शरीर  
अंगोपांग २ वैक्रिय शरीर अंगोपांग ३ आहारिक शरीर  
अंगोपांग ।

(५) शरीर बंधन नाम के पांच भेदः—१ औदारिक  
शरीर बंधन २ वैक्रिय शरीर बंधन ३ आहारिक शरीर बंधन  
४ तैजस् शरीर बंधन ५ कार्मण शरीर बंधन ।

(६) शरीर संघात करणं नाम के पांच भेदः—१ औदारिक  
शरीर संघात करणं २ वैक्रिय शरीर संघात करणं ३  
आहारिक शरीर संघात करणं ४ तैजस् शरीर संघात  
करणं ५ कार्मण शरीर संघात करणं ।

(७) संघयन नाम के छः भेदः—१ वज्र श्लेषम नाराच  
संघयन २ श्लेषम नाराच संघयन ३ नाराच संघयन ४  
अधे नाराच संघयन ५ कीलिका संघयन ६ मेवर्ति संघयन ।

(८) संस्थान नाम के ६ भेदः—१ समचतुरस्र संस्थान  
व्यग्रोद्य परिमंडल संस्थान ४ कुञ्ज संस्थान ५ वामन सं-  
स्थान ६ श्रुंढर संस्थान; ३६

(९) वर्ण नाम के पांच भेदः—१ कृष्ण २ नील ३ रक्त  
४ पीत ५ श्वेत, ४१

१ - शरीर नाम के पांच भेदः १ औदारिक शरीर २ वैक्रिय शरीर ३ आहारिक शरीर ४ तैजस् शरीर ५ कार्मण शरीर; ३६





से प्रवर्तवि २ भाषा की सरलता-वचन के योग अन्वये प्रकार  
से प्रवर्तवि ३ भाव की सरलता-मन के योग अन्वये  
प्रकार से प्रवर्तवि ४ अवलेश कारी प्रवर्तन छोटा व मूढ़  
विवाद नहीं करे ।

अशुभ नाम कर्म चार प्रकारे षधि-१ काया की  
वक्रता २ भाषा की वक्रता ३ भाव की वक्रता ४ क्रूरकारी  
प्रवर्तन ।

॥ नाम कर्म २८ प्रकारे भोगवे ॥

शुभ नाम कर्म १४ प्रकारे भोगवे-१ इष्ट शब्द  
२ इष्ट रूप ३ इष्ट गंध ४ इष्ट रस ५ इष्ट स्पर्श ६ इष्ट गति  
७ इष्ट स्थिति ८ इष्ट लावण्य ९ इष्ट यशो कीर्ति १० इष्ट  
उत्थान, कर्म बल वीर्य पुरुषाकार पराक्रम ११ इष्ट स्वर  
१२ कांत स्वर १३ पिय स्वर १४ मनोज्ञ स्वर ।

अशुभ नाम कर्म १४ प्रकारे भोगवे-१ अनिष्ट  
शब्द २ अनिष्ट रूप ३ अनिष्ट गंध ४ अनिष्ट रस ५ अ-  
निष्ट स्पर्श ६ अनिष्ट गति ७ अनिष्ट स्थिति ८ अनिष्ट  
लावण्य ९ अनिष्ट यशो कीर्ति १० अनिष्ट उत्थान, कर्म  
बल वीर्य पुरुषाकार पराक्रम ११ हीन स्वर १२ दीन स्वर  
१३ अनिष्ट स्वर १४ अकान्त स्वर ।

नाम कर्म की स्थिति जघन्य आठ मुहूर्त की उत्कृष्ट  
बीश कगेडा कगेड़ी मागगेपम की, अवाधा काल दो हजार  
वर्ष का ।



उक्त नाम कर्म की सोलह प्रकृति के समान ही सोलह प्रकारे भोगवे ।

गौत्र कर्म की स्थिति:-जपन्य आठ सुहृत् की उत्कृष्ट तीश करोडा करोड सागरोपम की, अबाधा काल दो हजार वर्ष का ।

### ८ अन्तराय कर्म का विस्तार

अन्तराय कर्म की पांच प्रकृति:-१ दानांतराय २ लाभान्तराय ३ भोगान्तराय ४ उपभोगान्तराय ५ वीर्यान्तराय ।

अन्तराय कर्म पांच प्रकारे पांचे-ऊपर समान ।

अन्तराय कर्म पांच प्रकारे भोगवे-ऊपर समान ।

अन्तराय कर्म की स्थिति-जपन्य अन्तर सुहृत् की, उत्कृष्ट तीश करोडा करोड सागरोपम की, अबाधा काल तीन हजार वर्ष का ।

॥ इति आठ कर्म का विस्तार सम्पूर्ण ॥





मवनं पति, वाण व्यन्तर, ज्योतिषी, पहिला दूमा देव लोक में अंतर पड़े तो जघन्य एक समय उत्कृष्ट चोवीश मुहूर्त का, तीसरे देव लोक में अंतर पड़े तो जघन्य एक समय उत्कृष्ट नव दिन और वीश मुहूर्त का ।

चांधे देव लोक में अंतर पड़े तो जघन्य एक समय उत्कृष्ट बारह दिन और दश मुहूर्त का ।

पांचवे देव लोक में अंतर पड़े तो जघन्य एक समय उत्कृष्ट साढ़ा बावीश दिन का ।

छठे देव लोक में अंतर पड़े तो जघन्य एक समय उत्कृष्ट पैंतालीश दिन का ।

मातवे देवलोक में अंतर पड़े तो जघन्य एक समय उत्कृष्ट अस्सी दिन का ।

आठवे देवलोक में अंतर पड़े तो जघन्य एक समय उत्कृष्ट सो दिन का ।

नववे, दशवे देवलोक में जघन्य एक समय उत्कृष्ट संख्याता माह का, द्वादशवे बारहवे देवलोक में जघन्य एक समय उत्कृष्ट संख्याता वर्ष का, त्रिंशद्वेक की पहली श्रेणी में अंतर पड़े तो जघन्य एक समय ११ उत्कृष्ट संख्याता सो वर्ष का, त्रिंशद्वेक की दूसरी श्रेणी में ज० एक समय ३० संख्याता हजार वर्ष का त्रिंशद्वेक की तीसरी श्रेणी में ज० एक समय ३० संख्याता लक्ष वर्ष का चार अनुचर " " " " " अन्य के अमंख्यातवे भाग

पांचवें न्याये मिद्ध विमान में ३० ए.क. समय ३० संतरावरे  
भाग ।

पांच एकेन्द्रिय में संतरा नहीं पड़े ।

तीन विश्वेन्द्रिय शीघ्र विषय समुद्धिम में संतरा पड़े  
तो जपन्य एक समय उन्हे संतरा सुर्त का ।

विषय गर्भज व मनुष्य गर्भज में जपन्य एक समय  
उन्हे पारत सुर्त का । मनुष्य समुद्धिम में जपन्य एक  
समय उन्हे चौबीस सुर्त का ।

तिद्ध में संतरा पड़े तो जपन्य एक समय उन्हे छ  
नाद का । इसी प्रकार मिद्ध को छोड़कर शेष में पवने का  
संतरा उभ उत्रन होने के संतरा समान जानना ।

ॐ तीसरा ससंतरा निरंतर द्वारा ॐ

न संतरा अर्थात् संतरा सहित, निरंतर अर्थात् संतरा  
रहित उत्पन्न होवे ।

पांच एकेन्द्रिय के पांच दण्डक छोड़कर शेष उन्नीस  
दण्डक में तथा मिद्ध में ससंतरा तथा निरंतर उत्पन्न होवे ।

पांच एकेन्द्रिय के पांच दण्डक में निरंतर उत्पन्न होवे  
ऐसे ही उद्भवते । पवने का । जानना । मिद्ध के ( छोड़कर )

४ एक समय में जिस षोडश में कितने उत्पन्न  
होवे व नंबर उत्रना दूर ।

तक, २७. तीन विकलेन्द्रिय, ३०. तिर्यच समूर्द्धिम, २. तिर्यच गर्भज, ३२. मनुष्य समूर्द्धिम, ३३ इन तर्तुश में एक समय में जघन्य एक, दो, तीन उत्कृष्ट उपजे तो असंख्याता उपजे। नवशां, दशवां, इग्यारवां, व बारहवां देवलोक ये चार देवलोक ४, नव श्रीयवेक, १३, पांच अनुत्तर विमान १८ मनुष्य गर्भज १६ इन उन्नीश बोल में जघन्य एक समय में एक, दो, तीन उत्कृष्ट संख्याता उपजे, पृथ्वी, अप, अग्नि, वायु, इन चार एकेन्द्रिय में समय समय असंख्याता उपजे वनस्पति में समय समय असंख्याता ( यथास्थाने ) अनंता उपजे ।

सिद्ध में एक समय में जघन्य एक, दो, तीन उत्कृष्ट एक सो आठ उपजे ऐसे ही उद्द्वर्तन ( चवन ) सिद्ध को छोड़ कर शेष सर्व का जानना ( उत्पन्न होने के समान ) ।

पांचधा कत्तो ( कहां से आवे ), छुटा उद्द्वर्तन ( चव कर जावे ) ये दोनों द्वार ।

५६. में से जिस जिस बोल के थाकर उत्पन्न होवे वो आगति और चव कर ५६३ में से जिस जिस बोल में जावे वो गति ( उद्द्वर्तन )

( १ ) पहली नरक में २५ बोल की आगति १५ कर्म भूमि, ५ मंज्री तिर्यच, ५ अमंज्री तिर्यच पंचेन्द्रिय ये २५





भूमि और १ जलवर एवं १६ बोल इसमें ही मर का नहीं आती है केवल पुरुष तथा नपुंसक मरकर आते हैं। गति दश बोल की--पांच संज्ञी तिर्यच का पर्यासा और अपर्यासा ।

२५ मयन पति और २६ वाण उपन्तर इन ५१ जाति के देवताओं में आगति १११, बोल की-१०१, संज्ञी मनुष्य का पर्यासा, पांच संज्ञी तिर्यच पंचन्द्रिय और पांच असंज्ञी तिर्यच एवं १११ का पर्यासा । गति ४१ बोल की-१५ कर्म भूमि, पांच संज्ञी तिर्यच, बड़ा पृथ्वी काय, वादर अपकाय, वादर वनहरति काय एवं तेषीश का पर्यासा और अपर्यासा ।

ज्यातिपी और पहेला देवलोक में ५० बोल की आगति-१५ कर्म भूमि, ३० अकर्म भूमि, ५ संज्ञी तिर्यच एवं ५० का पर्यासा । गति ४६ बोल की मयनपति समान ।

दूसरा देवलोक में ४० बोल की आगति-११ कर्म भूमि, पांच संज्ञी तिर्यच ये २० और ३० अकर्म भूमि में ये पांच हेम वय और पांच दिग्ग वय छोट शेष २० अकर्म भूमि एवं ४० बोल का पर्यासा । गति ४६ बोल की मयन पति समान ।

बदला त्रिचर्या म ३० बोल की आगति १५ कर्म भूमि, ३ संज्ञी तिर्यच, ३ अकर्म भूमि, ४ उल्ला वृक्ष एवं ३० का पर्यासा । गति ४६ बोल की मयन पति समान ।



तीन विकलेन्द्रिय ( घेन्द्रिय, श्रोत्रेन्द्रिय, चौरिन्द्रिय )  
की आगति १७६ बोल की ऊपर समान । गति १७६  
बोल की ऊपर समान ।

असंज्ञी तिर्यच की आगति १७६ बोल की-१०१  
संमूर्द्धिम मनुष्य का अपर्याप्ता, १५ कर्म भूमि का अपर्याप्ता  
और पर्याप्ता और ४८ जाति का तिर्यच एवं १७६ बोल ।  
गति ३६५ बोल की-५६ अन्तर द्वीप, ५१ जाति  
का देव, पहेली नरक इन १०८ का अपर्याप्ता और  
पर्याप्ता ये २१६ और ऊपर कहे हुवे १७६ एवं ३६५ बोल ।

संज्ञी तिर्यच की आगति २६७ बोल की-८१ जाति  
का देव ( ६६ जाति के देवताओं में से ऊपर के चार देव  
लोक नव प्रीयवक, ५ अनुत्तर दिमान एवं १८ छोड़ शेष  
८१ जाति का देव ) गति नरक का पर्याप्ता ये ८८ और  
ऊपर कहे हुवे १७६ एवं २६७ बोल ।

गति पाँचों की अलग अलग

(१) जलचर की ५२७ बोल की- ५६३ में से नववे देव  
लोक से मंत्रांधे सिद्ध तक १८ जाति का देव का अपर्याप्ता  
और पर्याप्ता एवं ३६ बोल छोड़ शेष ५२७ बोल ।

२ उत्तर ( मर्ष ) की ५२३ बोल की- उत्तर ५२७  
में भे छड़ी और मानवी नरक का अपर्याप्ता और पर्याप्ता  
ये चार बोल छोड़ शेष ५२३ बोल ।

३, इन्द्रचर की ५२३ बोल की- ५२३ में से पाँचवीं  
नरक का अपर्याप्ता और पर्याप्ता ये दो बोल छूटाने ।



की १२४ बोल की-उक्त १२६ बोल में से दूसरे देव लोक का अपर्याप्ता और पर्याप्ता घटाना ।

५६ अंतर द्वीप के युगलियों की २५ बोल की आगति-१५ कर्म भूमि, ५ संज्ञी तिर्य्यच, ५ असंज्ञी तिर्य्यच एवं २५ गति १०२ बोलकी- २५ भवन पति, २६ वायव्यन्तर,-इन ५१ का अपर्याप्ता और पर्याप्ता एवं १०२ से २२ बोल सम्पूर्ण इन २२ बोल में चौबीस दण्डक की गता गति कहा गई है ।



नव उत्तम पदवी में से मांडलिक राजा छोड़ शेष आठ पदवीधर मिथ्यात्वी तथा तीन वेद-एवं १२ बोल की गतागति—

(१) तिर्य्यकर की आगति ३८ बोल की-वैमानिक का ३५ भेद व पहली दुसरी, तीसरी नरक एवं ३८, गति मोक्ष की ।

(२) चन्द्रगति की आगति ८२ बोल की-६६ जाति के देव में से-१५ परमाधर्मी, तीन किन्दरिपी-ये १८ छोड़ शेष ८१ व पहली नरक एवं ८२, गति १४ बोल की-सात नरक का अपर्याप्ता और पर्याप्ता एवं १४ ( यदि देव हीसा नेत्रे ना गति देव की या मोक्ष की )

(३) वायुदेव की आगति ३२ बोल की- १२ देवलोक

६ लोकांतिक, नव ग्रीयवेक, व पहेली दूसरी नरक एवं ३२।  
गति १४ बोल की-सात नरक का अपर्याप्ता और पर्याप्ता ।

(४) चलदेव की आगति ८२ बोल की-चक्रवर्ति के  
८२ बोल कहे वो और एक दूसरी नरक एवं ८३। गति ७०  
बोल की-वैमानिक के ३५ भद्र वा अपर्याप्ता और पर्याप्ता  
एवं ७० ।

(५) केवली की आगति १०८ बोल की-६६जाति के  
देव में से-१५ परमाधर्मी और तीन किलिरीपी एवं १८  
घटाना-शेष ८१ बोल, और १५ कम भूमि, ५ संज्ञी तिर्यच,  
पृथ्वी, जप, वनस्वति, पहेली, दूसरी, तीसरी व चौथी  
नरक एवं ( ८१+१५+५+१+१+१×३ ) १०८ बोल  
का पर्याप्ता, गति मोच की ।

(६) माधु की आगति २७५ बोल की-ऊपर के १७६  
बोल में से तेजस् वायु का आठ बोल छेड शेष १७१ बोल,  
६६ जाति के देव, व पहेली नरक में पांचवी करक तक  
( १७१+६६+५ ) एवं २७५ बोल । गति ७० बोल की  
चलदेव समान ।

(७) आवक की आगति २७३ बोल की-माधु के २७५  
बोल व छठी नरक का पर्याप्ता एवं २७३ बोल ।

गति ७० बोल की-७० बोल के ७० बोल का नरक इन  
७१ का अपर्याप्ता और ७० बोल का पर्याप्ता  
= ७० बोल व गति ७० बोल का नरक इन ७० बोल का

जाति के देव का पर्याप्ता, १०१ संज्ञी मनुष्य का पर्याप्ता, १०१ संमूर्द्धिम मनुष्य का अपर्याप्ता १५ कमे भूमि का अपर्याप्ता, सात नरक का पर्याप्ता, तिर्यच के ४८ भेद में से तेजस् वायु का आठ बोल छोड़ शेष ४० एवं (६६+१०१+१०१+१५+७+४०) ३६३ बोल + गति २५८ की-६६ जाति का देव, १५ कमे भूमि, संज्ञी तिर्यच, ६ नरक-इन १२५ का अपर्याप्ता और पर्याप्ता एवं २५० तीन विकलेन्द्रिय का अपर्याप्ता और ५ तिर्यच का अपर्याप्ता एवं २५८ ।

(६) मिथ्यात्व द्रष्टि की आगति ३७१ बोल की जाति का देव और ऊपर कहे हुवे १७६ बोल एवं २ सात नरक का पर्याप्ता और ८६ जाति का युगलिया का पर्याप्ता एवं ३७१ बोल । गति ५५३ की:- ५६३ बोल में से पांच अनुत्तर विमान का अपर्याप्ता और पर्याप्ता ये १० छोड़ शेष ५५३ ।

(१०) स्त्री वेद की आगति ३७१ बोल की मिथ्या द्रष्टि समान । गति ५६१ बोल की-सातवीं नरक का अपर्याप्ता और पर्याप्ता ये दो बोल छोड़ ( ५६३-२ ) शेष ५६१

(११) पुरुष वेद की आगति ३७१ बोल की मिथ्या द्रष्टि की आगति समान । गति ५६३ की ।

(१२) नपुंसक वेद की आगति २८५ बोल की:-

X कोई २ १२२ की भी मानन है-१५ परमा व नी और ३ किरियी के पर्याप्ता और अपर्याप्ता एवं ३६ छोड़ कर ।





छोड़ते हैं—१ जाति २ गति ३ स्थिति ४ अवगाहना  
५ प्रदेश और ६ अनुभाव ।

### ⊗ आठवाँ आकर्षण द्वार ⊗

तथाविध प्रयत्न करके कर्म द्रुल का प्रदण काने व  
खेचने को आकर्षण कहते हैं जैसे गाय पानी पीते समय  
भय से पीछे देखे व फिर पीवे वैसे ही जीव जाति निद्र-  
तादि आयुष्य को जघन्य एक, दो, तीन उत्कृष्ट आठ  
आकर्षण करके बांधता है ।

आकर्षण का अन्य तथा बहुत्व

सब से थोड़ा जीव आठ आकर्षण से जाति निद्रतः  
युष्य को बांधने वाले, उससे सात से बांधने वाले संख्यात  
गुणा, उससे छ से बांधने वाले संख्यात गुणा, उससे  
पाँच से बांधने वाले संख्यात गुणा उससे चार से बांधने  
वाले संख्यात गुणा उससे तीन से बांधने वाले संख्यात  
गुणा, उससे दो से बांधने वाले संख्यात गुणा उससे एक  
से बांधने वाले संख्यात गुणा ।

॥ इति गतागति सम्पूर्ण ॥





'महंगाय 'मिगा, 'तुड़ियंगा 'दीव 'जोड़े 'चितगा,  
'चितरसा 'मणवेगा, 'गिहगारा 'अनियगणाउ ।

अर्थ—१ ' मटङ्ग वृक्ष 'जिससे मधुर फल प्राप्त होते हैं २ ' मिङ्गा वृक्ष ' से रत्न जड़ित सुवर्ण मोजन (वात्र) मिलते हैं ३ ' तुड़ियङ्गा वृक्ष ' से ४६ जाति के ( वाजित्र ) के मनोहर नाद सुनाई देते हैं ४ 'दीव वृक्ष' रत्न जड़ित दीपक समान प्रकाश होता है ५ जोवि वृक्ष रात्रि में सूर्य समान प्रकाश करते हैं ६, चितरसा वृक्ष से सुगंधी फूलों के भूषण प्राप्त होते हैं ७ 'चितरसा' वृक्ष से ( १८ प्रकार के ) मनोज्ञ मोजन मिलते हैं ८ 'मनोवेगा' से सुवर्ण रत्न के आभूषण मिलते हैं ' गिहगारा ' वृक्ष से ४२ भंजल के महल मिल जाते हैं १० ' अनिय गणाउ ' वृक्ष से नाक के श्वास से उड़ जावे ऐसे महीन ( पतले व उच्चम वस्त्र प्राप्त होते हैं । प्रथम धारे के स्त्री पुरुष का आयुष्य जय छे महीने का शेष रहता है उस समय युगलिये परभव का आयुष्य बांधते हैं और तब युगलनी एक पुत्र पुत्री के जोड़े को प्रसूतती ( जन्म देती ) है । उन बच्चे बच्ची का ४६ दिन तक पालन करने बाद वे होशियार हो दम्पती बन सुखोपमोगानुभव करते हुवे विचरते हैं और युगल युगलनी का दृष्य मात्र भी वियोग नहीं होता है उनके माता पिता एक को छीक और दूसरे को उषारुआ आने ही भर कर देव गति में जाते

हैं। ( क्षेत्राधिष्ठित ) देव उन युगल के मृतक शरीर को क्षीर सागर में प्रक्षेप कर मृत्युमंस्वार ( मरण क्रिया ) करते हैं। गति एक देव की।

इस आरे में वर नहीं, ईर्ष्या नहीं, जरा ( युटापा ) नहीं, रोग नहीं, कुरूप नहीं, परिपूर्ण अंग उपांग पाकर सुख भोगते हैं ये सद्य पूर्व भव के दान पुन्यादि सत्कर्म का फल जानना। ॥ इति प्रथम आरा संपूर्ण ॥

### ✽ दूसरा आरा ✽

(२) उक्त प्रकार प्रथम आरे की समाप्ति होते ही तीन करोड़ करोड़ी सागरोपम का ' सुखमा ' ( केवल सुख ) नामक दूसरा आरा आरम्भ होता है उस वक्त पहिले से बर्ष, गंध, रस, स्पर्श के पुद्गलों की उत्तमता में अनन्त शुष्की होनता हो जाती है इस आरे में मनुष्य का देहमान दो कोस का व आयुष्य दो पन्धोपम का होता है। उतरते आरे एक कोस का शरीर व एक पन्धोपम का आयुष्य रह जाता है घट कर पांसलिये केवल १२८ रह जाती है व उतरते आरे ६४। मनुष्यों में वन ऋषम नाराच संघयन व ममचतुर्भ्र संस्थान होता है इस आरे के मनुष्यों को आहार की रूद्धा दो दिन के अन्तर से होती है तब शरीर प्रमाथे आहार करते हैं। पृथ्वी का स्वाद शकरी जैसा रह जाता है व उतरते आरे मुद्ग जैसा

इस आरे में दश प्रकार के कर्मपुत्र दश प्रकार का मन्त्र  
 वाञ्छित सुख देते हैं (पहेला आरा समान) मृत्यु के  
 माहिने जब शेष रहते हैं तब युगलनी एत पुत्र पुत्री  
 प्रसव करती है बच्चे बच्ची का ६४ दिन पालन किये  
 वे (पुत्र पुत्री) दम्पती वन सुखोपभोग करते हुवे विप  
 हैं और उनके माता पिता एक को छोड़ कर और दूसरे  
 उबासी आते ही नरक में गति में जाते हैं क्षेत्राधिपति  
 देव इन के एक शरीर को चौर सागर में डाल कर मृत्यु  
 क्रिया करते हैं । गति एक देव की । इस आरे में ईश्वर  
 नहीं, वैर नहीं, जरा नहीं, रोग नहीं, कुरुप नहीं, परिश्रम  
 अङ्ग उपाङ्ग पाप सुख भोगते हैं । ये सब पूर्ण भव  
 दान पुण्यादि सत्कर्म का फल जानना । ॥ इति दूसरा  
 आरा सम्पूर्ण ॥

### ❀ तीसरा आरा ❀

(३) यों दूसरा आरा समाप्त होते ही दो करोड़ करो  
 सागरोपम का 'सुखमा दुःखमा' (सुख बहुत दुःख थोड़ा)  
 नामक तीसरा आरा शुरु होता है तब पहिले से वर्ण म  
 रस स्पर्श की उच्चमता में हीनता हो जाती है । क्रम  
 घटते घटते मनुष्यों का देहमान एक गाउ (कोश)  
 व आयुष्य एक पन्धरोपम का रह जाता है उतरते आरे ५  
 घनुष्य का देहमान व करोड़ पूर्व का अयुष्य रह जाता



तीसरे आरे की समाप्ति में चौरासी लाख वर्ष व साढ़े आठ माह जब शेष रह जाते हैं उस समय सर्वार्थसिद्ध विमान में ३३ सागरोपम का आयुष्य कर कर तथा वहां से चव कर वनिता नगरी के अन्दर नाविक राजा के यहाँ मरुदेवी रानी की कुचि (कोख) में श्री ऋषम देव स्वामी उत्पन्न हुवे । ( माताने ) प्रथम का स्वप्न देखा इससे ऋषम देव नाम रखा गया युगलिया धर्म मिटा कर १ अक्षि २ मसि ३ कुचि दिक ७२ कला पुरुष को सिखाई व ६४ कला स्त्री वींश लाख पूर्व तक आप कौमार्य अवस्था में रहे ६३ लाख पूर्व तक राज्य शासन किया । पश्चात् भरत को राज्य भार सौंप कर आपने ४ हजार पुरुषों के साथ दांघा ग्रहण की । संयम लेने के एक हजार वर्ष बाद आपने केवल ज्ञान उत्तरण हुवा इस प्रकार छत्रस्थ व केवल अवस्था में आप कुल मिला कर एक लाख पूर्व तक संयम पाल कर अष्टापद पर्वत पर पद्य आसन से स्थित हो ७ हजार साधु के परिवार से निर्वाण पद को प्राप्त हुवे । भगवंत के पांच कन्याणीक उत्तरापाढा नक्षत्र में हुवे १ पदला कन्याणीक, उत्तरापाढा नक्षत्र में सर्वार्थसिद्ध विमान से चव कर मरु देवी रानी की कुचि में उत्पन्न हुवे २ दूमरा कन्याणीक, उत्तरापाढा नक्षत्र में आपका जन्म हुवा । ३ कन्याणीक, उत्तरापाढा नक्षत्र में राज्यासन प





चलायमान हुआ तब शकेन्द्र ने उपयोग द्वारा मत्स्य  
 किया कि श्री महावीर स्वामी भिक्षुक कुल के भद्र  
 उत्पन्न हुए हैं । ऐसा जान कर शकेन्द्र ने हरिश्च  
 गमेपी देव को बुला कर कहा कि तुम जाकर चौर  
 कुंड के अन्दर, सिद्धार्थ राजा के यहाँ, त्रिशला देवी  
 रानी की कुक्षि ( कोंख ) में श्री महावीर स्वामी का गर्भ  
 प्रवेश करो और जो गर्भ त्रिशला देवी रानी की कोंख में  
 उसे लेजाकर देवानन्दा ब्राह्मणी की कोंख में रखो।  
 इस पर हरिश्च गमेपी आज्ञानुसार उसी समय माहण कुंड  
 नगरी में आया व आकर भगवंत को नमस्कार कर के  
 बोला " हे स्वामी आपको मली भाँति विदित है कि मैं  
 आपका गर्भ हरण करने आया हूँ " इस समय देवानन्दा  
 को अवस्वापिनि निद्रा में डाल कर गर्भ हरण किया व  
 गर्भ को लेजाकर चत्रीय कुंड नगर के अन्दर सिद्धार्थ  
 राजा के यहाँ, त्रिशला देवी रानी की कोंख में रखा।  
 त्रिशला देवी रानी की कोंख में जो पुत्रो थी उसे लेजाकर  
 देवानन्दा ब्राह्मणी की कोंख में रखली। पश्चात् सवा नव  
 मास पूर्ण होने पर भगवंत का जन्म हुआ। दिन प्रति  
 दिन बढ़ने लगे व अनुक्रम से यौवनावस्था को प्राप्त हुवे  
 तब यशोदा नामक राजकुमारी के साथ आपका पार्थिव  
 ग्रहण हुआ। सांसारिक सुख भोगने हुवे आप के एक पुत्र  
 उत्पन्न हुई जिसका नाम प्रियदर्शना रखला गया। आ



कन्याणीक उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में हुवे १ पहेला कन्या-  
 णीक--दशवें प्राणत देवलोक से चव कर देवानन्दी की  
 कोख में जब उत्पन्न हुवे तब २ दूसरे कन्याणीक में सर्व  
 का हरण हुवा ३ तीसरे कन्याणीक में जन्म हुवा ४ चारवें  
 कन्याणीक में दीघा ग्रहण की और पांचवें कन्याणीक में  
 केवल ज्ञान प्राप्त हुवा । स्वाति नक्षत्र में भगवन्त मोक्ष  
 पधारे । इस आरे में गति पांच जानना । श्री महावीर स्वामी  
 मोक्ष पधारे उसी समय गौतम स्वामी को केवल ज्ञान  
 उत्पन्न हुवा व चारह वर्ष पर्यन्त केवल प्रवर्ज्यो पाल कर  
 गौतम स्वामी मोक्ष पधारे । उसी समय श्री सुधर्मा स्वामी  
 को केवल ज्ञान उत्पन्न हुवा जो आठ वर्ष तक केवल  
 प्रवर्ज्यो पालकर मोक्ष पधारे । उसी समय श्री जम्बू  
 स्वामी को केवल ज्ञान प्राप्त हुवा । इन्होंने ४४ वर्ष तक  
 केवल प्रवर्ज्यो पाली व पश्चात् मोक्ष पधारे एवं सर्व  
 मिलाकर श्री महावीर स्वामी के मोक्ष पधारने बाद ६४  
 वर्ष तक केवल ज्ञान रहा पश्चात् विच्छेद ( नष्ट ) गया ।  
 इस आरे में जन्मे हुवे को पांचवें आरे में मोक्ष  
 मिल सक्ता है परन्तु पांचवें आरे में जन्मे हुवे को  
 पांचवें आरे में मोक्ष नहीं मिल सक्ता । श्री जम्बू स्वामी  
 के मोक्ष पधारने के बाद दश बोल विच्छेद हुवे--१ परम  
 अरवि ज्ञान २ मनः पर्यव ज्ञान ३ केवल ज्ञान ४ परिहा  
 विशुद्ध चारित्र्य ५ शुद्ध मंत्राय चारित्र्य ६ यथाख्यात



- ३ सुकुलोत्पन्न दाम दासी होवे ।
- ४ प्रधान ( मंत्री ) लालची होवे ।
- ५ यम जैसे क्रूर दंड, दाता राजा होवे ।
- ६ कुलीन स्त्री रुजा रहित ( दुराचारिणी ) होवे ।
- ७ कुलीन स्त्री बेरया समान कर्म करने वाली होवे ।
- ८ पिता की आज्ञा भंग करने वाला पुत्र होवे ।
- ९ गुरु की निन्दा करने वाला शिष्य होवे ।
- १० दुर्जन लोग सुखी होवे ।
- ११ सज्जन लोग दुखी होवे ।
- १२ दुर्मिच अकाल बहुत होवे ।
- १३ सर्प बिच्छु, दंश मांकुषादि छुद्र जीवों की उत्पत्ति बहुत होवे ।
- १४ माद्वय लोभी होवे ।
- १५ रिंसा धर्म प्रवर्तक बहुत होवे ।
- १६ एक मृत के अनेक मशान्तर होवे ।
- १७ मिथ्यास्वी देव बहुत होवे ।
- १८ मिथ्यास्वी लोग की शृष्टि होवे ।
- १९ लोगों को देव दर्शन दुर्लभ होवे ।
- २० दैताटय गिरि के विद्या घरों की विद्या का प्रभाव मन्द होवे ।
- २१ गो रग ( दूध, दही, घी ) में स्निग्धता ( चिकनाई ) कम होवे ।



घातु रहेगी, व चर्म की मोहरे चलेगी जिसके पास रहेंगे वे श्रीमन्त ( घनवान ) कहलावेंगे । इस आरे मनुष्यों की उपवास मास खमण समान लगेगा ।

[ इस आरे में ज्ञान सर्व विच्छेद हो जावेगा । दशवैकालिक सूत्र के चार अध्ययन रहेंगे । कोई को मानते हैं कि १ दशवैकालिक २ उत्तराध्ययन ३ आचार्य ४ आवश्यक ये चार सूत्र रहेंगे । इस में चार जीव एक बतारी होंगे - १ दुपसह नामक आचार्य २ कान्गुरे नामक माध्वी ३ जीनदास आथक ४ नाग भी आथक ये सर्व २००४ पाँचवे आरे के अन्त तक भी महावीर स्वामी के युगंघर जानना । ]

आषाढ शुद्धि १५ को शुक्रेन्द्र का आसन चलायमा होवेगा तब शुक्रेन्द्र उपयोग द्वारा मालूम करेंगे कि आषाढ पाँचवा आरा ममात होकर छद्म आरा लगेगा ऐसा कर शुक्रेन्द्र आवेग व आकर चार जीवों को करेगा । इस छद्म आरा लगेगा अतः आलोचना व प्रतिक्रम द्वारा शुद्ध वनो अनन्तर ऐसा मून कर को चारों जीव को समा कर, निगुण्य हो कर संघारा करेंगे । उस समय सर्वतक महासर्वतक नामक वा चलेगी जिससे पर्यत, गच्छोट, कुर्वे, कावडीये आदि सब स्थानक नष्ट होजायेंगे । केवल १ वैशाख्य वनेन २ गंगा नदी ३ सिंधु नदी अथवा इतर ४ अथवा को नष्ट । व पाँच स्थानक वपर





देह मान एक हाथ का, आयुष्य २० वर्ष का उतरते आरे  
 मूठ कम एक हाथ का व आयुष्य १६ वर्ष का रह जावेगा।  
 इस आरे में संघयन एक सेवार्थ, संस्थान एक हंडक उतरते  
 आरे भी ऐसा ही जानना। मनुष्य के शरीर में आठ पंज-  
 लिये व उतरते आरे केवल चार पंजलिये रह जावेगी।  
 इस आरे में छः वर्ष की स्त्री गर्भ धारण करने लग जावेगी  
 व कुत्ती के समान परिवार के साथ विचरेगी। गङ्गा सिन्धु  
 नदी का ६२॥ योजन का पट है जिनमें से रथ के चक्र  
 समान थोड़ा पाट व गाड़े की धूरी दूबे इतना गहरा जल  
 रह जायगा जिनमें मत्स्य कच्छ आदि जीव जन्तु विशेष  
 रहेंगे। ७२ बिल के अन्दर रहने वाले मनुष्य संघ्या तथा  
 प्रभात के समय उन मत्स्य कच्छ आदि जीवों को जल से  
 बाहार निकाल कर नदी के किनारे रेत में गाढ कर रह  
 देंगे वे जीव सूर्य की तेजी व उग्र शरदी से भुना जावेंगे जिनका  
 मनुष्य आहार करलेवेंगे इनके चमड़े व हड्डियों को चाट  
 कर तिर्थच अपना निर्वाह करेंगे। मनुष्यों के मस्तक की  
 खोपड़ी में जल लाकर मनुष्य पीवेंगे। इस प्रकार २१०००  
 वर्ष पूर्ण होवेंगे जो मनुष्य दान पुन्य रहित, नमोकार  
 रहित व्रत प्रत्याख्यान रहित होवेंगे केवल वे ही इस आरे  
 में आकर उत्पन्न होवेंगे।

ऐसा जान कर जो जीव जैन धर्म पालेगा तथा जैन



# ❀ दश द्वार के जीव स्थानक ❀

गाथा:—

'जीवठाण, 'लक्षणं, 'ठिई, 'किरिया, 'कम्मसणाय,  
'बंध 'उदीरण 'उदय 'निज्जरा "छमाव दण दाणम ॥

अर्थ:—दश द्वार के नाम:—१ चौदह जीव स्थानक के नाम २ लक्षण द्वार ३ स्थिति द्वार ४ क्रिया द्वार ५ कर्म सत्ता द्वार ६ कर्म बंध द्वार ७ कर्म उदीरण द्वार ८ कर्म उदय द्वार ९ कर्म निज्जरा द्वार १० छे माव द्वार ।

दश द्वार का विस्तार ।

( १ ) नाम द्वार:—चौदह जीव स्थानक के नाम—  
१ मिध्यात्व जीव स्थानक २ सास्वादान जीव स्थानक ३ सम मिध्यात्व ( मिश्र ) दृष्टि जीव स्थानक ४ अद्रवति सम दृष्टि जीव स्थानक ५ देश द्रवति जीव स्थानक ६ प्रमत्त संयति जीव स्थानक ७ अग्रमत्त संयति जीव स्थानक ८ अनिवर्ती यादर जीव स्थानक ९ अनिवर्ती यादर जीव स्थानक १० सूक्ष्म संपराय जीव स्थानक ११ उपसम मोहनीय जीव स्थानक १२ क्षीण मोहनीय जीव स्थानक १३ सयोगी केवली जीव स्थानक १४ अयोगी केवली जीव स्थानक ।



वेदन्द्रियादिक न अपर्यस्त हांत समय हांवे व पर्याप्त होने बाद मिट जावे संज्ञा पंचन्द्रिय को पर्याप्त होने बाद से होवे उसे साखादान म्मः टि करते हैं शाख सूत्र ज्ञानमिगम दण्डक के अधिकार से ।

३ मिश्रदृष्टि जीव स्थानक का लक्षणः-जो मिथ्यात्व में से निकला परन्तु जिसने सकृत् प्राण नहीं इस बीचमें अघ्वाभाव के रस से प्रवर्तता इस आयुष्य कर्म बांधे नहीं, काल भी करे नहीं, वहां से शोक समय के अन्दर, अनिश्चयता से तीसरे जीव स्थानक गिर कर पहले जीव स्थानक आवे अथवा तर्ग से चले आदि जीव स्थानक पर जावे तब आयुष्य बांधे, काल करे । शाख सूत्र भगवती शतक तीशवे अथवा २६ वे ।

४ अत्रती सम दृष्टि जीव स्थानक का लक्षणः-जो शंका बांजा रहित हो कर भीतराग के बचनों पर माव से अद्धान करे तथा प्रतीति लाकर रोचे, चोरी प्र विरुद्ध आचरण आचरे नहीं,—इसलिये कि उसकी र में हिलना हीवे नहीं—व व्यवहार में समकित रहे । शाख उत्तराप्ययन के २८ वे मोक्ष मार्ग के अध्ययन से ।

५ देशव्रती जीव स्थानक का लक्षणः-जो य तथ्य समकित महित, विज्ञान विवेक सहित देश व्रत अधिकार करे, जो जघन्य एक नभोक रथी प्र स्थान तथा एक जीव की घात करने का प्रत्या



११ उपशान्त मोहनीय जीवस्थानक का लक्षण  
जिसने मोहनीय कर्म की २८ प्रवृत्तियों- उपशान्त मोहनीय जीवस्थानक कहते हैं ।

१२ क्षीण मोहनीय जीवस्थानक  
जिसने मोहनीय कर्म की २८ प्रवृत्ति का क्षय किया है उसे क्षीण मोहनीय स्थानक कहते हैं ।

१३ सयोगी केवली जीवस्थानक का लक्षण  
जो मन वचन व काया के शुभ योग सहित केवल ज्ञान केवल दर्शन में प्रवर्त रहा है उसे सयोगी केवली जीवस्थानक कहते हैं ।

१४ अयोगी केवली जीवस्थानक का लक्षण  
जो शरीर सहित मन वचन काया के योग रोक कर केवल ज्ञान केवल दर्शन में प्रवर्त रहा है उन्हें अयोगी केवली जीवस्थानक कहते हैं ।

### ❀ ३ स्थिति द्वार ❀

१ मिथ्यात्व जीवस्थानक की स्थिति तीन तरह की

(१) अनादि अपर्यवसितः-जिस मिथ्यात्व की आदि नहीं और अन्त भी नहीं ऐसा अभ्रव्य जीवों का मिथ्यात्व मानना ।

(२) अनादि सपर्यवसितः-जिस मिथ्यात्व की आदि नहीं परन्तु अन्त है ऐसा मध्य जीवों का मिथ्यात्व मानना ।





की स्थिति जघन्य एक समय की उत्कृष्ट अन्तर्बुद्धि की।  
शान्त सुत्र भगवती शतक पञ्चीशवां।

शब्दों जीव स्थानक की स्थिति जघन्य अन्तर्बुद्धि  
की उत्कृष्ट अन्तर सुत्र की।

तद्भव जीव स्थानक की स्थिति जघन्य अन्तर्बुद्धि  
की उत्कृष्ट कर्मोद्देश पर में देश न्यून।

जं दत्त जीव स्थानक की स्थिति जघन्य अन्तर्बुद्धि  
उत्कृष्ट अन्तर्बुद्धि की। १४ अन्तर्बुद्धि केमाः—

जगत्सु १ इत्यस्य १—य, इ, उ, ऋ, लृ, ) का  
उत्पत्ति कर्म म १११११ समय लग उपे अन्तर्बुद्धि  
कर्म २।

१. ४ क्रिया द्वारा ३)

कारण का इत्यदि ४ क्रिया में जे जो २  
क्रिया १५५५ ५५५५ ५५५५ ५५५५ ५५५५ ५५५५  
इसका विस्तार प्रत्येक यथा, ५५५५ ५५५५ ५५५५ ५५५५  
साइल व कर्म ५५५५ ५५५५ ५५५५ ५५५५ ५५५५ ५५५५  
कर्म ५५५५ ५५५५ ५५५५ ५५५५ ५५५५ ५५५५ ५५५५ ५५५५  
इत्यस्य अर्थगत, जय अर्थात् जय क्रिया लगे और  
जय लगे जय इत्यस्य अर्थः—

१. ५५५५ ५५५५ ५५५५ ५५५५ ५५५५ ५५५५ ५५५५ ५५५५  
कर्म ५५५५ ५५५५ ५५५५ ५५५५ ५५५५ ५५५५ ५५५५ ५५५५  
५५५५ ५५५५ ५५५५ ५५५५ ५५५५ ५५५५ ५५५५ ५५५५



का उदय-ऊपर कहे हुवे सात चयोपशम में एक मिथ्या दर्शन वक्तिया क्रिया नहीं लगे २१ के उदय में २३ संपराय क्रिया लगे ।

(५) देश व्रती जीव स्थानक में मोहनीय कर्म की २८ प्रकृति में से ११ का चयोपशम व १७ का उदय १ अनन्तानुबंधी क्रोध २ मान ३ माया ४ लोभ ५ समाहित मोहनीय ६ मिथ्यात्व मोहनीय ७ मिथ्र मोहनीय ८ अपत्यान्यायानी क्रोध ९ मान १० माया ११ लोभ इन ११ का चयोपशम व उक्त ११ बोल छोड़ कर शेष ( २८-११ ) १७ का उदय, ११ चयोपशम में मिथ्यात्व दर्शन वक्ति क्रिया व अपत्यान्यायान क्रिया ये दो क्रिया नहीं लगे ११ के उदय में २२ संपराय क्रिया लगे ।

(६) प्रमत्त संयति जीव स्थानक में मोहनीय कर्म की २८ प्रकृति में से १५ का चयोपशम १३ का उदय १ अनन्तानुबंधी क्रोध २ मान ३ माया ४ लोभ ५ समाहित मोहनीय ६ मिथ्यात्व मोहनीय ७ मिथ्र मोहनीय ८ अपत्यान्यायानी क्रोध ९ मान १० माया ११ लोभ १२ प्रत्यान्यायानी क्रोध १३ मान १४ माया १५ लोभ इन १५ का चयोपशम व उक्त १५ बोल छोड़ कर शेष १३ बोल का उदय १३ के चयोपशम में २२ संपराय क्रिया नहीं लगे १३ के उदय में १ आरंभिका २ माया वक्तिया ये दो क्रिया लगे १३ के उदय में २२ संपराय क्रिया लगे १३ के उदय में २२ संपराय क्रिया लगे ।



वेद के ज्ञाई शेष छः श्रीर मंज्वलन का लोम एवं सार का उदय, ११ के जयापशम में २३ मंपराय क्रिया नहीं लगती। मान के उदय में एक मायावतिया क्रिया लगे।

दशमं नीर स्थानक में मोहनोर कर्म की २७ प्रकृति म म - १ क. 'पाम अथवा क्षायिक, १ ह्य संवतः का न म का उदय २७ क उपशम तः क्षायिक में २३ मंपराय क्रिया नहीं लगती और एक मजानत का लोम के उदय में एक माया वतिया क्रिया लगे।

११ क न स्थानक में मोहनोर कर्म की २८ प्रकृति म म म - १ क. 'पाम अथवा क्षायिक, १ ह्य संवतः का न म का उदय २८ क उपशम तः क्षायिक में २३ मंपराय क्रिया नहीं लगती और एक मजानत का लोम के उदय में एक माया वतिया क्रिया लगे।

१२ क न स्थानक में मोहनोर कर्म की २९ प्रकृति म म म - १ क. 'पाम अथवा क्षायिक, १ ह्य संवतः का न म का उदय २९ क उपशम तः क्षायिक में २३ मंपराय क्रिया नहीं लगती और एक मजानत का लोम के उदय में एक माया वतिया क्रिया लगे।

१३ क न स्थानक में मोहनोर कर्म की ३० प्रकृति म म म - १ क. 'पाम अथवा क्षायिक, १ ह्य संवतः का न म का उदय ३० क उपशम तः क्षायिक में २३ मंपराय क्रिया नहीं लगती और एक मजानत का लोम के उदय में एक माया वतिया क्रिया लगे।

१४ क न स्थानक में मोहनोर कर्म की ३१ प्रकृति म म म - १ क. 'पाम अथवा क्षायिक, १ ह्य संवतः का न म का उदय ३१ क उपशम तः क्षायिक में २३ मंपराय क्रिया नहीं लगती और एक मजानत का लोम के उदय में एक माया वतिया क्रिया लगे।



अथवा आठ कर्म की उदीरणा करे ( सात की करे तो आयुष्य कर्म छोड़ कर ) ।

छह, सातवें, आठवें, नववें जीव स्थानक पर सात, आठ, छः की उदीरणा करे ( सात की करे तो आयुष्य छोड़ कर और छः की करे तो आयुष्य और वेदनीय कर्म छोड़ कर ) ।

दशवें जीव स्थानक पर छः व पांच की उदीरणा करे ( छः की करे तो आयुष्य और वेदनीय छोड़ कर और पांच की करे तो आयुष्य, वेदनीय व मोहनीय तीन छोड़ कर ) ।

इग्यारहवें जीव स्थानक पर पांच कर्म की उदीरणा करे ( आयुष्य, वेदनीय और मोहनीय कर्म छोड़ कर ) ।

बारहवें, तेरहवें जीव स्थानक पर दो कर्म की उदीरणा करे नाम और गोत्र कर्म की ।

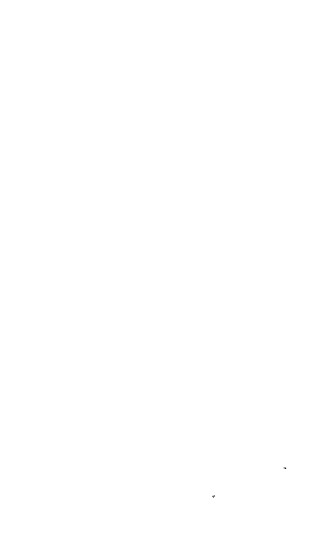
चौदहवें जीव स्थानक पर एक भी कर्म की उदीरणा नहीं करे ।

८ कर्म का उद्घय व ६ कर्म की निर्जरा द्वारा

पहले में इग्यारहवें जीव स्थानक तक आठ कर्म उद्घय और आठ कर्म की निर्जरा इग्यारहवें व बारहवें स्थानक पर मोहनीय कर्म छोड़ कर शेष सात कर्म उद्घय और नाम कर्म की निर्जरा तेरहवें चौदहवें स्थानक पर बार कर्म का उद्घय और बार कर्म की निर्जरा १ वेदनीय २ आयुष्य ३ नाम ४ गोत्र ।

















































बोल में से सयोगी, सलेशी, शुक्र लेशी, एवं तीन बोल  
 छोड़ शेष ७ बोल सहित सर्व पर्वतों का राजा मेरु के  
 समान अडोल, अचल, स्थिर अवस्था को प्राप्त होवे।  
 शैलेशी पूर्वक रह कर पंच लघु अक्षर के उच्चार प्रमाणात्  
 काल तक रह कर शेष वेदनीय, आयुष्य, नाम गोत्र एवं  
 ४ कर्म क्षीण करके मोक्ष पावे। शरीर औदारिक तेजस  
 कर्मण सर्वाथा प्रकार छोड़ कर समश्रेणी रजु गति अन्त  
 आकाश प्रदेश को नहीं अवगाहता हुआ अणकारण  
 हुआ एक ममय मात्र में उर्द्धगति अविप्रद गति से बल  
 जाकर एरंड बीज पंघन मुक्त वत् निर्लेप तुम्बीवत्, कोर  
 मुक्त पाण वत्, इन्धन बद्धि मुक्त धूम्र वत्। उस सिद्ध पद  
 में जाकर साकारोपयोग से सिद्ध होवे, पुद्ग होवे, परांग  
 होवे परंपरागत होवे मन्त्र कार्य अर्थ साध कर  
 कृतार्थ निष्ठितार्थ अतुल सुरा सागर निमग्न मादि अन  
 मागे सिद्ध होवे। इस सिद्ध पद का भाव सरण वि  
 मनन मदा सर्वदा काले मुक्तको होवे ? वो पटी पल प  
 सकल होवे। अयोगी अर्थात् योग रहित केवल सर्वा  
 विचरे उमे अयोगी केवनी गृणस्थान कहते है।

### ३ स्थिति द्वार

पहले गुण स्थान की स्थिति ३ प्रकार की—अज्ञानि  
 अज्ञान मिया जाने त्रिम मिथ्यात्व की आदि नहीं  
 अज्ञान मी नहीं। अमव्य जीव के मिथ्यात्व भाव



















का होवे वहां चलने का नहीं । दशवें, इग्यारहवें चारहवें गुण० १४ परिपह पावे ( मोहनीय कर्म के उदय से होने वाले = छोड़ कर )—अचल, अरति, स्त्री का, बैठने का, आक्रोश का, मेल का, सत्कार पुरस्कार का एवं सात चारित्र मोहनीय कर्म के उदय होने से और १ दंसरु परिपह ( दर्शन मोहनीय के उदय होने से ) एवं आठ परिपह छोड़ कर शेष १४ इन में से एक समय में १२ वेदे शीत का वेदे वहां ताप का नहीं, और ताप का वहां शीत का नहीं, चलने का होवे वहां बैठने का नहीं और बैठने का होवे वहां चलने का नहीं । तेरहवें चौदहवें गुण० ११ परिपह पावे । उक्त परिपह में से तीन छोड़ कर शेष ११ (१) प्रज्ञा का (२) अज्ञान का ये दो परिपह ज्ञानावरणीय कर्म के उदय से और (३) अलाम का परिपह अन्तराय कर्म के उदय से एवं ३ परिपह छोड़ कर । इन परिपह में से एक समय में ६ वेदे शीत का होवे वहां ताप का नहीं और ताप का वेदे वहां शीत का नहीं, चलने का होवे वहां बैठने का नहीं और बैठने का होवे वहां चलने का नहीं ।

१४ मार्गणा द्वार ।

पहले गुण० मार्गणा ४, तीसरे, चौथे, पांचवें, सातवें जावे । दूसरे गुण० मार्गणा १, गिरे तो पहले गु० जावे । चठे नहीं ) तीसरे गु० ४ गिरे तो पहले जावे और चठे तो





का होवे वहां चलने का नहीं । दशवें, द्वादशवें चारहवें गुण० १४ परिपह पावे ( मोहनीय कर्म के उदय भे होने वाले = छोड़ कर )-अचल, शरति, स्त्री का, बैठने का, आक्रोश का, भेल का, सत्कार पुरस्कार का एवं सात चारित्र्य मोहनीय कर्म के उदय होने से और १ दंसर परिपह ( दर्शन मोहनीय के उदय होने से ) एवं आठ परिपह छोड़ कर शेष १४ इन में से एक समय में १२ वेदे शीत का वेदे वहां ताप का नहीं, और ताप का वहां शीत का नहीं, चलने का होवे वहां बैठने का नहीं और बैठने का होवे वहां चलने का नहीं । तेरहवें चौदहवें गुण० ११ परिपह पावे । उक्त परिपह में से तीन छोड़ कर शेष ११ (१) प्रज्ञा का (२) अज्ञान का ये दो परिपह ज्ञानावरणीय कर्म के उदय से और (३) अलाभ का परिपह अन्तराय कर्म के उदय से एवं ३ परिपह छोड़ कर । इन परिपह में से एक समय में ६ वेदे शीत का होवे वहां ताप का नहीं और ताप का वेदे वहां शीत का नहीं, चलने का होवे वहां बैठने का नहीं और बैठने का होवे वहां चलने का नहीं ।

१४ मार्गणा द्वार ।

पहले गुण० मार्गणा ४, तीसरे, चौथे, पांचवें, सातवें जावे । दूसरे गुण० मार्गणा १, गिरे तो पहले गु० जावे ( चडे नहीं ) तीसरे गु० ४ गिरे तो पहले जावे और चडे तो









१ औदारिक का, एवं ६, तेरहवें गुण० योग ७-दो मन के, दो वचन के, औदारिक, औदारिक का मिश्र, कर्मण का योग एवं ७ योग, चौदहवें गुण० योग नहीं ।

### १८ उपयोग द्वार

पहले तीसरे गुण० ६ उपयोग-३ अज्ञान और ३ दर्शन एवं ६, दूसरे, चौथे, पांचवें गुण० ६ उपयोग-३ ज्ञान ३ दर्शन एवं ६, छठे से बारहवें तक उपयोग ७-४ ज्ञान ३ दर्शन ( एवं ७ ) तेरहवें चौदहवें गुण० तथा निद्रा में ३ उपयोग १ केवल ज्ञान और २ केवल दर्शन ।

### १९ लेश्या द्वार

पहले से छठे गुण० तक ६ लेश्या पावे, मातृवें गुण० तीन लेश्या पावे-तेजो, पद्म और शुक्ल । आठवें से बारहवें गुण० तक १ शुक्ल लेश्या तेरहवें गुण० १ परम शुद्ध लेश्या, चौदहवें गुण० लेश्या नहीं ।

### २० चारित्र्य द्वार

पहले में चारित्र्य गुण० तक कोई चारित्र्य नहीं, पांचवें गुण० देश थकी सामायिक चारित्र्य, छठे सातवें गुण० ३ तीन चारित्र्य-सामायिक चारित्र्य, छद्मोपस्थानाय चारित्र्य, परिहार विमुक्त चारित्र्य, एवं तीन । आठवें नववें गुण० २ दो चारित्र्य पावे, सामायिक चारित्र्य और छद्मोपस्थानाय चारित्र्य, दसवें गुण० १ शुद्ध संवसाय चारित्र्य, इग्यारहवें से चौदहवें गुण० तक १ वय लपान चारित्र्य ।



मी का एवं २६ भांगे विस्तार श्री मनुष्योपयोग द्वारा विद्वान्  
मे जानना । देखो पृष्ठ १६०, १६१, १६२ ।

१४ गुणस्थान पर १० चेषक द्वारा

१ हेतु द्वारा:- २५ कषाय, १५ योग एवं ४० और  
 ६ काग, ५ इन्द्रिय, १ मन एवं १२ अयत ( ४०+१२=५२ ),  
 प्रमिद्यमान एवं मी ५७ हेतु । पहले गुणस्थाने ५३  
 हेतु ( आहारिक के २ श्लोडकर ) दूसरे गुणस्थाने ५० हेतु  
 ( ५५ में से ५ प्रमिद्यमान के श्लोडना ) तीसरे गुण० ५३  
 हेतु ( ५७ में से-अनन्तानुबंधी कषाय, औदारिक क  
 मिश्र १, कैवल्य का मिश्र १, आहारिक के २, कर्मि  
 का १, मिद्यमान ५, एवं १५ श्लोडना ) चौथे गुण० ४३  
 हेतु ( ४३ में ऊपर के और औदारिक का मिश्र  
 वैश्व का मिश्र १, कर्मण काययोग एवं ( ४३+३=४६ )  
 पांचवें गुण० ४० हेतु ( ४६ के ऊपर के उगमें से अयत  
 मयानी की श्लोडनी, प्रग काय का अयत और कर्म  
 काय योग से ६ मयाना अय ( ४६-६=४० हेतु )  
 षष्ठ० २६ हेतु ( २० में से प्रत्याग्यानी की श्लोडनी  
 ६ का अयत, पांच इन्द्रिय का अयत और १  
 का अयत का १ मयान अय २० मयान २ अय  
 २० मयान २० हेतु २० मय  
 २० मय २० मय अहारिक मिश्र ५ तीन प  
 २० मय २० मय २० मय २० मय २० मय



शरीर आहारिक के २ घटाना ) नववें गुण० १६ हेतु (२२ में से-दाह्य, रति, अरति, भय शोक, दुर्गन्धा ये ६ घटाना) दशवें गुण० १० हेतु ६ योग शरीर १ संज्वलन का लोभ एवं १० हेतु। इग्यारहवें, बारहवें गुण० ६ हेतु (६ योग के) तेरहवें गुण० ७ हेतु (सात योग के) चौदहवें गुण० हेतु नहीं।

२ दण्डक द्वारः-पहेले गुण० २४ दण्डक, दूसरे गुण० १६ दण्डक, ( ५ स्थावर के छोड़कर ) तीसरे, चौथे, गुण० १६ दण्डक ( १६ में से ३ विकलेन्द्रिय के घटाना ) पांचवें गुण० २ दण्डक-संज्ञी मनुष्य शरीर संज्ञी तिर्यच, छठे से चौदहवें गुण० तक १ मनुष्य का दण्डक ।

३ जीवा योनि द्वारः-पहेले गुण० ८४ लाख जीवा योनि, दूसरे गुण० ३२ लाख, ( एकेन्द्रिय की ५२ लाख छोड़कर ) तीसरे चौथे गुण० २६ लाख जीवा योनि द्वार पांचवें गुण० १८ लाख जीवा योनि, छठे से चौदहवें गुण० १४ लाख जीवा योनि ।

४ अन्तर द्वारः-पहेले गुण० जघन्य अन्तर्मुहूर्त उ० ६६ सागरोपम जाजेरी अधवा १३२ सागर जाजेरी, ये ६६ सागर चौथे गुण० रहे, अन्तर्मुहूर्त तीसरे गुण० रह कर पुनः चौथे गुण० ६६ सागर रह कर तिथ्यात्त्व गुण० अथे दूसरे गुण० मे इग्यारहवें गुण० तक जघ य अन्तर्मुहूर्त अथवा जघन्य के असंख्यातव भाग ( इतने काल के बिना उपशम

गी का एवं २६ भांगि विस्तार श्री अनुयोग द्वार विद्वान्  
से जानना । देखो पृष्ठ १६०, १६१, १६२ ।

१४ गुणस्थान पर १० चेषक द्वारा

१ हेतु द्वारः—२५ कृपाय, १५ योग एवं ४० अ  
६ काय, ५ इन्द्रिय, १ मन एवं १२ अन्नत ( ४०+१  
५२ ), प्रमिथ्यात्व एवं सर्व ५७ हेतु । पहले गुणस्थाने  
हेतु ( आहारिक के २ छोड़कर ) दूसरे गुणस्थाने ५०  
( ५५ में से ५ मिथ्यात्व के छोड़ना ) तीसरे गुण  
हेतु ( ५७ में से—अनन्तानुबंधी के चार, आहारिक  
मिश्र १ वैक्रिय का मिश्र १, आहारिक के २, क  
का १, मिथ्यात्व ५, एवं १४ छोड़ना ) चौथे गुण  
हेतु ( ४३ तो ऊपर के और आहारिक का मि  
वैक्रिय का मिश्र १, कर्मण काययोग एवं ( ४३+३=  
पांचवें गुण ४० हेतु ( ४६ के ऊपर के उसमें से अ  
ख्यानी की चोकड़ी, अस काय का अन्नत और  
काय योग ये ६ घटाना शेष ( ४६-६=४० हेतु  
गुण २७ हेतु ( ४० में से प्रत्याख्यानी की चोकड़ी  
स्थावर का अन्नत, पांच इन्द्रिय का अन्नत और  
का अन्नत एवं १५ घटाना शेष २५ रहे और २ अ  
२ एवं २७ हेतु ) सातवें गुण २४ हेतु ( २७ में म  
रिक मिश्र, वैक्रिय मिश्र, आहारिक मिश्र ये तीन  
शेष २४ हेतु ) आठवें गुण २२ हेतु ( २४ में से



भेदी करके गिरे नहीं ) उत्कृष्ट अर्द्धपुद्गल में देश न्यू,  
षारहवें, तेरहवें और चौदहवें गुण० अन्तर नहीं पड़े ।

५ ध्यान द्वारः—पहेले, दूसरे, तीसरे, गुण० २ ध्यान  
( पहेला ) चौथे, पाँचवें गुण० ३ ध्यान, छठे गुण० २ ध्यान  
१ आर्षे ध्यान २ धर्म ध्यान । सातवें गुण० १ धर्म ध्यान  
आठवें में चौदहवें गुण० तक १ शुक ध्यान ।

६ फरसना द्वारः—पहेले गुण० १४ राजलोक फरमे,  
( हर्षे ) दूसरे गुण० नीचले पंडग वन से छठी नरक तक  
फरसे तथा ऊँचा अघोगाम की विजय से नवप्रोपरेक तक  
फरसे, तीसरे गुण० लोक के असंख्यातवें माग फरमे । चौथा  
गुण० अघोगाम की विजय से षारहवें देव लोक तक  
फरमे अथवा पंडग वन में छठे नरक तक फरसे, पाँचवाँ  
गुण० इसी प्रकार अघोगाम की विजय से षारहवें देवलोक  
तक फरमे । छठे में श्यारहवें गुण० तक अघोगाम की विजय  
में ४ अनुगर विमान तक फरमे । षारहवाँ गुण० लोक  
का असंख्यातवें माग फरमे । तेरहवाँ गुण० सर्व लोक  
फरमे । चौदहवाँ गुण० लोक का असंख्यातवें माग फरमे ।

● निषेकर शोच ४ गुण० वाग्धेः—चौथे, पाँचवें,  
छठे और सातवें एवं ४ गुण० बाधि शेष गुण० नहीं बरि,  
निषेक शेष ३ गुण० फरमे—४, ६, ७, ८, ९, १०, १२,  
१३, १४ एवं नव का १ ।

८ वाट ध्यान शोचन द्वार — १४ गुण० में १,



## ॐ तैतीश बोल ॐ

एक प्रकार का संयमः—सर्वे आश्रय से निर्वाह होना। दो प्रकार का बंधः—१ गम बंध २ द्वेष बंध। तीन प्रकार का दण्डः—१ मन दण्ड २ वचन दण्ड ३ काय दण्ड। तीन प्रकार की गुप्तिः—१ मन गुप्ति २ वचन गुप्ति ३ काय गुप्ति। तीन प्रकार का शून्यः—१ माया शून्य २ निदान शून्य ३ मिथ्या दर्शन शून्य। तीन प्रकार का गर्वः—१ अद्वि गर्व २ रस गर्व ३ शांता गर्व। तीन प्रकार की विराधनाः—१ ज्ञान विराधना २ दर्शन विराधना ३ चारित्र्य विराधना।

४ चार प्रकार की कषायः—१ क्रोध कषाय २ मान कषाय ३ माया कषाय ४ लोभ कषाय। चार प्रकार की संज्ञाः—१ आहार संज्ञा २ भय संज्ञा ३ मैथुन संज्ञा ४ परिग्रह संज्ञा। चार प्रकार की कथाः—१ स्त्री कथा २ मत्त कथा ३ देश कथा ४ राज कथा। चार प्रकार का ध्यानः—१ आर्त ध्यान २ रौद्र ध्यान ३ धर्म ध्यान ४ शुक्र ध्यान।

पांच प्रकार की क्रियाः—१ कायिका क्रिया २ आधिकारिका क्रिया ३ प्रहेषिका क्रिया ४ पारितापिका क्रिया ५ शकृति कृति क्रिया। पांच प्रकार का कर्माणुः—१ शब्द २ रूप ३ गन्ध ४ रस ५ स्पर्श। पांच प्रकार



नय प्रकारकी ब्रह्मचर्य गुप्तिः-(१)स्त्री पशु पंडकाली  
 आलय (स्थानक) में रहना (इस पर) चूड़े सिद्धी क  
 दृष्टान्त(२)मन को आनन्द देने वाली तथा काम-लाग की  
 बुद्धि करने वाली स्त्री के साथ कथा-वार्ता नहीं करना, नीर  
 के रंग का दृष्टान्त (३)स्त्री के आसन पर बैठना नहीं तथा स्त्री  
 के माथ गह्यम करना नहीं । घृत के घट को भ्रमि क  
 दृष्टान्त (४) स्त्री का अङ्ग अथयव, उस की आकृति, उपरि  
 बोल धाल व उसका निरक्षण आदि का राग दृष्टिसे देख  
 ना नहीं-(घर्य को दुस्वप्नी आँखों से देखने का दृष्टान्त (५)  
 स्त्री गम्बन्धी कृजित, रुदन, गीत, हास्य, आनन्द आदि  
 गुनाई देव एसी दीवार के समीप निवास नहीं करना, स्त्री  
 को मंत्राण का दृष्टान्त (६) पूर्वगत स्त्री गम्बन्धी कीड़ा, शाय,  
 शनि, दर्प, स्नान, माथ में मोजन करना आदि स्मरण नहीं  
 करना । मर्ष के जङ्ग (विष) का दृष्टान्त (७) स्यादित रूप  
 पौष्टिक आहार नित्यप्रति करना नहीं । त्रिदोषी को घृत का  
 दृष्टान्त (८) मर्यादित काल में धर्म यात्रा के निमित्त कश्चित्त  
 उमने अभिक आहार करना नहीं । कामज की कीचनी के  
 र्यों का दृष्टान्त (९)गुणित गुन्दर व विभूषित करने के लिये  
 अङ्ग व गोमा करना नहीं । बँड के शाय रग्न का दृष्टान्त  
 दृष्ट प्रकार का अक्षण-( यति ) धर्म-१ धर्म  
 मदन करना २ मृ क्त निनाशित स्थाना) ३ धर्म  
 ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००





शुक्र आदि के समीप सूत्रार्थ रूप लक्ष्मी प्राप्त करने के हमेशा रहना ।

ग्यारह प्रकार की श्रावक प्रतिमा—१ एक मासकी-इस में शुद्ध सत्य धर्म की रुचि होवे परन्तु नाना व्रत उपवासादि अवश्य करने के लिये श्रावक को नियम न होवे । उसे दर्शन श्रावक प्रतिमा कही है २ दूसरी प्रतिमा दो माह की-इसमें सत्य धर्म की रुचि के साथ २ नाना शील व्रत-गुणव्रत प्रत्याहार पौषधोषवासादि को परन्तु सामायिक दिशा वक्राशिक्षा करने का नियम न होवे वो उपासक प्रतिमा ३ तीसरी प्रतिमा तीन माह की-इसमें ऊपर कहा उसके उपरान्त मासयिकादि करे, परन्तु अष्टमी, चतुर्दशी, अमावस्या, पूर्णमासी आदि पर्व में पौषधोषवासा करने का नियम न होवे । चौथी प्रतिमा चार माह की-इसमें ऊपर कहा उपरान्त प्रति पूर्ण पौषधोषवासा अष्टम्यादि सर्व में करे । ५ पाँचवी प्रतिमा पाँच माह की-इसमें पूर्णमासी सर्व आचरे, विशेष एक रात्रि में कायोत्सर्ग करे और शीतल आचरे; १ स्नान न करे २ रात्रि भोजन न करे लांग न लगावे ४ दिन में ब्रह्मचर्य पाले ५ रात्रि में पौषधोषवासा करे । ६ छठी प्रतिमा छः माह की-इसमें पूर्णमासी उपरान्त सर्व समय ब्रह्मचर्य पाले ७ सातवी प्रतिमा सात माह की-इसमें मन्त्र आदि



अतिथि, कृपण, रंक प्रमुख द्विपद तथा चतुष्पद को अन्न-  
 राय नहीं लगे, इस तरह से लेवे । तथा एक मनुष्य जिंता  
 ( भोजन करता ) होवे व एक के निमित्त भोजन तैयार  
 किया होवे वो आहार लेवे । दो के भोजन करने में से  
 देवे तो नहीं लेवे; तीन, चार, पांच आदि भोजन करने में  
 बैठे हुए उसमें से देवे तो न लेवे; गर्भवन्ती निमित्त उत्तर  
 किया होवे वो न लेवे तथा नव प्रसूती का आहार न  
 लेवे, पालक को दूध पिलाने होवे उसके हाथ से नहीं लेवे,  
 तथा एक पांच डेवकी के बाहर और एक पांच डेवकी के  
 अन्दर रख कर बंदेरावे तो लेवे, नहीं तो नहीं लेवे ।

३ प्रतिमा धारी साधु को तीन काल गौचरी के हैं  
 ई-आदिम, मध्यम, चरम ( अन्त का ) चरम अर्थात्  
 एक दिन के तीन भाग करे पहले भाग में गौचरी जावे  
 तो दूसरे दो भाग में नहीं जावे इसी प्रकार तीनों में जिनका

४ प्रतिमा धारी साधु को छः प्रकार की गौचरी  
 करना कही है १ सन्दूक के आकार समान ( चौमुनी )  
 २ अर्ध सन्दूक के आकार ( दो पंक्ति ) ३ बलद के मुँह  
 आकार ४ पतङ्ग टीढ़ उड़े उस समान अन्तर २ से के  
 ५ शंख के आवर्तन के समान गौचरी करे ६ जावता तथा  
 आवता गौचरी करे ।

५ प्रतिमा धारी साधु जिम गांव में जावे वहां या  
 यह जानने होवे कि यह प्रतिमा धारी साधु है तो एक रा



कोई दूसरा निकालने का प्रयास करे तो स्वयं श्वा  
शोध कर निकले ।

१५ प्रतिमा धारी साधु के पाँव में यदि कंट  
लगा होवे तो उन्हें निकालना नहीं कल्पे ।

१६ प्रतिमा धारी साधु के श्वास में छोटे  
नाना बीज व रज प्रमुख गिरे तो उन्हें निकाल  
कल्पे, श्वा समिति में चलना कल्पे ।

१७ प्रतिमा धारी साधु को सूर्यास्त होने  
एक पाँच मी आगे चलना नहीं कल्पे अर्थात् प्रा  
करने के समय तक विहार करे ।

१८ प्रतिमा धारी साधु को सविच पृथ्वी प  
बैटना व थोड़ी निद्रा भी निकालना नहीं क  
पहिले देखे हुवे स्थानक पर उचार प्रमुख परिठवन

१९ सविच रज से यदि पाँच प्रमुख मरे हु  
ऐसे शरीर से गृहस्य के घर पर गौचरी जाना न

२० प्रतिमा धारी साधु को प्राशुक शीतल त  
जल से हाथ, पाँव, कान, नाक, श्वास प्रमुख एक  
वारंवार धोना नहीं कल्पे, केवल अशुचि से मरे  
भोजन से मरे हुवे शरीर के अङ्ग धोना कल्पे  
नहीं ।

२१ प्रतिमा धारी साधु घोड़ा, वृषभ, हाथ

आते हो तो डर कर एक पांव भी पीछे धरे नहीं परन्तु सुवांला ( सीधा ) मद्र जीव सामने आता हो; तो दया के कारण यत्नां के निमित्त पांव पीछे फिरे ।

२२ प्रतिमा धारी साधु धूप से छांया में नहीं जावे और छांया से धूप में नहीं जावे, शीत और ताप सम परिणाम पूर्वक सहन करे ।

दूसरी प्रतिमा एक मास की । इस में दो दाति आहार की और दो दाति जलकी लेवे ।

तीसरी प्रतिमा एक माह की । इस में तीन दाति आहार की और तीन दाति जलकी लेना कल्पे ।

चौथी प्रतिमा एक माह की । इस में चार दाति आहार की और चार दाति जल की लेना कल्पे ।

पांचवी प्रतिमा एक माह की । इस में पांच दाति आहार की और पांच दाति जल की लेना कल्पे ।

छठी प्रतिमा एक माह की । इस में ६ दाति आहार की और ६ दाति जल की लेना कल्पे ।

सातवी प्रतिमा एक माह की । इस में सात दाति आहार की और सात दाति जल की लेना कल्पे ।

आठवी प्रतिमा सात अहोरात्रि की । इस में जल बिना एकान्तर उपवास करे । ग्राम, नगर, राजधानी आदि के बाहर स्थानक करे । तीन आसन में बैठे, चित्त मोड़े, करवट में मोड़े, पलाट मग कर मोड़े । परन्तु बिनी की परिपह में डरे नहीं ।

नववी प्रतिमा-सात अहो रात्रि की । ऊपर समान विशेष तीन में से एक आसन करे, दण्ड आसन, सपा आसन और उरकट आसन ।

दसवी प्रतिमा सात अहोरात्रि की । ऊपर समान, विशेष तीन में से एक आसन करे; गोशू आसन, भीसासन और अम्भुज आसन ।

इम्पारदवी प्रतिमा एक अहोरात्रि की । जल बिना हाथ मन्त्र करे, ग्राम बाहर दो पाँच मं होच कर हाथ लम्बे कायोरमर्ग करे ।

षाण्दवी प्रतिमा एक रात्रि की । जल बिना अष्टम मर्ग करे । ग्राम नगर बाहर शरीर तत्र कर व आँसुओं की पत्र नगी माने दूधे एक पृष्ठ ऊपर स्थिर दृष्टि करके, तत्र इन्द्रिये गोच करके, दानो पाँच एकत्र करके और दोहा हाथ लम्बे करके दृष्टामन मे रहे । इस समय देव, मनुष्य व निर्देव डरा कोई उपमर्ग होवे तो सहन करे । सुप्ति प्रहार मे आगचन होवे तो अशुचि ज्ञान मनः पर्यव इव तथा केवल ज्ञान प्राप्त होवे यदि पलित होवे तो उन्नत करे, दीपे कालिक गेय हावे और केवनी पलित घर्म मे अष्ट होवे । एवं इन सब प्रतिमा मे आठ माह लगते है ।

नव द प्रकार का क्रिया व्यवहार

१. अथ दण्डः ध्यान २. उरकट ३. सपा

४. गोशू ५. भीसासन ६. अम्भुज ७. अष्टम मर्ग





र्याप्त ( १० ) चौरिन्द्रिय पर्याप्त ( ११ ) असंज्ञी पंचेन्द्रिय  
अपर्याप्त ( १२ ) असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त ( १३ ) संज्ञी  
पंचेन्द्रिय अपर्याप्त ( १४ ) संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त ।

पन्द्रह प्रकार के परमाधामी देव—(१) आस्र २  
आस्र रस ३ शाम ४ सबल ५ रुद्र ६ वैश्र ७ काल ८  
महा काल । ९ असिपत्र १० घनुष्य ११ कुंभ १२ बडु  
( क ) १३ चैतरणो १४ खरस्वर १५ महा घोष ।

सौलव्ये सूत्र कृत्वा का प्रथम भूतस्कन्ध के सोलह  
अध्ययनः—१ स्वममय परसमय २ वैदारिक ३ उपमर्ष  
प्रज्ञा ४ स्त्री प्रज्ञा ५ नरक विभक्ति ६ वीर स्तुति ७ कुशील  
परिमाणा ८ वीर्या ध्ययन ९ धर्म ध्यान १० समाधि ११  
मोक्ष मार्ग १२ समग्र सारण १३ अध्यातथ्य १४ प्रवी १५  
यमतिथि १६ गाथा ।

सत्तरह प्रकार का संयमः—१ पृथ्वी काय संयम  
२ अप्काय संयम ३ तेजस् काय संयम ४ वायु काय संयम  
५ वनस्पति काय संयम ६ वे इन्द्रिय काय संयम ७ वि  
इन्द्रिय काय संयम ८ चौरिन्द्रिय काय संयम ९ पंचेन्द्रिय  
काय संयम १० अजीव काय संयम ११ प्रेक्षा संयम १२  
उत्प्रेक्षा संयम १३ अपहृत्य संयम १४ प्रमार्जना संयम १५  
मन संयम १६ वचन संयम १७ काय संयम ।

अष्टारह प्रकार का ब्रह्मचर्य—औदारिक शरीर  
संबन्धी भोग १ मन मे, २ वचन मे, ३ काया से सेवे

को १४ मकाले स्वाध्याय को १५ सचित्त पृथ्वी से हाथ पाँव भरे हुये होने पर भी आहारादि लेने जावे १६ शान्ति के समय तथा प्रहर रात्रि बीत जाने पर जोर से आवाज करे १७ गच्छ में भेद उत्पन्न करे १८ मन्त्र में क्लेश उत्पन्न करके परस्पर दुःख उत्पन्न करे १९ यज्ञोदर से लगाकर सूर्यास्त तक अशुनादि भोजन लेता ही २० अनेपणिकु अप्राशुक आहार लेवे ।

इष्यीय प्रकार के शयल कर्म:- १ हस्त कर्म २ मधुन मेरे ३ रात्रि भोजन करे ४ आधा कर्मी भोगे ५ रात्रि पिंड विने ६ पाँच बोल सेवे- १ गरीद कर देवे तथा लेवे २ उधार देवे तथा लेवे ३ पलाङ्कार से देवे तथा लेवे ४ सामी की आज्ञा बिना देवे तथा लेवे ५ स्थानक में माना जाकर देवे तथा लेवे ७ चारचार प्रत्याख्यान करके भोगे ८ महिने के अन्दर तीन उदक लेप करे ( नदी उदक ) ९ श्रुः माह में पहले एक मण से दूसरे मण में जावे १० एक माह के अन्दर तीन माया का स्थान भोगे ११ शय्यातर का आहार करे १२ इगदा पूर्वक बिना करे १३ इगदा पूर्वक अमन्य बोलें १४ इगदा पूर्वक योगी करे १५ इगदा पूर्वक मन्त्रित पृथ्वी पर स्थानक शय्या करे १६ इगदा पूर्वक मन्त्रित मिथ पृथ्वी पर शय्या करे

को १४ अकाले स्वाध्याय को १५ सचिच पृथ्वी से हाथ पाँव मरे हुये होने पर भी आहारादि लेने जावे १६ शान्ति के समय तथा प्रहर रात्रि धीत जाने पर जोर से आवाज करे १७ गच्छ में भेद उत्पन्न करे १८ मन्त्र में क्लेश उत्पन्न करके परस्पर दुस्त्र उत्पन्न करे १९ घृषोत्सव से लगाकर घृष्याम्त तक अशनादि मोजन लेता ही है २० अनेपणिक अप्राशुक आहार लेवे ।

इफवीश प्रकार के शयल कर्मः—१ इस्त कर्म २ मैथुन सेवे ३ रात्रि मोजन को ४ आधा कर्मा भोगवे ५ राज पिंड जिने ६ पाँच बोल सेवे—१ खरीद कर देवे तथा लेवे २ उधार देवे तथा लेवे ३ पलान्कार से देवे तथा लेवे ४ स्वामी की आज्ञा बिना देवे तथा लेवे ५ स्थानक में सामां जाकर देवे तथा लेवे ७ वारंवार प्रत्याख्यान करके भोगवे ८ महिने के अन्दर तीन उदक लेव करे ( नदी उतरे ) ९ छः माह से पहले एक गण से दूमेरे गण ले जावे १० एक माह के अन्दर तीन माया का स्थान भोगवे ११ शय्यातर का आहार करे १२ इरादा पूर्वक हिंसा करे १३ इरादा पूर्वक असत्य बोले १४ इरादा पूर्वक घोरी को १५ इरादा पूर्वक सचिच पृथ्वी पर स्थानक शय्या पर बैठक करे १६ इरादा पूर्वक सचिच मिथ्र पृथ्वी पर शय्या दिक करे १७ सचिच शिला, पत्थर, सूक्ष्म जीव जंतु तथा ऐमा कृष्ट तथा अंड प्राणी बीज, हरित आदि जीव वारं

करे १४ अकाले स्वाध्याय को १५ सचिच्च पृथ्वी से हाथ पाँव भरे हुवे होने पर भी आहारादि लेने जावे १६ शान्ति के समय तथा प्रहर रात्रि भीत जाने पर जोर २ से आवाज करे १७ गच्छ में भेद उत्पन्न करे १८ गच्छ में क्लेश उत्पन्न करके परस्पर दुख उत्पन्न करे १९ सूर्योदय से लगाकर सूर्यास्त तक अशनादि मोजन लेता ही रहे २० अनेपणिक अप्राशुक आहार लेवे ।

इफवीश प्रकार के शयल कर्मः-१ हस्त कर्म २ मैथुन सेवे ३ रात्रि मोजन करे ४ आधा कर्मी भोगवे ५ राज पिंड जिने ६ पांच बोल सेवे-१ खरीद कर देवे तथा लेवे २ उधार देवे तथा लेवे ३ बलान्कार से देवे तथा लेवे ४ स्वामी की आज्ञा बिना देवे तथा लेवे ५ स्थानक में सामां जाकर देवे तथा लेवे ७ वारंवार प्रत्याख्यान करके भोगवे ८ महिने के अन्दर तीन उदक लेप करे ( नदी उतरे ) ९ छः माह से पहले एक गण से दूसरे गण में जावे १० एक माह के अन्दर तीन माया का स्थान भोगवे ११ शय्यातर का आहार करे १२ इरादा पूर्वक हिंसा करे १३ इरादा पूर्वक असत्य बोले १४ इरादा पूर्वक चोरी करे १५ इरादा पूर्वक सचिच्च पृथ्वी पर स्थानक शय्या व बैठक करे १६ इरादा पूर्वक सचिच्च मिथ पृथ्वी पर शय्या-दिक करे १७ सचिच्च शिला, पत्थर, सूक्ष्म जीव जन्तु ग्हे ऐसा कष्ट तथा अंड प्राणी राज, हरित आदि जीव वाले

१६ मकाल साय्याप कर १२ साय्ये पृथ्वी त द्विप  
 मरे हुये होने पर भी आहारादि लेने जावे १६ शान्ति  
 समय तथा प्रहर रात्रि भीत जाने पर जोर २ से  
 यात्र करे १७ गच्छ में भेद उत्पन्न करे १८ गच्छ में  
 श उत्पन्न करके फस्पर दुग् उत्पन्न करे १९ सूर्योदय  
 लगाकर सूर्यास्त तक अशनादि मोजन लेता ही रहे  
 अनेपणिक अथाशुक आहार लेवे ।

इष्ययीश प्रकार के शयल कर्म:- १ हस्त कर्म २  
 न मेरे ३ रात्रि मोजन करे ४ आषा कर्मी मोगरे ५  
 विंइ जिने ६ पाँच बोल मेरे-१ मरीद कर देवे तथा  
 २ उचार देवे तथा लेवे ३ बनावकार मे देवे तथा लेवे  
 स्यामी की आज्ञा बिना देवे तथा लेवे ५ स्थानक मे  
 जाकर देवे तथा लेवे ७ वारंवार प्रत्याख्यान करके  
 मे ८ मदिने के अन्दर तीन उदक लेव करे ( नदी  
 ) ९ छः माह मे पहले एक गण मे दूसरे गण मे  
 १० एक माह के अन्दर तीन माया का स्थान मोगरे  
 शय्यातु का अहार करे १२ इगदा पूर्वक दिमा करे  
 इगदा पूर्वक अमन्य बोले १५ इगदा पूर्वक योगी करे  
 इगदा पूर्वक मन्दिन पृथ्वी पर स्थानक शय्या व  
 करे १६ इगदा पूर्वक मन्दिन मिश्र पृथ्वी पर शय्या-  
 करे १७ मन्दिन गिला, पन्थर, मूसन जीव वस्तु रहे  
 कष्ट तथा कंठ प्राणी शत्रु, इति आदि जीव वस्तु

को १४ अकाले स्वाध्याय को १५ सचित्त पृथ्वी से हाथ पाँव मरे हुये होने पर भी आहारादि लेने जावे १६ शान्ति के समय तथा प्रहर रात्रि भीत जाने पर जोर २ से आवाज करे १७ गच्छ में भेद उत्पन्न करे १८ गच्छ में क्लेश उत्पन्न करके परस्पर दुख उत्पन्न करे १९ सूर्योदय से लगाकर सूर्यास्त तक अशनादि भोजन लेता ही रहे २० अनेपणिक अप्राणुक आहार लेवे ।

इकवीश प्रकार के शयल कर्मः-१ इस्त कर्म २ मैथुन सेवे ३ रात्रि भोजन करे ४ आधा कर्मी भोगवे ५ रात्र पिंड जिने ६ पांच बोल सेवे-१ खरीद कर देवे तथा लेवे २ उधार देवे तथा लेवे ३ बलान्कार से देवे तथा लेवे ४ स्वामी की आज्ञा बिना देवे तथा लेवे ५ स्थानक में सार्ना जाकर देवे तथा लेवे ७ वारंवार प्रत्याख्यान करक भोगवे ८ महिने के अन्दर तीन उदक लेप करे ( नदी उतरे ) ९ छः माह से पहले एक मण से दूसरे मण में जावे १० एक माह के अन्दर तीन माया का स्थान भोगवे ११ शय्यातर का आहार करे १२ इरादा पूर्वक हिंसा करे १३ इरादा पूर्वक असत्य बोले १४ इरादा पूर्वक घोरी करे १५ इरादा पूर्वक सचित्त पृथ्वी पर स्थानक शय्या व बैठक करे १६ इरादा पूर्वक सचित्त मिथ्र पृथ्वी पर शय्या-  
क करे १७ सचित्त शिला, पत्थर, मूत्तम जीव जन्तु रहे  
का कष्ट तथा बंठ प्राणी राज, हनि आदि जीव वास्त





पुरुषों का [ हितैषी-मित्र भादे ] दिल फेरे तो  
को राज्य कर्तव्य से च्युत करे तो महा मोहनीय

११ स्त्री आदि गृह होकर, विवाहित होने  
[ मैं कुंवारा हूँ ] कुमारपने का विरुद्ध धरावे  
मोहनीय ।

१२ गायों [ गौत्रे ] के अन्दर गर्दभ समा  
विषय में गृह हो कर आत्मा का अहित कर  
माया मृपा बोले अन्नदात्री होने पर भी अन्न  
विरुद्ध [ रूप ] धरावे तो महा मोहनीय [ कार  
में धर्म पर अविश्वास होवे, धर्मों पर प्रतीत न रहे

१३ जिसके आश्रय से आजीविका को उर्ध्व  
दाता की लक्ष्मी में लुब्ध होकर उसकी लक्ष्मी लु  
अन्य से लुटावे तो महा मोहनीय ।

१४ जिसकी दरिद्रता दूर करके ऊंच पद प  
को किया वो पुरुष ऊंच पद पाकर पश्चात् ईर्ष्या  
व कलुषित चित्त से उपकारी पुरुष पर विपत्ति डाल  
धन प्रमुख की आमद में अन्तराय डाले तो महा मो

१५ अपना पालन पोषण करने वाले राजा,  
प्रमुख तथा ज्ञानादि देने वाले गुरु आदि को म  
महा मोहनीय ।

का राजा, व्यापारी गृह का





[ व्यवहारिया ] तथा नगर श्रेष्ठ ये तीनों अत्यन्त यशस्वी हैं अतः इनकी घात करे तो महा मोहनीय ।

१७ अनेक पुरुषों के आश्रय दाता-आधार भूत [ समुद्र में द्रौप समान ] को मारे तो महा मोहनीय ।

१८ संयम लेने वाले को तथा जिसने संयम ले लिया हो उसे धर्म से भ्रष्ट करे तो महा मोहनीय ।

१९ अनन्त ज्ञानी व अनन्त दर्शी ऐसे तीर्थकर देव का अवर्णवाद [ निन्दा ] बोले तो महा मोहनीय ।

२० तीर्थकर देव के प्ररूपित न्याय मार्ग का द्वेषी बन कर अवर्णवाद बोले, निन्दा करे और शुद्ध मार्ग से लोगों का मन फेरे तो महा मोहनीय ।

२१ आचार्य उपाध्याय जो सूत्र प्रमुख विनय सीखते हैं-व सिखाते हैं उनकी हिलना निन्दा करे तो महामोहनीय ।

२२ आचार्य उपाध्याय को सच्चे मन से नहीं आराधे तथा अहंकार से भक्ति सेवा नहीं करे तो महा मोहनीय ।

२३ अल्प सूत्री हो कर भी शास्त्रार्थ करके अपनी श्लाघा करे स्वाध्याय का वाद करे तो महा मोहनीय ।

२४ अतपस्वी होकर भी तपस्वी होने का टोंग रचे ( लोगों को ठगने के लिये ) तो महा मोहनीय ।

२५ उपकारार्थ गुरु आदि का तथा स्वविर, ग्लान प्रमुख का शक्ति होने पर भी विनय वैयावच नहीं करे ( कहे के इन्होंने मेरी सेवा पढेली नहीं की इस प्रकार वह

पूर्व मायावी मलिन चित्त वाला करना सोच बाँड कर नाश करने वाला अनुभवा रहित होता है ) थे महा मोहनीय ।

२६ चार तीर्थ के मन्दिर दूः पढ़ें ऐसी कथा काठो प्रमुख ( बल्लभ रूप गुणोदक ) का प्रयोग करे तो महा मोहनीय ।

२७ अपनी श्राप कथाने तथा निवृत्ता करने के लिये अर्घ्य दोग वही अर्घ्य निविष्ट नथ प्रमुख का प्रयोग करे तो महा मोहनीय ।

२८ मनुष्य सुम्बन्धी नोग तथा देव सुम्बन्धी नोग का अर्घ्य पने गाढ परिश्रम से प्राप्त होकर आस्ता-दन करे तो महा मोहनीय ।

२९ महद्विक महाज्योतिवान् महाबलस्वी देवों के बल वीर्य प्रमुख का अर्घ्य वाद सोसे तो महा मोहनीय ।

३० अज्ञानी होकर लोक में पूजा-सू.वा निविष्ट व्यन्तर प्रमुख देव को नहीं देखता हुआ भी कहे कि 'मैं देखता हूँ' ऐसा कहे तो महा मोहनीय ।

इच्छार्थाय प्रचार के सिद्ध के आदि गुणः-आठ कर्म की ३१ प्रकृति का विषय से ३१ गुण ।

३१ प्रकृति नाँचे लिखे अनुसार—

१ ज्ञानावाहीय कर्म की पाच प्रकृति—१ नति ज्ञाना-

वरणीय २ श्रुत ज्ञाना वरणीय ३ अविधि ज्ञाना वरणीय  
४ मन पर्यव ज्ञाना वरणीय ५ केवल ज्ञाना वरणीय ।

२ दर्शना वरणीय कर्म की नव प्रकृति-१ निद्रा २  
निद्रा निद्रा ३ प्रचला ४ प्रचला प्रचला ५ धीणाद्वि (स्त्य-  
नद्वि ) (६) चक्षु दर्शना वरणीय (७) अचक्षु दर्शना वर-  
णीय (८) अविधि दर्शना वरणीय (९) केवल दर्शना  
वरणीय ।

(३) वेदनीय कर्म की दो प्रकृति-१ शाता वेदनीय २  
अशाता वेदनीय ।

(४) मोहनीय कर्म की दो प्रकृति-१ दर्शन मोहनीय  
२ चरित्र मोहनीय ।

(५) आयुष्य कर्म की चार प्रकृति-१ नरक आयुष्य २  
तिर्यैच आयुष्य ३ मनुष्य आयुष्य ४ देव आयुष्य ।

(६) नाम कर्म की दो प्रकृति-१ शुभनाम २ अशुभ  
नाम ।

(७) गोत्र कर्म की दो प्रकृति-१ ऊंच गोत्र २ नीच  
गोत्र ।

(८) अन्तराय कर्म की पांच प्रकृति-१ दानान्तराय २  
लामान्तराय ३ भोगान्तराय ४ उप भोगान्तराय ५ वीर्यान्तराय

चत्तीश प्रकार का योग संग्रहः-१ जो कोई पाप  
लगा होव उसका प्रायश्चित्त लेने का सुग्रह करना २ जो  
कोई पाप होव उसका दण्ड पतिव्रती ब्रह्मचारी का सं-

करना ३ विपत्ति शान्ति पर धर्म के अन्दर दृढ़ रहने का संग्रह करना ४ निष्ठा रहित तप करने का संग्रह करना ५ सशर्त प्रदण करने का संग्रह करना ६ शुश्रूषा टालने का संग्रह करना ७ अज्ञात कुल की गौचरी करने का संग्रह करना ८ निर्लोभी होने का संग्रह करना ९ बावीस परिपद सदन करने का संग्रह करना १० सरल निर्मल ( पवित्र ) स्वमात्र रखने का संग्रह करना ११ सत्य संयम रखने का संग्रह करना १२ समकित निर्मल रखने का संग्रह करना १३ समाधि से रहने का संग्रह करना १४ पांच आचार पालने का संग्रह करना १५ विनय करने का संग्रह करना १६ शरीर को स्थिर रखने का संग्रह करना १७ सुविधि-अच्छे अनुष्ठान का संग्रह करना २० आश्रव सेकने का संग्रह करना २१ आत्मा के दोष टालने का संग्रह करना २२ सर्व विषयों से विमुक्त रहने का संग्रह करना २३ प्रत्याख्यान करने का संग्रह करना २४ द्रव्य से उपाधि त्याग, भाव से गर्वादिक का त्याग करने का संग्रह करना २५ अप्रमादी होने का संग्रह करना २६ समय समय पर क्रिया करने का संग्रह करना २७ धर्म ध्यान का संग्रह करना २८ मंत्र योग का संग्रह करना २९ मरण आतङ्क ( रोग ) उत्पन्न होने पर मन में चान न करने का संग्रह करना ३० स्वप्न दि का न्य ग मन का संग्रह करना ३१ प्रायश्चित्त का संग्रह करना ३२ आराधिक





करे तो अशातना ( १७ ) गुरु आदि के साथ मथना अन्य साधु के साथ अन्नदि बेहर कर लावे और गुरु व बुद्ध आदि को पूछे बिना त्रिम पर भ्रमना प्रेम दे उसे थोड़ा २ देवे तो अशातना ( १८ ) गुरु आदि के साथ आहार करते समय अच्छे २ पत्र, शाक, रम रहित मनोज्ञ भोजन जन्दी से करे तो अशातना ( १९ ) बड़ों के बोलाने पर सुनते हुवे भी चुर रहे तो अशातना ( २० ) बड़ों के बोलाने पर अपने आसन पर पैठा हुवा 'हां' कहे परन्तु काम का कहेगें इस मय से बड़ों के पास जावे नहीं तो अशातना ( २१ ) बड़ों के बुलाने पर आवे और आकर कहे कि ' क्या कहते हो ' इस प्रकार बड़ों के साथ अविनय से बोले तो अशातना ( २२ ) बड़े कहे कि यह काम करो तुम्हे लाभ होगा तब शिष्य कहे कि आप ही करो, आपको लाभ होगा तो अशातना ( २३ ) शिष्य बड़ों के कठोर, कर्कश भाषा बोले तो अशातना ( २४ ) शिष्य गुरु आदि बड़ों से, जिस प्रकार बड़े बोले वैसे ही शब्दों से, चार्त्तालाप करे तो अशातना ( २५ ) गुरु आदि धार्मिक व्याख्यान वांचते होवे उस समय सभा में जाकर कहे कि ' आप जो कहते हो वो कहां लिखा है ' इस प्रकार कहे तो अशातना ( २६ ) गुरु आदि व्याख्यान देते हों उस समय उन्हें कहे कि आप बिलकुल भूल गये हो तो अशातना ( २७ )



## नंदा सूत्र में पांच ज्ञान का विवेचन

१ ज्ञेय २ ज्ञान ३ ज्ञानी का अर्थ ।

१ ज्ञेय—जानने योग्य पदार्थ २ ज्ञान—जीव का उपयोग, जीव का लक्षण, जीव के गुण का जान पना वो ज्ञान ३ ज्ञानी—जो जाने-जानने वाला जीव—मसंख्यगत प्रदेशी आत्मा वो ज्ञानी ।

१ ज्ञान का विशेष अर्थ

१ जिससे वस्तु का जानपना होवे ।

२ जिसके द्वारा वस्तु की जान करी होवे ।

३ जिसकी सहायता से वस्तु की जानकारी होवे ।

४ जानना सो ज्ञान ।

ज्ञान के भेद

ज्ञान के पांच भेद १ मति ज्ञान २ ध्रुत ज्ञान ३ अविज्ञान ४ मनः पर्वव ज्ञान ५ केवल ज्ञान ।

मति ज्ञान के दो भेद

१ सामान्य २ विशेष—१ सामान्य प्रकार का ज्ञान सो मति २ विशेष प्रकार का ज्ञान सो मति ज्ञान और विशेष प्रकार का अज्ञान सो मति अज्ञान । सम्यक् दृष्टि की मति वो मति ज्ञान और भिन्ना दृष्टि की मति सो मति अज्ञान ।

## २ धृत ज्ञान के दो भेद

१ सामान्य २ विशेषः--१ सामान्य प्रकार का धृत सो धृत कहलाता है और २ विशेष प्रकार का धृत सो धृत ज्ञान या धृत अज्ञानः--सम्यक् दृष्टि का धृत-सो धृत ज्ञान और मिथ्या दृष्टि का धृत सो धृत अज्ञान १ मति ज्ञान २ धृत ज्ञान ये दोनों ज्ञान अन्योन्य परस्पर एक दूसरे में चीर नीर समान मिले रहते हैं । जीव और अम्यन्तर शरीर के समान दोनों ज्ञान जब साथ होते हैं तबभी पहले मति ज्ञान और फिर धृत ज्ञान होता है । जीव मति के द्वारा जाने सो मति ज्ञान और धृत के दारे जाने सो धृत ज्ञानः--

मति ज्ञान का वर्णनः--

मति ज्ञान के दो भेदः--

धृत निध्रीत-मुने इवे वचनों के अनुसार मति फैलावे ।

२ अधृत निध्रीत-जो नहीं मुना व नहीं देखा हो वो भी उसमें अपनी मति ( बुद्धि ) फैलावे ।

अधृत निध्रीत के चार भेद

१ औत्पतिक २ वैनायिका ३ कार्मिका ४ पारिषानिका ।

औत्पानिका बुद्धिः जो पहिले नहीं देखा हो व न मुना हो उसमें एक दिन विगृह अर्थव्र ही बुद्धि उत्पन्न हो-

वे व जो बुद्धि फल को उत्पन्न करे उसे औत्पातिका बुद्धि कहते हैं ।

२ वैनायिका बुद्धिः-गुरु आदि की विनय मण्डि से जो बुद्धि उत्पन्न होवे व शास्त्र का अर्थ रहस्य समझे वो वैनायिका बुद्धि ।

३ कार्मिका ( कार्मीया ) बुद्धिः-देखते, लिखते, चित्तते, पढ़ते सुनते, सीखते आदि अनेक शिल्प कला आदि का अभ्यास करते २ इन में कुशलता प्राप्त करे वो कार्मिका बुद्धि ।

पारिणामिका बुद्धिः-जैसे जैसे वय ( उम्र ) की वृद्धि होती जाती है वैसे वैसे बुद्धि बढ़ती जाती है, तथा बहु खत्री स्वविर प्रत्येक गुरुआदि प्रमुख का आलोचन करता बुद्धि की वृद्धि होवे, ज्ञानि स्मरणारि ध्यान उत्पन्न होवे वो पारिणामिका बुद्धि ।

धन निधीत मति धान के चार भेद

१ अथप्रह २ इहा ३ अयात ४ धारणा ।

१ अथप्रह के दो भेद

१ अथप्रह २ अथप्रह । अथप्रह के चार भेदः- १ धोत्रेन्द्रिय अथप्रह २ घात्रेन्द्रिय अथप्रह ३ अथप्रह ४ अथप्रह । अथप्रह के चार भेदः- १ अथप्रह २ अथप्रह ३ अथप्रह ४ अथप्रह ।

वे इन्द्रिये ग्रहण करें—सरावले के दृष्टान्त समान-यां व्यंजनावग्रह कहलाता है ।

चक्षु इन्द्रिय और मन ये दो रूपादि पुद्गल के सामने जाकर उन्हें ग्रहण करें इसलिये चक्षुइन्द्रिय और मन इन दो के व्यंजनावग्रह नहीं होते हैं, शेष चार इन्द्रियों का व्यंजनावग्रह होता है ।

श्रोत्रेन्द्रिय व्यंजनावग्रह—जो कान के द्वारा शब्द के पुद्गल ग्रहण करे ।

घ्राणेन्द्रिय व्यंजनावग्रह—जो नासिका से गन्ध के पुद्गल ग्रहण करे ।

रसेन्द्रिय व्यंजनावग्रह—जो जिह्वा के द्वारा रस के पुद्गल ग्रहण करे ।

स्पर्शेन्द्रिय व्यंजनावग्रह—जो शरीर के द्वारा स्पर्श के पुद्गल ग्रहण करे ।

व्यंजनावग्रह को समझाने के लिये दो दृष्टान्त—

१ पड्विधोहग दिटंतेणं २ मल्लग दिटंतेणं

१ पड्विधोहग दिटंतेणं:—प्रति बोधक ( जगाने का ) दृष्टान्त जैसे किसी सोते हुए पुरुष को कोई अन्य पुरुष बुलाकर आवाज देवे ' हे देवदत्त ' यह सुनकर वो जाग उठता है और जाग कर ' हूं ' जवाब देता है । तब शिष्य शंका उत्पन्न होने पर पृच्छता है ' हे स्वामिन ! उन पुरुष ने हुंकारा दिया तो क्या उसने एक मनव के,







नहीं कि यह क्रिय का शब्द व गन्ध प्रमुख है बादमें वह से इहा मतिज्ञान में प्रवेश करे । इहा जो विचारे कि य अमुक का शब्द व गन्ध प्रमुख है परन्तु निश्चय नहीं होवे पश्चात् अवाप्त मति ज्ञान में प्रवेश करे । अवाप्त जिससे यह निश्चय हो कि यह अमुक का ही शब्द व गन्ध पश्चात् धारणा मति ज्ञान में प्रवेश करे । धारणा जो धारणा रखे कि अमुक शब्द व गन्ध इस प्रकार का था ।

एवं इहा के ६ भेदः—श्रोत्रेन्द्रिय इहा, यावत् नो इन्द्रिय इहा । एवं अवाप्त के ६ भेद श्रोत्रेन्द्रिय, यावत् नो इन्द्रिय अवाप्त । एवं धारणा के ६ भेद श्रोत्रेन्द्रिय धारणा यावत् नो इन्द्रिय धारणा ।

इनका काल कहते हैंः—अवग्रह का काल एक समय से असंख्यात समय तक प्रवेश किये हुवे पुद्गलों को अन्त समय जाने कि मुझे कोई बुला रहा है ।

इहा का काल, अन्तर्मुहूर्त, विचार हुना करे कि जो मुझे बुला रहा है वो यह है अथवा वह ।

अवाप्त का कालः—अन्तर्मुहूर्त-निश्चय करने का कि मुझे अमुक पुरुष ही बुला रहा है । शब्द क ऊपर से निश्चय करे ।

धारणे का काल संख्यात वषे अथवा असंख्यात वषे तक धारण करे कि अमुक समय मैंने जो शब्द सुना वो इस प्रकार है । अवग्रह के दश भेद, इहा के ६ भेद, अवाप्त

के ६ भेद, चारणा के ६ भेद एवं सब मिलकर श्रुत निश्चीत मति ज्ञान के २ = भेद हूवे ।

मति ज्ञान समुच्चय चार प्रकार का-१ द्रव्य मे २ क्षेत्र मे ३ काल मे ४ भाव मे १ द्रव्य मे मति ज्ञानी सामान्य मे उपदेश द्वारा सर्व द्रव्य जाने परन्तु देखे नहीं । २ क्षेत्र मे मति ज्ञानी सामान्य मे उपदेश के द्वारा सर्व क्षेत्र की बात जाने परन्तु देखे नहीं । ३ काल मे मति ज्ञानी सामान्य मे उपदेश के द्वारा सर्व काल की बात जाने परन्तु देखे नहीं । ४ भाव मे-सामान्य मे उपदेश के द्वारा सर्व भाव की बात जाने परन्तु देखे नहीं-नहीं देखने का कारण यह है कि मति ज्ञान को दर्शन नहीं है । नग-दही घृण मे पासड़ पाठ है वो भी श्रद्धा के विषय मे है परन्तु देखे ऐसा नहीं ।

धुन ( सूत्र ) ज्ञान का वर्णन ।

धुन ज्ञान के १४ भेदः- १ अक्षर धुन २ अक्षर धुन ३ संकी श्रुत ४ अक्षर श्रुत ५ मन्त्र धुन ६ निष्क धुन ७ नादिक धुन ८ अनादिक धुन ९ सरसदमित धुन १० अरसदमित धुन ११ गानिक धुन १२ अगानिक धुन १३ अंगवित धुन १४ अंग प्रविष्ट धुन ।

१ अक्षर धुनः- इसके तीन भेद- १ मन्त्र अक्षर २ अक्षर अक्षर ३ नादिक अक्षर

१ संकी अक्षर धुन - अक्षर के अक्षर के अक्षर

को कहते हैं । जैसे क, ख, ग प्रमुख सर्व अक्षर की संज्ञा का ज्ञान, क अक्षर के आकार को देख कर कहे कि यह ख नहीं, ग नहीं इस तरह से सर्व अक्षरों का ना वह कर कहे कि यह तो क ही है । एवं संस्कृत, प्राकृत, गोर्दी, फारसी, द्राविडी, हिन्दी आदि अनेक प्रकार की लिपियों में अनेक प्रकार के अक्षरों का आकार है इनका जो ज्ञान होवे उसे संज्ञा अक्षर भूत ज्ञान कहते हैं ।

२ व्यंजन अक्षर भूतः—हृन्, दीर्घ, काना, मात्रा, अनुस्वार प्रमुख की संयोजना करके बोलना व्यंजनाक्षर भूत ।

३ लब्धि अक्षर भूतः—इन्द्रियार्थ के जानपने की लब्धि से अक्षर का जो ज्ञान होता है वो लब्धि अक्षर भूत इसके ६ भेद—

१ श्रोत्रेन्द्रिय लब्धि अक्षर भूत.—ज्ञान में भेरी प्रमुख का शब्द सुनकर कहे कि यह भेरी प्रमुख का शब्द है अतः भेरी प्रमुख अक्षर का ज्ञान श्रोत्रेन्द्रिय लब्धि में हुआ इस लिये इसे श्रोत्रेन्द्रिय लब्धि अक्षर कहते हैं ।

२ चक्षुःश्रोत्रेन्द्रिय अक्षर भूतः—अक्षर ग आन प्रमुख का रूप देख कर कहे कि यह आन प्रमुख का रूप है अतः अक्षर प्रमुख अक्षर का ज्ञान चक्षुःश्रोत्रेन्द्रिय लब्धि में हुआ इस लिये इसे चक्षुःश्रोत्रेन्द्रिय लब्धि अक्षर कहते हैं ।

३ श्रोत्रेन्द्रिय लब्धि अक्षर भूत—ज्ञान में भेरी प्रमुख का शब्द सुनकर कहे कि यह भेरी प्रमुख का शब्द है अतः भेरी प्रमुख अक्षर का ज्ञान श्रोत्रेन्द्रिय लब्धि में हुआ इस लिये इसे श्रोत्रेन्द्रिय लब्धि अक्षर कहते हैं ।

केतकी प्रमुख की सुगन्ध ग्रहण कर कहे कि यह केतकी प्रमुख की सुगन्ध है अतः केतकी प्रमुख अक्षर का ज्ञान घ्राणेन्द्रिय लब्धि से हुआ इस लिये इसे घ्राणेन्द्रिय लब्धि धृत कहते हैं ।

४ रसेन्द्रिय लब्धि अक्षर धृतः—जिह्वा से शकर प्रमुख का स्वाद जान कर कहे कि यह शकर प्रमुख का स्वाद है अतः इस अक्षर का ज्ञान रसेन्द्रिय से हुआ इसलिये इसे रसेन्द्रिय लब्धि अक्षर धृत कहते हैं ।

५ स्पर्शेन्द्रिय लब्धि अक्षर धृतः—शीत, उष्ण आदि का स्पर्श होने से जाने कि यह शीत व उष्ण है अतः इस अक्षर का ज्ञान स्पर्शेन्द्रिय से हुआ इस लिये इसे स्पर्शेन्द्रिय लब्धि अक्षर धृत कहते हैं ।

६ नोइन्द्रिय लब्धि अक्षर धृतः—मन में चिन्ता व विचार करते हुये स्मरण हुआ कि मैंने अमुक सोचा व विचारा अतः इस स्मरण के अक्षर का ज्ञान मन से—नोइन्द्रिय से हुआ इस लिये इसे नोइन्द्रिय लब्धि अक्षर धृत कहते हैं ।

२ अनक्षर धृतः—इसके अनेक भेद हैं, अक्षर का उच्चारण किये बिना शब्द, छोक, उधरम, उद्धास, निःश्वास, बगार्ली, नाक निपीक तथा नगारे प्रमुख का शब्द अनक्षरीवाणी द्वारा जान लेना इसे अनक्षर धृत कहते हैं ।

३ संज्ञा धृतः—इसके तीन भेद—१ मंजरी कालिकोपदेश २ मंजरी हेतुपदेश ३ मंजरी दृष्टिवादापदेश ।

१ संज्ञी कालिकोपदेशः—धृत सुनकर १ विचारना  
२ निश्चय करना ३ समुच्चय अर्थ की गवेषणा करना  
४ विशेष अर्थ की गवेषणा करना ५ सोचना ( चिन्ता  
करना ) ६ निश्चय करके पुनः विचार करना ये ६ बोल संज्ञी  
जीव के होते हैं । इस लिये इसे संज्ञी कालिकोपदेश धृत  
कहते हैं ।

२ संज्ञी हेतूपदेशः—जो संज्ञी धारकर रखे ।

३ संज्ञी दृष्टिवादोपदेश—जो चयोपशम भाव से  
सुने । अर्थात् शास्त्र को हेतु सहित, द्रव्य अर्थ सहित, का-  
रण युक्ति सहित, उपयोग सहित पूर्वापर विचार सहित  
जो पढे, पढावे, सुने उसे संज्ञी धृत कहते हैं ।

असंज्ञी धृत के तीन भेदः—१ असंज्ञी कालिको-  
पदेश २ असंज्ञी हेतूपदेश ३ असंज्ञी दृष्टिवादोपदेश ।

(१) असंज्ञी कालिकोपदेश धृत—जो सुने परन्तु  
विचारे नहीं । संज्ञी के जो ६ बोल होते हैं वो असंज्ञी के  
नहीं ।

असंज्ञी हेतूपदेश धृत—जो सुन कर धारण नहीं  
करे ।

(२) असंज्ञी दृष्टिवादोपदेश—चयोपशम भाव से  
जो नहीं सुने । एवं ये तीन बोल असंज्ञी आर्था कहें, अ-  
र्थात् असंज्ञी धृत—जो भावार्थ सहित, विचार तथा उपयोग  
शून्य, पूरक आलोच सहित, निष्पत्ति सहित आद्य भंजा मे  
पढ तथा पढावे या सुन उसे असंज्ञी धृत कहते हैं ।

(५) सम्यक् धृत-अरिहन्त, तीर्थंकर, केवल ज्ञानी केवल दर्शनी, द्वादश गुण सहित, अठारह दोष रहित, चौतीस अतिशय प्रमुख अनन्त गुण के धारक, इन से प्ररूपित बाहर अंग अर्थ रूप आगम तथा गणधर पुरुषों से गुंथित धृत रूप (मूल रूप) बारह आगम तथा चौदह पूर्व धारी, तेरह पूर्व धारी बारह पूर्व धारी व दश पूर्व धारी जो धृत तथा अर्थ रूप वाणी का प्रकाश किया है वो सम्यक् धृत, दश पूर्व से न्यून ज्ञान धारी द्वारा प्रकाशित किये हुवे आगम समधृत व मिथ्या धृत होते हैं ।

(६) मिथ्या धृत:-पूर्वोक्तगुण रहित, रागद्वेष सहित पुरुषों के द्वारा स्वमति अनुसार कल्पना करके मिथ्यात्व दृष्टि से रचे हुवे ग्रंथ-जैसे भारत, रामायण, वैद्यक, ज्योतिष तथा २८ जाति के पाप शास्त्र प्रमुख-मिथ्याधृत कहलाते हैं । ये मिथ्याधृत मिथ्या दृष्टि को मिथ्या धृत पने परिणामे ( सत्य मान कर पढ़े इस लिये ) परन्तु जो सम्यक् धृत का संपर्क होने से झूठे जान कर छोड़ देवे तो सम्यक् धृत पने परिणामे इस मिथ्याधृत सम्यक्त्वज्ञान पुरुष को सम्यक् बुद्धि से बांचते हुवे सम्यक्त्व रस से परिणामे तो बुद्धि का प्रभाव जान कर आचार्यांगदिक सम्यक् शास्त्र भी सम्यक् ज्ञान पुरुष को सम्यक् हो कर परिणामते हैं और मिथ्या दृष्टि पुरुष का वे ही शास्त्र मिथ्यात्व पने परिणामते है ।

७ सादिक धृत ८ अनादिक धृत ९ सपर्यवसित धृत १० अपर्यवसित धृतः—इन चार प्रकार के धृत का भावार्थ साध २ दिया जाता है । वारह अंग व्यवच्छेद होने आशी अन्त सहित और व्यवच्छेद न होने आशी आदिक अन्त रहित । सद्गुरु से चार प्रकार के होते हैं । द्रव्य से एक पुरुष ने पटना शुरू किया उसे सादिक सपर्यवसित कहते हैं और अनेक पुरुष परंपरा आशी अनादिक अपर्यवसित कहते हैं क्षेत्र से ५ भरत ५ एरावन, दश क्षेत्र आशी सादिक सपर्यवसित ५ महा विदेह आशी अनादिक अपर्यवसित, काल से उत्सर्पिणी अवसर्पिणी आशी सादिक सपर्यवसित नोउत्सर्पिणी नोअवसर्पिणी आशी अनादिक अपर्यवसित, भाव से तीर्थकरो ने भाव प्रकाशित किया इस आशी सादिक सपर्यवसित । चयोपशम भाव आशी अनादिक अपर्यवसित अधवा भव्य का धृत आदिक अन्त सहित अमव्य का धृत आदि अन्त रहित. इस पर दृष्टान्त-सर्व आकाश के अनन्त प्रदेश हैं व एक एक आकाश प्रदेश में अनन्त पर्याय हैं । उन सर्व पर्याय से अनन्त गुणे अधिक एक अगुरुलघु पर्याय अक्षर होता है जो चरे नहीं, व अप्रतिहत, प्रधान, ज्ञान, दर्शन जानना सो अक्षर, अक्षर ने बल सम्पूर्ण ज्ञान जानना-इस में से सर्व जीव को सर्व प्रदेश के अनन्तवें भाग जान पना सदाकाल रहता है शिष्य पृश्नेन लगा हे स्वाभिन् ! यदि उतना जानपना





सामायिक प्रमुख २ आवश्यक व्यतिरिक्त के दो भेद  
१ कालिक भूत । २ उत्कालिक भूत ।

१ कालिक भूत-इसके अनेक भेद हैं-उत्तराष्यपन,  
दशाभुत स्कन्ध, शुद्ध कला, व्यवहार प्रमुख एकवींश एव  
कालिक के नाम नंदि एव में आये हैं । तथा जिन २  
तीर्थंकर के जितने शिष्य ( जिनके चार बुद्धि हाथे ) होये  
उतने पश्चात् सिद्धान्त जानना जैसे आपस देव के  
२५००० लाख पश्चात् तथा २२ तीर्थंकर के संख्याता  
१ हजार पद्मना तथा महावीर स्वामी के १४ हजार पद्मना  
तथा सर्व गणेश के पश्चात् प्रत्येक बुद्ध के बनाए हुए  
पश्चात् ये सर्व कालिक जानना एवं कालिक भूत ।

२ उत्कालिक भूत-यह अनेक प्रकार का है ।  
इसके कालिक प्रमुख २२ प्रकार के शास्त्रों के नाम नंदि  
एव में आये हैं । ये भी इनके विषय और भी अनेक  
प्रकार के शास्त्र हैं परन्तु वर्तमान में अनेक शास्त्र विच्छेद  
में गये हैं ।

शास्त्रों में सिद्धान्त जानने के मन्दक ममान, मन  
मान में अनेक और पात्र का अर्थ है एक ममान  
इसमें बुद्ध हुए हैं ममान के न ममान का न बुद्ध  
ममान का न बुद्ध का न ममान का न ममान का न बुद्ध



दिक गुणों के साथ अखण्ड को जो उत्पन्न होता है वो चायोपशमिक ।

अवधिज्ञान के ( संक्षेप में ) छः भेद-१ अनुगा-  
मिक २ अनानुगामिक ३ वर्ष मानक ४ हाय मानक  
५ प्रति पाति ६ अप्रतिपाति ?

१ अनुगामिक-उदा-जावे वहां साथ आवे ( रहे ) यह  
दो प्रकार का-१ अन्तःगते २ मध्यगत ।

( १ ) अन्तः गत अवधिज्ञान के ३ भेदः- ( १ )

पुरतः अन्तः गत-(पुरयोः अन्तगत) शरीर के आगे  
के भाग के क्षेत्र में जाने व देखे ।

( २ ) मार्गतः अन्तः गत ( मगयोः अन्तगत ) शरीर  
के पृष्ठ भाग के क्षेत्र में जाने व देखे ।

( ३ ) पार्श्वतः अन्तःगत-शरीर के दो पार्श्व भाग के  
क्षेत्र में जाने व देखे ।

अन्तःगत अवधिज्ञान पर दृष्टान्तः जैसे कोई पुरुष  
दीप प्रमुख अग्नि का भाजन व मणि प्रमुख हाथमें लेकर  
आगे करता हुआ चले तो आगे देखे, पीछे रख कर चले  
तो पीछे देखे व दोनों तरफ रख कर चले तो दोनों तरफ  
देखे व जिस तरफ रखे उधर देखे दूसरी तरफ नहीं ।  
ऐसा अवधिज्ञान का ज्ञानना । जिस तरफ देखे जाने उस  
तरफ संख्याता, अनंख्याता योजन तक जाने देखे ।

( २ ) मध्य गत-यह सर्व दिशा व विदिशाओं में



लोक के बराबर असंख्यात सण्ड ( भाग विह्वल ) बराबर  
उठना क्षेत्र सर्व दिशा व विदिशामों ( चारों ओर ) से  
देखे । अवधि ज्ञान रूपी पदार्थ देखे । मध्यम मनेरु भेद हैं-  
शुद्धि चार प्रकार से होंगे—

१ द्रव्य से २ क्षेत्र से ३ काल से ४ भाव से ।

१ काल से ज्ञान की शुद्धि होवे तब तीन बोल  
का ज्ञान बढ़े ।

२ क्षेत्र से ज्ञान बढ़े तब काल की भ्रमना व  
द्रव्य भाव का ज्ञान बढ़े ।

३ द्रव्य से ज्ञान बढ़े तब काल की तथा क्षेत्र  
की भ्रमना व भाव की शुद्धि ।

४ भाव से ज्ञान बढ़े तो क्षेत्र तीन बोल की भ्रमना  
इसका विस्तार पूर्वक अनेकानेक वस्तुओं में काल-का ज्ञान  
पूर्वक देखे जैसे आरे में जन्मा हुआ निरोगो बलिष्ठ  
शरीर व वज्ररूपम नाशक मंदनन वाला पुठर तीक्ष्ण  
गुई से छर डटे पान की पीड़ी बर्ष, विधेय सम्यक् पान  
में दूसर पान में गुई को जाने में समंख्यात सम्यक् लग  
जाता है । काल ऐसा प्रकृत होता है । इससे क्षेत्र समंख्या-  
त गुण प्रकृत है । जैसे एक आकृत तिन क्षेत्र में समं-  
ख्यात क्षेत्रों में एक एक वर्णों में समंख्यात भाग्य  
प्रकृत है एक एक पत्रों में एक एक भाग प्रकृत का  
एक प्रकृत का एक एक पत्रों में समंख्यात काल प्रकृत की

जाते हैं तो भी एक श्रेणी पूरी (पूर्ण) न होवे । इस प्रकार क्षेत्र सूक्ष्म है । इससे द्रव्य अनन्त गुणा सूक्ष्म है । एक अंगुल प्रमाण क्षेत्र में असंख्यात श्रेणियाँ हैं अंगुल प्रमाण लम्बी व एक प्रदेश प्रमाण जाड़ी में असंख्यात आकाश प्रदेश हैं । एक एक आकाश प्रदेश ऊपर अनन्त परमाणु तथा द्विप्रदेशी, त्रिप्रदेशी, अनन्त प्रदेशी यावत् स्कन्ध प्रमुख द्रव्य हैं । इन द्रव्यों में से समय समय एक एक द्रव्य का अपहाण करने में अनन्त काल चक्र लग जाते हैं तो भी द्रव्य सूक्ष्म नहीं होते द्रव्य से भाव अनन्त गुणा सूक्ष्म है । पूर्वोक्त श्रेणी में जो द्रव्य कहे हैं उनमें से एक एक द्रव्य में अनन्त पर्यव (भाव) हैं एक परमाणु में एक वर्ण, एक गन्ध, एक रस, दो स्पर्श हैं । त्रिणमें एक वर्ण में अनन्त पर्यव हैं । यह एक गुण काला, द्विगुण काला, त्रिगुण काला यावत् अनन्त गुण काला है इस प्रकार पाँचों षोडश में अनन्त पर्यव हैं एवं पाँच वर्णों में, दो गन्ध, पाँच रस, व आठ स्पर्श में अनन्त पर्याय हैं । द्वि-प्रदेशी स्कन्ध में २ वर्ण, २ गन्ध, २ रस, ४ स्पर्श हैं इन दश भेदों में भी पूर्वोक्त रीति से अनन्त पर्यव हैं, इस प्रकार सर्व द्रव्य में पंचेव की भावना करना, एवं सर्व द्रव्य के पर्यव इच्छे करके समय समय एक एक पर्यव का अरहरण करने में अनन्त काल चक्र : उन्मत्तियी अवसत्तियी । रीति ज्ञान पर परमाणु द्रव्य के पर्यव पूरे होते हैं एवं द्वि-

प्रदेशी स्फूर्तों के पर्यव त्रिप्रदेशी स्फूर्तों के पर्यव, यावत् अनन्त प्रदेशी स्फूर्तों के पर्यव का अपहरण करने में अनन्त काल चक्र लग जाते हैं तो भी सूटे नहीं इन प्रकार द्रव्य से भाव घृत्तम होते हैं, काल को चने की औपमा क्षेत्र को ज्वार की औपमा द्रव्य को तिल को औपमा और भाव को खमखम की औपमा दी गई है ।

पूर्व चार प्रकार की शक्ति की जो रीति कही गई है उस में से क्षेत्र से व काल से किस प्रकार वर्धमान ज्ञान होता है उसका वर्णन:-

१ क्षेत्र से अंगुल का संख्यातवें भाग जाने देखे व काल से आवलिका के अनुरूपतवें भाग की बात गत व मरिष्य काल की जाने देखे ।

२ क्षेत्र से अंगुल के संख्यातवें भाग जाने देखे व काल से आवलिका के संख्यातवें भाग की बात गत व मरिष्य काल की जाने देखे ।

३ क्षेत्र से एक अंगुल मात्र क्षेत्र जाने देखे व काल से आवलिका से द्रव्य न्यून जाने देखे ।

४ क्षेत्र में पृथक् ( दो में नव तक ) अंगुल की बात जाने देखे व काल से आवलिका मरिष्य काल की बात गत व मरिष्य काल की जाने देखे ।

५ क्षेत्र में एक हाथ प्रमाण क्षेत्र जाने देखे व काल में अन्तर्दृष्ट ( दृष्ट में न्यून ) काल की बात गत व मरि-

ष्य काल की जाने देखे ।

६ चेत्र से धनुष्य प्रमाण चेत्र जाने देखे व काल से प्रत्येक मुहूर्त की बात जाने देखे ।

७ चेत्र से गाउ ( कोस ) प्रमाण चेत्र जाने देखे व काल से एक दिवस में कुछ न्यून की बात जाने देखे ।

८ चेत्र से एक योजन प्रमाण चेत्र जाने देखे व काल से प्रत्येक दिवस की बात जाने देखे ।

९ चेत्र से पञ्चीश योजन चेत्र के भाव जाने देखे व काल से पक्ष में न्यून की बात जाने देखे ।

१० चेत्र से भरत चेत्र प्रमाण चेत्र के भाव जाने देखे व काल से पक्ष पूर्ण की बात जाने देखे ।

११ चेत्र से जम्बू द्वीप प्रमाण चेत्र की बात जाने देखे व काल से एक माह जाजेरी की बात जाने देखे ।

१२ चेत्र से अढ़ाई द्वीप की बात जाने देखे व काल से एक वर्ष की बात जाने देखे ।

१३ चेत्र से पन्द्रहवाँ रुक्म द्वीप तक जाने देखे व काल से पृथक् वर्ष की बात जाने देखे ।

१४ चेत्र से संख्याता द्वीप समुद्र की बात जाने देखे व काल से संख्याता काल की बात जाने देखे ।

१५ चेत्र से संख्याता तथा असंख्याता द्वीप समुद्र की बात जाने देखे व काल से असंख्याता काल की बात जाने देखे । इस प्रकार उर्ध्व लोक, अधो लोक, तिर्यक्



लोक इन तीन लोकों में बढ़ते वर्धमान परिणाम से अ  
में असंख्याता लोक प्रमाण खण्ड जानने की शक्ति ।  
होवे ।

४ हाथ मानक अवधि ज्ञान-अप्रशस्त ले  
के।परिणाम के कारण, अशुभ ध्यान से व अविशुद्ध चा  
परिणाम से ( चरित्र की मलिनता से ) वर्ध मा  
अवधि ज्ञान की हानि होती है । व कुल्लर घटता जा  
है । इसे हाथ मानक अवधि ज्ञान कहते हैं ।

५ प्रति पाति अवधि ज्ञान-जो अवधि ज्ञान प्रा  
हो गया है वो एक समय ही नष्ट हो जाता है । वो जयन  
१ आहुल के असख्यातवें भाग २ अहुल के संख्यातवें भा  
३ वालाग्रं ४ पृथक् वालाग्र ५ लिम्ब ६ पृथक् लिम्ब  
७ युक्त ( जू ) = पृथक् जू ८ जव १० पृथक् जव ११  
आहुल १२ पृथक् आहुल १३ पाँव १४ पृथक् पाँव १५  
वेहैत १६ पृथक् वेहैत १७ हाथ १८ पृथक् हाथ  
१९ कुचि ( दो हाथ ) २० पृथक् कुचि २१ धनुष्य  
२२ पृथक् धनुष्य २३ गाड २४ पृथक् गाड २५  
योजन २६ पृथक् योजन २७ गो योजन २८ पृथक्  
सो योजन २९ सदस्र योजन ३० पृथक् सदस्र  
योजन ३१ लघ योजन ३२ पृथक् लघ योजन ३३ करोड़  
योजन ३४ पृथक् करोड़ योजन ३५ करोड़ा करोड़ योजन  
३६ पृथक् करोड़ा करोड़ योजन इस प्रकार चेत्र अवधि

अश्वि ज्ञान का विषय ( देखने की शक्ति )

नशा नं० १

विषय	१	२	३	४	५	६	७
१. रत्न प्रभा	रत्न प्रभा	शंकर प्रभा	बालु प्रभा	पं० प्रभा	भूम प्रभा	रमः प्रभा	रमसमः प्रभा
२. २० गाउ	२० गाउ	३ गाउ	२० गाउ	२ गाउ	१॥ गाउ	१ गाउ	०॥ गाउ
३. ४ गाउ	३॥ गाउ	३ गाउ	३ गाउ	२॥ गाउ	२ गाउ	१॥ गाउ	१ गाउ

नशा नं० २

विषय	असुरकुमार	६ निकास	व्यन्तर	२५ योजन	विर्षिच पंचे- न्द्रिय संज्ञी	संज्ञी	मनुष्य	उपेतिषी	देव लोक	देव लोक
१. देखे	२५ योजन	२५ योजन	२५ योजन	२५ योजन	आहुल के	आहुल के	आहुल के	संख्याता	१-२	३-४
३. देखे	असंख्यात	संख्यात	असंख्यात	असंख्यात	अ. भाग	अ. भाग	अ. भाग	दीप समुद्र	आहुल के	आहुल के
	दीप समुद्र	दीप समुद्र	दीप समुद्र	दीप समुद्र	अ. भाग	अ. भाग	अ. भाग	॥	अ. भाग	अ. भाग
					असंख्यात	असंख्यात	असंख्यात		रत्न प्रभा के शंकर प्र,	नचि का तला के जिति



अवधि ज्ञान देखने का संस्थान आकारः-१ नेरियों का अवधि ज्ञान प्राणा ( त्रिपाई ) के आकार २ भवन पति का पाला के आकार ३ तिर्यंच का तथा मनुष्य का अनेक प्रकार का है ४ व्यन्तर का पट्ट वृत्त के आकार ५ ज्योतिषी का भालर के आकार ६ बाग्द देवलोक का ऊर्ध्व मृदंग आकार ७ नव ग्रीयवेक का फूलों की संगरी के आकार ८ पांच अनुत्तर विमान का अवधि ज्ञान कंचुकी के आकार होता है ।

नारकी देव का अवधि ज्ञान-१ अनुगामिक २ अप्रतिपाति ३ अवस्थित एवं तीन प्रकार का ।

मनुष्य और तिर्यंच का-१ अनुगामिक २ अनानुगामिक ३ वर्धमानक ४ हाय मानक ५ प्रतिपाति ६ अप्रतिपाति ७ अवस्थित ८ अनवस्थित होता है । यह विषय द्वार प्रहृष्ट प्रज्ञापना सूत्र के ३३ वें पद से लिखा है । नंदि सूत्र में संक्षेप में लिखा हुआ है ।

मनः पर्यय ज्ञान का विस्तार

मन पर्यय ज्ञान के चार भेदः—

१ लब्धि मनः—यह अनुत्तर वाणी देवों को होता है ।

२ संज्ञा मनः—यह मंत्री मनुष्य व मंत्री तिर्यंच को होता है ।

- ३ वर्गणा मनः—यह नारकी व अनुत्तर विमान  
वासी देवों के सिवाय दूसरे देवों को होता है ।
- ४ पर्याय मनः—यह मनः पर्यव ज्ञानी को होता है  
मनः पर्यव ज्ञान किम को उत्पन्न होता है ?
- १ मनुष्य को उत्पन्न होवे, अमनुष्य को नहीं ।
- २ संज्ञी मनुष्य को उत्पन्न होवे असंज्ञी मनुष्य को  
नहीं ।
- ३ कर्म भूमि संज्ञी मनुष्य को उत्पन्न होवे अकर्म  
भूमि संज्ञी मनुष्य को नहीं ।
- ४ कर्म भूमि में संख्याता वर्ष का आयुष्य वाला को  
उत्पन्न होवे परन्तु असंख्याता वर्ष का आयुष्य  
वाला को उत्पन्न नहीं होवे ।
- ५ संख्याता वर्ष का आयुष्य में पर्याप्त को उत्पन्न  
होवे अपर्याप्त को नहीं ।
- ६ पर्याप्त में भी समदृष्टि को उत्पन्न होवे मिथ्या-  
दृष्टि व मिथ्य दृष्टि को नहीं होवे ।
- ७ सम दृष्टि में भी संयति को उत्पन्न होवे परन्तु  
अप्रती समदृष्टि व देगु प्रती वाले को नहीं उत्पन्न होवे ।
- ८ संयति में भी अप्रमत्त संयति को उत्पन्न होवे प्रमत्त  
संयति को नहीं होवे ।
- ९ अप्रमत्त संयति में भी लब्धदान को उत्पन्न होवे  
लब्धदान को नहीं ।

मनः पर्यव ज्ञान के दो भेदः— १ श्रुति मति मनः पर्यव ज्ञान २ विपुल मति मनः पर्यव ज्ञान । सामान्य प्रकार से जाने तो श्रुति मति और विशेष प्रकार से जाने तो विपुल मति मनः पर्यव ज्ञान ।

मनः पर्यव ज्ञान के समुचये चार भेद हैं:- १ द्रव्य से २ क्षेत्र से ३ काल से ४ भाव से । द्रव्य से श्रुतिमति अनन्त अनन्त प्रदेशों तक जाने देखे ( सामान्य से विपुल मति इससे अधिक स्पष्टता से व निर्याय सहित जाने देखे

२ क्षेत्र से श्रुतिमति जघन्य अंगुल के असंख्यातवें भाग उत्कृष्ट नीचे रत्न प्रमा का प्रथम काण्ड के ऊपर का छोटे प्रतर का नीचला तला तक अर्थात् सम भूतल पृथ्वी से १००० योजन नीचे देखे, ऊर्ध्व ज्योतिषी के ऊपर का तल तक देखे अर्थात् समभूतल से ६०० योजन का ऊँचा देखे, तिर्यक् देखे तो मनुष्य क्षेत्र में अढ़ाई द्वीप तथा दो समुद्र के अन्दर संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त के मनोगत भाव जाने देखे, विपुल मति श्रुति मति से अढ़ाई अंगुल अधिक विशेष स्पष्ट निर्याय सहित जाने देखे ।

३ काल से श्रुति मति जघन्य पन्योपम के असंख्यातवें भाग की बात जाने देखे, उत्कृष्ट पन्योपम के असंख्यातवें भाग की अतीत अनागत काल की बात जाने देखे, विपुल मति श्रुति मति से विशेष, स्पष्ट निर्याय सहित जाने देखे ।

४ भाव से श्रुतु मति जयन्त्य अनन्त द्रव्य के भाव ( वर्णादि पर्याय ) जाने देखे उत्कृष्ट सर्व भावों के अनन्तवै भाग जाने देखे, विपुल मति इस से स्पष्ट निर्यय उदित विशेष अधिक जाने देखे ।

मनः पर्यव ज्ञानी अटार्ई द्वीप में रहे हुवे संज्ञी पंचेन्द्रिय के मनोगत भाव जाने देखे अनुमान से जैसे धूँवा देख कर अग्नि का निश्चय होता है जैसे ही मनोगत भाव से देखत हैं ।

केवल ज्ञान का वर्णन ।

केवल ज्ञान के दो भेद—१ मवस्य केवल ज्ञान २ सिद्ध केवल ज्ञान । मवस्य केवल ज्ञान के दो भेद १ संयोगी मवस्य केवल ज्ञान २ अयोगी मवस्य केवल ज्ञान, इनका विस्तार सूत्र से जानना । सिद्ध केवल ज्ञान के दो भेद—१ अनन्तर सिद्ध केवल ज्ञान २ परंपर सिद्ध केवल ज्ञान विस्तार सूत्र से जानना ज्ञान सषुद्धय चार प्रकार का—१ द्रव्य से २ क्षेत्र से ३ काल से ४ भाव से ।

१ द्रव्य से केवल ज्ञानी सर्व रूपा अरूपा द्रव्य जाने देखे ।

२ क्षेत्र से केवल ज्ञानी सर्व क्षेत्र (लोकालोक) की बात जाने देखे ।

३ काल से केवल ज्ञानी सर्व काल की-भूत, भविष्य, वर्तमान-बात जाने देखे ।

के अन्दर नाव रूप हो जाता है ४ दण्ड रत्न-वेतालय पर्वत के दोनों गुफाओं के द्वार खोलता है ५ खड्ग रत्न-शत्रु को मारता है ६ मणि रत्न-दृष्टि रत्न के मस्तक पर रखने से प्रकाश करता है ७ कांकण ( कागनी ) रत्न-गुफाओं में एकर योजन के अन्तर पर धनुष्य के गोलाकार घिसने से सूर्य समान प्रकाश करता है ।

### सात पंचेन्द्रिय रत्न

१ सेनापति रत्न-देशों को विजय करते हैं २ गाथापति रत्न-चौबीस प्रकार का धान्य उत्पन्न करते हैं ३ वार्धिक ( बढई ) रत्न-४२ भूमि महल सड़क पुल आदि निर्माण करते हैं ४ पुरोहित रत्न-लगे हुये पावों को ठीक करते विष को दूर करते, शांति पाठ पढ़ते व कथा सुनाते हैं ५ स्त्री रत्न-विषय के उपभोग में काम आती ६-७ गज रत्न व अश्व रत्न-ये दोनों सवारी में काम आते ।

### चौदह रत्नों का उत्पत्ति स्थान

१ चक्र रत्न २ छत्र रत्न ३ दण्ड रत्न ४ खड्ग रत्न ये चार रत्न चक्रवर्ती की आयुध शाला में उत्पन्न होते हैं ।

१ चर्म रत्न २ मणि रत्न ३ कांकण ( कागनी ) रत्न ये तीन रत्न लक्ष्मी के भण्डार में उत्पन्न होते हैं ।

१ सेनापति रत्न २ गाथापति रत्न ३ वार्धिक रत्न ४



१ स्त्री रत्न विद्याधरों की श्रेणी में उत्पन्न होती है ।

१ गज रत्न २ अश्व रत्न ये दोनों रत्न वेताह्य पर्वत के मूल में उत्पन्न होते हैं ।

### चौदह रत्नों की अवगाहना

१ चक्र रत्न २ छत्र रत्न ३ दण्ड रत्न ये तीन रत्न की अवगाहना एक धनुष्य प्रमाण, चर्म रत्न की दो हाथ की, खड्ग रत्न पचास अङ्गुल लम्बा १६ अंगुल चौड़ा और आधा अंगुल जाड़ा होता है और चार अंगुल की मूटि होती है । मणि रत्न चार अंगुल लम्बा और दो अंगुल चौड़ा व तीन कोने वाला होता है । काकण्य रत्न चार अंगुल लम्बा चार अंगुल चौड़ा चार अंगुल ऊंचा होता है इसके छः तले, आठ कोण, बारह हाँसे वाला आठ सोनेया त्रितना बज्रन में व सोनार के एख समान आकार में होता है ।

### सात पंचेन्द्रिय रत्न की अवगाहना

१ सेना पति २ गाथा पति ३ वाधिक ४ प्रोहित इन चार रत्नों की अवगाहना चक्रवर्ती समान । स्त्री रत्न चक्रवर्ती ने चार आङ्गुल छोटी होती है ।

गज रत्न चक्रवर्ती ने दूगना होता है । अश्व रत्न पू. में मध्य तक १०० अङ्गुल लम्बा नूर से व. न. तक २० अङ्गुल उंचा, मोलह अङ्गुल की उंचा १० अङ्गुल की लुङ्गा, च. अ. रत्न का पदम १० अङ्गुल व. न. का

और ३२ आहुत का मुख होता है । और ६६ आहुत की शिथि ( पेशाव ) है ।

एवं ३३ पदवी का नाम तथा चक्रवर्ती के चौदह रत्नों का विवेचन कहा ।

नरकादिक चार भागों में से निकले हुए जीव २३ पदवियों में की कौन २ भी पदवी पावे-इस पर पन्द्रह बोल ।

१ पहली नरक में निकले हुए जीव २६ पदवी पावे-मान एकेन्द्रिय रत्न छोड़ कर ।

२ दूसरी नरक में निकले हुए जीव २३ पदवी में से १५ पदवी पावे-मान एकेन्द्रिय रत्न और एक चक्रवर्ती एवं आहुत नहीं पावे ।

३ तीसरी नरक में निकले हुए जीव १३ पदवी पावे-मान एकेन्द्रिय रत्न, चक्रवर्ती, आहुत एवं इत्य पदवी नहीं पावे ।

४ चौथी नरक में निकले हुए जीव २२ पदवी पावे-इत्य तो ऊपर की ओर एक चक्रवर्ती एवं २२ नहीं पावे ।

५ पाँचवी नरक में निकले हुए जीव २२ पदवी पावे-२२ ही आहुत एवं चक्रवर्ती रत्न नहीं पावे ।

६ छठी नरक में निकले हुए जीव २२ पदवी पावे-२२ ही आहुत एवं चक्रवर्ती रत्न नहीं पावे ।

७ सातवी नरक में निकले हुए जीव २२ पदवी पावे-२२ ही आहुत एवं चक्रवर्ती रत्न नहीं पावे ।



कोन २ सी पदवी वाले किस किस गति जावे ।

१ पहली दूसरी, तीसरी, चौथी इन चार नरक ११ पदवी वाला जावे ७ पंचेन्द्रिय रत्न, ८ चक्रवर्ती वासुदेव १० समकित दृष्टि ११ मांडलिक राजा एवं १

२ पांचवी छठी नरक में नव पदवी का जावे गज और अश्व ये छोड़ कर शेष पांच पंचेन्द्रिय रत्न ६ चक्रवर्ती ७ वासु देव ८ सम्यक्त्वी ९ मांडलिक राजा एवं नव पदवी

३ सातवीं नरक में मात पदवी का जावे गज, अश्व और स्त्री छोड़ शेष चार ५ चक्रवर्ती ६ वासु देव ७ मांडलिक राजा एवं सात ।

४ भवन पति, वाण व्यन्तर, ज्योतिषी और पहल से आठवें देवलोक तक दश पदवी का जावे—सात पंचेन्द्रिय रत्न में से स्त्री रत्न छोड़ शेष ६ रत्न ७ साधु ८ श्रावक ९ सम्यक्त्वी १० मांडलिक राजा एवं दश ।

५ नववें से चारहवें देव लोक तक आठ पदवी का जावे स्त्री, गज, अश्व छोड़ शेष चार पंचेन्द्रिय रत्न ५ साधु ६ श्रावक ७ सम्यक्त्वी ८ मांडलिक राजा एवं आठ

६ नव त्रिपदेक में मात पदवी का जावे ऊपर की आठ पदवी में से श्रावक को छोड़ शेष मात पदवी ।

७ पांच अनुचर रिमान में दश पदवी का जावे साधु ११ सम्यक्त्वी ।



६ मनुष्यणी में ५ पदवी पावे-१ स्त्री रत्न  
 धाविका ३ ममकित ४ साध्वी ५ केवली ।

१० तिर्यच में ११ पदवी पावे-सात एकेन्द्रिय रत्न  
 ८ गज ६ अश्व १० आवक ११ समकित ।

११ तिर्यचखी में २ पदवी पावे-१ ममकित २ आवक

१२ संवेदी में २२ पदवी पावे-केवली नहीं ।

१३ स्त्री वेद में चार पदवी पावे-१ स्त्री रत्न  
 धाविका ३ समकित ४ साध्वी ।

१४ पुरुष वेद में १४ पदवी पावे-सात एकेन्द्रिय  
 रत्न केवली और स्त्री रत्न ये नव छोड़ शेष ( २३-६ )  
 १४ पदवी ।

१५ अवेदी में ४ पदवी पावे-१ तीर्थहर २ केवल  
 ३ साधु ४ समकित ।

१६ नरक गति में एक पदवी पावे-समकित की ।

१७ तिर्यच गति में ११ पदवी पावे-सात एकेन्द्रिय  
 रत्न ८ गज ६ अश्व १० आवक ११ समकित ।

१८ मनुष्य गति में १४ पदवी पावे-नव उत्तम  
 पदवी और सात पंचेन्द्रिय रत्न में से गज अश्व छोड़ शेष  
 ५ एवं ( ६+५ ) १४ पदवी ।

१९ देवगति में एक पदवी पावे-समकित की ।

२० आठ कर्म वेदक में २१ पदवी पावे-तीर्थहर  
 और केवली ये दो नहीं ।

- २१ सात कर्म वेदक में, २ पदवी पावे-साधु श्रावक ।
- २२ चार कर्म वेदक में चार पदवी पावे-१ तीर्थहर २ केवली ३ साधु ४ समकित ।
- २३ जघन्य अवगाहना में १ पदवी पावे-समकित की ।
- २४ मध्यम अवगाहना में १४ पदवी पावे-नव उत्तम पुरुष, पांच पंचेन्द्रिय रत्न-गज अथ छोड़ कर-एवं ६+५ १४ पदवी पावे ।
- २५ उत्कृष्ट अवगाहना में एक पदवी पावे-समकित ।
- २६ अट्ठाई द्वीप में २३ पदवी पावे ।
- २७ अट्ठाई द्वीप के बाहर ४ पदवी पावे-१ केवली २ साधु ३ श्रावक ४ समकित ।
- २८ भारत क्षेत्र में मध्यम पदवी = पावे-नव उत्तम पदवी में से चक्रवर्ती छोड़ शेष = पदवी ।
- २९ भारत क्षेत्र में उत्कृष्ट २१ पदवी पावे-वासुदेव, वलदेव नहीं ।
- ३० उर्ध्व लोक में ५ पदवी पावे-१ केवली २ साधु ३ श्रावक ४ समकित ५ मांडलिक राजा ।
- ३१ अथः लोक तथा त्रिर्वक्त्र ( त्रिंक्षेत्र ) लोक में २३ पदवी पावे ।
- ३२ न्यपं लिङ्ग में ४ पदवी पावे-१ तीर्थहर २ केवली ३ साधु ४ श्रावक ।

६ मनुष्यणी में ५ पदवी पावे-१ स्त्री रत्न २  
 भाविका ३ समकित ४ साध्वी ५ केवली ।

१० तिर्यच में ११ पदवी पावे-सात एकेन्द्रिय रत्न  
 ८ गज ६ अश्व १० आवक ११ समकित ।

११ तिर्यचलो में २ पदवी पावे-१ समकित २ आवक ।

१२ संवेदी में २२ पदवी पावे-केवली नहीं ।

१३ स्त्री वेद में चार पदवी पावे-१ स्त्री रत्न २  
 भाविका ३ समकित ४ साध्वी ।

१४ पुरुष वेद में १४ पदवी पावे-सात एकेन्द्रिय  
 रत्न केवली और स्त्री रत्न ये नव छोड़ शेष ( २३-६ )  
 १४ पदवी ।

१५ अवेदी में ४ पदवी पावे-१ तीर्थकर २ केवली  
 ३ साधु ४ समकित ।

१६ नरक गति में एक पदवी पावे-समकित की ।

१७ तिर्यच गति में ११ पदवी पावे-सात एकेन्द्रिय  
 रत्न ८ गज ६ अश्व १० आवक ११ समकित ।

१८ मनुष्य गति में १४ पदवी पावे-नव उत्तम  
 पदवी और सात पंचेन्द्रिय रत्न में से गज अश्व छोड़ शेष  
 ५ एवं ( ६+५ ) १४ पदवी ।

१९ देवगति में एक पदवी पावे-समकित की ।

२० आठ कर्म वेदक में २१ पदवी पावे-तीर्थकर  
 और केवली ये दो नहीं ।



२१ सात कर्म वेदक में, २ पदवी पावे-मायु और  
आवक ।

२२ चार कर्म वेदक में चार पदवी पावे-? तीर्थहर  
२ केवली ३ मायु ४ मनश्चि ।

२३ नवम्य अवगाहना में ? पदवी पावे-मनश्चि ही ।

२४ नव्यम अवगाहना में १४ पदवी पावे-मत्र उत्तम  
पुत्र, पांच पंचन्द्रिय ग्ल-गत्र अत्र छोड़ का-एवं २०-३  
११ पदवी पावे ।

२५ उत्कृष्ट अवगाहना में एक पदवी पावे-मनश्चि ।

२६ अष्टाई दीव में २३ पदवी पावे ।

२७ अष्टाई दीव के बाहर १ पदवी पावे-? केवली  
२ मायु ३ आवक ४ मनश्चि ।

२८ नाग क्षेत्र में नव्यम पदवी = १.वे-मत्र उत्तम  
पदवी में मे चक्रवर्ती छोड़ गेप = पदवी ।

२९ नाग क्षेत्र में उत्कृष्ट २१ पदवी पावे-वासुदेव,  
बहदेव नहीं ।

३० उच्चं लोक में ५ पदवी पावे-? केवली २ मायु  
३ आवक ४ मनश्चि ५ नांडिक गत्र ।

३१ अक्षय लोक क्या विदेह ; विदेह, लोक में २३  
पदवी पावे ।

३२ नवमं लिह में १ पदवी पावे-? तीर्थहर २  
केवली ३ मायु ४ आवक

६ मनुष्यणी में ५ पदवी पावे-१ स्त्री रत्न २  
श्राविका ३ समकित ४ साध्वी ५ केवली ।

१० तिर्यच में ११ पदवी पावे-सात एकेन्द्रिय रत्न  
८ गज ६ अथ १० श्रावक ११ समकित ।

११ तिर्यचणी में २ पदवी पावे-१ समकित २ श्रावक ।

१२ संवेदी में २२ पदवी पावे-केवली नहीं ।

१३ स्त्री वेद में चार पदवी पावे-१ स्त्री रत्न २  
श्राविका ३ समकित ४ साध्वी ।

१४ पुरुष वेद में १४ पदवी पावे-सात एकेन्द्रिय  
रत्न केवली और स्त्री रत्न ये नव छोड़ शेष ( २३-६ )  
१४ पदवी ।

१५ अवेदी में ४ पदवी पावे-१ तीर्थहर २ केवली  
३ साधु ४ समकित ।

१६ नरक गति में एक पदवी पावे-समकित ही ।

१७ तिर्यच गति में ११ पदवी पावे-सात एकेन्द्रिय  
रत्न ८ गज ६ अथ १० श्रावक ११ समकित ।

१८ मनुष्य गति में १४ पदवी पावे-नव उत्तम  
पदवी और मात्र पंचेन्द्रिय रत्न में छे गज अथ छोड़ शेष  
५ एवं ( ६+५ ) १४ पदवी ।

१९ देवगति में एक पदवी पावे-समकित ही ।

२० अष्ट कर्म वेदक में २१ पदवी पावे-तीर्थहर  
संय केवली व द। २६ ।



३३ अन्य लिङ्ग में ४ पदवी पावे-१ केवली २ साधु  
३ श्रावक ४ समकित ।

३४ गृहस्थ लिङ्ग मनुष्य में १४ पदवी पावे-नव  
उत्तम पदवी, और सात पंचेन्द्रिय रत्न में से गज अश्व  
को छोड़ शेष पांच एवं ( ६+५ ) १४ पदवी ।

३५ संमुखिण में = पदवी पावे-सात एकेन्द्रिय रत्न  
और एक समकित ।

३६ गर्भज में १६ पदवी पावे-२३ में से सात  
एकेन्द्रिय रत्न छोड़ शेष १६ पदवी ।

३७ अगर्भज में = पदवी पावे-संमुखिण समान ।

३८ एकेन्द्रिय में ७ पदवी पावे-सात एकेन्द्रिय रत्न ।

३९ तीन विकलेन्द्रिय में १ पदवी पावे-समकित

४० पंचेन्द्रिय में १५ पदवी पावे-२३ में से सात  
एकेन्द्रिय रत्न और केवली-ये आठ नहीं ।

४१ अनिन्द्रिय में ४ पदवी पावे १ तीर्थहर २  
केवली ३ साधु ४ समकित ।

४२ संयति में ४ पदवी पावे-अनिन्द्रिय समान ।

४३ असंयति में २० पदवी पावे-२३ में से १  
केवली २ साधु ३ श्रावक ये तीन छोड़ शेष २० पदवी ।

४४ संयता संयति में १० पदवी पावे-स्त्री को छोड़  
शेष ६ पंचेन्द्रिय रत्न ७ उलदेव = श्रावक ६ समकित  
माहात्मिक ।



३३ अन्य लिङ्ग में ४ पदवी पात्र-१ केवली २ साधु  
३ धारक ४ समहित ।

३४ गृहस्थ लिङ्ग मनुष्य में १४ पदवी पात्रे-नव  
उत्तम पदवी, और सात पंचेन्द्रिय स्तन में से मात्र अथ  
को छोड़ शेष पांच एवं ( ६+५ ) १४ पदवी ।

३५ संमूर्द्धिन में ८ पदवी पात्रे-सात एकैन्द्रिय स्तन  
और एक नमहित ।

३६ गर्भज में १३ पदवी पात्रे-२३ में से सात  
एकैन्द्रिय स्तन छोड़ शेष १६ पदवी ।

३७ अगर्भज में ८ पदवी पात्रे-संमूर्द्धिन समान ।

३८ एकैन्द्रिय में ७ पदवी पात्रे-सात एकैन्द्रिय स्तन ।

३९ तीन त्रिकलैन्द्रिय में १ पदवी पात्रे-समहित

४० पंचेन्द्रिय में १५ पदवी पात्रे-२३ में से सात  
एकैन्द्रिय स्तन और केवली-ये आठ नहीं ।

४१ सान्निन्दिय में ४ पदवी पात्रे १ तीर्थहर २  
केवली ३ साधु ४ समहित ।

४२ मयात्रि में ४ पदवी पात्रे-सान्निन्दिय समान ।

४३ अमंथनि में २० पदवी पात्रे-२३ में से १  
केवली २ साधु ३ धारक ४ तीन छोड़ शेष २० पदवी ।

४४ भेदना भेदनि में १० पदवी पात्रे-श्री को छोड़  
सात ३ पंचेन्द्रिय स्तन ७ मलहर ८ धारक ९ समहित







४५ समकित दृष्टि में १५ पदवी पावे-२३ में से सात एकेन्द्रिय रत्न और स्त्री छोड़ शेष १५ पदवी ।

४६ मिथ्या दृष्टि में १७ पदवी पावे-सात एकेन्द्रिय रत्न, सात पंचेन्द्रिय रत्न, १४; १५ चक्रवर्ती १६ वामुदेव १७ मांडलिक ।

४७ मति, श्रुत और अविधि ज्ञान में १४ पदवी पावे-केवली छोड़ शेष = उत्तम पदवी, स्त्री को छोड़ शेष ६ पंचेन्द्रिय रत्न एवं ( ८×६ ) १४ पदवी ।

४८ मनः पर्यव ज्ञान में ३ पदवी पावे १ तीर्थकर २ साधु ३ समकित ।

४९ केवल ज्ञान केवल दर्शन में ४ पदवी पावे १ तीर्थकर २ केवली ३ साधु ४ समकित ।

५० मति श्रुत अज्ञान में १७ पदवी पावे-सात एकेन्द्रिय रत्न, सात पंचेन्द्रिय रत्न, १४; १५ चक्रवर्ती १६ वामुदेव १७ मांडलिक ।

५१ विभङ्ग ज्ञान में ८ पदवी पावे-स्त्री को छोड़ शेष ६ पंचेन्द्रिय रत्न, ७ चक्रवर्ती = वामुदेव ८ मांडलिक ।

५२ अक्षु दर्शन में १५ पदवी पावे-केवली को छोड़ शेष = उत्तम पदवी और सात पंचेन्द्रिय रत्न एवं १५ पदवी ।

५३ अक्षु दर्शन में २२ पदवी पावे-केवली नहीं ।

५४ अविधि दर्शन में १४ पदवी पावे-केवली के

३३ अन्य लिङ्ग में ४ पदवी पावे-१ केवली २ सा  
३ भावक ४ समकित ।

३४ गृहस्थ लिङ्ग मनुष्य में १४ पदवी पावे-न  
उचम पदवी, और सात पंचेन्द्रिय स्तन में से गज अ  
को छोड़ शेष पांच एवं ( ६+५ ) ११ पदवी ।

३५ संमूर्च्छिन में ८ पदवी पावे-सात एकेन्द्रिय स्त  
और एक समकित ।

३६ गर्भज में १३ पदवी पावे-२३ में से सा  
एकेन्द्रिय स्तन छोड़ शेष १६ पदवी ।

३७ अगर्भज में ८ पदवी पावे-संमूर्च्छिन समान ।

३८ एकेन्द्रिय में ७ पदवी पावे-सात एकेन्द्रिय स्तन ।

३९ तीन त्रिकेन्द्रिय में १ पदवी पावे-समकित

४० पंचेन्द्रिय में १५ पदवी पावे-२३ में से सा  
एकेन्द्रिय स्तन और केवली-ये आठ नहीं ।

४१ अर्निन्द्रिय में ४ पदवी पावे १ तीर्थार  
केवली ३ सा ४ समकित ।

४२ संयति में ४ पदवी पावे-अर्निन्द्रिय समान ।

४३ समंयति में २० पदवी पावे-२३ में से  
केवली २ साधु ३ आरह ये तीन श्रद्ध गुण २० पदवी

४४ भवता संयति में २० पदवी पावे-श्री से छो

२५ ३ पंचेन्द्रिय स्तन ३ अलदा ८ अरह ६ समकित



छोड़ शेष = उच्चम पदवी, थीर सी को छोड़ शेष ६ पंचे-  
न्द्रिय रत्न एवं सर्व १४ पदवी ।

५५ नपुंसक लिङ्ग में ५ पदवी पावे १ केवली २  
साधु ३ थावक ४ समकित ५ मांडलिक ।

॥ इति तैर्वाश पदवी सम्पूर्णं ॥

→S#S←



# ॐ पांच शरीर ॐ

श्री प्रज्ञप्तिज्ञी ( पञ्चवर्णा ) सूत्र के २१ वे श्लोके  
वर्णित पांच शरीर का विवेचन ।

## सोलह द्वार

१ नाम द्वार २ अर्थ द्वार ३ संस्थान द्वार ४ समाप्ति  
द्वार ५ अवगाहना द्वार ६ पृथक् चयन द्वार ७ संयोजन  
द्वार ८ द्रव्यार्थक द्वार ९ प्रदेशार्थक द्वार १० द्रव्यार्थक  
प्रदेशार्थक द्वार ११ सूक्ष्म द्वार १२ अवगाहना अन्त  
बहुत्व द्वार १३ प्रयोजन द्वार १४ विषय द्वार १५ विज्ञान  
द्वार १६ अन्तर द्वार ।

## १ नाम द्वार

१ औदारिक शरीर २ वैक्रिय शरीर ३ आदाधिक  
शरीर ४ तेजस् शरीर ५ कार्मण शरीर ।

## २ अर्थ द्वार

१ उदार अर्थात् मय शरीरों से अन्तः, अर्थात्  
मणवर आदि पुरुषों को मुक्ति पद प्रद करने के लिये  
यीभूत, उदार कहते सहस्र योजन मान शरीर अर्थात्  
औदारिक शरीर कहते हैं ।

२ वैक्रिय-जिममे रूप परिद्वन्द्व अर्थात् अन्तः  
तथा एकके अनेक छोटे बड़े खण्ड अर्थात् अन्तः

आदि विविध रूप विविध क्रिया से बनावे उसे वैक्रिय शरीर कहते हैं इसके दो भेद ।

१ मय प्रत्यायिक-जो देवता व नेरियों के स्वभाविक ही होता है ।

२ लब्धि प्रत्यायिक-जो मनुष्य विर्यच को प्रयत्न से प्राप्त होवे ।

३ आहारिक शरीर-जो चौदह पूर्वधारी महात्माओं को तपश्चर्यादिक योग द्वारा जब लब्धि उत्पन्न होवे तो तीर्थंकर देवाधिदेव की अद्वि देखने को व मन की शङ्का निवारण करने को, उच्चम पुद्गलों का आहार लेकर, जघन्य पौन हाथ का व उत्कृष्ट एक हाथ का, स्फुटिक समान सफेद व कोई न देख सके ऐसा शरीर बनाते है । जिससे इसे आहारिक शरीर कहते हैं ।

४ तैजस् शरीर-जो तेज के पुद्गलों से अदृश्य व भुक्त ( खाये हुवे ) आहार को पचावे तथा लब्धिवंत तेजो लेश्या छोडे उसे तैजस् शरीर कहते है ।

५ कार्मण कर्म के पुद्गल से उत्पन्न होने वाला व जिसके उदय से जीव पुद्गल ग्रहण करके कर्मादि रूप में परिणमावे तथा आहार को खेने उसे कार्मण शरीर कहते हैं ।

३ संस्थान द्वार

श्रौद्धारिक शरीर में संस्थान ६-१समचतुरम् संस्थान २ न्यग्रोध परिमंडल संस्थान ३ सादिक संस्थान ४ वामन संस्थान ५ कुब्ज संस्थान ६ हुंड संस्थान ।



आदि विविध रूप विविध विद्या में स्थापित होने की शक्ति  
गुणों का है इसके दो भेद ।

१ नव प्रत्ययिक-जो देवता व भोगियों के स्वभाविक  
ही होता है ।

२ जातिव्यय प्रत्ययिक-जो मनुष्य विविध धर्म प्रवृत्ति में  
जात होते ।

३ आहारिक प्रतीक-जो चैतन्य पूर्ववर्गीय महात्माओं  
की भावनादिक योग द्वारा जो उत्पन्न उत्पन्न होते हैं  
जैसे देवतादि का चैतन्य देवताओं का वन का गृह  
निर्माण का है, उनमें पुरुषों का आहार लक्षण,  
कर्मों का लक्षण का व उत्पन्न प्रकृत लक्षण, स्थापित नवान  
कर्मों का लक्षण देवता मनुष्यों का गुणों का है । विभिन्न  
रूपों का है मनुष्यों का है ।

४ नैतिक प्रतीक-जो नैतिक के पुरुषों में प्रकृत  
है ( १५१ ) ( १५२ ) प्रतीक का लक्षण देवता लक्षणों  
देवता लक्षणों का है नैतिक प्रतीक का है ।

५ आचारिक प्रतीक-जो पुरुषों में प्रकृत होने देवता व  
मनुष्यों के लक्षणों का है पुरुषों का लक्षण देवता लक्षणों का है  
मनुष्यों का लक्षण देवता लक्षणों का है ।

३ अन्वय द्वारा







उत्कृष्ट पृथक् हजार । इससे वैक्रिय के द्रव्य असंख्यात गुणा इससे औदारिक के द्रव्य असंख्यात गुणा इससे तैजस् कार्मण के द्रव्य--ये दोनों परस्पर बराबर व औदारिक से अनंत गुणा अधिक ।

६ प्रदेशार्थक द्वार ।

१ सर्व से थोड़ा आहारिक का प्रदेश इससे वैक्रिय का प्रदेश असंख्यात गुणा इस से औदारिक का असंख्यात गुणा इस से तैजस् का अनंत गुणा व इस से कार्मण का अनंत गुणा अधिक ।

१० द्रव्यार्थक प्रदेशार्थक द्वार ।

सर्व से थोड़ा आहारिक का द्रव्यार्थ इस से वैक्रिय का द्रव्यार्थ असंख्यात गुणा उससे औदारिक का द्रव्यार्थ असंख्यात गुणा इस से आहारिक का प्रदेश असंख्यात गुणा इस से वैक्रिय का प्रदेश असंख्यात गुणा इस से औदारिक का प्रदेश असंख्यात गुणा इस से तैजस्, कार्मण इन दोनों का द्रव्यार्थ परस्पर समान व औदारिक से अनन्त गुणा अधिक इस से तैजस् का प्रदेश अनन्त गुणा अधिक इस से कार्मण का प्रदेश अनन्त गुणा अधिक ।

११ सूक्ष्म द्वार ।

१ सर्व से स्थूल ( मोटे ) औदारिक शरीर के वैक्रिय शरीर के पुद्गल सूक्ष्म इस से

४-५ तेजस्, कार्मण शरीर की अवगाहना त्रयन्व  
 भंगुल ते असंखपात्रवे भाग उरुहृष्ट चौदह राज लोक प्रमाण  
 पुत्रल घयन द्वार ।

( आहार कितनी दिशामों का लेवे )

आहारिक, तेजस्, कार्मण शरीर वाला तीन चार  
 पांच पात्र ले दिशामों का आहार लेवे ।

वैक्रिय और आहारिक शरीर वाला छः दिशामों  
 का लेवे ।

७ संपोजन द्वार ।

१ आहारिक शरीर में आहारिक वैक्रिय की मज्जा  
 ( होवे और नहीं भी होवे ), तेजस् कार्मण की नियमा  
 ( २५२ होवे ) ।

२ वैक्रिय शरीर में आहारिक की मज्जा, आहारिक  
 नहीं होवे व तेजस् कार्मण की नियमा ।

३ आहारिक शरीर में वैक्रिय नहीं होवे, आहारिक,  
 तेजस्, कार्मण शरीर ।

४ तेजस् शरीर में आहारिक, वैक्रिय आहारिक  
 की मज्जा वैक्रिय की नियमा ।

५ कार्मण शरीर में आहारिक, वैक्रिय मज्जा  
 की मज्जा तेजस् की नियमा ।



४-५ तेजस्, कार्मण्य शरीर की अग्रगाहना जघन्य  
 अंगुल के अक्षरस्थानों भाग उत्कृष्ट चौदह राज लोह प्रमाण ।  
 पुद्गल अथवा द्वारा ।

( आहार कितनी दिशामों का लेवे )

आहारिक, तेजस्, कार्मण्य शरीर वाला तीन चार  
 पांच या छे दिशामों का आहार लेवे ।

वैक्य और आहारिक शरीर वाला छः दिशामों  
 का लेवे ।

७ संयोजन द्वारा ।

१ आहारिक शरीर में आहारिक वैक्य ही मज्जा  
 ( होवे और नहीं भी होवे ), तत्रण्य कार्मण्य की नियमा  
 ( मध्य होवे ) ।

२ वैक्य शरीर में आहारिक की मज्जा, आहारिक  
 नहीं होवे व तत्रण्य कार्मण्य की नियमा ।

३ आहारिक शरीर में वैक्य नहीं होवे, आहारिक,  
 तत्रण्य, कार्मण्य सब ।

४ तेजस् शरीर में आहारिक, वैक्य आहारिक  
 की मज्जा तत्रण्य की नियमा ।

५ कार्मण्य शरीर में आहारिक, वैक्य आहारिक  
 की मज्जा तत्रण्य की नियमा ।



आहारिक शरीर के पृथक् सूत्रम इस से तैजस् शरीर के पृथक् सूत्रम व इस से कार्मण शरीर के पृथक् सूत्रम ।

१२ अवगाहना का अल्प बहुत्व द्वार ।

सब से जघन्य औदारिक शरीर की जघन्य अवगाहना इस से तैजस कार्मण की जघन्य अवगाहना परस्पर परापर व औदारिक में विशेष वैक्रिय की जघन्य अवगाहना असंख्यात गुणी इस से आहारिक की जघन्य अवगाहना असंख्यात गुणी इस से आहारिक की उत्कृष्ट अवगाहना विशेष इससे औदारिक की उत्कृष्ट अवगाहना अस्यात गुणी इस से वैक्रिय की उत्कृष्ट अवगाहना अस्यात गुणी इस से तैजस् कार्मण उत्कृष्ट अवगाहना परस्पर परापर व वैक्रिय से असंख्यात गुणी अधिह ।

१३ प्रयोजन द्वार ।

१ औदारिक शरीर का प्रयोजन मोघ प्राप्ति में हायी भूत होना २ वैक्रिय शरीर का प्रयोजन विविध प बनाना ३ आहारिक शरीर का प्रयोजन मंशय नियां-ग करना ४ तैजस शरीर का प्रयोजन पृथकों का पाचन करना ५ कार्मण शरीर का प्रयोजन आहार तथा कर्मों की आकर्षण ( खेचना ) करना ।

१४ विषय ( शक्ति ) द्वार ।

औदारिक शरीर का विषय पन्द्रहवा रुचक नामक





लोक में सदा पावे-आहारिक शरीर की भजना ( होवे और नहीं भी होवे ) नहीं होवे तो उत्कृष्ट ६ माह का अन्तर पड़े ।

॥ इति पांच शरीर सम्पूर्ण ॥





कर्कश भारी, लघु ( हलका ) मृदु स्पर्श का एक साथ अल्प बहुत्व—सर्व से कम चक्षु इन्द्रिय का कर्कश भारी स्पर्श इससे श्रोत्रेन्द्रिय का कर्कश भारी स्पर्श अनन्त गुणा इससे घ्राणेन्द्रिय का अनन्त गुणा इससे रसेन्द्रिय का अनन्त गुणा इससे स्पर्शेन्द्रिय का अनन्त गुणा इससे स्पर्शेन्द्रिय का हलका मृदु स्पर्श अनन्त गुणा इससे रसेन्द्रिय का हलका मृदु स्पर्श अनन्त गुणा इससे घ्राणेन्द्रिय का हलका मृदु स्पर्श अनन्त गुणा इससे श्रोत्रेन्द्रिय का हलका मृदु स्पर्श अनन्त गुणा व इससे चक्षु इन्द्रिय का हलका मृदु स्पर्श अनन्त गुणा ।

### ७ पृष्ठ द्वार

जो पुद्गल इन्द्रियों को आकर स्पर्श करते हैं उन पुद्गलों को इन्द्रियें ग्रहण करती हैं पांच इन्द्रियों में से चक्षु इन्द्रिय को छोड़ शेष चार इन्द्रियों को पुद्गल आकर स्पर्श करते हैं । चक्षु इन्द्रिय को आकर नहीं स्पर्श करते हैं ।

### ८ प्रविष्ट द्वार

जिन इन्द्रियों के अन्दर आभेसुप्त ( सामां ) पुद्गल प्रवेश करते हैं उन्हें प्रविष्ट कहते हैं । पांच इन्द्रियों में से चक्षु इन्द्रिय को छोड़ शेष चार इन्द्रिय प्रविष्ट हैं व चक्षु इन्द्रिय अप्रविष्ट है ।

### ९ विषय द्वार ( गन्धिन द्वार )

प्रत्येक ज्ञानि की प्रत्येक इन्द्रिय का विषय त्रयन्व



इस से श्रोत्रेन्द्रिय का जघन्य उपयोग काल विशेष इस में  
 घ्राणेन्द्रिय का जघन्य उपयोग काल विशेष इसमें रसेन्द्रिय  
 का जघन्य उपयोग काल विशेष इस से स्पर्शेन्द्रिय का  
 जघन्य उपयोग काल विशेष इस से चक्षुरेन्द्रिय का उत्कृष्ट  
 उपयोग काल विशेष इस से श्रोत्रेन्द्रिय का उत्कृष्ट उपयोग  
 काल विशेष इस से घ्राणेन्द्रिय का उत्कृष्ट उपयोग काल  
 विशेष इस से रसेन्द्रिय का उत्कृष्ट उपयोग काल विशेष  
 इस से स्पर्शेन्द्रिय का उत्कृष्ट उपयोग काल विशेष ।

११ वां आहार द्वारसूत्र थी प्रज्ञापना में से जानना ।

❁ इति पांच इन्द्रिय सम्पूर्ण ❁





अर्थः--१ घनवात २ तनुवात ३ पतौदधि, पृथ्वी  
 ४-१०, ११ असंख्यात द्वीप १२ असंख्यात समुद्र,  
 १३ देव लोक २४, नव ग्रीषवेक ३३, पांच अनुत्तर  
 ३८, भिद्धि शिला-३९ ।२।

गाथाः-

उगलिया चउदेहा, योगल काय छ दव्व लेरपा य;  
 नेदव काय जोगेगुं ए सव्वेणं अहु फासा ॥३॥

अर्थः-४० आदारिक शरीर ४१ वैक्रिय शरीर ४२  
 आरिक्त शरीर ४३ तेजसु शरीर एवं चार देह-४४पुद्ग-  
 ल काय का पादर स्कन्ध, ६ द्रव्य लेरपा (१कृष्ण,  
 २ लाल ३ कापोत ४ तेजो ५ पद्म ६ शुक्ल ) ५०, ४१  
 योग एवं मर्ग ४२ पोल रूरी आठ स्पर्श दे । इनमें  
 ४३ वीम शील पावे । पांच वर्ण-४४ गन्ध-४५, पांच रस-  
 ४६, आठ स्पर्श-४७ शीत ४८ उष्ण १ लूना ( रुच )  
 ४९ सिन्धु १० मुकु ( मारी ) १८ लघु ( इलका ) १९  
 २० मुर्वात ( मृदु-कोमल ) ।३।

गाथा-

पाव टाणा विर, चउ चउ बुद्धि उगदेह  
 मत्रा पम्पवी पव उग्रगुं, भाव जेम्पानि दिटीय ॥४॥

अर्थ-मटारह पाव स्वानह की विर्गत ( पाव स्था-  
 न निर्गत जाना ) ४८, पाव बुद्धि-४९ औम्पानिका  
 कानीय २१ विनया २२ पारसाभीया चार मनि-





चारित्र्य ६ यथारूपात् चारित्र्य ७ संयता संयति ८ असंयति  
९ नो संयति-नो असंयति नो संयता संयति ।

१३ उपयोग द्वार के दो शोल

१ साकार उपयोग ( साकार ज्ञानोपयोग ) २ अना-  
कार उपयोग ( अनाकार दर्शनोपयोग ) ।

१४ आहार द्वार के दो शोल

१ आहारिक २ अनाहारिक ।

१५ भाषक द्वार के दो शोल

१ भाषक २ अभाषक ।

१६ परिणत द्वार के तीन शोल

१ परिणत २ अपरिणत ३ नोपरिणत नोअपरिणत ।

१७ पर्याप्त द्वार के तीन शोल

१ पर्याप्त २ अपर्याप्त ३ नो पर्याप्त नो अपर्याप्त ।

१८ सूक्ष्म द्वार के तीन शोल

१ सूक्ष्म २ बादर ३ नोसूक्ष्म नो बादर ।

१९ संज्ञी द्वार के तीन शोल

१ संज्ञी २ असंज्ञी ३ नो संज्ञी नो असंज्ञी ।

२० मध्य द्वार के तीन शोल

१ मध्य २ अमध्य ३ नो मध्य नो अमध्य ।

२१ धर्म द्वार के दो शोल

१ धर्म २ अधर्म ।



और १ असंज्ञी पंचेन्द्रिय का अर्थात् एव ३, गुण स्थानक १४, योग १५, उपयोग १२, लेखा ६ ।

५ मनुष्यनी में-जीव के भेद २-संज्ञी का । गुणस्थानक १४, योग १३ आहारिक के दो छोड़ कर, उपयोग १२, लेखा ६ ।

६ देव गति में-जीव के भेद ३-दो संज्ञी के और १ असंज्ञी पंचेन्द्रिय का अर्थात् एवं ३ गुणस्थानक ४ प्रथम, योग ११-४ मनके, ४ वचन के, २ वैक्रिय के और १ कार्मण काय एवं ११, उपयोग ६-३ ज्ञान, ३ अज्ञान, ३ दर्शन एवं ६, लेखा ६ ।

७ देवाङ्गना में-जीव के भेद २-संज्ञी का, गुणस्थानक ४ प्रथम, योग ११-४ मन का, ४ वचन का, २ वैक्रिय का १ कार्मण काय, उपयोग ६-३ अज्ञान, ३ ज्ञान, ३ दर्शन एवं ६, लेखा ४ प्रथम ।

सिद्ध गति में-जीव का भेद नहीं, गुण स्थानक नहीं योग नहीं, उपयोग २-केवल ज्ञान और केवल दर्शन, लेखा-नहीं ।

नरक गति प्रमुख आठ धोल में रहे हुवे जीवों का अल्प बहुत्व ।

सर्व से कम मनुष्यनी उससे मनुष्य असंख्यात गुणा ( संसृष्टिम के मिलने से ) उससे नीरिये असंख्यात गुणा उससे निर्ययानी असंख्यात गुणी उससे देव असं-



४ काय योग में-जीव के भेद १४ गुणस्थानक ११ योग १५ उपयोग १२ लेश्या ३ ।

५ अथोग में-जीव का भेद १ मन्त्री का पर्याप्त गुण स्थानक १-चौदहवां योग नहीं, उपयोग २-केवल के लेश्या नहीं ।

सर्वांग प्रमुख पांच शील में रहे हुये जीवों का अल्प घट्टत्व ।

१ सर्व में कम मन योगी २ इस में वचन योगी अस्ख्यात गुणे ३ इस में अयोगी अनन्त गुणे ४ इस में काय योगी अनन्त गुणे ५ इस में सर्वांगी विशेषाधिक ।

६ श्रेय द्वार

१ सवेद में-जीव के भेद १४, गुण स्थानक ६ प्रथम योग १५, उपयोग १०-केवल के दो छोड़ कर लेश्या ६

२ स्त्री वेद में-जीव के भेद २- संज्ञी का गुण स्थानक ६ प्रथम, योग १३ आहारिक के दो छोड़ कर उपयोग १० केवल के दो छोड़ कर लेश्या ६ ।

३ पुरुष वेद में-जीव के भेद २ संज्ञी के गुण स्थानक ६ प्रथम योग १५, उपयोग १० केवल के दो छोड़ कर लेश्या ६ ।

४ नपुंसक वेद में-जीव के भेद १४, गुण स्थानक ६ प्रथम, योग १५, उपयोग १०-केवल के दो छोड़ कर



सकपाय प्रमुख ६ बोल में रहे हूँ जीवों का अल्प  
 बहुत्व १ सर्व से कम अकपायी २ इससे मान कपायी  
 अनंत गुणा ३ इससे क्रोध कपायी विशेषाधिक ५ लोभ  
 कपायी विशेषाधिक ६ मरुपायी विशेषाधिक ।

### ८ लेश्या द्वार

१ मलेश्या में—जीव के भेद १४, गुण स्थानक १३  
 प्रथम योग १५, उपयोग २२, लेश्या ६ ।

२-३-४ कृष्ण. नील, कापोत लेश्या में जीव के  
 भेद १४ गुण स्थानक ६ प्रथम योग १५ उपयोग १०  
 केवल के दो छोड़कर लेश्या १ अपनी २ ।

५ तेजो लेश्या में—जीव का भेद. ३-दो संज्ञी के  
 और एक बादर एकेन्द्रिय का अपर्मात; गुण स्थानक ७  
 प्रथम योग १५, उपयोग १०, लेश्या १ अपने सुद की ।

६ पद्म लेश्या में—जीव का भेद २ संज्ञी का, गुण  
 स्थानक ७-प्रथम, योग १५ उपयोग १० लेश्या १ अपनी

७ शुक्ल लेश्या में—जीव के भेद २ संज्ञी के, गुण  
 स्थानक १३ प्रथम, योग १५ उपयोग १२, लेश्या  
 १ अपनी ।

८ अलेश्या में जीव का भेद नहीं, गुण स्थानक १  
 चौदहवां, योग नहीं, उपयोग २ केवल के. लेश्या नहीं

सलेश्या प्रमुख अष्ट बोल में रहे हूँ जीवों का  
 अल्प बहुत्व ।





२-३ मति ज्ञान श्रुत ज्ञान में जीव का भेद ६ सम्पत्क दृष्टि वत्, गुण स्थानक १० पहला, तीसरा, तेरहवां, चौदहवां छोड़ कर, योग १५, उपयोग ७, ४ ज्ञान और ३ दर्शन, लेश्या ६ ।

४ अविधि ज्ञान में जीव का भेद २ संज्ञी वत्, गुण स्थानक १० मति ज्ञान वत्, योग १५, उपयोग ७, लेश्या ६ ।

५ मनः पयव ज्ञान में जीव का भेद १ संज्ञी का पर्याप्त गुण स्थानक ७ छठ से बारहवें तक, योग १४, कर्मण का छोड़कर, उपयोग ७, लेश्या ६ ।

६ केवल ज्ञान में जीव का भेद १ संज्ञी पर्याप्त गुण स्थानक २-तेरहवां चौदहवां, योग ७-सत्य मन, सत्य वचन व्यवहार मन, व्यवहार वचन, दो औदारिक का, एक कर्मण एवं ७; उपयोग दो-केवल के लेश्या १ शुभल ।

७-८-९ समुच्चय अज्ञान, मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान-इन तीन में जीव का भेद १४, गुण स्थानक २-पहला और तीसरा, योग १३-माहिरिक के दो छोड़कर, उपयोग ६-तीन अज्ञान और ३ दर्शन, लेश्या ६ ।

१० विभंग अज्ञान में-जीव का भेद २-संज्ञी का-गुण स्थानक २-पहला और तीसरा, योग १३, उपयोग ६, लेश्या ६ ।

समुच्चय ज्ञान प्रमुख दश बोल में रहे हुये जीवों का



चतुर्दशीनी असंख्यात गुणा रे इसमें केवल दर्शनी अनन्त गुणा ४ इससे अचतुर्दशीनी अनन्त गुणा ।

### १२ संयत द्वार

१ संयत ( समुच्चय संयम ) में जीव का भेद १ संज्ञी का पर्याप्त, गुण स्थानक ६-छठे में चौदहवें तक योग १५ उपयोग ६-तीन अज्ञान के छोड़कर; लेश्या ६ ।

२-३ सामायिक व द्वेदापस्थानिक में-जीव का भेद १ संज्ञी का पर्याप्त, गुण स्थानक ४-छठे से नववें तक, योग १४ कर्मण का छोड़कर, उपयोग ७ । चार ज्ञान प्रथम व तीन दर्शन, लेश्या ६ ।

४ परिहार विशुद्ध में-जीव का भेद १ संज्ञी का पर्याप्त, गुण स्थानक २-छठे व सातवें, योग ६-४ मन के ४ वचन के १ भौदानिक का, उपयोग ७-४ ज्ञान का ३ दर्शन का, लेश्या ३ ( ऊपर की ) ।

५ सूक्ष्म सम्पराय में-जीव का भेद १ संज्ञी का पर्याप्त, गुण स्थानक १-दशवाँ, योग ६, उपयोग ७ लेश्या १-शुद्ध ।

६ यथाख्यात में-जीव का भेद १ संज्ञी का पर्याप्त गुण स्थानक ४-ऊपर के, योग ११-४ मन के ४ वचन के २ औदानिक के व १ कर्मण का, उपयोग ६-तीन अज्ञान के छोड़कर, लेश्या १ शुद्ध ।

७ संयता संयत में-जीव का भेद १ संज्ञी का



स्थानक १३-दशवाँ छोड़ कर, योग १५, उपयोग १६, लेख्या ६ ।

साकार प्रमुख दो बोल में रहे हूँ जीवों का अल्प यद्बुत्व  
१ सर्व से कम अनाकार उपयोगों २ इससे साकार  
उपयोगी संख्यात गुणा ।

### १४ आहार द्वार

आहारिक में-जीव का भेद १४, गण स्थानक १३  
प्रथम, योग १४ कार्मण का छोड़ का, उपयोग १२  
लेख्या ६ ।

अनाहारिक में-जीव का भेद ८-सान अपर्याप्त और  
संज्ञा का पर्याप्त, गुण स्थानक ५-१, २, ४, १३, १४,  
योग १ कार्मण का, उपयोग १०-मनः पर्यव ज्ञान व  
चक्षु दर्शन छोड़ कर, लेख्या ६ ।

आहारिक प्रमुख दो बोल में रहे हूँ जीवों का  
अल्प यद्बुत्व ।

१ सर्व से कम अनाहारिक इससे २ आहारिक समं-  
ख्यात गुणा ।

### १५ भाषक द्वार

भाषक में-जीव का भेद १, वेदन्डिय, त्रिदन्डिय  
चौरिन्द्रिय, समज्ञा पर्याप्त, ५-१, २, ४, १३, १४  
पर्याप्त, गुण स्थानक १२ प्रथम का योग १२ कार्मण का  
छोड़ कर उपयोग १०, लेख्या ६ ।



२ अपर्याप्त में-जीव का भेद ७, गुण स्थानक ३-१, २, ४, योग ५-२ औदारिक का, २ वैक्रिय का, १ कर्मण का, उपयोग ६-३ ज्ञान ३ अज्ञान ३ दर्शन लेश्या ६-१ ।

३ नो पर्याप्त नो अपर्याप्त में-जीव का भेद नहीं, गुणस्थानक नहीं, योग नहीं, उपयोग २ केवल का, लेश्या नहीं पर्याप्त प्रमुख तीन बोल में रहे हुवे जीवों का अल्प बहुत्व १ सर्व से कम नो पर्याप्त नो अपर्याप्त २ इसमें अपर्याप्त अनन्त गुणा ३ इसमें पर्याप्त-संख्यात गुणा ।

### १८ सूक्ष्म द्वार

१ सूक्ष्म में-जीव का भेद २ सूक्ष्म एकेन्द्रिय का अपर्याप्त व पर्याप्त, गुण स्थानक १ पहेला, योग ३-२ औदारिक तथा १ कर्मण उपयोग ३-२ अज्ञान व १ अचक्षु दर्शन, लेश्या ३ पहेली ।

२ चादर में-जीवका भेद १२-सूक्ष्म का २ छोड़ कर, गुणस्थानक १४, योग १५, उपयोग १२, लेश्या ६ ।

३ नो सूक्ष्म नो चादर में-जीव का भेद नहीं गुणस्थानक नहीं, उपयोग २ केवल का, लेश्या नहीं । सूक्ष्म प्रमुख तीन बोल में रहे हुवे जीवों का अल्प बहुत्व १ सर्व से कम नो सूक्ष्म नो चादर २ इसमें चादर अनन्त गुणा ३ इसमें सूक्ष्म अनेख्यात गुणा ।

### १९ संज्ञी द्वार

१ संज्ञी में-जीव का भेद २, गुणस्थानक १२ पहेला



योग १५, उपयोग १०—केवल का दो छोड़ कर, लेश्या ६ ।

२ असंज्ञी में-जीव का भेद १२--संज्ञी का दो छोड़ कर, गुणस्थानक २ पहला, योग ६-२ औदारिक का, २ वैक्रिय का, १ कार्मण का १ व्यवहार वचन, उपयोग ६-२ ज्ञान का २ अज्ञान का २ दर्शन का, लेश्या ४ प्रथम की ।

नो संज्ञी नो असंज्ञी में-जीव का भेद १ संज्ञी का पर्याप्त, गुणस्थानक २, १२ वां, १४ वां, योग ७ केवल ज्ञान वत्, उपयोग २ केवल का, लेश्या १ शुक्ल ।

संज्ञी प्रमुख तीन बोल में रहे हों जीवों का अल्प बहुत्व १ सब से कम संज्ञी २ इससे नो संज्ञी नो असंज्ञी अनन्त गुणा । ३ इससे असंज्ञी अनन्त गुणा ।

२० भव्य द्वार ।

१ भव्य में जीव का भेद १४ गुण स्थानक १४, योग १५, उपयोग १२, लेश्या ६ ।

२ अभव्य में जीव का भेद १४. गुण स्थानक १ पहला योग १३ आहारिक के दो छोड़ कर. उपयोग ६ ३ अज्ञान ३ दर्शन. लेश्या ६

३ नो भव्य नो अभव्य में जीव का भेद नही . गुण स्थानक नही . योग नही . उपयोग २ लेश्या नही

भव्य प्रमुख तीन बोल में रहे हों जीवों का अल्प बहुत्व

१ सर्व से कम अभव्य २ इस से नो भव्य नो अभव्य अनन्त गुणा ३ इस से भव्य अनन्त गुणा ।

२१ चरम द्वार ।

१ चरम में जीव का भेद १४, गुण स्थानक १४ योग १५, उपयोग १२, लेश्या ६ ।

२ अचरम में जीव का भेद १४, गुण स्थानक १ पहेला, योग-१३ आहारिक का दो छोड़ कर, उपयोग १ ३ अज्ञान ३ दर्शन, लेश्या ६ ।

चरम प्रमुख दो बोल में रहे हुवे जीवों का अल्प घटत्व ।

१ सर्व से कम अचरम २ इस से चरम अनन्त गुणा । एवं दो गाथा के २१ बोल द्वार पर ६२ बोल कहे, तदुपरान्त अन्य वांतराग प्रमुख पांच बोल शोधक गुण स्थानक व पांच शरीर पर ६२ बोल—

१ वांतराग में जीव का भेद २ संज्ञो का पर्याप्त, गुण स्थानक ४ ऊपर का, योग ११-२ आहारिक तथा २ वैक्रिय का छोड़कर, उपयोग ६-५ ज्ञान ४ दर्शन, लेश्या १ शुद्ध ।

२ समुच्चय केवली में जीव का भेद २ संज्ञो का, गुण स्थानक ११ ऊपर का, योग १५, उपयोग ६,५ ज्ञान ४ दर्शन, लेश्या ६ ।

३ युगल ( युगलियों ) में जीव का भेद २ संज्ञो

11/20/2019 10:00 AM

२ सास्वादान सम्यक्दृष्टि में-जीव का भेद ६ सम्यक् दृष्टि वत्. गुण स्थानक १ दूसरा, योग १३ आहारिक का दो छोड़कर, उपयोग ६-३ ज्ञान ३ दर्शन लेरया ६ ।

३ मिश्र दृष्टि में-जीव का भेद १ संज्ञी का पर्याप्त, गुण स्थानक १ तीसरा, योग १०-४ मन के, ४ वचन के १ आहारिक का १ वैक्रिय का, उपयोग ६-३ अज्ञान ३ दर्शन, लेरया ६ ।

४ अवती सम्यक् दृष्टि में-जीव का भेद २ संज्ञी का गुण स्थानक १ चौथा, योग १३ सास्वादन सम्यक् दृष्टि वत् उपयोग ६-३ ज्ञान ३ दर्शन, लेरया ६ ।

५ देश वती ( संयता संयति ) में-जीव का भेद १ १४ वाँ, गुण स्थानक १ पाँचवाँ, योग १२-२ आहारिक का व १ कर्मण का छोड़कर उपयोग ६-३ ज्ञान ३ दर्शन लेरया ६ ।

६ प्रमत्त संयति में-जीव का भेद १ गुण स्थानक १ छठा योग १४ कर्मण का छोड़कर, उपयोग ७-४ ज्ञान ३ दर्शन, लेरया ६ ।

७ अप्रमत्त संयति में-जीव का भेद १ गुणस्थानक = योग ११-४ मन के ४ वचन के १ आहारिक १ वैक्रिय १ आहारिक, उपयोग ७-४ ज्ञान ३ दर्शन, लेरया ३ ऊपर की ।



### शरीर द्वार

१ औदारिक में-जीव का भेद १४, गुणस्थानरू १४, योग १५, उपयोग १२, लेखा ६ ।

वैक्रिय में-जीव का भेद ४-दो संज्ञी का, एक असेत्रो पंचेन्द्रिय का अर्थात् व बादर एकेन्द्रिय का का अर्थात् गुणस्थानरू ७ प्रथम; योग १२-दो आहारिक का, १ कार्मण छोड़ कर; उपयोग १०-केवल के दो छोड़ कर; लेखा ६ ।

आहारिक में-जीव का भेद १ संज्ञी का अर्थात् । गुणस्थानरू २-६ व ७ योग १२-दो वैक्रिय व १ कार्मण छोड़ कर, उपयोग ७-४ ज्ञान व दर्शन, लेखा ६ ।

४ तत्रम् कार्मण में-जीव का भेद १४, गुणस्थानरू १४, योग १५, उपयोग १२, लेखा ६ ।

औदारिक प्रमुख तीन शरीर में रहे हुए जीवों का अन्तःपट्टक १ मई में कम आहारिक शरीर २ इमें वैक्रिय शरीर अनेकवार गुणा ३ इमें औदारिक शरीर अनेकवार गुणा ४ इमें तत्रम् व कार्मण शरीर परस्पर गुण व अन्तःपट्टक ।

॥ इति षड् पावतीया नृणां ॥



लब्धि ५, वीर्यं १ बाल वीर्यं, दृष्टि ३, मन्व्य अमन्व्य २, दण्ड १३ देवता का, पच २ ।

७ देवाङ्गना में-भाव ५, आत्मा ७, लब्धि ५, वीर्यं १ बाल वीर्यं, दृष्टि ३, मन्व्य अमन्व्य २ दण्डक १३ देवता के, पच २ ।

सिद्ध गति में भाव २ छायाक, परिणामिक आत्मा ४, द्रव्य, ज्ञान, दर्शन व उपयोग, लब्धि नहीं वीर्य नहीं, वीर्य नहीं, दृष्टि १ समकृत दृष्टि, मन्व्य अमन्व्य नहीं दण्डक नहीं, पच नहीं ।

### ३ इन्द्रिय द्वार के ७ भेद

१ सङ्गिन्द्रिय में-भाव ५, आत्मा ८, लब्धि ५ वीर्यं ३, दृष्टि ३, मन्व्य अमन्व्य २, दण्डक २४ पच २ ।

२ एकेन्द्रिय में-भाव ३-उदय, चयोपशम परिणामिक; आत्मा ६ ( ज्ञान चारित्र्य छोड़कर ) लब्धि ५, वीर्यं १ बाल वीर्यं, दृष्टि १ मिथ्यात्व दृष्टि, मन्व्य अमन्व्य २, दण्डक ५, पच २

३ वेङ्गिन्द्रिय में-भाव ३ द्वार अनुवार आत्मा ७ ( चारित्र्य छोड़कर ) लब्धि ५, वीर्यं १ द्वार प्रमाणे, दृष्टि २-समकृत दृष्टि व मिथ्यात्व दृष्टि, मन्व्य अमन्व्य २, दण्डक १ अचना २ पच २

४ त्रिइन्द्रिय में-भाव ३, आत्मा ७, लब्धि ५,



वीर्य १, दृष्टि २, भव्य अभव्य २, दण्डक १ त्रिन्द्रिय का, पञ्च २

५ चौरिन्द्रिय में-भाव ३, आत्मा ७, लब्धि ५ वीर्य १, दृष्टि २, भव्य अभव्य २, दण्डक १ चौरिन्द्रिय का, पञ्च २

६ पंचेन्द्रिय में-भाव ५, आत्मा ८, लब्धि ५, वीर्य ३, दृष्टि ३, भव्य अभव्य २, दण्डक १६-१३ देवता का, १ नारकी का, १ मनुष्य का एक तिर्य्यक का एवं १६ पञ्च २ ।

७ अत्रिन्द्रिय में-भाव ३ उदय, क्षयक, परिणामिक आत्मा ७ ( कषाय छोड़कर ), लब्धि ५, वीर्य पंडित वीर्य, दृष्टि १ सम्यक् दृष्टि, भव्य १, दण्डक १ मनुष्य का, पञ्च १ शुक्र ।

#### ४ सक्काय के ८ भेद

१ सक्काय में-भाव ५, आत्मा ८, लब्धि ५, वीर्य ३ दृष्टि ३, भव्य अभव्य २, दण्डक २४, पञ्च २ ।

२ पृथ्वा काय ३ अपकाय ४ तेजस् काय

५ वायु काय तथा वनस्पति काय में-भाव ३-क्षयोपशम, परिणामिक; आत्मा ८ ( ज्ञान चाग्नि छोड़कर ), लब्धि ५, वीर्य १, दृष्टि १, भव्य अभव्य २, दण्डक २ अपना २, पञ्च २ ।

७ अस काय में भाव ५, आत्मा ८, लब्धि ५, वीर्य ३, दृष्टि ३, भव्य अभव्य २, दण्डक १६ ( पांच एकेन्द्रिय का छोड़कर ), पच २ ।

८ अकाय में भाव २, आत्मा ४, लब्धि नहीं वीर्य नहीं, दृष्टि १, नो मयी, नो अमयी, दंडक नहीं पच नहीं ।

५ सयोगी द्वार के ५ भेद ।

१ सयोगी में भाव ५, आत्मा ८, लब्धि ५, वीर्य ३, दृष्टि ३, भव्य अभव्य २, दण्डक २४, पच २ ।

२ मन योगी में भाव ५, आत्मा ८, लब्धि ५, वीर्य ३, दृष्टि ३, भव्य अभव्य २, दण्डक १६ ( पांच स्थावर, ३ विकलेन्द्रिय छोड़कर ), पच २ ।

३ वचन योगी में भाव ५, आत्मा ८, लब्धि ५, वीर्य ३, दृष्टि ३, भव्य अभव्य २, दण्डक १६ ( पांच स्थावर छोड़कर ), पच २ ।

४ काय योगी में भाव ५, आत्मा ८, लब्धि ५, वीर्य ३, दृष्टि ३, भव्य अभव्य २, दण्डक २४, पच २ ।

५ अयोगी में भाव ३ उदय, चायक, परिमाधिक, आत्मा ६ ( कषाय, योग छोड़कर ), लब्धि ५, वीर्य १ पंडित वीर्य, दृष्टि १ समकित दृष्टि, भव्य १ दण्डक १ मनुष्य का, पच १ शुक्र ।

६ सवेद के ५ भेद ।

१ सवेद में भाव ५, आत्मा ८, लब्धि ५, वीर्य ३,

दृष्टि ३, भव्य अभव्य २, दंडक २४, पञ्च २ ।

२ स्त्री वेद में भाव ५, आत्मा ८, लब्धि ५, वीर्य ३, दृष्टि ३, भव्य अभव्य २, दंडक १५ पञ्च २ ।

३ पुरुष वेद भाव ५, आत्मा ८, लब्धि ५, वीर्य ३, दृष्टि ३, भव्य अभव्य २, दंडक १५ पञ्च २ ।

४ नपुंसक वेद में भाव ५, आत्मा ८, लब्धि ५, वीर्य ३, दृष्टि ३, भव्य अभव्य २, दंडक ११ ( देवता का १३ छोड़कर ), पञ्च २ ।

५ अथर्व वेद में-भाव ५, आत्मा ८, लब्धि ५, वीर्य १ दृष्टि १, भव्य १, दण्डक १ मनुष्य का, पञ्च १ शुक्ल ।

### ७ कृपाय के ६ भेद

१ लकृपाय में-भाव ५, आत्मा ८, लब्धि ५, वीर्य ३, दृष्टि ३, भव्य अभव्य २ दण्डक २४, पञ्च २

२ प्रीति कृपाय में-भाव ५, आत्मा ८, लब्धि ५, वीर्य ३, दृष्टि ३, भव्य अभव्य २, दण्डक २४, पञ्च २ ।

३ मान कृपाय में-भाव ५, आत्मा ८, लब्धि ५, वीर्य ३, दृष्टि ३, भव्य अभव्य २, दण्डक २४, पञ्च २ ।

४ नाया कृपाय में-भाव ५, आत्मा ८, लब्धि ५, वीर्य ३, दृष्टि ३, भव्य अभव्य २, दण्डक २४ पञ्च २ ।

५ छीन कृपाय में-भाव ५, आत्मा ८, लब्धि ५, वीर्य ३, दृष्टि ३, भव्य अभव्य २, दण्डक २४ पञ्च २ ।

६ अकृपाय में-भाव ५, आत्मा ७, लब्धि ५, वीर्य ३

१, दृष्टि १ समकित, भव्य १, दण्डक १ मनुष्य का, पक्ष १ शुक्ल ।

८ सलोशी के ८ भेद

१ सलोशी में-भाव ५, आत्मा ८, लब्धि ५, वीर्य ३, दृष्टि ३, भव्य अमव्य २, दण्डक २४ पक्ष २ ।

२ कृष्ण खेरया में-भाव ५, आत्मा ८, लब्धि ५, वीर्य ३, दृष्टि ३, भव्य अमव्य २, दण्डक २२ ( ज्योतिषी वैमानिक छोड़ कर ) पक्ष २ ।

३ नील खेरया में-भाव ५, आत्मा ८, लब्धि ५, वीर्य ३, दृष्टि ३, भव्य अमव्य २ दण्डक २२ ऊपर प्रमाण पक्ष २ ।

कपोत खेरया में-भाव ५, आत्मा ८, लब्धि ५, वीर्य ३, दृष्टि ३, भव्य अमव्य २, दण्डक २२ ऊपर प्रमाण, पक्ष २ ।

तेजो खेरया में-भाव ५, आत्मा ८ लब्धि ५, वीर्य ३ दृष्टि ३, भव्य अमव्य २, पक्ष २, दण्डक १८ ( १३ देवता का १ मनुष्य का, १ विर्यन पंचान्द्रय का, पृथ्वी, भूत; वनशादि एत १८ )

६ पद्म खेरया में भाव ५, आत्मा ८, लब्धि ५, वीर्य ३, दृष्टि ३, भव्य अमव्य २, दण्डक ३, वैमानिक, मनुष्य व विर्य एत - का, पक्ष २ ।

७ गृह खेरया में भाव ५, आत्मा ८, लब्धि ५,

वीर्यं ३, दृष्टि ३, मन्व्य अनन्व्य २, दंडक ३ ऊपर प्रमाणे,  
पञ्च २, ।

८ अक्षेयी में नाव ३, आत्मा ६, लम्बि ५, वीर्य  
१, पंडित वीर्य, दृष्टि १, मनस्वि, मन्व्य १ दंडक १,  
ननुप्य का, पञ्च १ शुक्र ।

९ समस्ति के ७ नेद ।

१ समहाटि में नाव ५, आत्मा ८, लम्बि ५, वीर्य  
३, दृष्टि १ मनस्वि, मन्व्य १, दंडक १८ ( पांच एकेन्द्रिय  
का दंडक छोड़कर ) पञ्च १ शुक्र ।

२ सारवादान समहाटि में नाव ३, ( उदय,  
चयोपरान, पण्डितानि १, आत्मा ७, लम्बि ५, वीर्य १  
पञ्च वीर्य दृष्टि १ मनस्वि, मन्व्य १, दंडक १८ ( पांच  
स्यावर छोड़कर ), पञ्च १ शुक्र ।

३ उपग्रह समहाटि में नाव ४ ( चायक छोड़कर ),  
आत्मा ८, लम्बि ५, वीर्य ३, दृष्टि १, मन्व्य १, दंडक  
१६ ( पांच स्यावर, तीन विद्वेन्द्रिय छोड़कर ), पञ्च १  
शुक्र ।

४ वेदक समहाटि में नाव ३, आत्मा ८, लम्बि ५,  
वीर्य ३, दृष्टि १, मनस्वि, मन्व्य १, दंडक १६ ऊपर  
प्रमाणे, पञ्च १ शुक्र ।

५ चायक समहाटि में नाव ४ ( उपग्रह छोड़कर )  
आत्मा ८, लम्बि ५, वीर्य ३, दृष्टि १, मन्व्य १, दंडक  
१६ पञ्च १ शुक्र ।

६ मिथ्यात्व दृष्टि में भाव ३, आत्मा ६, लब्धि ५, वीर्य १, दृष्टि १, मन्व्य अभव्य २, दंडक २४, पच २ ।

७ मिश्र दृष्टि में भाव ३, आत्मा ६, लब्धि ५, वीर्य १, बाल वीर्य, दृष्टि १, मन्व्य १, दंडक १६, पच १ शुक्ल ।

१० समुच्चय ज्ञान द्वार के १० भेद ।

१ समुच्चय ज्ञान में भाव ५, आत्मा ८, लब्धि ५, वीर्य ३, दृष्टि १, मन्व्य १, दंडक १६, पच १ शुक्ल ।

२ मति ज्ञान ३ श्रुत ज्ञान में-भाव ५, आत्मा ८, लब्धि ५, वीर्य ३, दृष्टि १ मन्व्य १ दण्डक १६, पच १ शुक्ल ।

४ अवाधि ज्ञान में भाव ५, आत्मा ८, लब्धि ५, वीर्य ३, दृष्टि १ मन्व्य १, दण्डक १६, पच २ शुक्ल ।

५ मनः पर्यव ज्ञान में-भाव ५, आत्मा ८, लब्धि ५, वीर्य ३, दृष्टि १, मन्व्य १, दण्डक १, मनुष्य का, पच १ शुक्ल ।

६ केवल ज्ञान में भाव ३, (उदय चायक, परिणामिक) आत्मा ७ (कपास छोड़ कर) लब्धि ५, वीर्य १, दृष्टि १; मन्व्य २, दण्डक १, पच १; ।

७ समुच्चय अज्ञान ८ मति अज्ञान ६ श्रुत अज्ञान में-भाव तीन; आत्मा ६, लब्धि ५, वीर्य १ बाल वीर्य, दृष्टि १, मिथ्यात्व दृष्टि, मन्व्य अभव्य २, दण्डक २४ पच २ ।



१ समकृत, मन्व्य १, दण्डक १, पद्य १ शुक्ल ।

४ परिहार विशुद्ध चारित्र्य में-भाव ५, आत्मा ८, लब्धि ५, वीर्य १ पंडित, दृष्टि १ समकृत, मन्व्य १, दण्डक १ पद्य १ शुक्ल ।

५ सूक्ष्म संवराय चारित्र्य में-ऊपर प्रमाद्ये ।

६ यथा रूपात् चारित्र्य में-भाव ५, आत्मा ७ ( कषाय छोड़ कर ), लब्धि ५, वीर्य १, दृष्टि १, मन्व्य १, दण्डक १, पद्य १ ।

७ असंयति में-भाव ५, आत्मा ७ ( चारित्र्य छोड़ कर ) लब्धि ५, वीर्य १ बाल वीर्य, दृष्टि ३, मन्व्य अभव्य २, दण्डक २४, पद्य २ ।

८ संघता संघति में-भाव ५, आत्मा ७ ऊपर अनु-सार, लब्धि ५, वीर्य १ बाल पण्डित, दृष्टि १ समकृत, मन्व्य १, दण्डक २, पद्य १ शुक्ल ।

९ नो संघति नो असंघति नो संघता संघति में-भाव २, चायक, परिणामिक, आत्मा ४, लब्धि नहीं, वीर्य नहीं, दृष्टि १ समकृत, नो मन्व्य नो अभव्य, दण्डक नहीं, पद्य नहीं ।

१३ उपयोग द्वार के २ भेद

साकार उपयोग में-भाव ५, आत्मा ८, लब्धि ५, वीर्य ३, दृष्टि ३, मन्व्य अभव्य २, दण्डक २४, पद्य २ ।

२ अनाकार उपयोग में-भाव ५, आत्मा ८,



लब्धि ५, वीर्य ३, दृष्टि ३, मव्य अमव्य २, दण्डक २४, पच २ ।

### १४ आहारिक के २ भेद

१ आहारिक में-भाव ५, आत्मा ८, लब्धि ५, वीर्य ३, मव्य अमव्य २, दण्डक २४, पच २ ।

अनाहारिक में- भाव ५, आत्मा ८, लब्धि ५, वीर्य दो बाल व पण्डित, दृष्टि २, मव्य अमव्य २, दण्डक २४ पच २ ।

### १५ भापक द्वार के २ भेद

१ भापक में-भाव ५, आत्मा ८, लब्धि ५, वीर्य ३, दृष्टि ३, मव्य अमव्य २, दण्डक १६, पच २ ।

२ अभापक में भाव ५, आत्मा ८, लब्धि ५, वीर्य ३, दृष्टि ३, मव्य अमव्य २, दंडक २४ पच २ ।

### १६ परित द्वार के ३ भेद ।

१ परित में भाव ५, आत्मा ८, लब्धि ५, वीर्य ३, दृष्टि ३, मव्य १, दंडक २४, पच २ शुक्ल ।

२ अपरित में भाव ३, आत्मा ६, ( ज्ञान चारित्र्य छोड़कर ), लब्धि ५, वीर्य १, दृष्टि १, मव्य अमव्य २, दंडक २४, पच १ कृष्ण ।

३ नो परित नो अपरित में भाव २, आत्मा ४, लब्धि नहीं, वीर्य नहीं, दृष्टि १ समकित, नो भवी नो अमवी, दंडक नहीं, पच नहीं ।

१७ पर्याप्त द्वार के ३ भेद ।

१ पर्याप्त में भाव ५, आत्मा ८, लब्धि ५, वीर्य ३, दृष्टि ३, मन्व्य अमन्व्य २, दंडक २४, पद्य २ ।

२ अपर्याप्त में भाव ५, आत्मा ७. ( चारित्र्य छोड़ कर ), लब्धि ५, वीर्य १ बाल वीर्य, दृष्टि २, मन्व्य अमन्व्य २, दंडक २४, पद्य २ ।

३ नो पर्याप्त नो अपर्याप्त में भाव २ धायक व परिणामिक, आत्मा ४, लब्धि नहीं, वीर्य नहीं, दृष्टि १ समकित दृष्टि, नो मन्व्य नो अमन्व्य, दंडक नहीं, पद्य नहीं ।

१८ सूक्ष्म द्वार के ३ भेद ।

१ सूक्ष्म में भाव ३, आत्मा ६, लब्धि ५, वीर्य १ बाल वीर्य, दृष्टि १ मिथ्यात्व, मन्व्य अमन्व्य २, दंडक ५ ( पांच स्थावर का ), पद्य २ ।

२ यादर में भाव ५, आत्मा ८, लब्धि ५, वीर्य ३, दृष्टि ३, मन्व्य अमन्व्य २, दंडक २४, पद्य २ ।

३ नो सूक्ष्म नो यादर में भाव २, आत्मा ४, लब्धि नहीं, वीर्य नहीं, दृष्टि १, नो मन्व्य नो अमन्व्य दंडक नहीं, पद्य नहीं ।

१९ मंत्री द्वार के ३ भेद ।

१ मंत्री में भाव ५, आत्मा ८, लब्धि ५, वीर्य ३ दृष्टि ३, मन्व्य अमन्व्य २ दंडक २४ । पांच स्थावर, मित्र विकल्प-द्वार उर हार पद्य २ ।



वीर्य, दृष्टि २-समकित दृष्टि व मिथ्यात्व दृष्टि, अभव्य १  
दंडक, २४ पक्ष १ कृष्ण ।

### शरीर द्वार के ५ भेद

१ आहारिक में-भाव ५, आत्मा ८, लब्धि ५,  
वीर्य ३, दृष्टि ३, भव्य, अभव्य २, दंडक २०, पक्ष २।

२ वैक्रिय में भाव ५, आत्मा ८, लब्धि ५, वीर्य  
३, दृष्टि ३, भव्य अभव्य २, दंडक २७ ( १३ देवता  
का, १ नारकी का १, मनुष्य का, १ तिर्यच का व १  
वायु का एवं १७ ) . पक्ष २ ।

३ आहारिक में भाव ५, आत्मा ८, लब्धि ५,  
वीर्य १, पंडित वीर्य, दृष्टि १ समकित दृष्टि, भव्य १,  
दंडक १, पक्ष १ शुक्ल ।

४ तैजस व ५ कार्मण में भाव ५, आत्मा ८,  
लब्धि ५, वीर्य ३, दृष्टि ३, भव्य अभव्य २, दंडक २४,  
पक्ष २ ।

### गुण स्थानक द्वार ।

१ मिथ्यात्व गुण स्थानक में भाव ३ ( उदय,  
चयोपशम. परिमाणिक ), आत्मा ६ ( ज्ञान चारित्र छोड़  
कर ) लब्धि ५, वीर्य १ बाल वीर्य, दृष्टि १ मिथ्यात्व  
दृष्टि, भव्य अभव्य दो, दंडक २४, पक्ष दो ।

२ सास्वादान समदृष्टि गुण स्थानक में भाव ३  
ऊपर अनुसार, आत्मा ७ ( चारित्र छोड़ कर ), लब्धि ५,

वीर्य १ बाल वीर्य, दृष्टि १ समकित दृष्टि; भव्य १ दंडक १६ ( पांच एकेन्द्रिय छोड़कर ), पक्ष १ शुक्र ।

३ मिश्र गुण स्थानक में भाव ३ ऊपर अनुसार आत्मा ६ ( ज्ञान चारित्र छोड़कर ), लब्धि ५, वीर्य १ बाल वीर्य, दृष्टि १ मिश्र दृष्टि, भव्य १, दंडक १६, ( ५ एकेन्द्रिय तीन विकलेन्द्रिय छोड़कर ) पक्ष १ शुक्र ।

४ अव्रती सम्यक्त्व दृष्टि में भाव ५, आत्मा ७, ( चारित्र छोड़कर ), लब्धि ५, वीर्य १ बाल वीर्य; दृष्टि १ समकित दृष्टि; भव्य १ दंडक १६ ऊपर अनुसार; पक्ष १ शुक्र ।

५ देश व्रती गुण स्थानक में भाव ५; आत्मा ७ ( देश से चारित्र है सर्व से नहीं ); लब्धि ५; वीर्य १; बाल पंडित वीर्य; दृष्टि १ समकित दृष्टि; भव्य १ दंडक दो ( मनुष्य व तिर्यच के ) पक्ष १ शुक्र ।

६ प्रमत्त संघति गुण स्थानक में भाव ५; आत्मा ८; लब्धि ५; वीर्य १ पंडित वीर्य; दृष्टि १ समकित दृष्टि भव्य १; दंडक १ मनुष्य का, पक्ष १ शुक्र ।

७ अप्रमत्त संघति गुण में-भाव ५, आत्मा ८ लब्धि ५, वीर्य १ पण्डित वीर्य, दृष्टि १ समकित भव्य १, दण्डक १ मनुष्य का, पक्ष १ शुक्र ।

नियती वादर गुण० में-भाव ५, आत्मा ८, लब्धि ५, वीर्य १ पण्डित वीर्य, दृष्टि १ समकित दृष्टि, भव्य १, दण्डक १ मनुष्य का, पक्ष १ शुक्र ।

६ अनिषट्ठी घादर गुण० में-भाव ५, आत्मा ८ लब्धि ५, वीर्य १ परिहृत वीर्य, दृष्टि १ समकित, भव्य १, दण्डक १ मनुष्य का, पच १ शुक्ल ।

१० सूक्ष्म संपराय गुण० में-भाव ५ आत्मा ८, लब्धि ५, वीर्य १ परिहृत वीर्य, दृष्टि १ समकित, भव्य १, दण्डक १ मनुष्य का पच १ शुक्ल ।

११ उपशान्त मोहनीय गुण० में-भाव ५, आत्मा ७ (कपाय छोड़ कर) लब्धि ५, वीर्य १ परिहृत वीर्य, दृष्टि १ समकित, भव्य १, दण्डक १ मनुष्य का पच १ शुक्ल ।

१२ क्षीण मोहनीय गुण० में-भाव चार (उपशम छोड़ कर), आत्मा ७ (कपाय छोड़ कर), लब्धि ५, वीर्य १ परिहृत वीर्य, दृष्टि १ समकित, भव्य १, दण्डक १ मनुष्य का पच १ शुक्ल ।

१३ सयोगी केशली गुण० में भाव ३ (उदय, घायक, परिणामिक), आत्मा ७ (कपाय छोड़ कर), लब्धि ५, वीर्य १ परिहृत वीर्य, दृष्टि १ समकित दृष्टि भव्य १, दण्डक १ मनुष्य का, पच १ शुक्ल ।

अयोगी केशली गुण० में-भाव तीन ऊपर समान, आत्मा ६, (कपाय ३ योग छोड़ कर) लब्धि ५, वीर्य १ परिहृत वीर्य, दृष्टि १ समकित, भव्य १, दण्डक १ मनुष्य का, पच १ शुक्ल ।

॥ इति याज्ञन्येयान्त सम्पूर्णम् ॥

## श्रोता अधिकार

श्रोता अधिकार श्री नंदि सूत्र में है सो नीचे अनुसार  
गाथा

सेल' घण, कुङ्ग', चालणी', परिपुण्ण', हंस', महिस', भेस', य;  
मसर्ग', जलूग', विरालो", जाडग', गो', भेरि', आभेरी" सा । १ ।

चौदह प्रकार के श्रोता होते हैं जिनमें से प्रथम  
सेल घण जैसे पत्थर पर मेघ गिरे परन्तु पत्थर मेघ (पानी)  
से भीजे नहीं वैसे ही एकेक श्रोता व्याख्यानादिक सुने  
परन्तु सम्यक् ज्ञान पावे नहीं, बुद्ध होवे नहीं ।

दृष्टान्तः—कुशिय्य रूपी पत्थर, सद् गुरु रूपी मेघ  
तथा बोध रूपी पानी मुंग शेलीआ तथा पुष्करावर्त मेघ का  
दृष्टान्तः—जैसे पुष्करावर्त मेघ से मुंग शेलीआ पिघले नहीं  
वैसे ही एकेक कुशिय्य महान् संवेगादिक गुण युक्त  
आचार्य के प्रतिबोधने पर भी समझे नहीं, वैराग्य रंग चढ़े  
नहीं, अतः ऐसे श्रोता छांड़ने योग्य हैं एवं अविनीत का  
दृष्टान्त जानना—

काली भूमि के अन्दर जैसे मेघ बरसे तो वो भूमि  
अत्यन्त भीज जावे व पानी भी रकवे तथा गोधृमादिक  
( गेहूं प्रमुख ) की अत्यन्त निष्पत्ति कर वैसे ही विनीत  
कुशिय्य भी गुरु की उपदेश रूर वाणी सुनकर हृदय में  
धार रकवे, वैराग्य मे भीज जावे व अनेक अन्य मन्य

जीवों को विनय धर्म के अन्दर प्रवर्ताने, अतः ये श्रोता आदरवा योग्य है ।

२ कुड़गः—कुंभ का दृष्टान्त । कुंभ के आठ भेद हैं जिनमें प्रथम घड़ा सम्पूर्ण घड़े के गुणों द्वारा व्याप्त है । घड़े के तीन गुणः—१ घड़े के अन्दर पानी भरने से किंचित् बाहर जावे नहीं २ स्वयं शीतल है अतः अन्य की भी तृप्ता शान्त करे—शीतल करे । ३ अन्य का मलिनता भी पानी से दूर करे ।

ऐसे ही एकेक श्रोता विनयादिक गुणों से सम्पूर्ण भरे हुवे हैं ( तीन गुण सहित ) १ गुर्वादिक को उपदेश सर्व धार कर रखे- किंचित् भूत्ते नहीं २ स्वयं ज्ञान पाकर शीतल दया को प्राप्त हुवे हैं व अन्य भव्य जीव को त्रिविध ताप उपसमा कर शीतल काते हैं ३ भव्य जीव की सन्देह रूपी मलिनता को दूर करे । ऐसे श्रोता आदरने योग्य हैं ।

२ एक घड़े के पार्श्व भाग में काना ( छेद युक्त ) है इसमें पानी भरे तो आधा पानी रहे व आधा पानी बाहर निकल जावे वैसे ही एकेक श्रोता वारुषानादि सुने तो आधा धार रखे व आधा भूत जावे ।

३ एक घड़ा नीचे में काना है इसमें पानी भरने में भरे पानी घड़े का निकल जावे किंचित् भी उसमें रहे





प्रमुख से टकरा कर फूट जावे वैसे एकेक श्रोता सद्गुरु की समा में व्याख्यान सुनने को बैठे परन्तु ऊंच प्रमुख के योग से ज्ञान रूप पानी हृदय में आवे नहीं तथा अत्यन्त ऊंच के प्रभाव से खराब ढाल रूप वायु से अधड़ावे (टकरा जावे) जिससे समा में अपमान प्रमुख पावे तथा ऊंच में पड़ने से अपने शरीर को नुकसान पहुँचावे ।

इति आठ घड़े के दृष्टान्त रूप दूसरे प्रकार का श्रोता का स्वरूप ।

३ चालणी-एकेक श्रोता चालणी के समान है । इस के दो प्रकार, एक प्रकार ऐसा है कि चालनी जब पानी में रखे तो पानी से सम्पूर्ण भरी हुई दीखे परन्तु उठा कर देखे तो खाली दीखे वैसे एकेक श्रोता व्याख्यानादि समा में सुनने को बैठे तो वैराग्यादि भावना से भरे हुवे दीखे परन्तु समा से उठ कर बाहर जावे तो वैराग्य रूप पानी किंचित् भी दीखे नहीं । ऐसे श्रोता श्राद्धने योग्य है ।

दूसरा प्रकार-चालनी गेहूँ प्रमुख का आटा चालने में आटा तो निकल जाता है परन्तु कट्टा प्रमुख कचरा चर रह जाता है वैसे एकेक श्रोता व्याख्यानादि सुनने समय उपदेशक तथा श्रवण के गण तो निकलान देत परन्तु स्वतन्त्र प्रमुख अवगम्य कर कचरा का प्रयोग कर रक्खे ।  
ऐसे श्रोता उच्च समा : ।

४ परिपुण्ण-सुधरी पक्षी के माला का दृष्टान्त । सुधरी पक्षी के माला से घी गालते समय घी घी निकल जावे परन्तु चींटी प्रमुख कचरा रह जाता है वैसे एकेक श्रोता आचार्य प्रमुख का गुण त्याग करके अवगुण को ग्रहण कर लेता है ऐसे श्रोता छांडवा योग्य हैं ।

५ हंस-दूध पानी मिला कर पीने के लिये देने पर जैसे हंस अपनी चोंच से ( खटाश के गुण के कारण ) दूध दूध पीवे और पानी नहीं पीवे वैसे विनीत श्रोता गुर्वादिक के गुण ग्रहण करे व अवगुण न लेवे ऐसे श्रोता आदरनीय हैं ।

६ महिष-भेसा जैसे पानी पीने के लिये जलाशय में जावे । पानी पीने के लिये जल में प्रथम प्रवेश करे पश्चात् मस्तक प्रमुख के द्वारा पानी डोलने व मल मूत्र करने के बाद स्वयं पानी पीवे परन्तु शुद्ध जल स्वयं नहीं पीवे अन्य वृथ को भी पीने नहीं देवे वैसे कुशिष्य श्रोता व्याख्यानादिक में क्लेश रूप प्रश्नादिक करके व्याख्यान डोहले, स्वयं शान्ति युक्त सुने नहीं व अन्य नमा जनो को शान्ति से सुनाने देवे नहीं । ऐसे श्रोता छांडने योग्य हैं ।

७ मेघ-बकरा जैसे पानी पीने को जलाशय प्रमुख में जावे तो किनारे पर ही पाव नाचे नमा कर के पानी पीवे, डोहले नहीं व अन्य वृथ को भी निमन जल पीने देवे ।

वैसे विनीत शिष्य व श्रोता व्याख्यानदिक नम्रता तथा शान्त रस से सुने, अन्य सभाजनों को सुनने देवे। ऐसे श्रोता आदरनीय हैं।

८ मसग-इस के दो भेद प्रथम मसग अर्थात् चमड़े की कोथली में जव हवा भरी हुई होती है तब अत्यन्त फूली हुई दिखती है परन्तु तृषा शमाये नहीं हवा निकल जाने पर खाली हो जाती है वैसे एकेक श्रोता अभिमान रूप वायु के कारण ज्ञानी वत् तडाक मारे परन्तु अपनी तथा अन्य की आत्मा को शान्ति पहुँचावे नहीं ऐसे श्रोता छोड़ने योग्य है।

९ दूसरा प्रकार-मसग (मच्छर नामक जन्तु) अन्य को चटका मार कर परितोष उपजावे परन्तु गुण नहीं करे वरन् नुकसान उत्पन्न करे वैसे एकेक कुश्रोता गुर्वादिक को-ज्ञान अभ्यास कराने के समय अत्यन्त परिश्रम देवे तथा कुवचन रूप चटका मारे। परन्तु वैश्या-वृत्त्य प्रमुख कुट्ट भी न करे और मनमें असमाधि पैदा करे, यह छोड़ने योग्य है।

१० जोंक इसके भेद २ हैं। पहिला जोंक जन्तु नाय वर्गारह के स्तन में लग जावे तब मूत्र का पिये दूध को को नहीं पिये। इनी तरह में कोई अभिनया कृशिष्य श्रोता आचार्यदिक के पामरइता तथा उनके दापों को देखे परन्तु अदिक गुणों को प्रदर्श नहीं करे यह भी त्यागने योग्य है।

दूसरे प्रकार का—जोंक नामक जन्तु फोड़ा के ऊपर रखने पर उसमें चोट मारकर दुःख पैदा करता और बिगड़े हुए खून को पीता है शान्ति में शान्ति पैदा करता है । इसी तरह से कोई विनीत शिष्य श्रोता आचार्यादिक के साथ रहता हुआ पहिले तो वचनरूप चोट को मारे, समय अतसमय बहुत अभ्यास करता हुआ मेहनत करावे पीछे संदेह रूबी मैल को निकाल कर गुरुओं को शान्ति उपजावे—परदेशी राजा के समान यह ग्रहण करने योग्य है ।

१० पिडाल—जैसे बिछी दूध के वर्तन को सींके से जमीन पर पटक कर उसमें मिली हुई धूल के साथ २ दूध को पीती है उसी तरह कोई श्रोता आचार्यादिक के पास से सूत्रादिक का अभ्यास करते हुए बहुत अविनय करे, और दूसरे के पास जाकर प्रणय पृथक् कर सूत्रार्थ को धारण करे परंतु विनय के साथ धारण नहीं करे इसलिए ऐसा श्रोता त्यागने योग्य है ।

११ जाहग—सहलो यह एक तिर्यच की जाति विशेष्य का जीव है यह पहले तो अपनी माता का दूध थोड़ा थोड़ा पीता है और फिर वह पचजाने पर और थोड़ा इस तरह थोड़े थोड़े दूध से अपना शरीर पुष्ट करता है पीछे बड़े भारी सर्प का मान भजन करता है । इसी तरह कोई श्रोता आचार्यादिक के पास में अपनी बुद्धि माफिक समय समय पर थोड़ा थोड़ा सूत्र अभ्यास करे और

अभ्यास करते हुए गुरुओं को अत्यंत संतोष पैदा करे।  
 क्योंकि अपना पाठ बराबर याद करता रहे और उसे याद  
 करने पर फिर दूसरी बार और तीसरी बार इस तरह थोड़ा  
 थोड़ा ले-रपभाव बढ़ाकर हो कर मिथ्यात्वी लोगों का  
 मान मर्दन करे। यह आदरने योग्य है।

१२ गाय-श्लोके दो प्रकार। प्रथम प्रकार-जैसे  
 दूसरी गाय का एक श्लोक किलि अपने पड़ोसी को सौंप  
 कर अन्य गांव जाते पड़ोसी पांच पानी प्रवृत्त बराबर  
 गाय को नहीं देना जिसमें गाय भूख तथा से पीड़ित हो-  
 कर दूध में घटने लग जाती है व दुग्धी हो जाती है  
 जैसे ही एक श्लोक (अग्नीत) आहार पानी प्रवृत्त  
 देना नहीं करने में गुरादिक की देना अग्नि पांच व  
 जिसमें गुरादिक में पाटा पड़ने लगना है तथा अथवा  
 के भागी होते हैं।

द्वितीय प्रकार-एक गेट पड़ोसी को दूसरी गाय सौंप  
 कर गांव गया पड़ोसी छयाव पानी प्रवृत्त अथवा नद देने  
 में दूध में घटने होने लगी व सा किलि सा भागी दूध  
 जैसे एक श्लोक अग्नि आहार प्रवृत्त, गुरादिक की आहार  
 पानी प्रवृत्त देना नहीं करने में गुरादिक की देना अग्नि पांच व

को बजाने वाला पुरुष यदि राजा की आज्ञानुसार भेरी बजावे तो राजा खुशी होकर उसे पुष्कल द्रव्य देवे वैसे ही विनीत शिष्य-श्रोता-वीर्यरु तथा गुर्वादिक की आज्ञानुसार सूत्रादिक की स्वाध्याय तथा ध्यान प्रमुख अंगीकार करे तो कर्म रूप रोग दूर होवे और सिद्ध गति में अनन्त लक्ष्मी प्राप्त करे यह आदरने योग्य है ।

दूसरा प्रकार-भेरी बजाने वाला पुरुष यदि राजा की आज्ञानुसार भेरी नहीं बजावे तो राजा कोपायमान होकर द्रव्य देवे नहीं वैसे ही अविनीत शिष्य ( धोता ) वीर्यरु की तथा गुर्वादिक की आज्ञानुसार सूत्रादिक की स्वाध्याय तथा ध्यान करे नहीं तो उनका कर्म रूप रोग दूर होवे नहीं व सिद्ध गति का सुख प्राप्त करे नहीं यह छोड़ने योग्य है ।

१४ धानीरी- प्रथम प्रकार-धानीर स्त्री पुरुष एक ग्राम से पास के शहर में गढ़वे में घों भर कर बेचने को गये । वहाँ बाजार में उतरते समय घों का भाजन-बर्तन फूट गया व धिनमे पं दुल गया । पुरुष स्त्री को कुचरन कह कर उपालम्भ देने लगा. स्त्री भी पुनः बर्ता के भाजन कुचरन करने लगी । इन बीच में सर घों निकल कर जमीन पर पड़े लगी व भी पुरुष दानो भाक कर्म लग जमीन पर पड़े लगी व भी पुरुष दानो कर्मने लगी व घउर में बच कर देने लगी ।

ले कर सायङ्काल को गाँव जाते समय चोरों ने उन्हें लूट लिया। अत्यन्त निराश हुये, लोगों के पृथ्नी पर सर्व वृत्तान्त कहा जिसे सुन कर लोगों ने उन्हें बहुत ही ठप्पा दिया। वैसे ही गुरु के द्वारा व्याख्यान में दिये हुये उपदेश ( सार धो ) को लड़ाई भगडा करके डाल दिया व अन्त में क्लेश करके दुर्गति को प्राप्त करे यह श्रोता छोड़ने योग्य है।

दूसरा प्रकार-घी भर कर शहर में जाते समय चर्तन उतारने पर फूट गया, फूटत ही दोनों स्त्री पुरुषों ने मिल कर पुनः भाजन में घी भर लिया। बहुत नुकसान नहीं होने दिया। घी को बँचका पैसे सीधे किये व अन्धा संग करके गाँव में सुख पूर्वक अन्य सुश्रु पुरुषों के समान पहुँच गये, वैसे ही विनीत शिष्य ( श्रोता ) गुरु के पास से वाणी सुनकर व शुद्ध भान पूर्वक तथा अर्थ सूत्र को धार कर रखे; साँचे। अस्मलित को, विस्मृति हावे तो गुरु के पास से पुनः चमा माँग कर धारे, पूछे परन्तु क्लेश भगडा को नहीं। गुरु उन पर प्रमत्त होंगे, संयम ज्ञान की वृद्धि हावे, व अन्त में सद् गति पावे यह श्रोता आदरणीय है।

॥ इति श्रोता अधिकार सम्पूर्ण ॥



# ६८ बोल का अल्प बहुत्व

सूत्र श्री पन्नवणाजी पद तीसरा ।

६८ बोल का अल्प बहुत्व ।

अनुक्रम	महा दण्डक	का जीव भेद	१४ गुणस्थान	१४ योग	१२ उपयोग	१२ लेख्यांश
१ गर्भव मनुष्य सर्व से कम		२,	१४,	१५,	१२,	६,
२ मनुष्याणी संख्यातगु.	२,		१४,	१३,	१२,	६,
३ वादर तजस काय पर्याप्त असंख्यात गुणा	१,		१,	१,	३,	३,
४ पांच अनुत्तर विमान का देव असंख्यात गु.	२,		१,	११,	६,	१,
५ ऊपर की त्रीक का देव संख्यात गुणा-	२,	२-३,	११,		६,	१,
६ मध्य त्रीक का देव संख्यात गुणा-	२,	२-३,	११,		६,	१,
७ नीचे की त्रीक का देव संख्यात गुणा-	२	= ३,	११,		६,	१,
८ बारहवा देवलोक का देव संख्यात गुणा-	२,		४,	१,		

६	११ वां देवलोक का देव संख्यात गुणा-	२,	४,	११,	६, १,
१०	दशवां देवलोक का देव संख्यात गुणा-	२,	४,	११,	६, १,
११	नववां देवलोक का देव संख्यात गुणा-	२,	४,	११,	६, १,
१२	सातवीं नरक का नेरिया असंख्यात गुणा-	२,	४,	११,	६, १,
१३	छठी नरक का नेरिया असंख्यात गुणा-	२,	४,	११,	६, १,
१४	आठवां देवलोक का देव असंख्यात गुणा-	२,	४,	११,	६, १,
१५	सातवां देवलोक का देव असंख्यात गुणा-	२,	४,	११,	६, १,
१६	पांचवीं नरक का नेरिया असंख्यात गुणा-	२,	४,	११,	६, २,
१७	छठा देवलोक का देव असंख्यात गुणा-	२,	४,	११,	६, १,
१८	चौथी नरक का नेरिया असंख्यात गुणा-	२,	४,	११,	६, १,
१९	पांचवां देवलोक का देव असंख्यात गुणा-	२,	४,	११,	६, १,

२० तीसरी नरकका नेरिया				
असंख्यात गुणा—	२,	४,	११,	६, २,
२१ चौथा देवलोक का देव				
असंख्यात गुणा—	२,	४,	११,	६, १,
२२ तीसरा देवलोकका देव				
असंख्यात गुणा—	२,	४,	११,	६, १,
२३ दूसरी नरक का नेरिया				
असंख्यात गुणा—	२,	४,	११,	६, १,
२४ संनृद्धिन ननुप्य अग्ना-				
यत असंख्यात गुणा-	१,	१,	३,	४, ३,
२५ दूसरे देवलोक का देव				
असंख्यात गुणा-	२,	४,	११,	६, १,
२६ दूसरे देवलोक की दे-				
विये संख्यात गुणा-	२,	४,	११,	६, १,
२७ पहले देवलोक का देव				
संख्यात गुणा-	२,	४,	११,	६, १,
२८ पहले देवलोक की दे-				
विये संख्यात गुणा-	२,	४,	११,	६, १,
२९ नवनरति का देव अ-				
संख्यात गुणा-	३,	४,	११,	६, २,
३० नवनरति की देवी				
संख्यात गुणा	२,	४,	११,	६, २,

३१	पहेली नरक का नेरि-				
	या असंख्यात गुणा	३,	४,	"	" १,
३२	खेचर पुरुष तिर्यच यो-				
	नि असंख्यात गुणा	२,	५,	१३,	" ६,
३३	खेचर की स्त्री				
	संख्यात गुणी	२,	५,	"	" "
३४	स्थलचर पुरुष संख्या-				
	त गुणा	२,	५,	"	" "
३५	स्थलचर की स्त्री				
	संख्यात गुणी	"	"	"	" "
३६	जलचर पुरुष				
	संख्यात गुणा	"	"	"	" "
३७	जलचर की स्त्री				
	संख्यात गुणी	"	"	"	" "
३८	वाण ध्यन्तर का				
	देव संख्यात गुणा	३,	४,	११,	" ४,
३९	वाण ध्यन्तर की				
	देवी संख्यात गुणी	२,	५,	"	" "
४०	न्यायिण का देव				
	संख्यात गुणा				" १
४१	न्यायिण की देवी				
	संख्यात गुणी				" १



५३	प्रत्येक शरीरी वा. वन. प. असं. गु. "	१,	१,	३,	"
५४	वाटर निगोद प. का श. असं. गु. "	"	"	"	"
५५	वाटर पृथ्वी काय पर्याप्त असं. गु. "	"	"	"	"
५६	वाटर अप काय पर्याप्त असंख्यात गुणा	१,	१,	१,	३, ३,
५७	वाटर वायु काय पर्याप्त असंख्यात गुणा	१,	१,	४,	३, ३,
५८	वाटर तैजस काय अ- पर्याप्त असंख्यात गुणा	१,	१,	३,	३, ३,
५९	प्रत्येक शरीरी वाटर वन- स्पति काय अ. अ. गुणा	१,	१,	३,	३, ४,
६०	वाटर निगोद अपर्याप्त का शरीर असं. गुणा	१,	१,	३,	३, ३,
६१	वाटर पृथ्वी काय अप. असंख्यात गुणा	१,	१,	३,	३, ४,
६२	वाटर अप काय अप. असंख्यात गुणा	१,	१,	३,	३, ४,
६३	वाटर वायु काय अप. असंख्यात गुणा	१,	१,	३,	३, ३,

६४ सूक्ष्म तेजस्काय अप.				
असंख्यात गुणा	१,	१,	३,	३, ३,
६५ सूक्ष्म पृथ्वी काय अप.				
विशेषाधिक	१,	१,	३,	३, ३,
६६ सूक्ष्म अप काय अप.				
विशेषाधिक	१,	१,	३,	३, ३,
६७ सूक्ष्म वायु काय अप.				
विशेषाधिक	१,	१,	३,	३, ३,
६८ सूक्ष्म तेजस्काय पर्याप्त				
संख्यात गुणा	१,	१,	१,	३, ३,
६९ सूक्ष्म पृथ्वी काय पर्याप्त				
विशेषाधिक	१,	१,	१,	३, ३,
७० सूक्ष्म अप काय पर्याप्त				
विशेषाधिक	१,	१,	१,	३, ३,
७१ सूक्ष्म वायु काय पर्याप्त				
विशेषाधिक	१,	१,	१,	३, ३,
७२ सूक्ष्म निर्गोद अर्थस				
का शरीर अने गुणा	१,	१,	१,	३, ३,
७३ सूक्ष्म निर्गोद पर्याप्त				
का शरीर अने गुणा	१,	१,	१,	३, ३,
७४ सूक्ष्म अर्थस अने				
गुणा	१,	१,	१,	३, ३,

७५ सम्यक् दृष्टि प्रति पाति					
अनन्त गुणा	१४,	१४,	१५,	२२,	६;
७६ सिद्ध अनन्त गुणा	०;	०;	०;	२;	०;
७७ वादर वनस्पति काय					
पर्याप्त अनन्त गुणा	१;	१;	१;	३;	३;
७८ वादर जीव पर्याप्त					
विशेषाधिक	६;	१४;	१४;	१२;	६;
७९ वादर वनस्पति काय					
अप. असंख्यात गुणा	१;	१;	३;	३;	४;
८० वादर जीव अपर्याप्त					
विशेषाधिक	६,	३,	५,	८/६,	६,
८१ समुच्चय वादर जीव					
विशेषाधिक	१२,	१४,	१५,	१२,	६,
८२ सूक्ष्म वनस्पति काय					
अपर्याप्त असंख्यात गु.	१,	१,	३,	३,	३,
८३ सूक्ष्म जीव अपर्याप्त					
विशेषाधिक	१,	१,	३,	३,	३,
८४ सूक्ष्म वनस्पति काय					
पर्याप्त संख्यात गुणा	१,	१,	१,	३,	३,
८५ सूक्ष्म जीव पर्याप्त					
विशेषाधिक	१,	१,	१,	३,	३,
८६ समुच्चय सूक्ष्म जीव					
विशेषाधिक	२,	१,	३,	३,	३,





## ✽ॐ पृथ्वी परावर्त ✽

भगवती सूत्र के १२ वें शतक के बोधे उद्देश में पृथ्वी परावर्त का विचार है सो नीचे अनुसार ।

साधा

नामः; गुणः, चि सधनं; चि दानं; काले; कालोपमं  
काल अप्य बहु; पुमान्मत्त पुमालं पुमान् करणं अप्यभु ।

पृथ्वी परावर्त समझाने के लिये नव द्वार कहते हैं ।

१ नाम द्वार—१ भौतिक पृथ्वी परावर्त २ वैकल्पिक पृथ्वी परावर्त ३ वैजय पृथ्वी परावर्त ४ कामण्य पृथ्वी परावर्त ५ मन पृथ्वी परावर्त ६ वचन पृथ्वी परावर्त ७ भाग्यशाल पृथ्वी परावर्त ।

२ गुण द्वार—पृथ्वी परावर्त किये कहते हैं ? इसके द्वारे प्रकाश होने के ? इन द्वारों का नाम क्या है ? यदि मनुष्य प्रत्यक्ष शिष्य के द्वारा पूछे जाने हैं तो मुझे उत्तर देने हैं—इस नाम के अन्तर्गत विभिन्न पृथ्वी हैं उन मनुष्यों को जो ने ने ने कर देखे हैं । जोड़ कर पुनः पुनः कि प्रकाश किये हैं पृथ्वी परावर्त शब्द का यह अर्थ है कि पृथ्वी परावर्त शब्द से न तो का अर्थ से अर्थ या पृथ्वी हैं उन पर है अन्तर्गत ।

औदारिक पने ( औदारिक शरीर रह कर औदारिक योग्य जो पुद्गल ग्रहण करते हैं ) वैक्रिय पने ( वैक्रिय शरीर में रह कर वैक्रिय योग्य पुद्गल ग्रहण करे ) तैजस आदि ऊपर कहे हुये सात प्रकार से पुद्गल जीव ने ग्रहण किये हैं-व छोड़े हैं, ये भी सूक्ष्म पने और वादर पने लिये हैं और छोड़े हैं; द्रव्य से, क्षेत्र से काल से व भाव से एवं चार तरह से जीव ने पुद्गल परावर्त किये हैं ।

इसका विवरण ( खुलासा ) नीचे अनुसार:-

पुद्गल परावर्त के दो भेद:-१ वादर २ सूक्ष्म ये द्रव्य से, क्षेत्र से, काल से, भाव से,

१ द्रव्य से वादर पुद्गल परावर्त:-लोक के समस्त पुद्गल पूरे किये परन्तु, अनुक्रम से नहीं याने औदारिक पने पुद्गल पूरे किये बिना पहले वैक्रिय पने लेवे । व तैजस पने लेवे, कोई भी पुद्गल परावर्त पने बीच में लेकर पुनः औदारिक पने के लिये हुये पुद्गल पूरे करे एवं सात ही प्रकार से बिना अनुक्रम के समस्त लोक के सर्व पुद्गलों को पूरे करे इसे वादर पुद्गल परावर्त कहते हैं ।

२ द्रव्य से सूक्ष्म पुद्गल परावर्त-लोक के सर्व पुद्गलों को औदारिक पने पूरे करे, फिर वैक्रिय पने फिर तैजस पने एवं एक के बाद एक अनुक्रम पूर्वक मान ही पुद्गल परावर्त पने पूरे करे उसे सूक्ष्म पुद्गल परावर्त कहते हैं ।

३ चेत्र से यादर पुद्गल परावर्त्त-चौदह राजलोक के जितने आकाश प्रदेश हैं उन सर्व आकाश प्रदेश को प्रत्येक प्रदेश में मर मर कर अनुक्रम विना तथा किसी भी प्रकार से पूर्ण करे ।

४ चेत्र से सूक्ष्म पुद्गल परावर्त्तः-चौदह राजलोक के आकाश प्रदेश को अनुक्रम से एक के बाद एक १-२ ३-४-५-६-७-८ ९-१० एवं प्रत्येक प्रदेश में मर कर पूर्ण करे उन में पहले प्रदेश में मर कर तीसरे प्रदेश में मरे अथवा पांचवें आठवें किसी भी प्रदेश में मरे तो पुद्गल परावर्त्त करना नहीं गिना जाता है, अनुक्रम से प्रत्येक प्रदेश में मर कर समस्त लोक पूर्ण करे ।

५ काल से यादर पुद्गल परावर्त्त—एक काल चक्र ( जिममें उत्सर्पिणी व श्वसर्पिणी सम्मिलित हैं ) के प्रथम समय में मरे पश्चात् दूसरे काल चक्र के दूसरे समय में मरे अथवा तीसरे समय में मरे एवं तीसरे काल चक्र के किसी भी समय में मरे अर्थात् एक काल चक्र के जितने समय होवे उतने काल चक्र के एक २ समय मर कर एक काल चक्र पूर्ण करे ।

६ काल से सूक्ष्म पुद्गल परावर्त्त—काल चक्र के प्रथम समय में मरे, अथवा दूसरे काल चक्र के दूसरे समय में मरे, तीसरे काल चक्र के तीसरे समय में मरे,

चौथे काल चक्र के चौथे समय में मरे, बीचमें नियम के बिना किसी भी समय में मरे ( यह हिसाब में नहीं गिना जाता ) एवं एक काल चक्र के जितने समय होवे उतने काल चक्र के अनुक्रम से नियमित समय में मरे ।

७ भाव से वादर पुद्गल परावर्त—जीव के असंख्यात परिणाम होते हैं जिनमें से प्रथम परिणाम पर मरे पश्चात् ३-२ ५-४-७-६ एवं अनुक्रम के बिना प्रत्येक परिणाम पर मरे व मर कर असंख्यात परिणाम पूर्ण करे ।

८ भाव से सूक्ष्म पुद्गल परावर्त—जीव के असंख्यात परिणाम होते हैं उनमें से प्रथम परिणाम पर मरे पश्चात् बीच में कितना ही समय जाने बाद दूसरे परिणाम पर, व अनुक्रम से तीसरे परिणामें चौथे परिणामें एवं असंख्य परिणाम पर मर कर पूर्ण करे ।

❀ इति गुण द्वार ❀

३ त्रिसंख्या द्वार

१ पुद्गल परावर्त—सर्व जीवों ने कितने किये २ एक वचन में एक जीव ने २४ दंडक में कितने पुद्गल परावर्त किये ३ बहु वचन में सर्व जीवों ने २४ दंडक में कितने पुद्गल परावर्त किये ।

१ सर्व जीवों ने—आंदासिक पुद्गल परावर्त-वैक्रिय पुद्गल परावर्त; तैजस पुद्गल परावर्त, आदि ये माता पुद्गल परावर्त अनन्त अनन्त वार किये ७ ।

२ एक वचन से—एक जीव ने—एक नरक के जीव ने औदारिक पुद्गल परावर्त्त, वैक्रिय पुद्गल परावर्त्त आदि सातों पुद्गल परावर्त्त गत कालमें अनन्त अनन्त बार किये, भविष्य काल में कोई पुद्गल परावर्त्त नहीं करेंगे ( जो मोक्ष में जावेंगे वो ) कोई करेंगे वे जघन्य १-२-३ पुद्गल परावर्त्त करेंगे उत्कृष्ट अनन्त करेंगे एवं भवनपति आदि २४ दण्डक के एक १ जीव ने सात पुद्गल परावर्त्त गत कालमें अनन्त किये, कितने भविष्य काल में ( मोक्ष में जाने से ) करेंगे नहीं, जो करेंगे वो १-२-३ उत्कृष्ट अनन्त करेंगे सात पुद्गल परावर्त्त २४ दण्डक के साध गिनने से १६८ ( प्रश्न ) हुवे ।

३ बहुत वचन से—सर्व जीवों ने—नरक के सर्व जीवों ने पूर्व काल में औदारिक पुद्गल परावर्त्त आदि सातों पुद्गल परावर्त्त अनन्त अनन्त किये भविष्य काल में अनेक जीव अनन्त करेंगे इसी प्रकार २४ दण्डक के बहुतसे जीवों ने ये अनन्त पुद्गल परावर्त्त किये व भविष्य काल में करेंगे इनके भी १६८ ( प्रश्न ) हाते हैं ।

$७ + १६८ + १६८ = ३४३$  ( प्रश्न ) होते हैं ।

४ त्रि स्थानक द्वार

४ एक जीव ने किम २ स्थान २ पर कोन २ में पुद्गल परावर्त्त किये, कोन २ में पुद्गल परावर्त्त करेंगे २ बहुत जीवों ने किम २ स्थान पर पुद्गल परावर्त्त किये

व करेंगे ३ सर्व जीवों ने कित्त २ दण्डक में कौन २ से पुद्गल परावर्त किये ।

१ एक वचन से—एक जीव ने नरकपने औदारिक पुद्गल परावर्त किये नहीं, करेगा नहीं, वैक्रिय पुद्गल परावर्त किये हैं व करेगा करेगा तो जवन्व-  
१-२-३ उत्कृष्ट अनन्त करेगा । इसी प्रकार तैजस् पुद्गल परावर्त, कार्मण पुद्गल परावर्त यावत् श्वासोश्वास पुद्गल परावर्त किये हैं व थामे करेगा । ऊपर अनुसार । इसी प्रकार असुर कुमार पने पृथ्वी पने यावत् वैमानिक पने पूर्व काल में औदारिक पुद्गल परावर्त वैक्रिय पुद्गल परावर्त यावत् श्वासोश्वास पुद्गल परावर्त किये हैं व करेगा । ( ध्यान में रखना चाहिये कि जिस दण्डक में जो २ पुद्गल परावर्त होवे वो करे और न होवे उन्हें न करे ) । एक नेरिया जीव २४ दण्डक में रह कर सात सात ( होवे तो हाँ और न होवे तो नहीं ) पुद्गल परावर्त किये एवं  $२४ \div ७ = १६ =$  हुवे । एवं २४ दण्डक का जीव २४ दण्डक में रह कर सात सात पुद्गल परावर्त करे । अतः  $१६ = २४ = ४०$  ३२ प्रश्न पुद्गल परावर्त के होते हैं ।

बहु वचनसे—सर्व जीवों ने नेरिये पने औदारिक पुद्गल परावर्त किये नहीं, करेगा नहीं, वैक्रिय पुद्गल परावर्त व वन्व श्वासोश्वास पुद्गल परावर्त किये और करेंगे इसी प्रकार असुर कुमार पने पृथ्वी पने यावत् वैमानिक

पने, जो जो घट्टे वे चे ( पृष्ठल परावर्त ) किये व करों एवं २४ दण्डक में बहुत से जीवों ने पृष्ठल परावर्त सात सात किये पूर्व अनुसार इसके भी ४०३२ प्रश्न होते हैं ।

२ किस किस दण्डक में पृष्ठल परावर्त किये- सर्व जीवों ने पांच पंचेन्द्रिय, तीन विकलेन्द्रिय, तिर्यच पंचेन्द्रिय व मनुष्य इन दश दण्डक में औदारिक पृष्ठल परावर्त अनन्त अनन्त बार किये १ नेरिये १० मयनपति १२ वायु काय, १३ मंजू तिर्यच पंचेन्द्रिय पर्याप्त, १४ मंजू मनुष्य पर्याप्त, १५ वायु अन्तर, १६ ज्योतिषी १७ वैमानिक । इन १७ दण्डक में सर्व जीवों ने वैक्रिय पृष्ठल परावर्त अनन्त बार किये । २४ दण्डक में वैजय पृष्ठल परावर्त, कार्मण पृष्ठल परावर्त सर्व जीवों ने अनन्त अनन्त बार किये १४ नेरिया व देवता का दण्डक, १५ मंजू तिर्यच पंचेन्द्रिय, १६ मंजू मनुष्य । एवं १६ दण्डक में सर्व जीवों ने मय पृष्ठल परावर्त अनन्त अनन्त बार किये ।

पांच पंचेन्द्रिय को छादकर १८ दण्डक में सर्व जीवों ने अचन पृष्ठल परावर्त अनन्त किये एवं २३४ प्रश्न होते हैं तथा ही स्व नक म = १०० प्रश्न होते हैं ।

इति अथ नक द्वारा ॥

१ दण्डक द्वारा अनन्त अनन्त बार अनन्त अनन्त बार  
 २ दण्डक द्वारा अनन्त अनन्त बार अनन्त अनन्त बार  
 ३ दण्डक द्वारा अनन्त अनन्त बार अनन्त अनन्त बार



जाने बाद होता है । सात पुद्गल परावर्त में अनन्त अनन्त काल चक्र व्यतीत हो जाते हैं ।

॥ इति काल द्वार ॥

६ काल की थोपमाः—काल समझाने के लिये एक दृष्टान्त दिया जाता है । परमाणु यह सूक्ष्म से सूक्ष्म रज कण, यह अतीन्द्रिय ( इन्द्रिय से अगम्य ) होता है कि जिसका भाग व हिस्सा किसी भी शस्त्र से किंवा किसी भी प्रकार से हो सक्ता नहीं अत्यन्त वारीक सूक्ष्म से सूक्ष्म रज कण को परमाणु कहते हैं । इस प्रकार के अनन्त सूक्ष्म परमाणु से एक व्यवहार परमाणु होता है । २ अनन्त व्यवहार परमाणु से एक उष्ण स्निग्ध परमाणु होता है । ३ अनन्त उष्ण स्निग्ध परमाणु से एक शीत स्निग्ध परमाणु होता है । ४ आठ शीत स्निग्ध परमाणु से एक ऊर्ध्व रेणु होता है । ५ आठ ऊर्ध्व रेणु से एक त्रस रेणु । ६ आठ त्रस रेणु से एक रथरेणु । ७ आठ रथ रेणु से देव-उत्तर कुरु के मनुष्यों का एक बालाग्र । हरि-रम्यक वर्ष के मनुष्यों का एक बालाग्र ८ इन आठ बालाग्र से हेमवय हिरण्य वय मनुष्यों का एक बालाग्र ९ इन आठ बालाग्र से पूर्व विदेह व पश्चिम विदेह मनुष्यों का एक बालाग्र १० इन बालाग्र से भरत ऐरावत के मनुष्यों का एक बालाग्र ११ इन बालाग्र से भरत ऐरावत के मनुष्यों का एक बालाग्र १२ इन आठ बालाग्र से एक लीख १३ आठ लीख की एव जे. १४ आठ ज का एक

अर्ध जब १५ आठ अर्ध जब का एक उत्सेध अङ्गुल १  
 छः उत्सेध अङ्गुलों का एक पैर का पहोल पना ( चौड़ाई  
 १७ दो पैर के पहोल पने का एक वेंत १८ दो वेंत ए  
 हाथ दो हाथ एक कुचि १९ दो कुचि एक धनुष्य र  
 दो हजार धनुष्य का एक गाउ ( कोस ) २१ चार गा  
 का एक योजन । कल्पना करो कि ऐसा एक योजन अ  
 लम्बा, चौड़ा, व गहरा कुवा हो उसमें देव-उत्तर इ  
 मनुष्यों के बाल--एक २ बाल के असंख्य खण्ड करे--बाल  
 के इन असंख्य खण्डों से तल से लगाकर ऊपर तक  
 टूस २ कर वो कुवा भरा जावे कि जिसके ऊपर से, बर  
 वर्षों का लश्कर चला जावे परन्तु एक बाल नमे नहीं,  
 नदी का प्रवाह ( गङ्गा और सिन्ध नदी का ) उस पर  
 बह कर चला जावे परन्तु अन्दर पानी भिदा सके नहीं,  
 अग्नि भी यदि लग जावे तो वो अन्दर प्रवेश कर सके  
 नहीं । ऐसे कुवे के अन्दर से, सो सो वर्ष X के बाद  
 एक बाल--खण्ड निकाले, एवं सो सो वर्ष के बाद एक २  
 खण्ड निकालने से जब कुवा खाली हो जावे उतने समय  
 को शःस्र कार एक पन्योपम कहते हैं ऐसे दश कोड़ा

X अमल्य समय की एक आवालिखा, मर्यात आवालिखा का एक  
 भास, मर्यात समय का एक निथ म दो मिलकर एक प्राण मात प्राण  
 का एक मने क ( अल्प समय ), मात मने क का एक लव ( दो काष्ठ का  
 माप ) ३३ लव का एक मुहूर्त, तीस मुहूर्त एक अर्ध रात्रि १४ अर्ध रात्रि  
 १५ पक्ष, २१ पक्ष एक म ह चारह माह एक वर्ष ।

काह पञ्च का एक मागरे दाना है । २० काहा काह  
मागरे का एक चानु एक दाना है ।

॥ इति यत्सोपमा द्वार ॥

७ फाल अल्प बहुत्व द्वारः—१ अनन्त काल  
अथ जीव तत्र एक कामिण्य पुद्गल परावर्ष होये । २  
अनन्त कामिण्य पुद्गल परावर्ष जीवे तत्र तदन पुद्गल  
परावर्ष होये । ३ अनन्त तन्त्र पुद्गल परावर्ष जीवे तत्र  
एक औदारिक पुद्गल परावर्ष है । ४ अनन्त औ-  
पु० परा० जीवे तत्र एक धासी धाम पुद्गल परावर्ष होये  
५ अनन्त धा० पु० परा० जीवे तत्र एक मन पुद्गल  
परा० होये । ६ अनन्त मन पु० परा० जीवे तत्र एक  
वचन पु० परा० होये । ७ अनन्त वचन पु० परा० जीवे  
तत्र एक रिक्रिय पु० परा० होये ।

॥ इति अल्प बहुत्व द्वार ॥

८ पट्टल मध्य पट्टल परावर्ष द्वारः—१ एक  
कामिण्य पुद्गल परावर्ष में अनन्त काल अथ जीवे । २  
एक तदन पुद्गल परा० में अनन्त कामिण्य प- परा० जीवे  
३ एक औदारिक पु० परा० में अनन्त तन्त्र प- परा० जीवे  
४ एक धासी धाम प- परा० में अनन्त औदारिक प-  
परा० जीवे । ५ एक मन प- परा० में अनन्त धासा प- परा०  
जीवे । ६ एक वचन पु- परा० में अनन्त मन पु- परा० जीवे

७ एक वैक्रिय पु० परा० में अनन्त वचन पु० परा० ज्ञान

॥ इति पुद्गल मध्य पुद्गल परावर्त द्वार ॥

६ पुद्गल परावर्त क्रिये उनका अरूप बहुत्वः—  
 १ सर्व जीवों ने सर्व से अल्प वैक्रिय पु० परा० क्रिये २ इस  
 में वचन पु० परा० अनन्त गुणे अधिक क्रिये ३ इससे मन  
 पु० परा० अनन्त गुणे अधिक क्रिये ४ इससे आसो० पु०  
 परा० अनन्त गुणे अधिक क्रिये ५ इससे औदारिक पु०  
 परा० अनन्त गुणे अधिक क्रिये ६ इससे वैजस्य पु० परा०  
 अनन्त गुणे अधिक क्रिये ७ इससे कार्मण पु० परा०  
 अनन्त गुणे अधिक क्रिये ।

॥ इति पुद्गल करण अल्प बहुत्व ॥

॥ इति पुद्गल परावर्त सम्पूर्ण ॥



# जीवों की मार्गणा का ५६३ प्रश्न

किस २ स्थान पर मिलते हैं

अशुद्ध	उसकी मार्गणा के प्रश्न	१४	१४	१४	१४	१४	१४
		१४	१४	१४	१४	१४	१४

१ अशुद्ध में अशुद्धी में

## सूचना.

जीवा की मार्गणा के कितनेक बोलों में अशुद्धिएं रह गई हैं अतएव ज्ञानाम्वासियों को संशोधन करके सीखना चाहिये ।

२	दो यांग वाले त्रिध्वमं	०	२	०	०
६	उर्ध्व लोक नो गर्भज				
	तत्रो लेश्या में	०	३	०	६
१०	एकान्त मन्वक दृष्टि में	०	०	०	१०
११	वचन योगी वचु इन्द्रिय				
	त्रिध्वमं	०	११	०	०
१२	अधो लोक के गर्भज में	०	१०	२	०
१३	वचन योगी त्रिध्वमं	०	१३	०	०



३१ अधोलोक पुरुष वेद भाषक में	०	५	१	२५
३२ पद्म लेशी मिथ्र दृष्टि में	०	५	१५	१२
३३ पद्म लेशी वचन योगी में	०	५	१५	१३
३४ उर्ध्वलोक में एकांत मिथ्या. में	०	२८	०	६
३५ अवधिदर्शन औदारिक शरीर में	०	५	३०	०
३६ उर्ध्व लोक एकांत नपुंसक में	०	३६	०	०
३७ अधो लोक पंचेन्द्रिय नपुंसक में	१४	२०	३	०
३८ अधो लोक मन योगी में	७	५	१	२५
३९ अधो लोक एकांत असंज्ञी में	०	३८	१	०
४० औदारिक शुक्र लेशी में	०	१०	३०	०
४१ शुक्ललेशी सम्य. दृष्टि अभा. में	०	५	१५	२१
४२ शुक्र लेशी वचन योगी में	०	५	१५	२२
४३ उर्ध्व लोक मन योगी में	०	५	०	३८
४४ शुक्र लेशी देवताओं में	०	०	०	४४
४५ कर्म भूमि मनुष्यों में	०	०	४५	०
४६ अधो लोक के वचन योगी में	७	१३	१	२५
४७ शुक्र लेशी उर्ध्वलोक में अव. ज्ञान	०	५	०	४२
४८ अधो लोक में त्रय अम पद	७	१३	३	२५
४९ उर्ध्वलोक शुक्र लेशी अव. दर्शन	०	५	०	४४
५० ज्योतिर्षा की आगति में	०	५	०	०
५१ अधो लोक में औदारिक शरीर में	०	४८	३	०
५२ उर्ध्वलोक शुक्र लेशी सम्य. दृष्टि	०	१०	०	४२

५३ अधोलोक के एकान्त नपुं. वेद में	१४	३८	१	०
५४ उर्ध्वलोक शुक्ल लेशों में	०	१०	०	४४
५५ अधोलोक वादर नपुंसक में	१४	३८	३	०
५६ तिर्यक् लोक मिथ्र दृष्टि में	०	५	१५	३६
५७ अधो लोक पर्याप्त में	७	२४	१	२५
५८ अधोलोक अपर्याप्त में	७	२४	२	२५
५९ कृष्ण लेशी मिथ्र दृष्टि में	३	५	१५	३६
६० अकर्म भूमि संज्ञी में	०	०	६०	०
६१ उर्ध्व लोक अनाहारिक में	०	२३	०	३८
६२ अधोलोक एकान्त मिथ्यात्वी में	१	३०	१	३०
६३ उर्ध्व लोक तथा अधोलोक देव ( मरनेवालों में	०	०	०	६३
६४ पद्म लेशों सम्यक् दृष्टि में	०	१०	३०	२४
६५ अधो लोक तेजो लेशी में	०	१३	२	५०
६६ पद्म लेशी में	०	१०	३०	२६
६७ मिथ्र दृष्टि देवता में	०	०	०	६७
६८ तेजो लेशी मिथ्र दृष्टि में	०	५	१५	४८
६९ उर्ध्व लोक वादर शाश्वत में	०	३१	०	३८
७० अधो लोक में अभाषक में	७	३५	३	२५
७१ अधो लोक अवधि दर्शन में	०४	५	२	५०
७२ तिर्यक् लोक के देवताओं में	०	०	०	७२



७३ अधो लोक के वादर मरने वालों में	७	३८	३	२५
७४ मिथ दृष्टि नो गर्भज में	७	०	०	६७
७५ उर्ध्व लोक में अवधि ज्ञान में	०	५	०	७०
७६ उर्ध्व लोक में देवताओं में	०	०	०	७६
७७ अधो लोक में चक्षु इन्द्रिय नो गर्भज में	१४	१२	१	५०
७८ उर्ध्व लोक में नो गर्भज सम्यक् दृष्टि में	०	८	०	७०
७९ उर्ध्व लोक में शाश्वत में	०	४१	०	३८
८० धातकी खरड में व्रत में	०	२६	५४	०
८१ सम्यक् दृष्टि देवताओं के पर्याप्त में	०	०	०	८१
८२ शुक्ल लेशी सम्यक् दृष्टि में	०	१०	३०	४२
८३ अधो लोक में मरने वालों में	७	४८	३	२५
८४ शुक्ल लेशी जीवों में	०	१०	३०	४४
८५ अधो लोक कृष्ण लेशी व्रत में	६	२६	३	५०
८६ उर्ध्व लोक पुरुष वेद में	०	१०	०	७६
८७ उर्ध्व लोक घ्राणन्द्रिय सम्यक् दृष्टि में	०	१७	०	७०
८८ उर्ध्व लोक सम्यक् दृष्टि में	०	१८	०	७०
८९ अधो लोक चक्षु इन्द्रिय में	१४	२२	३	५०



१३६ औदारिक शरीर नो गर्भज में	०	३८	१०१	०
१४० कृष्ण लेशी अमर में	३	०	८६	५१
१४१ अविधि दर्शन मरने वालों में	७	५	३०	६६
१४२ पंचेन्द्रिय सम्यग् दृष्टि मरने वालों में	६	१०	४५	८१
१४३ एकांत नपुंसक बादर में	१४	२८	१०१	०
१४४ नो गर्भज शाश्वत में	७	३८	०	६६
१४५ अपर्याप्त सम्यग् दृष्टि में	६	१३	४५	८१
१४६ प्रस नो गर्भज एकांत मि. में	१	=	१०१	३६
१४७ लवण समुद्र के अभाषक में	-	३५	११२	-
१४८ स्त्री वेद वैक्रिय शरीर में	-	५	१५	१२८
१४९ संज्ञी एकांत मिथ्यात्वी में	१	-	११२	३६
१५० तिर्यक लोक में वचन योगी में	-	१३	१०१	३६
१५१ तिर्यक लोक पंचेन्द्रिय नपु. में	-	२०	१३१	-
१५२ तिर्यक लोक पंचेन्द्रिय शाश्वत में	-	१५	१०१	३६
१५३ एकांत नपुंसक बादर में	१४	३८	१०१	-
१५४ तिर्यक लोक वचन योगी में	-	१३	१०१	३६
१५५ तिर्यक लोक पंचेन्द्रिय नपु. में	-	२०	१३१	-
१५६ तिर्यक लोक शाश्वत में	-	१५	१०१	३६
१५७ एकांत नपुंसक बादर में	१४	३८	१०१	-
१५८ तिर्यक लोक वचन योगी में	-	१३	१०१	३६
१५९ तिर्यक लोक पंचेन्द्रिय नपु. में	-	२०	१३१	-
१६० तिर्यक लोक शाश्वत में	-	१५	१०१	३६

१२२ कृष्ण लेशो वैक्रिय				
शरीर स्त्री वेद में	०	५	१५	१०२
१२३ तीन शौदारिक शाश्वत में	०	३७	८६	०
१२४ लवण समुद्र में प्राणन्द्रिय				
शाश्वत में	०	१२	११२	०
१२५ लवण समुद्र में तेजो लेशी में	०	१३	११२	०
१२६ मत्तै वाले गर्भज जीवों में	०	१०	११६	०
१२७ वैक्रिय शरीर मत्तै वालों में	७	६	१५	६६
१२८ देवियों में	०	०	०	१२८
१२९ एकान्त भ्रमंजो वादर में	०	२८	१०१	०
१३० क्षण समुद्र यम मिथ				
योगी में	०	१८	११२	०
१३१ मनुष्य नपुंसक वेदमें	०	०	१३१	०
१३२ शाश्वत मिथ्र योगी में	७	२१	१५	८५
१३३ मन योगी मरुतु दष्टि				
मनस्त्र्यात भववालों में	७	५	४५	७६
१३४ वादर शौदारिक शाश्वत में	०	३३	१०१	०
१३५ प्रवृत्त शरीरि षट्कान्त				
यमत्री म		५	१	१
१३६ तीन भ्रमंजो वादर शरीरि म		१	१	१
१३७ क्रिया वादर यमशाश्वत म	६	१	५१	८१
योगी मरुतु दष्टि म	१	१	१	८१



१२२ कृष्ण लेशो वैक्रिय				
शरीर स्त्री वेद में	०	५	१५	१०२
१२३ तीन औदारिक शाश्वत में	०	३७	८६	०
१२४ लवण समुद्र में प्राणन्द्रिय				
शाश्वत में	०	१२	११२	०
१२५ लवण समुद्र में तेजो लेशी में	०	१३	११२	०
१२६ मरने वाले गर्भवत्त जीवों में	०	१०	११६	०
१२७ वैक्रिय शरीर मरने वालों में	७	६	१५	८३
१२८ देवियों में	०	०	०	१२८
१२९ एकान्त असंज्ञी चादर में	०	२८	१०१	०
१३० लवण समुद्र त्रस मिथ				
योगी में	०	१८	११२	०
१३१ भनुष्य नपुंसक वेदमें	०	०	१३१	०
१३२ शाश्वत मिथ योगी में	७	२१	१५	८५
१३३ मन योगी सम्पत् दृष्टि				
असंख्यात भववालों में	७	५	४५	७६
१३४ चादर औदारिक शाश्वत में	०	३३	१०१	०
१३५ प्रत्येक शरीरी एकान्त				
असंज्ञी में	०	३४	१०१	०
१३६ तीन लेश्या औदारिक शरीरमें	०	३५	१०१	०
१३७ क्रिया वादी अशाश्वत में	६	५	४५	८१
१३८ मन योगी सम्पत् दृष्टि में	७	५	४५	८१

१३८ औदारिक शरीर नो गर्भज में	०	३८	१०१	०
१४० कृष्ण लेशी अमर में	३	०	८६	५१
१४१ अवधि दर्शन मरने वालों में	७	५	३०	६६
१४२ पंचेन्द्रिय सम्यग् दृष्टि मरने वालों में	६	१०	४५	८१
१४३ एकांत नपुंसक वादर में	१४	२८	१०१	०
१४४ नो गर्भज शाश्वत में	७	३८	०	६६
१४५ अपर्याप्त सम्यग् दृष्टि में	६	१३	४५	८१
१४६ व्रत नो गर्भज एकांत मि. में	१	८	१०१	३६
१४७ लवण समुद्र के अभापक में	—	३५	११२	—
१४८ स्त्री वेद वैक्रिय शरीर में	—	५	१५	१२८
१४९ संज्ञी एकांत मिथ्यात्वी में	१	—	११२	३६
१५० तिर्यक् लोक में वचन योगी में	—	१३	१०१	३६
१५१ तिर्यक् लोक पंचेन्द्रिय नपुं. में	—	२०	१३१	—
१५२ तिर्यक् लोक पंचेन्द्रिय शाश्वत में	—	१५	१०१	३६
१५३ एकांत नपुंसक वेद में	१४	३८	१०१	—
१५४ तेजो लेशी वचन योगी सम्यक् दृष्टि में	—	५	१०१	४८
१५५ नियक लोक में प्रत्येक— शर्गी वादर पर्याप्त में	—	१८	१०१	३६
१५६ तिर्यक् लोक वादर पर्याप्त में	—	१६	१०१	३६

१८४ मिथ्र योगी देवता वैक्रिय			
शरीर में	-	-	१८४
१८५ कृष्ण लेशी सम्यग् दृष्टि में	५	१८	६० ७२
१८६ नील लेशी सम्यग् दृष्टि में	६	१८	६० ७२
१८७ अमापक मनुष्य एक			
संस्थानी में	-	-	१८७
१८८ विभंग ज्ञानी देवताओं में	-	-	१८८
१८९ तिर्यक् लोक नो गर्भज व्रसमें	-	१६	१०१ ७२
१९० लवण समुद्र चक्षु इन्द्रिय में	-	२२	१६८
१९१ तिर्यक् लोक कृष्ण लेशी			
नो गर्भज में	-	३८	१०१ ५२
१९२ लवण समुद्र प्राणेंद्रिय में	-	२४	१६८
१९३ समुच्चय नष्टक वेद में	१४	७८	१३१ ५२
१९४ लवण समुद्र व्रस जीवों में	-	२६	१६८
१९५ सम्यग् दृष्टि वैक्रिय शरीर में	१३	५	१५ १६२
१९६ तेजो लेशी सम्यग् दृष्टि में	-	१०	६० ६६
१९७ एक वेदी चक्षु इन्द्रिय में	१४	१२	१०१ ७०
१९८ एकांत मिथ्यास्वी अमापक में	१	२२	१५७ १८
१९९ नो गर्भज वैक्रिय मिथ्र			
योगी में	१४	१	- १८४
२०० वचन योगी तीन शरीर में	७	८	८६ ६६
२०१ एक वेदी व्रस में	१४	१६	१०१ ७०



२०२ नां गर्भव विमंग ज्ञानी में	१४	-	-	१००
२०३ नो गर्भव वैक्रिय शरीरी निध्यात्वी में	१४	१	-	१००
२०४ एकान्त निध्यात्व दृष्टि तीन शरीर में	-	२८	१५७	६०
२०५ एकान्त निध्यात्व दृष्टि मरने वालों में	-	३०	१५७	१००
२०६ तदय समुद्र वादर में	-	३०	१६०	-
२०७ मनयोगी निध्यात्वी में	७	५	१०१	६४
२०८ अनेक भववाले अवाधि ज्ञान में	१३	५	३०	१६०
२०९ समुच्चय संख्यात चल के ब्रह्म मरने वालों में	१	२६	१३१	५१
२१० एकान्त संज्ञी निध्र योगी में	१३	५	४५	१४७
२११ विरिक्त लोक नो गर्भव में	-	३०	१०१	७२
२१२ मनयोगी जीवों में	७	५	१०१	६८
२१३ एकान्त निध्यात्वी मनुष्य में	-	-	२१३	-
२१४ निध्यात्वी वैक्रिय निध्र योगी में	१४	६	१५	१७८
२१५ औदागिक तेजां तेरी में	-	१३	२०२	-
२१६ तदय समुद्र में	-	४०	१६०	-
२१७ ब्रह्म योगी पचेन्द्रिय में	७	१०	१०१	६६
२१८ ब्रह्म वैक्रिय निध्र में	१४	५	१५	१००

२१६ वैक्रिय मिथ्र में	१४	६	१५	१८४
२२० वचन योगी में	७	१३	१०१	६६
२२१ अचरम बादर पर्याप्त में	७	१६	१०१	६४
२२२ पंचेन्द्रिय शाश्वत में	७	१५	१०१	६६
२२३ वैक्रिय मिथ्यात्वी में	१४	६	१५	१८८
२२४ चक्षु इन्द्रिय शाश्वत में	७	१७	१०१	६६
२२५ प्रत्येक शरीर बादर पर्याप्त में	७	२८	१०१	६६
२२६ औदारिक शरीरी अपर्याप्त में	—	२४	२०२	—
२२७ नो गर्भज बादर अभाषक में	७	२०	१०१	६६
२२८ व्रस शाश्वत में	७	२१	१०१	६६
२२९ प्रत्येक शरीरी पर्याप्त में	७	२२	१०१	६६
२३० व्रस औदारिक शरीरी अभाषक में	—	१३	२१७	—
२३१ पर्याप्त जीवों में	७	२४	१०१	६६
२३२ पंचेन्द्रिय औदारिक मिथ्र योगी में	—	१५	२१७	—
२३३ वैक्रिय शरीर में	१४	६	१५	१६८
२३४ औदारिक मिथ्र योगी प्राणेन्द्रिय में	—	१७	२१७	—
२३५ औदारिक मिथ्र योगी व्रम में	—	१८	२१७	—
२३६ मनुष्य की आगति नो गर्भज में	६	३०	१०१	६६
२३७ औदारिक शरीरी पंचेन्द्रिय मग्ने वानों में	—	२०	२१७	—

२३= प्रत्येक शरीरी वादर				
शाश्वत में	७	३१	१०१	६८
२३६ समष्टि मिश्र योगी में	१३	१८	६०	१४८
२४० शाश्वत वादर में	७	३३	१०१	६८
२४१ प्रत्येक शरीरी नोर्गर्मत्र				
नरने वालों में	७	३४	१०१	६८
२४२ वादर औदारिक मिश्र योगी में -	२५	२१७		-
२४३ औदारिक एकान्त				
मिथ्यात्वी में	-	३०	२१३	-
२४४ तीन शरीर नो गर्मत्र नरने				
वालों में	७	३७	१०१	६८
२४५ संमूर्द्धिम असंज्ञी व्रत में	१	२१	१७२	५१
२४६ प्रत्येक शरीरी शाश्वत में	७	३६	१०१	६८
२४७ अवधि दर्शन में	१४	५	३०	१८८
२४८ तिर्यक पंचेन्द्रिय अपर्याप्त में -	१०	२०२	३६	
२४९ तिर्यक चतुश्चन्द्रिय				
अपर्याप्त में	-	११	२०२	३६
२५० नव्य सिद्धि शाश्वत में	७	४३	१०१	६८
२५१ तिर्यक व्रत अपर्याप्त में	-	१३	२०२	३६
२५२ औदारिक अनापक में	-	३५	२१७	-
२५३ मिश्र योगी नरने वालों में	७	३०	१३१	८५
२५४ र्क्ष वेद मिश्र योगी में	-	१०	११६	१२८

२५५ पंचेन्द्रिय एकान्त मिथ्यात्वी में	१	५	२१३	३६
२५६ चक्षु इन्द्रिय एकान्त मिथ्यात्वी में	१	६	२१३	३६
२५७ घ्राणेन्द्रिय एकान्त मिथ्यात्वी	१	७	२१३	३६
२५८ दस एकान्त मिथ्यात्वी में	१	८	२१३	३६
२५९ धर्म देव की आगति के घ्राणेन्द्रिय में	५	२४	१३१	६६
२६० पंचेन्द्रिय तीन शरीरी सम्यक् दृष्टि में	१३	१०	७५	१६२
२६१ कृष्ण लेशी अशाश्वत में	३	५	२०२	५१
२६२ पुरुष वेदी सम्यक् दृष्टि में	—	१०	६०	१६२
२६३ प्रत्येक शरीरी समुच्चय असंज्ञी में	१	३६	१७२	५१
२६४ त्रिर्यक् लोक कृष्ण लेशी स्त्री-वेद में	—	१०	२०२	५२
२६५ औदारिक शरीर मरने वालों में	—	४८	२१७	—
२६६ पंचेन्द्रिय कृष्ण लेशी अनहारी में	३	१०	२०२	५१
२६७ चक्षु इन्द्रिय कृष्ण लेशी अनाहारी में	३	११	२०२	५१

२६८ एक दृष्टि प्रथम काय में	१	=	२१३	४६
२६९ तिर्यक् कृष्ण लेशी प्रस मरने वालों में	—	२६	२१७	२६
२७० वादर एकान्त मिध्यात्वी में	१	२०	२१३	३६
२७१ मनुष्य की आगति के मिध्यात्वी में	६	४०	१३१	६४०
२७२ मनुष्य की आगति के प्रत्येक शरीरी में	६	३६	१३१	६६
२७३ नील लेशी एकांत मिध्यात्वी में	०	३०	२१३	३०
२७४ कृष्ण लेशी मिध्यात्वी में	१	३०	२१३	३०
२७५ क्रिया वादी समोत्तरण में	१३	१०	६०	१६२
२७६ मनुष्य की आगति में	६	४०	१३१	६६
२७७ धार लेरवा वालों में	०	३	१७२	१०२
२७८ तिर्यक् लोका वादर अनापक में	०	२५	२१७	३७
२७९ अष्ट इन्द्रिय सम्पक अनेक भय वालों में	१३	१६	६०	१६०
२८० अष्ट इन्द्रिय सम्पक दृष्टि में	१३	१५	६०	१६२
२८१ अष्ट इन्द्रिय दृष्टि में	१३	१६	६०	१६२
२८२ अष्ट इन्द्रिय दृष्टि में	१३	१७	६०	१६२
२८३ अष्ट इन्द्रिय दृष्टि में	१३	१८	६०	१६२
२८४ अष्ट इन्द्रिय दृष्टि में	१३	१९	६०	१६२
२८५ अष्ट इन्द्रिय दृष्टि में	१३	२०	६०	१६२
२८६ अष्ट इन्द्रिय दृष्टि में	१३	२१	६०	१६२
२८७ अष्ट इन्द्रिय दृष्टि में	१३	२२	६०	१६२
२८८ अष्ट इन्द्रिय दृष्टि में	१३	२३	६०	१६२
२८९ अष्ट इन्द्रिय दृष्टि में	१३	२४	६०	१६२
२९० अष्ट इन्द्रिय दृष्टि में	१३	२५	६०	१६२

२८६	घ्राणेन्द्रिय एक संस्थान श्रीदारिक में	०	१३	२७३	०
२८७	तिर्यक् तेजो लेशी में	०	१३	२०२	७२
२८८	तीन शरीरी मनुष्य में	०	०	२८८	०
२८९	ब्रह्म एक संस्थान श्रीदारिक में	०	१६	२७३	०
२९०	एक दृष्टि वाले जीवों में	१	३०	२१३	४३
२९१	तिर्यक् लोक कृष्ण लेशी मरने वालों में	०	४८	२१७	२६
२९२	जपन्य भ्रन्तर्भुहर्त उत्कृष्ट सागर १ संठाय मरने वालों में	२	३८	१८७	६५
२९३	चक्षु इंद्रिय कृष्ण लेशी मरने वालों में	३	२२	२१७	५१
२९४	नो गर्भत्र की आगति के कृष्ण लेशी ब्रह्म में	०	२६	२१७	५१
२९५	घ्राणेन्द्रिय कृष्ण लेशी मरने वालों में	३	२४	२१७	५१
२९६	एकांत संज्ञी में	१३	५	१३१	१४७
२९७	ब्रह्म कृष्ण लेशी मरने वालों में	३	२६	२१७	५१
२९८	पंचेन्द्रिय पर्याप्त एक संस्थानी में	७	५	१८७	६६
२९९	चक्षु इंद्रिय पर्याप्त एक संस्था. में	७	६	१८७	६६
३००	स्त्री वेद पर्याप्त एक संस्थानी में	०	०	१७२	१२८
३०१	एक संस्थानी श्रीदारिक वादर में-	२८	२७३	-	-

३०२	घ्राणेन्द्रिय एक संस्थानी अचरम मरने वालों में	७	१४	१=७	६४
३०३	मनुष्य में	-	-	३०३	-
३०४	नो गर्भज पंचेन्द्रिय मिश्र योगी में	१४	५	१०१	१=४
३०५	सम्बद्ध आगति कृष्ण लेशी चादर में	३	३४	२१७	५१
३०६	तियरू घ्राणेन्द्रिय मिश्र योगी में	१७	२१७	७२	
३०७	तियरू व्रत मिश्र योगी में	-	१=	२१७	७२
३०८	अशाश्वत मिथ्यात्वी में	७	५	२०२	६४
३०९	सम्बद्ध आगति एक संस्थानी व्रत में	७	१६	१=७	६६
३१०	औदारिक तीन शरीरी एक संस्थानी में	-	३७	२७३	-
३११	औदारिक एक संस्थानी में	-	३=	२७३	-
३१२	नो गर्भज की आगति कृष्ण तीन शरीरी	-	७३	२१७	५२
३१३	अशाश्वत में	७	५	२०२	६६
३१४	कृष्ण लेशी त्री वंद में	-	१०	२०२	१०२
३१५	प्र० तीन शरीरी कृष्ण. मरने वालों में	३	४४	२१७	५१
३१६	व्रत अनाहारी अचरम में	६	१३	२००	६४

३१७	नो गर्भज प्राणो, मिथ्या, में	१४	१४	१०१	१८८
३१८	श्रोत्रेन्द्रिय अपर्याप्त में	७	१०	२०२	६६
३१९	कृष्ण लेशी मरने वालों में	३	४८	२१७	५१
३२०	तीन शरीरी स्त्री वेद में	—	५	१८७	१२८
३२१	व्रत अपर्याप्त में	७	१३	२०२	६६
३२२	बादर अनाहारी अचरम में	७	१६	२०२	६४
३२३	नो गर्भज पंचेन्द्रिय में	१४	१०	१०१	१८८
३२४	तीन शरीरी व्रत मिथ्या, में	७	२१	२०२	६४
३२५	शौदारिक चक्षु इन्द्रिय में	—	२२	३०३	—
३२६	मिथ्यात्वी एक संस्थानी मरने वालों में	७	३८	१८७	६४
३२७	नो गर्भज प्राणेन्द्रिय में	१४	१४	१०१	१८८
३२८	बादर मभाएक अचरम में	७	२५	२०२	६४
३२९	शौदारिक व्रत में	—	२६	३०३	—
३३०	शौदारिक एकान्त मनधारणी देह	—	४२	२८८	—
३३१	नो गर्भज व दार मिथ्या, में	१४	२८	१०१	१८८
३३२	व्रत एकान्त मंड्या काल की स्थिति वाले में	७	२४	२०२	६६
३३३	चक्षु इन्द्रिय एक संस्थानी	७	२०	२०७	६६
३३४	निर्यक्त अघो लोक की स्त्री में	—	१०	२०२	१२२
३३५	व्रत इन्द्रिय एक संस्थानी स्थिति वाले में	७	२०	२०७	६६





३५४ मिथ्या० एकान्त संस्था०			
स्थिति में	७ ४३	२०७	६४
३५५ तिर्यक् लोक पंचेन्द्रिय एक			
संस्थानी	- १०	२७३	७१
३५६ वादर मिथ्या० मरने वालों में	७ ३८	२१७	६४
३५७ सम्य० आगति के वादर में	७ ३४	२१७	६६
३५८ अभाषक जीवों में	७ ३५	२१७	६६
३५९ तिर्यक् प्राणेंद्रिय एक			
संस्थानी में	- १४	२७३	७२
३६० " " " " " "	० १०	२०२	१४८
३६१ ऊर्ध्व, तिर्यक्, पुरुष वेद में	० १६	२७३	७२
३६२ प्र. शरीरी मिथ्या, मरने			
वालों में	७ ४४	२१७	६४
३६३ सम्य, आगति में	७ ४०	२१७	६६
३६४ नो गर्भज की गति के			
वादर तीन शरीर में	२ ३२	२२८	१०२
३६५ ज. अं. उ. २६ सागर की			
स्थिति के मरने वालों में	७ ४८	२१७	६३
३६६ मिथ्या, मरने वालों में	७ ४८	२१७	६४
३६७ प्र. शरीरी मरने वालों में	७ ४४	२१७	६६
३६८ पुरुष एक संस्था, अनेक			
भववालों में	- -	१७२	१६६

३६६ अधी, तिर्य, चक्षु, मिथ्र योगीने	१४	१६	२१७	१२२
३७० कृष्ण लेशी संख्या, स्थिति				
वालों में	३	४८	२१७	१०२
३७१ समुच्चय मरने वालों में	७	४८	२१७	६६
३७२ तिर्य, कृष्ण, तीन शरीरी				
बादर में	—	३२	२८८	५२
३७३ तिर्य, बादर एक संस्थानी में—	२८		२७३	७२
३७४ अ. ति. बादर कृष्ण				
एकान्त भव धारणी देह	३	३२	२८८	५१
३७५ तिर्य, पंचेन्द्रिय कृष्णलेशी में—	२०		३०३	५२
३७६ एक संस्थानी मिथ्र योगी				
पंचेन्द्रिय अनेरियों में	—	५	१८७	१८४
३७७ तिर्य, चक्षु, कृष्ण लेशी में	—	२२	३०३	५२
३७८ बुधपर की गति के पंचे.				
तीन शरीरी	४	१०	२०२	१६२
३७९ तिर्य, प्राणेन्द्रिय कृष्ण लेशी	—	२४	३०३	५२
३८० पुरुष तीन शरीरी अचरन में	—	५	१८७	१८८
३८१ तिर्य, वस कृष्ण लेशी में	—	२६	३०३	५२
३८२ " तीन शरीरी कृष्ण लेशी में	—	४२	२८८	५२
३८३ तिर्य, एक संस्थानी में	—	३८	२७३	७२
३८४ मर्त्या				
" " " " " " " " " "			१७२	११८
३८५ नागर्षज की गति के बादर में	२	३८	२७३	१०२

४१८ कृष्ण लेशी एक संस्थानी में	६ ३८	२७३	१०२
४१९ स्त्री गति कृष्ण, एक संस्थानी	४ ३८	२७३	१०२
४२० मिथ्र योगी बादर एकान्त असंयम में	१४ २०	२०२	१८४
४२१ स्त्री गति अपशस्त लेशी प्र. शरीर एक संस्था,	१२ ३४	२७३	१०२
४२२ स्त्री गति के संज्ञी में	१२ १०	२०२	१६८
४२३ समुच्चय संज्ञी में	१४ २३	२०२	१८४
४२४ प्र. शरीरी मिथ्र योगी एकान्त असंयम में	१४ १०	२०२	१६८
४२५ मिथ्र योगी एकान्त अपचक्र खण्डी में	१४ २५	२०२	१८४
४२६ कृष्ण, लेशीज्वा, प्र. तीन शरीरी में	६ ३०	२८८	१०२
४२७ अपशस्त लेशी एक संस्थानी	१४ ३८	२७३	१०२
४२८ कृष्ण लेशी बादर तीन शरीरी	६ ३२	२८८	१०२
४२९ " " " एकान्त असंयम में	६ ३३	२८८	१०२
४३० स्त्री गति के प्रस मिथ्र अनेक मव बाले	१२ १८	२१७	१८३
४३१ " " " मिथ्र्या, प्रस मिथ्र योगी संख्या मव बाले	१२ १८	२१७	१८४
	१४ १८	२१७	१८३

४३३	" "	१४ १८	२१७	१८४
४३४	कृ. प्र. तीन शरीरी मे	६ ३८	२८८	१०२
४३५	मिश्र योगी वा. मिथ्या.	१४ २५	२१७	१८६
४३६	वा. तीन शरीरी अप्रशस्त लेशी	१४ ३२	२८८	१०२
४३७	वा. एकान्त अपच. अप्र. शक्त लेशी	१४ ३३	२८८	१०२
४३८	कृष्ण. तीन शरीरी	६ ४२	२८८	१०२
४३९	" एकान्त अपच.	६ ४३	२८८	१०२
४४०	मिश्र योगी वादर	१४ २५	२१७	१८४
४४१	अघो. ति. के चतु. तीन शरीरी मे	१४ १७	२८८	१२२
४४२	प्र. तीन श. अप्रशस्त लेशी	१४ ३८	२८८	१०२
४४३	प्र. मिश्र योगी	१४ २८	२१७	१८४
४४४	प्र. एकान्त भव घा. देह अनेक भववाले	७ ३८	२८८	१११
४४५	अघो ति. तीन शरीरी त्रस मिश्रयोगी मे	१४ २१	२८८	१२२
४४६	अप्र. लेश्या तीन शरीरी	१४ ४२	२८८	१०२
४४७	एकान्त अभयम अप्र- शक्त लेशी	१४ ४३	२८८	१०२
४४८	भव घा. देह अनेक भववाले	७ ४०	२८८	१११

४४६ स्त्रीगति के एकान्त मव देह	६	४२	२८८	११३
४४७ मव सिद्धि एकांत मव. देह	७	४२	२८८	११३
४४९ ऊपर की गति कु० प्र० तीन शरीर	२	४४	३०३	१०२
४४२ भुज पर गति अधो० ति० प्र० तीन शरीर	४	३८	२८८	१२२
४४३ स्त्री० गति कु० प्र० शरीरी	४	४४	३०३	१०२
४४४ उर्ध्व ति० एकांत छद्म० पं० अनेक मव मे	०	२०	२८८	१४६
४४५ कुण्ड० प्र० शरीरी	६	४४	३०३	१०२
४४६ अधो. ति. तीन शरीरी वादर	१४	३२	२८८	१२२
४४७ अप्रशस्त लेशी वादर	१४	३८	३०३	१०२
४४८ उर्ध्व. ति. के एक संस्थानीमें	०	३८	२७१	१४८
४४९ " " एकांत छद्मस्थ चक्षु०	२२	२८	२८८	१४८
४६० " " " " घ्राण०	२४	२८	२८८	१४८
४६१ अधो. " के चक्षु	१४	२२	३०३	१२२
४६२ " " घ्राण०	१४	२४	३०३	१२२
४६३ " " वादर एकांत छ० मे	१४	३८	२८८	१२२
४६४ " " ब्रह्म	१४	२६	३०३	१२२
४६५ स्त्री गति के अधो० ति० तीन शरीरी	१२	४२	२८८	१२२
४६६ अधो ति० तीन शरीरी	१४	४२	२८८	१२२

४६७	अप्रशस्त लेश्या में	१४	४८	३०३	१०२
४६८	उर्ध्व० ति. तीन शरीरी वादर०	३२	२८८	२८८	१४८
४६९	" " एकांत असंयम "०	३३	१८८	१८८	१४८
४७०	अधो० " छद्म. स्त्री गति में	१२	४८	२८८	१२२
४७१	उर्ध्व० " पंचेन्द्रिय में	०	२०	३०३	१४८
४७२	अधो० ति० एकांत छद्मस्थ	१४	४८	२८८	१२२
४७३	उर्ध्व० ति० के चक्षु इंद्रियमें	०	२२	३०३	१४८
४७४	" " घ्राण "	०	२४	३०३	१४८
४७५	" " एकांत छद्मस्थवादर०	३८	२८८	२८८	१४८
४७६	" " तीन श. अ. भववाले०	४२	२८८	२८८	१४६
४७७	" " त्रस में	०	२६	३०३	१४८
४७८	" " तीन शरीरी	०	४२	२८८	१४८
४७९	" " एकांत असंयम	०	४३	२८८	१४८
४८०	" " एकान्त छद्म. प्र. शरीरी	-	४४	२८८	१४८
४८१	स्त्री गति के अधो. तिर्य.				
४८२	" " " " अनेक भव वालों में-	४८	२८८	२८८	१४६
४८३	अधो. तिर्य. प्र. शरीरी में	१४	४४	३०३	१२२
४८४	" " " " " " -	४८	२८८	२८८	१४८
	प्र. शरीरी में	१२	४४	३०३	१२२
४८५	" " " " प्र. " " " "	१२	४८	३०३	१०

४२६ भुज पर गति के तीन

शरीरी वादर ४ ३२ २०२ १६२

४२७ अधो. तिर्य. लोक में १४ ४० ३०३ १२२

४२८ खेचर " " " ६ ३२ २०२ १६२

४२९ उर्ध्व. तिर्य. वादर में - ३० ३०३ १४०

४३० स्थल चर " " " ८ ३२ २०२ १६२

४३१ खेचर गति पंचेन्द्रिय में ६ २० ३०३ १६२

४३२ उरपर " " " १० ३२ २०२ १६२

४३३ उर्ध्व. " प्र. शरीरी अनेक  
भव वालों में - ४४ ३०३ १४६

४३४ खेचर " प्र. " " ६ ३० २०२ १६२

४३५ " " " में - ४४ ३०३ १४०

४३६ भुज पर गति के तीन शरीरी में ४ ४२ २०२ १६२

४३७ खेचर " व्रत में ६ २६ ३०३ १६२

४३८ " " तीन शरीरी में ६ ४२ २०२ १६२

४३९ " " में - ४० ३०३ १४०

४४० स्थल चर " " ८ ४२ २०२ १६२

४४१ व्रत एक संस्थानी में १४ १६ २०३ १६०

४४२ उर पर गति तीन शरीरी में १० ४२ २०२ १६२

४४३ " " पंचेन्द्रिय में १४ २४ ३०३ १६२

४४४ खेचर " एकान्त व्यवस्था में ६ ४० २०२ १६२

४४५ तिर्य. " व्रत में १४ ०६ ३०३ १६२



५०६ संज्ञा वि. ,, तीन शरीरी में	१४	४२	२००	१६२
५०७ अन्तर्दीप के पर्याप्त के				
अलक्षित में	१४	४२	२००	१६२
५०८ अक्षर ,, एकान्त स्वरूप में	१०	४२	२००	१६२
५०९ स्थल चर ,, प्र. शरीरी				
वाक्ष में	=	३६	३०३	१६२
५१० विषय की गति के एकान्त				
संयोगी में	१२	४२	२००	१६२
५११ एक संस्वान प्र. शरीरी				
वाक्ष में	१४	२६	२०३	१६२
५१२ विषय " " " "	१४	४२	२००	१६२
५१३ एक संस्वान निष्पत्ती में	१४	३०	२०३	१६२
५१४ मध्य जीवों का स्थिति करने				
शले एकान्त द्वय चतु	१४	२२	२००	२००
५१५ विषय की गति के वाक्ष में	१२	३०	३०३	१६२
५१६ " " " " " "				
" " " " " "	१४	२४	२००	१६०
५१७ " " " " " "				
" " " " " "	१४	३०	३०३	१६२
५१८ " " " " " "				
" " " " " "	१४	३०	३०३	१६२
५१९ " " " " " "				
" " " " " "	१४	३०	३०३	१६२
५२० " " " " " "				
" " " " " "	१४	३०	३०३	१६२

५२०	पंचे० " " सकृपाय में	१४ २०	२००	१६०
५२१	चक्षु " " अंतयम में	१४ १७	२००	१६०
५२२	एकान्त सकृपाय चक्षु	१४ २२	२००	१६०
५२३	" अनेक मव वालों में	१४ ३०	२७३	१६०
५२४	" " घ्राण	१४ २४	२००	१६०
५२५	पंचेन्द्रिय मिथ्यास्वी में	१४ २०	३०३	१००
५२६	" " व्रत में	१४ २६	२००	१६०
५२७	तिर्यच गति में	१४ ४०	३०३	१६२
५२८	एकान्त छद्म वा मिथ्या	१४ ३०	२००	१००
५२९	स्त्री गति के व्रत "	१२ २६	३०३	१००
५३०	उत्कृष्ट जीव का भेद			
	वादर प्र० शरीर एकांत छद्म०	१४ ३६	२००	१६२
५३१	" पंचे० संख्या० मव०	१२ २०	३०३	१६६
५३२	तीन शरीरी वादर में	१४ ३२	२००	१६०
५३३	एकान्त अंतयम वादर में	१४ ३३	२००	१६०
५३४	" छद्म० अभव्य० प्र०			
	शरीरी	१४ ४४	२००	१६०
५३५	पंचेन्द्रिय जीवों में	१४ २०	३०३	१६०
५३६	स्त्री गति के वा० एकान्त			
	सकृपाय में	१२ ३०	२००	१६०
५३७	" घ्राणेन्द्रिय में	१२ २४	३०३	१६०
५३८	" तीन शरीरी में	१२ ४२	२००	१६०

५३६ प्राणेन्द्रिय में	१४	२४	३०३	१८=
५४० एकान्त छद्म० वादर में	१४	३=	२=	१८=
५४१ त्रस जीवों में	१४	२६	३०३	१८=
५४२ तीन शरीरी एकान्त छद्म.	१४	४२	२=	१८=
५४३ एकान्त असंयम में	१४	४३	२=	१८=
५४४ प्र. श. एकान्त छद्म.	१४	४४	२=	१८=
५४५ सम्य. ति. अलद्विया में	१४	३०	३०३	१८=
५४६ एकान्त छद्म. अनेक भववालों में	१४	४=	२=	१८६
५४७ त्रौ गति प्र. श. मिथ्या.	१२	४४	३०३	१८=
५४८ एकान्त छद्मस्थ में	१४	४=	२=	१८=
५४९ मिथ्या. प्र. शरीरी में	१४	४४	३०३	१८=
५५० सम्य. नरक के अलद्विया	१	४=	३०३	१८=
५५१ त्रौ गति मिथ्या.	१२	४=	३०३	१८=
५५२ एकेन्द्रिय पर्याप्त का अलद्विया	१४	३७	३०३	१८=
५५३ मिथ्यात्वी	१४	४=	३०३	१८=
५५४ नव प्रिय वेक पर्याप्त के अलद्विया	१४	४=	३०३	१८=
५५५ जीवों के मध्य भेद स्पर्शन वाले	१४	४=	३०३	१८=
५५६ नरक पर्याप्त के अलद्विया	३	४=	३०३	१८=

---

१७ श्री गणेश के २२ गुणों में	१२ ४४	३०३ १८८
१८ विष्णु, शंकर, कृष्ण के अलंकारों में	१४ ४४	३०८ १८८
१९ अनेक गुणों में	१४ ४४	३०३ १८८
१६० त्रिभुक्तियों के अलंकारों में	१४ ४४	३०३ १८८
१६१ अनेक नक्षत्रों के त्रिभुक्तियों में	१४ ४८	३०३ १८६
१६२ षोडशोत्तराशियों के अलंकारों में	१४ ४०	३०३ १८८
१६३ श्री भगवत्पूजा त्रिभुक्तियों में	१४ ४८	३०३ १८८

॥ श्री त्रिभुक्तियों की भाषणा के १६३ वेद सम्पूर्ण ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

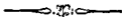


## ❀ चार कषाय ❀

सूत्र श्री पन्नवर्णार्जी के पद चौदहवें में चार कषाय का थोकड़ा चला है उसमें श्री गौतम स्वामी वीर भगवान से पूछते हैं कि " हे भगवन् ! कषाय कितने प्रकार की होती है ? " भगवान कहते हैं कि ' हे गौतम ! कषाय १६ प्रकार की होती है ' १ अपने लिये २ दूसरे के निमित्त ३ तदुभया अर्थात् दोनों के लिये ४ खेत अर्थात् खुली हुई जमीन के लिये ५ वय्यु कहेतां ढंकी हुई जमीन के लिये ६ शरीर के निमित्त ७ उपाधि के लिये - निरर्थक ८ जानता १० अजानता ११ उपशान्त पूर्वक १२ अनुपशान्त पूर्वक १३ अनन्तानुबन्धी क्रोध १४ अप्रत्याख्यानी क्रोध १५ प्रत्याख्यानी क्रोध १६ संज्वालन का क्रोध एवं १६ वें समुच्चय जीव आश्री और ऐसेही चौबीस दण्डक आश्री दोनों का इस प्रकार गुणा करने से (१६×२५) ४०० हुवे, अब कषाय के दलिया कहते हैं, चणीया, उपचणीया, वान्ध्या, घेया, उदीरिया, निर्जया एवं ६ ये भूत काल वर्तमान काल और भविष्य काल आश्री एवं ६ और ३ का गुणाकार करने से ( ६×३ ) १८ हुवे ये १८ एक जीव आश्री और १८ बहु जीव आश्री ३६ हुए ये समुच्चय जीव आश्री और चौबीस दण्डक आश्री एवं ( ३६×२५ ) ९०० हुए ४०० ऊपर के और ९०० के

एवं १३०० कौब के, १३०० मान के, १३०० माया के,  
और १३०० लोभ के एवं ५२०० होते हैं ।

॥ इति चार कपाय सम्पूर्ण ॥



## ॐ श्वासोश्वास ॐ

सूत्र श्री पद्मव्याजी के पद सातवें में श्वासोश्वास का धोकाड़ा चला है उसमें गौतम स्वामी वीर प्रभु से पूछते हैं कि हे भगवन् ! नेरिये और देवता किस प्रकार श्वासोश्वास लेते हैं ? वीर प्रभु उत्तर देते हैं कि हे गौतम ! नारकी का जीव निरन्तर धमण के समान श्वासोश्वास लेता है असुर कुमार का देवता जघन्य सात धोक उत्कृष्ट एक पच जात्रेरा श्वासोश्वास लेते हैं वाण्य वपन्तर और नव-निष्काय के देवता जघन्य सात धोक उत्कृष्ट प्रत्येक मुहूर्त में ज्योतिषी ज० उ० प्रत्येक मुहूर्त में पहला देवलोक का जघन्य प्रत्येक मुहूर्त में उ० दो पच में दूसरे देवलोक का ज० प्रत्येक मुहूर्त जात्रेरा उ० दो पच जात्रेरा तीसरे देवलोक का ज० दो पच में उ० सात पच में चौथे देवलोक का ज० दो पच जात्रेरा उ० सात पच जात्रेरा पांचवें देवलोक का ज० सात पच में उ० दश पच में छठे देवलोक का ज० दश पच में उ० चौदह पच में सातवें देवलोक का ज० चौदह पच में उ० सतरह पच में आठवें देवलोक का ज० सत्तरह पच में उ० अष्टारह पच में नववें देवलोक का ज० अष्टारह पच में उ० उन्नीस पच में दशवें देवलोक का ज० उन्नीस पच में उ० बीस में इग्यारहवें देवलोक का ज० बीस पच में उ० एकवीस पच में बरहवें देवलोक का

ज० एकवींश पद्य में उ० बावींश पद्य में पहली त्रिक का  
 ज० बावींश पद्य में उ० पच्चींश पद्य में दूसरी त्रिक का  
 ज० पच्चींश पद्य में उ० अठावींश पद्य में तीसरी त्रिक  
 का ज० अठावींश पद्य में उ० एकतीश पद्य में, चार  
 अनुसर विमान का ज० एकतीश पद्य में उ० तैतीश पद्य  
 में सार्ध सिद्ध का ज० और उ० तैतीश पद्य में एव ३३  
 पद्य में भाग ऊँचा लेते हैं और ३३ पद्य में खास नीचे  
 छोड़ते हैं ।

॥ इति श्वासो श्वास सम्पूर्ण ॥







प्रतिपदा ( ११ ) प्रातः काल ( १२ ) संध्या काल ( १३ )  
 मध्याह्न काल ( १४ ) मध्य रात्रि ( १५ ) अग्नि प्रकट  
 होने वह समय, और ( १६ ) आकाश में धूल चक्रे वह  
 समय अर्थात् भूत से धूल का प्रकाश मंद होजाये तब  
 अस्वास्थ्य होती है ।

॥ इति अस्वास्थ्य सम्पूर्णं ॥





प्रतिरदा ( ११ ) प्रातः काल ( १२ ) संध्या काल ( १३ )  
 मध्याह्न काल ( १४ ) मध्य रात्रि ( १५ ) अग्नि प्रकट  
 होने वह समय, और ( १६ ) आकाश में धूल चनें वह  
 समय अर्थात् भूल में धूल का प्रकाश मंद होजावे तब  
 अहराध्याय होती है ।

॥ इति अहराध्याय सम्पूर्ण ॥

## ॐ ३२ सूत्रों के नाम ॐ

११ अङ्गों के नाम-१ आचाराङ्ग २ सूत्रकृतःङ्ग  
३ स्थानाङ्ग ४ समवायाङ्ग ५ भगवती ( विगाह प्रज्ञप्ति )  
६ ज्ञाता ( धर्म कथा ) ७ उपासक दशाङ्ग = अन्तकृताङ्ग  
( अन्तगङ्ग ) ८ अनुचरोपपातिक १० प्रश्न व्याख्यान  
दशाङ्ग ११ विपाक ।

१२ उपाङ्ग के नाम-१ उपासतिक ( उवाचै )  
२ रात्रप्ररनीय ३ जीवान्निगम ४ प्रज्ञापना ५ जम्बू द्वीप  
प्रज्ञप्ति ६ चन्द्र प्रज्ञप्ति ७ सूर्य प्रज्ञप्ति = निरया वसिष्ठा  
८ कल्प वसिष्ठा १० पुष्पिका ११ पुष्पवृत्तिका १२  
वृष्य दशा ।

चार मूल सूत्र-१ दश वैकृतिक २ उत्तरा ध्यान  
३ नंदि ४ अनुयोग द्वार ।

चार वेद सूत्र-१ बृहन् कल्प २ व्यवहार ३ दिगीय  
४ दशाश्रुत कल्प ।

वर्तीश्रुतां सूत्र-आवरणक सूत्र ।

॥ इति ३२ सूत्रों के नाम सम्पूर्ण ॥



## अपर्याप्ता तथा पर्याप्ता द्वार

शिष्य ( विनय पूर्वक नमस्कार करके पूछता है )  
हे गुरु ! जीव तत्व का बोध देते समय आपने कहा कि  
जीव उत्पन्न होते समय अपर्याप्ता तथा पर्याप्ता कहलाता  
है । तो यह कैसे ? कृपा करके मुझे यह समझाइये ।

गुरु—हे शिष्य ! जीव यह राजा है । आहार शरीर,  
इन्द्रिय, श्वासो श्वास, माया और मन ये ६ प्रजा हैं और  
ये चारों गति के जीवों को लगू रहने से ५६३ भेद माने  
जाते हैं । इनमें पहला आहार पर्याप्ति लागू होती है ।  
यह इस प्रकार से है कि जब जीव का आयुष्य पूर्ण होवे  
तब वह शरीर छोड़ कर नई गति की योनि में उत्पन्न  
होने को जाता है । इसमें अविग्रह गति अर्थात् सीधी व  
सरल बन्ध का आया हुआ होवे वो जीव जिस समय  
आया हुआ होवे उसी समय में आकर उत्पन्न होता है  
उस जीव को आहार का अन्तर पड़ता नहीं इस प्रकार  
का बन्धन वाला जीव “ सीए आहारिण ” अर्थात्  
सदा आहारिक कहलाता है । ऐसा भगवती सूत्र का  
न्याय है ।

अब दूसरा प्रकार विग्रह गति का बन्ध बन्ध कर  
आने व ले जीवों का कहा जाता है । इनके तीन प्रकार  
कितनेक जीव शरीर छोड़ने के बाद एक समय के अन्तर

ते, कितनेक दो समय के अन्तर में, और कितनेक तीन समय के अन्तर में, अर्थात् चौथे समय में उत्पन्न हो सकते हैं । एवं चार ही प्रकार में संशरी जीव उत्पन्न हो सकते हैं । यह दूसरी विधा अर्थात् विपन्न गति करक उत्पन्न होने वाले जीवों को एक दो, तीन समय उत्पन्न होते अन्तर पड़े, इसका साम्य ग्रंथ का आद्यानु प्रदश की श्रेणी का विभागों की तरह आदर्शित हो जना बतलाते हैं । गुप्त भेद गीतार्थ गुह्य गम्य है । एते जीव कितने समय तक मार्ग में रोके जाते हैं अतः समय तक अनाहारिक ( आहार के बिना ) रह लाते हैं । ये जीव बान्धी हुई योनि के स्थान में प्रवेश करके उत्पन्न होवे ( बन्ध करे ) उनी समय वा योनि स्थान-कि जो पुद्गल के अन्तर्गत में बन्धा हुआ होता है-उसी पुद्गल का आहार-बटाई में डाले हुए रहे ( दुर्विष ) क ममान आहार करते हैं । उसका नाम—शोक आहार किरा हुआ पहलाका है । और जरे जीवन में एक ही बार किरा जाता है । इन आहार को श्रेष्ठ रूप पचान में एक अन्न-द्वैत का समय लगता है । यह पहली आहार योनि कहलाती है । इस प्रकार इन आहार के सम ही तथा गुह्य है कि उनका यह रूप पहलिये इन नमक यन्त्र का गुह्य योनि के कहूँ पर त ही ही नमक यन्त्र का अन्न योनि का गुह्य योनि के ही ही कहते हैं ।

रूप फूल में सुगन्ध की तरह जीव रह सकते हैं । यह दूसरी शरीर पर्याप्ति कहलाती है इस आकृति को बान्धने में एक अन्तर्मुहूर्त लगता है (२) इस शरीर के टूट बन जाने पर उसमें इन्द्रियों के अवयव प्रगट होते हैं । ऐसा होने में अन्तर्मुहूर्त का समय लगता है यह तीसरी इन्द्रिय पर्याप्ति कहलाती है । (३) उक्त शरीर तथा इन्द्रिय टूट होने पर सूक्ष्म रूप से एक अन्तर्मुहूर्त में पवन की घमण्य शुरू होती है यही में उम जीव के आयुष्म की गणना की जाती है यह चौथी आनोधान पर्याप्ति कहलाता है (४) पश्चात् एक अन्तर्मुहूर्त में नाद पैदा होता है । यह पाँचवीं भाषा पर्याप्ति कहलाती है (५) उपरोक्त पाँच पर्याप्ति के समय पर्यन्त मन चक्र भी मजबूती होती है । उनमें से मन स्फुरण हो कर सुगन्ध की तरह बाहर आता है उनमें से शरीर की स्थिति के प्रमाण में सूक्ष्म स्थिति में अक्षुब्ध पदार्थों के रज कण आकृषित करने योग्य स्थिति प्राप्त होती है । यह छठों मन पर्याप्ति कहलाती है (६) उक्त स्थिति में ही अन्तर्मुहूर्त में ६ पर्याप्ति का बन्ध होता है यह मुन का स्थिति का शुरु होती है कि शास्त्रकार ६ पर्याप्ति का कथ दान में एक अन्तर्मुहूर्त चलते हैं यह कैसे ?

गुरु-हे कमल ! नाग सुहृत् दा यही का होता है ।  
 इन ६ ० क ही मत है । परन्तु अन्तर्मुहूर्त क नप-न मध्यम  
 क्षेत्र २-६२ ०१ नान मत मत है दा समय म लया कर





कर रहे तब उसे लब्धि पर्याप्ता कहते हैं । एवं करण तथा लब्धि पर्याप्ता के चार भेद होते हैं ।

शिष्य-हे गुरु ! जो जीव मरता है वो अपर्याप्ता में मरता है अथवा पर्याप्ता में ?

गुरु-हे शिष्य ! जब तीसरी इन्द्रिय पर्या बन्ध कर जीव करण पर्याप्ता होता है तब मृत्यु प्राप्त कर सकता है । इस न्याय से पर्याप्ता हो कर मरण पाता है । परन्तु करण-अपर्याप्ता होने कोई जीव मरण पावे नहीं । जैसे ही दूसरे प्रकार से अपर्याप्ता होने का मरण कहने में आता है यह लब्धि अपर्याप्ता का मरण समझना । यह इस तरह से कि चार वाला तीसरी, पांच वाला तीसरी चौथी, और छः वाला तीसरी चौथी और पांचवी पर्या पूरी बन्धने के बाद मरण पाते हैं । अब दूसरे प्रकार से अपर्याप्ता व पर्याप्ता इसे कहते हैं कि जिस जीव को जितनी पर्या प्राप्त हुई अर्थात् बन्धी उस को उतनी पर्या का पर्याप्ता कहते हैं । और जो बन्धना बाकी रही उसे उसका अपर्याप्ता अर्थात् उतनी पर्या की प्राप्ति नहीं हो सकती यह भी कह सकते हैं ।

ऊपर बताये हुये अपर्याप्ता और पर्याप्ता के भेदों का अर्थ समझ कर गर्भज, नो गर्भज और एकेन्द्रिय आदि अनेकौ पंचन्द्रिय जीवों को ये भेद लागू करने से जीव उत्तर के

५३३ मेरु अक्षर नव मे गितने मे आवे हैं और वे सब  
 इन विराट के अंत हैं इतने जीवों की २४ उच योनियों  
 का प्रमावेग होगा है । योनियों में बार बार उत्पन्न होना,  
 जन्म लेना व मरण पाना आदि के संसार समुद्र के नाम  
 से प्रकीर्णित होते हैं यह सब समुद्रों से अनन्त गुणा बड़ा  
 है । इस संसार समुद्र के पार करने के लिये बने हुए नाव  
 है, व विष्णुके नाविक ( नाव से चलाने वाले ) ब्रह्मो गुण  
 हैं । इनका नाव उदर, अक्षरगुण, विचार हर प्रवृत्त  
 करने वाला नाविक नन्द इन्द्रगुण उदर मनु की हुई  
 विन्दुओं ( बीज ) की सावधता मनु हर करता है । इसी  
 प्रकार अन्य भी आचरण करना योग्य है ।

॥ इति अर्थात् तदा पयोत्ता द्वार सन्त्ये ॥



## ❀ गर्भ विचार ❀

गुरु-हे शिष्य ! पन्न वखा भगवति सूत्र का तथा ग्रंथकारों का अभिप्राय देखने पर, सर्व जन्म और मृत्यु के दुखों का मुख्यतः चौथा मोहनीय कर्म के उदय में समावेश होता है । मोहनीय में ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय और अन्तराय कर्म एवं तीन का समावेश होता है । ये चार ही कर्म एकांत पाप रूप हैं इनका फल असाता और दुख है इन चारों ही कर्मों के आकर्षण से आयुष्य कर्म बन्धता है व आयुष्य शरीर के अन्दर रह कर भोगा जाता है भोगने का नाम वेदनीय कर्म है इस कर्म में साता तथा असाता वेदनीय का समावेश होता है और इस कर्म के साथ नाम तथा गोत्र कर्म जुड़ा हुआ है और ये आयुष्य कर्म के साथ सम्बन्ध रखते हैं ये चार कर्म शुभ तथा अशुभ एवं दो परिणामों से बन्धते हैं अतः इन्हें मिथ्र कहते हैं इनके उदय से पुण्य तथा पाप की गणना की जाती है ।

इस प्रकार आठ कर्मों का बन्ध होता है और ये जन्म मरण रूप क्रिया के द्वारा भोगे जाते हैं । मोहनीय कर्म सर्व कर्मों का राजा है आयुष्य कर्म इसका दीवान है इज्जी मेवक है जो मोह राजा के आदेशानुसार नित्य कर्मों का सुचय करके बन्ध बान्धता है । ये सब

पञ्चव्याघ्री सूत्र में कर्म प्रकृति पद से समझना । मन सदा चंचल व चपल है और कर्म संचय करने में अप्रमादी व कर्म छोड़ने में प्रमादी है इस से लोक में रहे हुए वह चैतन्य रूप पदार्थों के साथ, राग द्वेष की मदद से, यह मिल जाता है । इस कारण उसे " मन योग " कह कर पुकारते हैं । मन योग से नवीन कर्मों की आवक आती है । जिसका पांच इन्द्रियों के द्वारा भांगोपभोग किया जाता है । इस प्रकार एक के बाद एक विषाक का उदय होता है । सबों का मूल मोह है, तद्व्यथत् मन, फिर इन्द्रिय विषय और इन से प्रमाद की वृद्धि होती है कि जिसके वश में पढ़ा हुआ प्राणी, इन्द्रियों को पोषण करने के रस सिवाय, रत्नत्रयात्मक अभेदानन्द के आनन्द की लहर का रसीला नहीं हो सका किन्तु उलटा ऊंच नीच कर्मों के आकर्षण से नरक आदि चार गति में जाता व आता है । इनमें विशेष करके देव गति के सिवाय तीन गति के जन्म अशुचि से पूर्ण हैं । जिसमें से नरक कुण्ड के अन्दर तो केवल मल मूत्र और मांस रुधिर का कादा ( कीचड़ ) भरा हुआ है व जहां छेदन भेदन आदि का भयङ्कर दुख होता है जिसका वित्तिार सुयगडांग सूत्र से जानना ।

यहां से जीव मनुष्य या तिर्यच गति में आता है यहां एकांत अशुचि तथा अशुद्धि का भण्डार रूप गर्भावाप्त

में आकर उत्पन्न होता है पायस्थान से भी अधिक यह नित्य अखूट कीच से मरा हुआ है यह गर्भावास नरक के स्थान का भान कराता है व इसी प्रकार इसमें उत्पन्न होने वाला जीव नेरिये का नमूना रूप है । अन्तर केवल इतना ही है कि नरक में छेदन, भेदन, ताड़न, तर्जन, खण्डन, पीसन और दहन के साथ २ दश प्रकार की चेतन वेदना होती है वह गर्भ में नहीं परन्तु गति के प्रमाण में भयङ्कर बट और दुख है ।

उत्पन्न होने की स्थिति तथा गर्भ स्थान का विवेचन ।

शिष्य-हे गुरु ! गर्भस्थान में आकर उत्पन्न होने वाला जीव वहाँ कितने दिन, कितनी रात्रि, तथा कितने मुहूर्त तक रहता है ? और उतने समय में कितने श्वासो-श्वास लेता है ?

गुरु-हे शिष्य ! उत्पन्न होने वाला जीव २७७॥ अर्धो रात्रि तक रहता है । वास्तविक रूप से देखा जाय तो गर्भ का काल इतना ही होता है । जीव ८, ३२५. मुहूर्त गर्भस्थान में रहता है । और १४, २०, २२५. श्वासो श्वास लेता है । इसमें भी कमी-बेसी होती है ये सब कर्म विपाक का व्याघात समझना । गर्भ स्थान के लिये यह समझना चाहिये कि माता के नाभि मंडल के नीचे फूल के आकार चत् दो नाडियें हैं । इन दोनों के नीचे उंधे फूल के आकार



की तरह आकर भर जाते हैं । कर्म योग से उनके क्वचित् गर्भ रह जाता है तो जितने पुरुषों के रजकण आये हूँ वे ही वे सर्व पुरुष उम जीव के पिता तुल्य माने जाते हैं । एक साथ दस हजार तक गर्भ रह सकता है । इस पर मच्छी तथा सर्पनी माता का न्याय है । मनुष्य के अधिक से अधिक तीन सन्तान हो सकती हैं शेष मरण पा जाते हैं । एक ही समय नव लाख उदरान्न हो कर यदि मर जावे तो वह स्त्री जन्म पर्यन्त बाँध रहती है । दूसरी तरह जो स्त्री बानान्ध बन कर अनियमित रूप से विषय का सेवन करे अथवा व्यभिचारिणी बन कर मर्यादा रहित पर पुरुष का सेवन करे तो जो स्त्री बाँध होती है । उसके गर्भ नहीं रहता ऐसी स्त्री के शरीर में भेरी ( उदरी ) जीव उत्पन्न होते हैं कि जिनके टुकड़े विकारों की वृद्धि होती है व इससे वह स्त्री देर गुरु धन व कुल मर्यादा तथा शिथिल व्रत के लक्षण नहीं रह सकती । ऐसी स्त्री का समाव निर्दय तथा अमन्यकारी होता है । जो स्त्री दयालु तथा मत्प्रेमादी होती है वो अपने शरीर को पाननां काती है । कामवासना पर कब्ज रखती है । आजी व्रत की रक्षा के निमित्त सांसारिक मुक्तों के अनुग्रह की मर्यादा करती है । इन कारणों से ऐसी स्त्री पुरुषों का अच्छा कल प्राप्त करती हैं । केवल कविर म या केवल सिन्दू मे व्रत प्राप्त नहीं हो सकती वन ही अनु के कविर विभाव अन्य कविर व्रतान-



प्राप्ति के निमित्त काम नहीं आसक्ता एक ग्रन्थकार कहते हैं कि सूक्ष्म रीति से सोलह दिन पर्यन्त श्रुतुत्ताव होता है । यह रोगी स्त्री के नहीं परन्तु निरोगी स्त्री के शरीर में होता है । और यह प्रजाप्राप्ति के योग्य कहा जाता है ।

उक्त दिनों में से प्रथम तीन दिनों का ग्रन्थकार निषेध करते हैं । यह नीति मार्ग का न्याय है और इस न्याय को पुरावात्मक जीव स्वीकार करते हैं । अन्य मतानुसार चार दिन का निषेध है । क्योंकि चौथे दिन को उत्पन्न होने वाला जीव अन्य समय तक ही जीवन धारण कर सकता है । ऐसा जीव शक्ति हीन होता है व माता पिता का भार रूप होता है । पाँचवें से सोलहवें दिन तक नीति शास्त्रानुसार गर्भाधारण संस्कार के उपयुक्त माने जाते हैं । पश्चात् एक के बाद एक ( दिन ) का बालक उत्तरोत्तर तेजस्वी बलवान्, रूपवान्, बुद्धिवान्, और अन्य सर्व संस्कारों में श्रेष्ठ दीर्घायुष्य वाला तथा कुटुम्ब पालक निवृद्धता है ( होता है ) इनमें से छठी, आठवीं, दशवीं, बारहवीं, चौदहवीं एवं सप्त ( बेकी की ) रात्रि विशेष करके पुत्री रूप फल देती है । इस में विशेषता यह है कि पाँचवीं रात्रि को उत्पन्न होने वाली पुत्री कालान्तर में अनेक पुत्रियों की माता बनती है । पाँचवीं, सातवीं, नववीं, द्वादशवीं, तेरहवीं, पन्द्रहवीं एवं त्रिपद एकी की । रात्रि का वीर पुत्र रूप में उत्पन्न होता है और वे उर-

कहे गुणवाला निकलता है । दिन का संयोग शास्त्र द्वारा निषेध है । इतने पर भी अगर होवे ( सन्तान ) तो वो कुदुम्भ की तथा व्यवहारिक सुख व धर्म की हानि करने वाला निकलता है ।

गर्भ में पुत्र या पुत्री होने का कारण:-वीर्य के रज कण अधिक और रुधिर के थोड़े होवें तो पुत्र रूप फल की प्राप्ति होती है । रुधिर अधिक और वीर्य कम होवे तो पुत्री उत्पन्न होती है । दोनों समान परिमाण में होवे तो नपुंसक होता है । (अब इनका स्थान कहते हैं) माता के दाहिनी तरफ पुत्र, बायीं कुक्षि में पुत्री और दोनों कुक्षि के मध्य में नपुंसक के रहने का स्थान है । गर्भ की स्थिति मनुष्य गर्भ में अंकुष्ट बारह वर्ष तक जीवित रह सकता है । बाद में मर जाता है । परन्तु शरीर रहता है, जो चौबीस वर्ष तक रह सकता है । इस सूत्रे शरीर के अन्दर चौबीसवें वर्ष नया जीव उत्पन्न होवे तो उसका जन्म अत्यन्त कठिनाई से होता है यदि नहीं जन्मे तो माता की मृत्यु होती है । संप्ली तिर्यच आठ वर्ष तक गर्भ में जीवित रहता है । अथ आहार की रीति कहते हैं योनि कमल में उत्पन्न होने वाला जीव प्रथम माता पिता के मिले हुये मिश्र पुद्गलों का आहार करके उत्पन्न होता है इसका अध प्रजा द्वार म जानना विशेष इतना है कि यह अ हर माता पिता का पुद्गल कइनाता है । इस आहार

से सात धातु उत्पन्न होती हैं । इनमें—१ रसी ( राघ )  
 २ लोही ३ मांस ४ हड्डी ५ हड्डी की मज्जा ६ चर्म ७ वीर्य  
 और नसा जाल एवं सात मिल कर दूसरी शरीर पर्या  
 अर्थात् सूक्ष्म पुतला कहलाता है । छः पर्या बंधने के बाद  
 वह बाँजक ( वीर्य ) सात दिवस में चावल के घोंचन  
 समान तोलदार हो जाता है । चौदहवें दिन जल के  
 परपोटे समान आकार में आता है । इकवीस दिन में  
 नाक के श्लेश्म के समान और अठावीस दिन में अड़ता-  
 लीश भासे बजन में हो जाता है । एक महिने में धेर की  
 गुठली समान अथवा छोटे आम की गुठली समान हो  
 जाता है । इसका बजन एक करखय कम एक पल का  
 होता है पल का परिमाण—शोलइ भासे का एक करखय  
 और चार करखय का एक पल होता है । दूसरे महिने  
 कधी कधी समान, तीसरे महिने पक्षी केरी ( आम )  
 समान हो जाता है । इस समय से गर्भ प्रमाणे माता को  
 उशीला ( दोहद-भाव ) उत्पन्न होने लगता है । और यह  
 कर्म क्लानुत्तार फलता है । इस के द्वारा गर्भ अर्द्धा है  
 या पुरा इनकी परीक्षा होती है । चौथे महिने कणक के  
 पिण्डे के समान हो जाता है इस से माता के शरीर की  
 पुष्ट होना लगती है । पाचवे महिने में पाच अङ्ग हूटते हैं  
 जिनमें से दो ६ प. ६। पाँच, पाँचवा मन्त्रक, छठे महिने कथिर,  
 सप्तम महिने कर्म केरी का हूटने लगता है । अठारह

क्रोड़ रोम होते हैं । जिनमें से दो क्रोड़ और एकवचन लाख गले ऊपर व नवाणु लाख गले के नीचे होते हैं । दूसरे मत से-इतनी संख्या के रोम गांठ के कहलाने हैं यह विचार उचित ( वाज्जी ) मालूम होता है । एकेक रोम के उगने की जगह में १॥॥ से कुछ विशेष रोग भरे हुए हैं । इस हिसाब से पीने छः करोड़ से अधिक रोग होते हैं । पुन्य के उदय से ये ढंके हुए होते हैं । यहीं में रोम आहार की शुरुआत हाने की सम्भारना है ' तत्त्वं तु सर्वज्ञ गम्यं ' । यह आहार माता के रुधिर का समय समय लेने में आता है और समय समय पर गमना है । सातवें महीने सात सो सिराएँ अर्थात् रसहरणी नाड़ियाँ बन्धती हैं । इनके द्वारा शरीर का पोषण होता है । और इसमें गर्भ को पुष्टि मिलती है । इनमें से स्त्री को ६७० ( नाड़ियों ) नर्तुमरु को ६८० और पुरुष का ७०० पूरी होती हैं । पाँचमो मांस की पेशियाँ बन्धती हैं । जिनमें से स्त्री के तीस और नर्तुमरु के बीस कम होती हैं इनमें हड्डियाँ ढंभी हुई रहती हैं । हाड में सर्व भिलाहर ३३० मर्मे ( जोड़ ) होते हैं । एकेक जोड़ पर आठ आठ मर्म के स्थान हैं । इन मर्म स्थानों पर एक टखोर लगने पर मरण पाता है । अन्य मान्यता में एक ही साठ मर्मे और १७० मर्म-स्थान होते हैं । उपगन्त मर्मसु मन्व । सुहीर में ६ः मर्म हात हैं । जिनमें से पाँच छोटी,

और मस्तक की मज्जा ( भेजा ) ये तीन अन्न माता के और दही हाड़ की मज्जा और नख केश रोम ये तीनों अन्न पिता के हैं । आठवें महीने सर्व अन्न उपाङ्ग पूर्ण हो जाते हैं । इस गर्भ को लघु नीत बड़ी नीत श्लेष्म, उधरस, छोरु, अंगड़ाई प्रादि कुछ नहीं होता जो जिस २ आहार को खेंचता है उस आहार का रस इन्द्रियों को पुष्ट करता है । हाड़, हाड़ की मज्जा, चाची नख, केश की वृद्धि होती है । आहार लेने की दूपरी रीति यह है कि माता की तथा गर्भ की नाभि व ऊपर की रसहरणी नाडी ये दोनो परस्पर वाले ( नदरू ) के आँटे के समान बाँटे हुये हैं । इसमें गर्भ की नाडी का मुँह माता की नाभि में जुड़ा हुवा होता है । माता के कोठे में पहले जो आहार का कवल पड़ता है वो नाभि के पाँच अटक जाता है व इसका रस बनता है जिससे गर्भ अपनी जुड़ी हुई रसहरणी नाडी से खेंच कर पुष्ट होता है । शरीर के अन्दर ७२ कोठे हैं जिनमें से पाँच बड़े हैं । शीयाले में दो कोठे आहार के और एक कोठा जल का व गर्भों में दो कोठे जल के और एक कोठा आहार का तथा चौमासे में दो कोठे आहार के और दो कोठे जल के माने जाते हैं । एक कोठा हमेशा खाली रहता है । स्त्री के छठा कोठा विशेष होता है । कि जिसमें गर्भ रहता है । पुरुष के दो कान, दो चक्षु दो नासिका ( छेद ), मुँह, लघुनीत, बड़ी नी

आदि नव द्वार अपवित्र और सदा काल बहते रहते हैं । और स्त्री के दो धन ( स्तन ) और एक गर्भ द्वार ये तीन मिल कर कुल चारह द्वार सदाकाल बहते रहते हैं ।

शरीर के अन्दर अठारह पृष्ठ दण्डक नागकी पांसलियों हैं । जो गर्भवास की क्रोड़ के साथ जुड़ी हुई है । इनके सिवाय दो वांसि की चारह कंडक पांसलियों हैं कि जिनके ऊपर सात पुड़ चमड़े के चढ़े हुए होते हैं । छाती के पड़दे में दो ( कलेजे ) हैं जिनमें से एक पड़दे के साथ जुड़ा हुआ है और दूसरा कुछ लटकता हुआ है । पेट के पड़दे में दो अंतस ( नल ) हैं जिनमें से स्थूल नल मल-स्थान है और दूसरा सूक्ष्म लघु नीत का स्थान है । दो प्रणय स्थान अर्थात् भोजन पान पर गमाने ( पचाने ) की जगह हैं । दक्षिण पर गमे तो दुःख उपजे व बांये पर गमे तो सुख । सोलह आँता है, चार आंगुल की ग्रीवा है । चार पल की जीम है, दो पल की आँखें हैं, चार पल का मस्तक है । नव आंगुल की जीम है, अन्य मान्यतानुसार सात आंगुल की है । आठ पल का हृदय है पचीश पल का कलेजा है । अथ सात धातु का प्रमाण व माप कहते हैं शरीर के अन्दर एक आड़ा ( टेड़ा ) रुधिर का और आधा आड़ा माम का होता है । एक पाथा मस्तक का भेजा, एक आड़ा लघुनीत, एक पाथा बड़ी नीत का है । कफ, पित्त, और श्लेष्म इन तीनों का एकेक कलत्र और



यता मिलती है । ये नाड़ियों वहाँ तक रस पहुँचा कर शरीर मादि को आरोग्य रखती हैं । नाड़ी में नुकसान होने से संधि, पक्षा घात ( लकवा ) वैर आदि का हटना, कलत्र, तोड काट, मस्तक का दुखना व आधा-शीर्षा आदि रोगों का प्रकोप हो जाता है ।

तीसरी १६० नाडी नाभी से तिर्थाँ गई हुई है । ये दोनों हाथों की आंगुलियों तक चली गई है । इतना भाग इन नाड़ियों में मजबूत रहता है । नुकसान होने से पांसा शूल, पेट के दर्द, मुँह के व दाँतों के दर्द आदि रोग उत्पन्न होने लगते हैं ।

चौथी १६० न डी नाभी से नीचे मर्म स्थान पर फैली हुई है । जो मयान डार तक गई हुई है । इनकी स्थिति द्वारा शरीर का चन्त्र रहा हुआ है । इनके अन्दर नुकसान होने पर लघु नीच बड़ी नीच आदि की कृत्रिम-वह ( कछाट ) मन्त्रा मन्त्रिणित शूः होने लग जाती है । इसी प्रकार कृत् छनि प्रयोग, उदर भिन्न, अर्धे नाड़ी बन्धन वानगे व पाँट गंग, बजोदर, कटोदर, मगदर, संप्र-हर्षा आदि का प्रकोप होने लग जाता है ।

पाचवीं १६० रोग न डी द्वारा ही मंत्रिणित डार तक गई हुई है । जो अन्ध की नाडू का पृष्ठ करती है । इनमें नुकसान होने पर अन्ध, बीज्य का रोग हो जाता है अन्ध रोग न डी रोगी १६० मन्त्र मन्त्रिणित





बुद्धि रख कर कुशील ( मैथुन ) का सेवन करती है तो यदि गर्भ में पुत्रों होये तो उनके माता पिता दुष्ट में दुष्ट, पापी में पापी और सौ सौ नरक के अधिकारी बनते हैं । गर्भ भी अधिक दिनों तक जीवित नहीं रहता यदि जिन्दा रहे भी तो वो काना, कुबड़ा, दुर्बल, शक्ति हीन तथा खराब डीलडोल का होता है । क्रोधों, चलेगी, प्रपंची और खराब चाल चलन वाला निकलता है । ऐसा समझ कर प्रजा (सन्तति) की हितइच्छने वाली जो माताएं गर्भकाल में शील बन्ती रहती हैं । वे धन्य हैं ।

विशेष में उपरोक्त गर्भावास के स्थानक में महा कष्ट तथा पीड़ा उठानी पड़ती है । इस पर एक दृष्टान्त दिया जाता है—जिस मनुष्य का शरीर कोढ़ तथा पित्त के रोग से गलता होये ऐसे मनुष्य के शरीर में साड़ातीन फोड़ खईये अग्नि में गरम करके साडेतीन रोमों के अन्दर पिरोवे । पुनः शरीर पर निमक तथा चूने का जल छीटकर शरीर को गीले चमड़े से मढ़े व मढ़ कर धूर के अन्दर रखे सूखने ( शरीर का चमड़ा ) पर जो अत्यन्त कष्ट उसे होता है उस ( दुख ) को मित्राय भोगने वाले के और सर्वज्ञ के अन्य कोई नहीं जान सकता । इस प्रकार वेदना पहिले महीने गर्भ का होती है दूसरे महीने दृगनी एवं उत्तरोत्तर नववें महीने नम गुणी वेदना होती है । गर्भ वास की जगह छोटी है और गर्भ का शरीर ( म्थून ) बड़ा है



सकते हैं ? क्या नहीं देख सकते ।

गर्भ का जीव माता के दुःख से दुःखी व सुख से सुखी होता है । माता के स्वभाव की छाया गर्भ पर गिरती है । गर्भ में से पाहर आने के बाद पुत्र पुत्री का स्वभाव, आचार, विचार आहार व्यवहार आदि सर्व माता के स्वभावानुसार होता है । इस पर से माता पिता के ऊँच नीच गर्भ की तथा यश अपयश आदि की परीचा सन्तति रूप फोटू के ऊपर से विवेकी स्त्री पुरुष कर सकते हैं । कारण कि सन्तति रूप चित्र ( फोटू ) माता पिता की प्रकृति अनुसार खिंचा हुआ होता है । माता धर्म ध्यान में, उपदेश श्रवण करने में तथा दान पुण्य करने में और उच्च भावना भावने में संलग्न होवे तो गर्भ भी वैसे ही विचार वाला होता है । यदि इस समय गर्भ का मरण होवे तो वो मर कर देवलोक में जा सकता है । ऐसे ही यदि माता आर्त और रौद्र ध्यान में होवे तो गर्भ भी आर्त और रौद्र ध्यानी होता है । इस समय गर्भ की मृत्यु होने पर वो नरक में जाता है । माता यदि उस समय महाकपट में प्रवृत्त हो तो गर्भ उस समय मर कर तिर्यँच गति में जाता है । माता महा भद्रिक तथा प्रपञ्च रहित विचारों में लगी हुई होवे तो गर्भ मर कर मनुष्य गति में जाता है एवं गर्भ के अन्दर से ही जीव चारों गति में जा सकता है । गर्भ काल जब पूर्ण होता है तब माता तथा गर्भ की नाभी की



## ❀ नक्षत्र और विदेश गमन ❀

शिष्य नमस्कार करके पूछता है कि हे गुरु ! नक्षत्र कितने ? तारे कितने ? इनका आकार कैसा ? वे नक्षत्र ज्ञान शक्ति बढ़ाने में क्या मददगार हैं ? उन नक्षत्रों के समय विदेश गमन करने पर किस पदार्थ का उपभोग करके चलना चाहिये व उस से किस फल की प्राप्ति होती है ?

गुरु—(एक साथ छः ही सवालों का जवाब देते हैं)

हे शिष्य ! नक्षत्र अठ्ठावीस है, जिन मणों के आकार अलग अलग हैं । ये आकार इन नक्षत्रों के ताराओं की संख्या के ऊपर से समझे जा सकते हैं । इन के आधार से स्वाध्याय, ध्यान करने वाले मुनि रात्रि की परसियों का माप अनुमान कर आत्मस्मरण में प्रवृत्त हो सकते हैं । इन में से दश नक्षत्र ज्ञान शक्ति में वृद्धि करने वाले हैं । ज्ञान शक्ति वाले महात्मा अपने संभव की वृद्धि निमित्त तथा भव्य जीवों पर उपकार करने के लिए विदेश में विचरते हैं जिससे अनेक लाभ होने की संभावना है । अतः इन नक्षत्रों का विचार करके गमन करने पर धर्म वृद्धि का कारण होता है । यही नक्षत्रों का फल है । चलने के समय भिन्न भिन्न पदार्थों का उपभोग करने में आता है । उन पदार्थों के साथ मनोभावनाओं का रस मिल कर मिश्रित



खाकर दक्षिण दिशाओं में जाने से भय की संभावना रहती है । ( ५ ) पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के दो तारे हैं । इसका आकार अर्ध वाक्य के माग समान है । इससे योग पर करलेकी शाक खाकर चलने पर लड़ाई होवे परन्तु इससे ध्यानशुद्धि की संभावना भी है । ( ६ ) उत्तराभाद्र-पद नक्षत्र के दो तारे हैं । इसका आकार भी पूर्वाभाद्र-पद समान होता है । इस में वांफकपूर ( बंशलेचन ) खाकर पिछले पहर चलने से सुख होता है । यह नक्षत्र दीर्घा के योग्य है । ( ७ ) रेवती नक्षत्र के पचीस तारे हैं । इसका आकार नाव समान है । इस के समय स्वच्छ जल का पान करके चलने से विजय मिलती है । ( ८ ) अश्विनी नक्षत्र के तीन तारे हैं । घोड़े के मन्ध लेसा आकार है । मटर ( बटले ) की कली का शाक खाकर चलने से सुख शान्ति प्राप्त होती है । ( ९ ) मर्यादा नक्षत्र के तीन तारे हैं । और इसका आकार खी के मर्मस्थान वत् है । तेल, चायत खाकर चलने पर सकलता मिलती है । ( १० ) कृत्तिका नक्षत्र के छः तारे होते हैं । त्रिसुखा जारई की पेट्टी समान आकार होता है । गायक का दूध पीकर चलने पर मौभाग्य की वृद्धि होती है तथा मरकार मिलता है । ( ११ ) रोहिणी नक्षत्र के पाँच तारे होते हैं । व गारे के छेद समान इसका आकार होता है । इस समय इस मूंग या कूट चलने पर मार्ग में गायक के वाग्य से वायव्य चरन पश्चिम से प्राप्त हो जाती



है यह नक्षत्र दीक्षा देने योग्य है । (१२) मृग शीर्ष नक्षत्र के तीन तारे होते हैं । इसका आकार हिरण्य के सिर समान होता है । इलायची खाकर चलने पर अत्यन्त लाभ होता है । यह नक्षत्र नये विद्यार्थी की तथा नये शास्त्रों का अभ्यास करने वालों की ज्ञानवृद्धि करने वाला है । (१३) आर्द्रा नक्षत्र का एक ही तारा है । इसका रुधिर के बिन्दु समान आकार है । इस समय नवनीत ( माखन ) खाकर चलने से मरण, शोक, संताप तथा भय एवं चार फल की प्राप्ति होती है । परन्तु ज्ञान अभ्यासियों को सत्वर उत्तम फल देने वाला निकलता है वर्षा ऋतु के मेघ-बादल की अस्वाध्याय दूर करता है । (१४) पुनर्वसु नक्षत्र के पांच तारे हैं । इसका आकार तराजू के समान है । घृत शकर खाकर चलने पर इच्छित फल मिलते हैं (१५) पुष्य नक्षत्र के तीन तारे हैं । जिसका आकार व्रधमान ( दो जुड़े हुवे रामपात्र ) समान होता है । खीर खाएड खाकर चलने से अनियमित लाभ की प्राप्ति होती है । व इस नक्षत्र में क्रिये हुवे नये शास्त्र का अभ्यास भी बढ़ता है । ( १६ ) अश्लेषा नक्षत्र के छः तारे हैं । इसका आकार घञ्जा समान है । इस समय सीताफल खाकर चले तो प्राणान्त भय की सम्भावना होती है परन्तु यदि कोई ज्ञान अभ्यास, हुन्नर, कला, शिन्धु शास्त्र आदि के अभ्यास में प्रवेश करे तो जल तथा तेल के बिन्दु समान

उस के ज्ञान का विस्तार होता है । ( १७ ) मया नक्षत्र के सात तारे होते हैं जिनका आकार गिरे हुए किले की दीवार समान है केसर खाकर चलने पर तुरी तरह से आकास्मिक मरण होता है । ( १८ ) पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र के दो तारे होते हैं । इनका आकार आवे पलङ्ग जैसा होता है इस समय कोठिवड़े ( फल ) की शाक खाकर चलने से विरुद्ध फल की प्राप्ति होती है परन्तु शास्त्र अभ्यासी के लिए श्रेष्ठ है । ( १९ ) उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र के भी दो तारे होते हैं और आकार भी आवे पलङ्ग जैसा होता है इस समय कड़ा नामक वनस्पति की फली की शाक खाकर चलने पर सहज ही क्रेश मिलता है । यह नक्षत्र दीघा लायक है । ( २० ) हस्त नक्षत्र के पांच तारे हैं । इसका आकार हाथ के पंजे समान है त्रिगोड़े खाकर उच्च दिशा सिवाय अन्य तरफ चलने से अनेक लाभ हैं व नये शास्त्र अभ्यासियों को अत्यन्त शक्ति देने वाला है । ( २१ ) चित्रा नक्षत्र का एक ही तारा है खिले हुवे फूल जैसा उसका आकार है । दो पहर दिन चढ़ने बाद मृग की दाल खाकर दक्षिण दिशा सिवाय अन्य दिशाओं में जाने पर लाभ होता है व ज्ञान श्रद्धि होती है ( २२ ) स्वाति नक्षत्र का एक तारा है इसका आकार नाग फनी समान होता है आम खाकर जाने पर लाभ लेकर कुशल चेम पूर्वक जन्दी पर लौट आमके हैं । ( २३ ) विशाखा

नक्षत्र के पांच तारे होते हैं जिसका आकार घोड़े की लगाम ( दामली ) जैसा है इस योग पर अलसी फल खाकर जाने से विकट काम सिद्ध हो जाते हैं । ( २४ )

अनुराधा नक्षत्र के चार तारे हैं । इसका आकार एकावली हार समान होता है । चावल मिथी खाकर जाने से दूर देश यात्रा करने पर भो कार्य सिद्धि कठिनता से होती है ।

( २५ ) जेष्ठा नक्षत्र के तीन तारे हैं इनका आकार हाथी के दांत जैसा है इस समय कलधी की शाक अथवा कोल कुट ( घोर कुट ) खाकर चलने से शीघ्र मरण होता है ।

( २६ ) मूल नक्षत्र के इग्यारह तारे हैं इसका बौद्धे जैसा आकार है मूला के पत्र की शाक खा कर जाने से कार्य सिद्धि में बहुत समय लगता है । इस नक्षत्र को बौद्धी का भी कहते हैं । ज्ञान अभ्यासियों के लिये तो यह अच्छा है ।

( २७ ) पूर्वाषाढ नक्षत्र के चार तारे हैं । हाथी के पाँव समान इसका आकार है इस समय खीर आँवला खाकर जाने से क्लेश कुसम्भ व अशान्ति प्राप्त होती है परन्तु शास्त्र अभ्यासियों को अच्छी शक्ति देने वाला होता है ( २८ )

उत्तराषाढ नक्षत्र के चार तारे होते हैं इसका घेठे हुवे सिद्ध समान आकार है । इस समय पके हुवे बौली फल खाकर जाने से नव माघन महित कार्य सिद्धि होती है यह नक्षत्र दीक्षित करने योग्य है ।

उत्तर बताये हुवे अष्ट वांश नक्षत्रों में से पाँचवां, बारहवां, तेरहवां, पन्द्रहवां, सोलहवां, अटारहवां, बीसवां,

एकवीशवां, छत्तीसवां, और सत्तावीशवां एवं दश नवत्रों में से अधिक नक्षत्र चन्द्र के साथ योग जोड़ कर गमन करते हों व उम दिन गुरुवार हों तब उम समय मिथ्या-मिमान दूर कर के वितथ भक्ति पूर्वक गुरुनन्दन करे व आज्ञा प्राप्त करके शास्त्राध्ययन करने में तथा वाचन लेने में प्रयत्न हों ऐसा करने से सत्ता ज्ञान वृद्धि होती है परन्तु याद रखना चाहिये कि छः वार छोड़ कर गुरुवार लेवे दो अष्टमी, दो चउदश, पूर्णिमा, अमावस्या और दो एकम ये गरी तिथि छोड़ कर शेष अन्य तिथियों में अर्घ्य चौपटिया देकर सूर्य-गमन में प्रारम्भ करे।

मिश्रण में गणीपद ( आचार्य ), वाचक पद ( उपाध्याय ) अथवा पत्नी दीक्षा देने के शुभ प्रयोग में दो षोडश, दो अष्ट, दो अष्टमी, दो नवमी, दो चारस, दो चउदश, पूर्णिमा, तथा अमावस्या आदि चौदह विधियां निषेध हैं। इन के सिवाय की अन्य तिथि अथवा वार, नक्षत्र योग्य है। ऐसे काल के लिए गणी विधि प्रकरणग्रंथ का न्याय है। अष्टमी को प्रारम्भ करने पर पढ़ाने वाला मरे अथवा विधोक्त पद अमावस्या के दिन प्रारम्भ करने पर दोनों मरे और एकम के दिन प्रारम्भ करने में विद्या की नास्ति हों। ऐसा समझ कर निविहार नक्षत्र चौपटिया देकर गुरु सम्बुद्ध ज्ञान लेना चाहिये। यदयेय वा हारण है।

ॐ इति नक्षत्र और विदेश गमन सम्पूर्ण ॐ

## ❀ पांच देव ❀

( भगवती सूत्र, शतक १२ उद्देश ६ )

गाथा

नाम गुण उवाए, ठी वीयु चवण संचीठणा,  
अन्तर अण्णा बहुयं च, नव भए देव दाराए ।१।

१ नाम द्वार, २ गुण द्वार, ३ उववाय द्वार  
४. स्थिते द्वार ५ अद्वि तथा विक्रवणा द्वार ६ चवत द्वार  
७ संचिठण द्वार ८ अन्तर द्वार ९ अण्ण बहुत्व द्वार ।

१ नाम द्वार:-१ भवि द्रव्य देव २ नर देव ३ धर्म  
देव ४ देवाधि देव ५ भाव देव ।

२ गुण द्वार:-मनुष्य तथा तिर्यच पंचेन्द्रिय में से  
जो देवता में उत्पन्न होने वाले हैं उन्हें भवि द्रव्य देव  
कहते हैं २ चक्रवर्ती की अद्वि भोगने वालों को नर देव  
कहते हैं ।

चक्रवर्ती की रिद्धि का वर्णन—

नव निधान, चौदह रत्न, चौगसी लाख हाथों,  
चौरासी लाख घोड़े, चौगसी लाख गध, छन्दु क्रोड़ पाय-  
दल, बत्तीश हजार मुकुट बन्ध राजे, बत्तीश हजार मामा-  
निक राजे, मोलड़ हजार देवता नेवर, चौपठ हजार स्त्री,  
तीन में साठ रमोइये, बत्तीश हजार मोना के अंग अदि

३ धर्म देव के गुणः—आठ प्रवचन माता का सेवन करने वाले, नववाङ्ग विशुद्ध ब्रह्मचर्य का पालन करने वाले, दशविध यति धर्म का पालन करने वाले, बारह प्रकार की तपस्या करने वाले, सतरह प्रकार के संयम का आचरण करने वाले, बाबीस परिपह को सदन करने वाले, मचावीश गुण सहित, तैतीश अशातना के टालने वाले, छन्दु दोष रहित आहार पानी लेने वाले, को धर्म देव कहते हैं ।

४ देवाधिदेव के गुणः—चौतीश अतिशय सहित विराजमान पैंतीश वचन ( वाणी ) के गुण सहित, चौसठ इन्द्र के द्वाग पूज्यनीक, एक हजार और अष्ट उच्च लक्षण के धारक अठारह दोष रहित व बारह गुणों सहित होते हैं उन्हें देवाधि देव कहते हैं । अठारह दोषों के नामः—१ अज्ञान २ क्रोध ३ मद ४ मान ५ माया ६ लोभ ७ रति ८ अरति ९ निद्रा १० शोक ११ असत्य १२ चोरी १३ भय १४ प्राणिवध १५ मत्सर १६ राग १७ क्रीड़ा-प्रसंग १८ हास्य । १२ गुणों के नामः—१ जहां २ भगवन्त खड़े रहें, बैठें समोसरे वहां २ दश बोलों के साथ भगवन्त से बारह गुणा ऊंचा तत्काल अशोक वृक्ष उत्पन्न हो जाता है और भगवन्त के मस्तक पर छाया करता है । २ भगवन्त जहां २ समोसरे वहां २ पांच वर्ष के अचेत फूलों की वृष्टि होती है जो गिरकर घुटने के बराबर डेर लगा देते हैं । ३ भगवन्त की योजना पर्यन्त वाणी फैल कर सबों के



न्द्रिय और संज्ञी मनुष्य इन दो स्थान के आकर उत्पन्न होते हैं ।

४ स्थिति द्वारः—१ भविद्रव्य देवकी स्थिति जषन्य अन्तर्गृहर्त की उत्कृष्ट तीन पन्थ की । २ नर देव की जषन्य सातसौ वर्ष की उत्कृष्ट चौराथी लक्ष पूर्व की ३ धर्म देव की जषन्य अन्तर्गृहर्त की उत्कृष्ट देश उणी (न्यून) पूरे क्रोड़ की ४ देवाधि देव की जषन्य ७२ वर्ष की उत्कृष्ट ८४ लक्ष पूर्व की ५ भावदेव की जषन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्ट ३३ सामरोपम की ।

५ श्रद्धि तथा विकृषणा द्वारः—भवि द्रव्य देव में जिन्हें वैकृष्य उत्पन्न होते वो, नर देव को तो होती ही है, धर्म देव में मे जिन्हें होते वो और भाव देव के वो होती ही है एवं ये चारों वैकृष्य रूप करें तो जषन्य १, २, ३, उत्कृष्ट संख्याता रूप करें, शक्ति तो असंख्याता रूप करने की है । परन्तु कर नहीं देसाधि देव की शक्ति अत्यन्त है परन्तु कर नहीं ।

६ वचन द्वारः—१ भवि द्रव्य देव नर कर देखा होते २ नर देव नर कर नरक जाते ३ धर्म देव नर कर देसाधि देव में तथा मोक्ष में जाते ४ देसाधि देव मोक्ष में जाते ५ भाव देव नर कर पृथ्वी मर, वनस्तानि वादा में और वनं ननुष्य निर्जन में जाते ।

७ संनिरुपणा द्वारः—संनिरुपणा अर्थानु क्या ? देव



का देवपने रहे तो कितने काल तक रह सकता है । भवि द्रव्य देव की संचिठणा जघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्ट ३ पन्थोपम की । नर देव की जघन्य सातसो वर्ष की उत्कृष्ट २४ लक्ष पूर्व की । धर्म देव की परिणाम आश्री एक समय प्रवर्तन आश्री जघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्ट देश उणी पूर्व क्रोड़ की देवाधि देव की जघन्य ७२ वर्ष की उत्कृष्ट २४ लक्ष पूर्व की । भाव देव की जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्ट ३३ सागरोपम की ।

२ अन्तर द्वारः—भवि द्रव्य देव में अन्तर पड़े तो जघन्य दश हजार वर्ष और अन्तर्मुहूर्त अधिक । उत्कृष्ट अनन्त काल का । नर देव में जघन्य एक सागर जाजेरा उत्कृष्ट अर्ध पुद्गल परावर्तन में देश न्यून धर्म देव में अन्तर पड़े तो जघन्य दो पन्थ जाजेरा उत्कृष्ट अर्ध पुद्गल परावर्तन में देश न्यून । देवाधि देव में अन्तर नहीं पड़े भाव देव में अन्तर जघन्य अन्तर्मुहूर्त का उत्कृष्ट अनन्त काल का ।

६ अल्प बहुत्व द्वारः—१ सर्व से कम नर देव २ उनसे देवाधि देव संख्यात गुणा ३ उनसे धर्म देव संख्यात गुणा ४ उनसे भवि द्रव्य देव असंख्यात गुणा और ५ उनसे भाव देव असंख्यात गुणा ।

॥ इति पांच देव का धोकड़ा सम्पूर्ण ॥

## ॐ आराधिक विराधिक ॐ

( श्री भगवतीजी सूत्र, शतक पहला, उद्देश दूसरा )

१ असंजति भव्य द्रव्यदेव जघन्य भवनपति उत्कृष्ट नव ग्रीयवेक तक जावे ।

२ आराधिक साधु जघन्य पहले देवलोक तक उत्कृष्ट सर्वार्थ सिद्ध विमान तक जावे ।

३ विराधिक साधु ज० भवन पति उत्कृष्ट पहले देवलोक तक जावे ।

४ आराधिक थावक जघन्य पहले देवलोक तक उत्कृष्ट चारहवें देवलोक तक जावे ।

५ विराधिक थावक जघन्य भवनपति उत्कृष्ट ज्योतिषी तक जावे ।

६ असंजति तिर्यंच ज० भवनपति उत्कृष्ट वाण व्यन्तर तक जावे ।

७ तापस के मतवाले ज० भवनपति उत्कृष्ट ज्योतिषी तक जावे ।

८ कंदर्पीया साधु जघन्य भवनपति उत्कृष्ट पहला देवलोक तक जावे ।

९ श्रवण सन्यासी के मतवाले जघन्य भवनपति उत्कृष्ट पाँचवें देवलोक तक जावे ।



## ❀ तीन जाग्रिका ( जागरण ) ❀

श्री वीर भगवन्त को गौतम स्वामी पूछने लगे कि हे भगवन् ! जाग्रिका कितने प्रकार की होती है ?

भगवान्—हे गौतम ! जाग्रिका तीन प्रकार की होती है १ धर्म जागरण २ अधर्म जागरण ३ मुदसु जागरण ।

१ धर्म जागरण के चार भेद—१ आचार धर्म २ क्रिया धर्म ३ दया धर्म ४ स्वभाव धर्म ।

१ आचार धर्म के पांच भेदः—१ ज्ञानाचार २ दर्शनाचार ३ चारित्राचार ४ तपाचार ५ वीर्याचार इन में से ज्ञानाचार के ८ भेद, दर्शनाचार के ८ भेद, चारित्राचार के ८ भेद, तपाचार के १२ भेद, वीर्याचार के ३ भेद एवं ३६ भेद हुवे ।

१ ज्ञानाचार के ८ भेद—१ ज्ञान सीखने के समय ज्ञान सीखे २ ज्ञान लेने के समय विनय करे ३ ज्ञान का बहु मान करे ४ ज्ञान पढने के समय यथा शक्ति तप करे ५ अर्थ तथा गुरु को गोपे ( छिपावे ) नहीं, ६ अक्षर शुद्ध ७ अर्थ शुद्ध ८ अक्षर और अर्थ दोनों शुद्ध ।

२ दर्शनाचार के ८ भेदः—१ जैन धर्म में श्रद्धा हीं करे २ पाखण्ड धर्म की वांड्या नहीं करे ३ करणी के ल में संदेह नहीं रखे ४ पाखण्डों के आडम्बर देख कर



साधु की चारह पांडिमा, ५ पांच इन्द्रिय निग्रह, २५ प्रकार की पढीलेहना, ३ गुप्ति, ४ अग्निग्रह एवं ७० ।

३ दया धर्म के आठ भेदः—१ स्वदया अर्थात् अपनी आत्मा को पाप से बचावे २ पर दया याने अन्य जीवों की रक्षा करे ३ द्रव्य दया याने देखा देखी दया पाले अथवा लज्जा से जीव की रक्षा करे तथा कुल आचार से दया पाले ४ भाव दया अर्थात् ज्ञान के द्वारा जीव को आत्मा जान कर उस पर अनुकम्पा लावे व दया लाकर जीव की रक्षा करे ५ व्यवहार दया भावक को जैसी दया पालने के लिए कहा है वो पाले घर के अनेक काम काज करने के समय यतना रखे ६ निश्चय दया याने अपनी आत्मा को कर्म बन्ध से छुड़ावे । विवेचनः—पुद्गल पर वस्तु है । इनके ऊपर से ममता हटा कर उसका परिषय छोड़े, अपने आत्मिक गुण में लीन रहे, जीव का कर्म रहित शुद्ध स्वरूप प्रगट करे, यह निश्चय दया है । चौदह गुणस्थानक के अन्त में यह दया पाई जाती है । ७ स्वरूप दया अर्थात् किसी जीव को मारने के लिये उसे ( जीव को ) पहिले अच्छी तरह से खिलाते हैं व शरीर पुष्ट करते हैं, सार संभाल लेते हैं । यह दया ऊपर की तथा दीखावा मात्र है । परन्तु पीछे से उस जीव को मारने के परिणाम है । यह उचराध्ययन सूत्र के सातवें अध्ययन में चकरे के अधिकार से समझना ।



चतुर्दश की जाग्रिता । यह भावक को होती है कारण कि सम्यक् ज्ञान, दर्शन मदिन धन कुटुम्बादिह तथा विषय कषाय को साराव जानता है । देख से निवृत्त हुआ है, उदय भाव से उदासीन पने है, तीन मनोरथ का निवृत्त करता है । इसे हृदय जाग्रिता करते हैं ।

॥ इति तीन जाग्रिता संपूर्ण ॥







## ॐ अवधि पद ॐ

( सूत्र श्री पद्मवर्णाजी पद तंतीशवां )

इसके दश द्वार-१ भेद द्वार २ विषय द्वार ३ संठाण द्वार ४ ग्राम्पन्तर और बाह्य द्वार ५ देश धरती व सर्व धरती ६ अनुगामी ७ शायमान वर्धमान ८ अवधीया ९ पड़वाई १० अपड़वाई ।

१ भेद द्वार-नेरिये व देव भव प्रत्ये देखे अर्थात् उत्पन्न होने के समय से ही उन्हें अवधि ज्ञान होता है तिर्यंच व मनुष्य त्रयोपशम भाव से देखे ।

२ विषय द्वारः—पहेली नरक का नेरिया जघन्य साढ़े तीन गाउ देखे उत्कृष्ट चार गाउ, दूसरी नरक का नेरिया जघन्य तीन गाउ उत्कृष्ट साढ़े तीन गाउ, तीसरी नरक का नेरिया जघन्य अढ़ाई गाउ उत्कृष्ट तीन गाउ, चौथी नरक का नेरिया जघन्य दो गाउ उत्कृष्ट अढ़ाई गाउ, पांचवी नरक का जघन्य डेढ गाउ उत्कृष्ट दो गाउ, छठी नरक का जघन्य एक गाउ उत्कृष्ट डेढ गाउ, सातवीं नरक का जघन्य आधा गाउ उत्कृष्ट एक गाउ देखे । भवन पति जघन्य पचाश योजन तक देखे उत्कृष्ट तीन प्रकार से देखे ऊंचा-पहेले दूमेरे देवलोक तक, नीचे-तीसरी नरक के तले तक और तीर्छा-पल के आयुष्य वाले संख्यात द्वीप समुद्र देखे व सागर के आयुष्य वाले असं-



देवता के देवता मृदंग के आकार वत् देते, नखरीपरक के देवता फूलों की चंगेरी समान देते, और मनुष्य विमान के देवता कुंजारी कन्या की कंचुकी समान देते ।

४ आभ्यन्तर-बाह्य द्वार—तिर्यच व देव आभ्यन्तर देखे, तिर्यच बाह्य देखे मनुष्य आभ्यन्तर और व द दोनों देखे काण्य कि तीर्थरुतों में अवधि ज्ञान जन्म से ही होता है ।

५ देश और सर्व धकी—नारकी, देवता और तिर्यच देश धकी और मनुष्य सर्व धकी ।

६ अनुगामी और अनानुगामी—नारकी देवता का अवधि ज्ञान अनुगामी ( अर्थात् माथ २ रहने वाला ) अवधि ज्ञान होता है । तिर्यच और मनुष्य का अनुगामी तथा अनानुगामी दोनों प्रकार का होता है ।

७ हायमान वर्धमान और अघठिया द्वारः—नारकी देवता का अवधि ज्ञान अघठीया होते ( न तो पटे और न पडे, उतना ही रहता है ) मनुष्य और तिर्यच का हायमान, वर्धमान तथा अघठीया एवं तीनों प्रकार का अवधि ज्ञान होता है ।

६-१० पड़वाई और अपड़वाई द्वारः—नारकी देवता का अवधि ज्ञान अपड़वाई होता है और मनुष्य व तिर्यच का अवधि ज्ञान पड़वाई तथा अपड़वाई दोनों प्रकार का होता है ।

॥ इति अवधि पद सम्पूर्ण ॥



जाति सरस्वादि क ज्ञान से श्रुत सहित चारित्र्य धर्म करने की रुचि उपजे इसे निसर्ग रुई कहते हैं ।

३ सूक्त रुई—इसके दो भेद— १ अंग पविठ । २ अंग बाहिर । आचारांगादि १२ अंग अंगपविठ इनमें से ११ अंग कालिक और बारहवां अंग दार्ष्टवाद यह उत्कालिक । अंग बाहिर के दो भेद—१ आवश्यक २ आवश्यक व्यतिरिक्त । आवश्यक—सामायकादिक छ अध्ययन उत्कालिक तथा उचराध्ययनादिक कालिक सूत्र । उचवाई प्रमुख उत्कालिक सूत्र सुनने की तथा पढ़ने की रुचि उत्पन्न होने उसे सूत्र रुचि कहते हैं ।

४ उचयसरुई—मज्जान द्वारा उपात्रित कर्मों को ज्ञान द्वारा खपावे, ज्ञान से नये कर्म न बान्धे, मिथ्यात्व द्वारा उपात्रित कर्मों को समकित द्वारा खपावे, समकित के द्वारा नवीन कर्म नहीं बान्धे । अग्रत से कन्धे हुवे कर्मों को व्रत द्वारा खपावे व व्रत से नये कर्म न बान्धे । प्रमाद द्वारा उपात्रित कर्मों को अग्रमाद से खपावे और अग्रमाद के द्वारा नये कर्म न बान्धे । कषाय द्वारा कन्धे हुवे कर्मों को अरुपाय द्वारा खपावे व अरुपाय के द्वारा नये कर्म न बान्धे । अशुभ योग से उपात्रित कर्मों को शुभ योग से खपावे व शुभ योग के द्वारा नये कर्म न बान्धे । पाँच शब्दों के अर्थ रूप अर्थवत् से उपात्रित कर्म नये रूप संवर

“ अर्थवत् अर्थ नये रूप संवर से नवीन कर्म न बान्धे,

अतः अज्ञानादिक आश्रय मार्ग का त्याग करके ज्ञानादिक संवर मार्ग का आराधन करें एवं तीर्थंकरों का उपदेश सुनने की रुचि उपजे । इसे उपदेश रुचि ( उवएस रुचि ) तथा उगाढ रुचि भी कहते हैं ।

धर्म ध्यान के चार अवलम्बन-वायणा, पूछणा, परिचट्टणा और धर्म कथा ।

१ वायणा-विनय सहित ज्ञान तथा निर्जरा के निमित्त सूत्र के व अर्थ के ज्ञाता गुर्वादिक के समीप सूत्र तथा अर्थ की वाचनी लेवे उसे वायणा कहते हैं ।

२ पूछणा-अपूर्व ज्ञान प्राप्त करने के लिए तथा जैन मत दीपाने के लिए, संदेह दूर करने लिए अथवा अन्य की परीक्षा के लिए यथा योग्य विनय सहित गुर्वादिक से प्रश्न पूछे उसे पूछणा कहते हैं ।

३ परिचट्टणा-पूर्व पठित जिन भाषित सूत्र व अर्थों को अस्खलित करने के लिए तथा निर्जरा निमित्त शुद्ध उपयोग सहित शुद्ध अर्थ व सूत्र की चारंचार स्वाध्याय करे उसे परिचट्टणा कहते हैं ।

४ धर्म कथा-जैसे भाव वीतराग ने परूपे हैं वैसे ही भाव मयं अंगीकार करके विशेष निश्चय पूर्वक शङ्का, कंखा, विनिगच्छा रहित अपनी निर्जरा के लिए व पर-उपकार निमित्त सभा के अन्दर वे भाव वैसे ही परूपे, उसे धर्म कथा कहते हैं । इस प्रकार की धर्म कथा कहने वाले तथा

शक्तिवन्त इन्द्रादिक लोक पाल प्रमुख रूपवान देदीप्य-  
वान् वंछित भोग संयोग में प्रवर्त हुआ जवन्य १० हजार  
वर्ष उत्कृष्ट ३१ सागरोपम एवं अनन्ती वार भोगा । इन्द्र  
महाराज के रूप में एक भव के अन्दर ७ पन्योपम की  
देवी, बावीश क्रोड़ा क्रोड़, पिच्चाशी लाख क्रोड़, एकीचर  
हजार क्रोड़, चार से अठावीश क्रोड़, सचावन लाख  
चौदह हजार दोसो अठ्याशी ऊपर पांच पन्य की ८  
इतनी देवियों के साथ भोग करने पर भी तृप्ति न हुई ।  
मनुष्य के अन्दर स्त्री पुरुष रूप में हुआ । देव कुरू उचर  
कुरू के अन्दर युगल युगलानी हुआ जहां महामनोहर रूप  
मनवंछित सुख भोगे । दश प्रकार के कल्प वृक्षों से सुख  
भोगे । स्त्री पुरुष का क्षण मात्र के लिये भी वियोग नहीं  
पड़ा । ३ पन्योपम तक निरन्तर सुख भोगे । हरिवास रम्यक  
वास में २ पन्योपम, हेमवय हिरण्य वय क्षेत्र के अन्दर  
१ पन्य तक, छप्पन अन्तरदीपा के अन्दर पल्योपम का  
असंखपातर्वा भाग, युगल युगलानी रूप में अनन्ती वार  
स्त्री पुरुष के रूप में खेला परन्तु आत्म तृप्ति नहीं हुई ।  
चक्रवर्ती के घर स्त्री रत्न के रंर में लक्ष्मी समान रूप  
अनन्ती वार यह जीव पाकर खेला, परन्तु तृप्त नहीं हुआ ।  
वासुदेव भंडलीक राजा व प्रधान व्यवहारीया के घर स्त्री  
रूप में मनोज्ञ सुखों में पूर्व क्रोडादिक के आयुष्य पने  
प्रवर्त हुआ । यही जीव मनुष्य के अन्दर कुरुपवान, दुर्भागी



नीच कुल, दारद्री भर्तार को स्त्री रूप में, अलक्ष रुद्र दुर्भागिणी पने और नट पने प्रवर्त हुआ । तोंभो मनुष्य पने स्त्री पुरुष के अवतार पूरे नहीं हुवे । तिर्यच पंचन्द्रिय जलचरादि के अन्दर स्त्री वेद से प्रवर्त हुआ । वो जीव सात नरक में, पांच एकेन्द्रिय में, तीन विकलेन्द्रिय तथा असंज्ञी तिर्यच मनुष्य के अन्दर नियमा नपुंसक वेद से तथा संज्ञी तिर्यच मनुष्य के अन्दर भी जीव नपुंसक वेद से प्रवर्त हुआ परमार्थे लागठ स्त्री वेद से प्रवर्त हुआ । उत्कृष्ट ११० पन्थ और पृथक् पूर्व क्रोढ़ तक स्त्री वेद में खेला जघन्य आयुष्य भोगने के आधी अन्तर्मुहूर्त, पुरुष वेद में उत्कृष्ट पृथक् सो सागर जात्रा तक खेला । जघन्य आयुष्य भोगने के आधी अन्तर्मुहूर्त, नपुंसक वेद उत्कृष्ट अनन्त काल चक्र असंख्यात पुद्गल परावर्तन तक खेला । जहां गया वहां अकेला पुद्गल के संयोग से अनेक रूप परावर्तन किये । यह सर्व रूप व्यवहार नय से जानना । इम प्रकार के परिभ्रमण को मिटाने वाले श्री जैन धर्म के अन्दर शुद्ध श्रद्धा सहित शुद्ध उद्यम पराक्रम करे तब ही आत्मा का साधन होवे व इम समय आत्मा के सिद्ध पद की प्राप्ति होती है । इममें निश्चय नय में एक ही आत्मा जानना चाहिये । जब शुद्ध व्यवहार में प्रवर्त हो कर अशुद्ध व्यवहार को दूर करे तब सिद्ध गति प्राप्त होती है । इम प्रकार की मेरी एक आत्मा है । अपर परिवार स्वार्थ

रूप है । और पतंगता मीसता और बीसता पुद्गल के पर्यव  
करके जैसे स्वभाव में हैं वैसे स्वभाव में नहीं रहते हैं अतः  
अशाश्वत है । इस लिये अपनी आत्मा को अपने कार्य का  
साधक व शाश्वत जानकर अपनी आत्मा का साधन करे ।

२ अणुचक्षुःशुष्पेहा-रूपी पुद्गल की अनेक प्रकार  
से चतन करने पर भी ये अनित्य हैं । नित्य केवल एक  
श्री जैन धर्म परम सुख दायक है । अपनी आत्मा को  
नित्य जान कर समकित्वादि संवर द्वारा पुष्ट करे । यह  
दूसरी अणुशुष्पेहा है ।

३ असरणाणुशुष्पेहा-इस सब के अन्दर व पर लोक  
में जाते हुवे जीव को एक समकित पूर्वक जैन धर्म विना  
जन्म जरा मरण के दुःख दूर करने में अन्य कोई शरण  
समर्थ नहीं ऐसा जान कर श्री जैन धर्म का शरण लेना  
चाहिये जिससे परम सुख की प्राप्ति होवे यह तीसरी  
अणुशुष्पेहा है ।

४ संसाराणुशुष्पेहा-स्वार्थ रूप संसार समुद्र के  
अन्दर जन्म जरा मरण संयोग वियोग शारीरिक मानसिक  
रूप, कषाय मिथ्यात्व, तृष्णाकर अनेक जल कछुलादिक  
दि लहरों से चार गति चौबीस दण्डक के अन्दर  
परिभ्रमण करते हुवे जीव को श्री जैन धर्म रूप द्वीप का  
प्राधार है और संयम रूप नाव को शुद्ध समकित रूप  
नेत्रामक नाविक ( नाव चलाने वाला ) है ऐसी नावों के



## ❀ छ लेख्या ❀

( श्री उत्तराख्यपन सूत्र, ३४ वां अध्ययन )

छ लेख्या के ११ द्वारः—१ नाम २ वर्ण ३ रस ४ गंध ५ स्पर्श ६ परिणाम ७ लक्षण = स्थानक ८ स्थिति ९ गति ११ चवन ।

१ नाम द्वार—१ कृष्ण लेख्या २ नील लेख्या ३ कापोत लेख्या ४ तेजो लेख्या ५ पद्म लेख्या ६ शुक्ल लेख्या ।

२ वर्ण द्वारः—कृष्ण लेख्या का वर्ण जल सहित मेघ समान काला, तथा भँस के सिंग समान काला, अरीठे के बीज समान, गाड़ी के खंजन ( काजली ) समान और आँख की कीकी समान काला । इनसे भी अनंत गुणा काला ।

नील लेख्याः—मशोक घृव, चास पच्ची की पांख और वैदुर्य रत्न से भी अनंत गुणा नीला इस लेख्या का वर्ण होता है ।

कापोत लेख्या—अलशी के फूल, कोयल की पांख, क्यूतर की गर्दन कुछ लाल कुछ काली आदि । इनसे भी अनंत गुणा अधिक कापोत लेख्या का वर्ण होता है ।

तेजो लेख्या—उगता हुआ सूर्य, तोते की चोंच,



४ गंध द्वार-गाय, कुचा, सर्पे आदि के मूत्र से भी अनन्त गुणी अधिक अप्रशस्त गन्ध प्रथम तीन-लेरया की होती है । कपूर, केवड़ा, प्रमुख घोटने के समय जैसी सुगन्ध निकलती है उस से भी अनन्त गुणी अधिक प्रशस्त सुगन्ध पिछती लेरयाओं की होती है ।

५ स्पर्श द्वार-करवत की घार, गाय की जीम, मुँह ( ज ) का तथा वांस का पान, आदि से भी अनन्त गुणा लक्षण अप्रशस्त लेरया का स्पर्श होता है युर नामक वनस्पति, मक्खन, सरसव के फूल व मखमल से भी अनन्त गुणा अधिक कोमल प्रशस्त लेरयाओं का स्पर्श होता है ।

६ परिणाम द्वार-लेरया तीन प्रकारे प्रथम-जघन्य, मध्यम, और उत्कृष्ट तथा नव प्रकारे परिणामे ऊपर के तीन प्रकार के पुनः एक एक के तीन भेद होते हैं जैसे जघन्य का जघन्य, जघन्य का मध्यम, और जघन्य का उत्कृष्ट एवं इरेक के तीन तीन करते नव भेद हुवे । ऐसे ही नव के सचाशीश, सचाशीश के एकाशी और एकाशी के दो सौ तैवालीश भेद होते हैं । इतने भेदों से लेरया परिणमती है ।

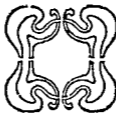
७ लक्षण द्वारः-कृष्ण लेरया के लक्षण-पांच-भाध्व का सेवन करने वाला, अगुप्तिवन्त, अकाय जीव का हिंसक, आरम्भ का तीव्र परिणामी व ड्रेपी, पाप करने में साह-

सिकु, निष्ठुर परिणामी, जीव हिंसा, सुग्या रहित करने वाला और अजितेन्द्री आदि लक्षण कृष्ण लेश्या के हैं। नील लेश्या के लक्षणः—ईर्ष्यावन्त, अमृपावन्त, तप रहित, मायावी पाप करने में शर्मायें नहीं, गृही, धूनारा, प्रमादी रस-लोलुपी, माया का गवेपी, आरंभ का अत्यागी, पाप के अन्दर साहसिक ये लक्षण नील लेश्या के हैं। कापोत लेश्या के लक्षणः—वक्र भापी, वक्र कार्य करने वाला, माया करके प्रसन्न होवे, सरलता रहित, मुँह पर कुङ्कु और पीठ पीछे कुङ्कु, मिथ्या व मृपा भापी, चोरी मत्सर का करने वाला, आदि। तेजो लेश्या के लक्षणः—मर्यादा वन्त, माया रहित, चलता रहित, कुतुहल रहित, विनय वन्त, जितेन्द्री, शुभ योग वन्त, उपध्यान तप सहित, दृढ धर्मी, प्रिय धर्मी, पार-से डरने वाला आदि। पद्म लेश्या के लक्षणः—क्रोध मान माया लोभ को जितने पतले ( कम ) किये हैं, प्रगांत चित्त, आत्म निग्रही, योग उपध्यान सहित, अल्प भापी, उपगांत, जितेन्द्री। शुक्ल लेश्या के लक्षणः—आर्त्त ध्यान, रौद्र ध्यान, से सर्वथा रहित, धर्म ध्यान, शुक्ल ध्यान सहित, दश प्रकार की चित्त समाधि सहित, आत्मनिग्रही, आदि।

२ लेश्या स्थानक द्वारः—असंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणी के जितने समय होते हैं तथा असंख्यात लोक के जितने आकाश प्रदेश होते हैं उनमें लेश्या के स्थानक जानना।

परिणमते समय कोई जीव उपजता व चवता नहीं तथा  
 लेश्या के अन्त समय में कोई जीव उपजता व चवता  
 नहीं । परभव में कैसे चवे ? इसका घर्षण-लेश्या 'पर  
 मव की आई हुई अन्तर्दूर्हत गये बाद शेष अन्तर्दूर्हत  
 आयुष्य में बाकी रहने पर जीव परमव के अन्दर जावे ।

॥ इति श्री लेश्या का थोकड़ा सम्पूर्ण ॥







बहुत्वः--सर्व से कम मिश्र योनीया--उपसे अचेत योनीया  
 अक्षररूपात गुणा और उस से सचित योनीया अनन्त गुणा ।  
 योनी तीन प्रकार की--संबुद्धा वियद्धा और संबुद्धावियद्धा  
 संबुद्धा अर्थात् ढंकी हुई वियद्धा याने सुती ( उघाड़ी )  
 हुई और संबुद्धा वियद्धा याने कुछ ढंकी हुई और कुछ  
 सुती हुई पांच स्थावर देवता और नारकी की योनी एक  
 संबुद्धा, तीन विकलेन्द्रिय, समुच्चय तिर्यच और मनुष्य में  
 तीनों ही योनी पावे । संज्ञी तिर्यच और संज्ञी मनुष्य में  
 योनी एक संबुद्धावियद्धा । इनका अन्त बहुत्व सर्व से कम  
 संबुद्धा वियद्धा उनसे वियद्धा योनीया अक्षररूपात गुणा ।  
 उनसे अपोनीया अनन्त गुणा । उनसे संबुद्धा योनीया  
 अनन्त गुणा । योनी तीन प्रकार की है--संज्ञा अर्थात्  
 शंख के आकार समान । कच्छा याने कछुए के आकार  
 समान और चंश पचा कहता वांस के पत्र के समान ।  
 चक्रवर्ती की स्त्री रत्न की योनी शंख पत्र । ऐसी योनी  
 वाली स्त्री के संतान नहीं होती है ५४ सत्ताखा पृष्ठा की  
 माता की योनी काचये ( कछुवा ) के आकार समान  
 होवे और सर्व मनुष्यों की माता की योनी वांस के पत्र  
 के आकार समान होती है ।

❁ इति श्री योनी पद सम्पूर्ण ❁







१. आत्मा का साक्षी	आँसु के पौरुष	आँसु के गुण	पंद्रह योग	बारह उपयोग	छे लैरपासों
२. प्रकाश ब्रह्म	भेद में से	स्थानक में से	में से	में से	में से
३. प्रथम आत्मा में	समुच्चय १४	समुच्चय १४ गुण	समुच्चय १२	समुच्चय १२	मसुच्चय ९
४. कथाव आत्मा में	भेद पाठ	स्थानक पाठ	योग पाठ	उपयोग पाठ	लैरया
	१४ पाठ	प्रथम १० गुण स्थान	१२ पाठ	केवल ज्ञान व केवल	९ लैरया
५. बाह्य आत्मा में	१४ पाठ	पंचमे से सोड गुण	१२ पाठ	वर्तनघोड़, शेष १० पाठ	९ लैरया
६. प्रथम आत्मा में	१४ पाठ	स्थानक तक पाठ		१२ पाठ	९ लैरया
७. ज्ञान आत्मा में	१. विकलेन्द्रिय	१४ गुण स्थानक	१२ पाठ	१२ उपयोग पाठ	९ लैरया
	असही करबौला और	पौखा और हाँसरा	१२ पाठ	तौन अज्ञान घोड़ नव	९ लैरया
	सही के दो एवं ९	घोड़ कर शेष १२		उपयोग पाठ	
८. प्रथम आत्मा में	१४ पाठ	गुण पाठ	१२ प ठे	१२ उपयोग पाठ	९ लैरया
९. अतीत आत्मा में	१ सही का वर्णन पाठ	प्रथम पाठ घोड़	१२ पाठ	१ अज्ञान घोड़ शेष	९ लैरया
		शेष नव पाठ		नव उपयोग	
१०. शीर्ष आत्मा में	१४ पाठ	१४ पाठ	१२ पाठ	१२ उपयोग पाठ	९ लैरया

ॐ इति आठ आत्मा का विचार सम्पूर्ण ॐ

ॐ १५०८



करे (२) सिद्ध का विनय करे (३) आचार्य का विनय करे (४) उपाध्याय का विनय करे (५) स्वधिर का विनय करे (६) गण ( बहुत आचार्यों का समूह ) का विनय करे (७) कुल ( बहुत आचार्यों के शिष्यों का समूह ) का विनय करे (८) स्वधर्मों का विनय करे (९) संघ का विनय करे (१०) संभोगी का विनय करे एवं दस का बहुत मान पूर्वक विनय करे जैन शासन में विनय मूल धर्म कइते हैं। विनय करने से अनेक सद्गुणों की प्राप्ति होती है।

(४) शुद्धता के तीन भेदः—(१) मन शुद्धता मन से अरिहंत-देव-कि जो ३४ अतिराय, ३५ वाणी, ८ महा प्रति हार्य सहित, १८ दूषण रहित १२ गुण सहित हैं वे ही अमर देव व सचे देव हैं। इनके सिवाय हजारों कष्ट पड़े तो भी सरागी देवों को मनसे स्मरण नहीं करे (२) वचन-शुद्धता-वचन से गुण कीर्तन ऐसे अरिहंत देव के करे व इनके सिवाय सरागी देवों का नहीं करे। (३) काया शुद्धता-काया से अरिहंत सिवाय अन्य सरागी देवों को नमस्कार नहीं करे।

५ लक्षण के पांच भेदः—(१) सम, शत्रु भिन्न पर समभाव रखे (२) संवेग-वैराग्य भाव रखे और संसार असार है, विपय व कषाय से अनन्त काल पर्यन्त भंग प्रमण्य होता है, इस भव में अच्छी सामग्री मिली है अतः इस का आराधन करना चाहिये, इत्यादि नित्य चिंतन





सन्देह करे इसका फल होवेगा या नहीं ? वर्तमान में तो कुछ फल नजर नहीं आता आदि इस प्रकार का सन्देह करे (४) पर पाखण्डी से नित्य परिचय रखे (५) पर-पाखण्डियों की प्रशंसा करे । एवं समकित के पांच दृश्यों को अवश्य दूर करना चाहिये ।

(८) प्रभावना = (१) जिस काल में जितने सूत्र होते हैं उन्हें गुरु गम से जाने यह शासन का प्रभावक बनता है (२) बड़े आडम्बर से धर्म कथा व्याख्यान आदि के द्वारा शासन के ज्ञान की प्रभावना करे (३) महान विकट तथ्यवा करके शासन की प्रभावना करे (४) तीन काल अथवा तीन मत का ज्ञाता होवे (५) तर्क, वितर्क, हेतु, वाद, युक्ति, न्याय तथा विद्यादि बल से वादियों को शास्त्रार्थ में पराजय करके शासन की प्रभावना करे (६) पुरुषार्थी पुरुष दीक्षा लेकर शासन की प्रभावना करे (७) कविता करने की शक्ति होवे तो कविता करके शासन की प्रभावना करे (८) ब्रह्मचर्य आदि कोई बड़ा व्रत लेना होवे तो बहुत से मनुष्यों की सभा में लेवे कारण कि इससे लोकों को शासन पर भ्रष्टा अथवा व्रतादि लेने की रुचि बड़े । अथवा दुर्बल स्वधर्मी माइयों को महायता करे । यह भी एक प्रकार की प्रभावना है परन्तु आजकल चाँसामे में अमन्य वस्तु की अथवा तद् आदि की प्रभावना करते हैं । दीर्घ दृष्टि से विचार करने योग्य है कि इस प्रभावना से क्या



## गाथा

जीव गहनद्विष काए जोए वेद कसाय लेसाय ।

सम्मत एण दंसण संयम उचओग भाहारे ॥१॥

भासगयं परित्त पज्जत्त सुहम सत्तो भवत्ति ।

परिभेग एतेसित पदाणं कायडिई दोइ ष्यापव्या ॥२॥

क्रम मार्गणा जपन्य कायस्थिति उत्कृष्टं कायस्थिति

१ समुद्रवय जीरही	शाश्वता	शाश्वता
२ नाही की	१० हजार वर्ष	३३ सागरोपम
३ देता की	"	"
४ देी की	"	५५ पलही
५ निर्देव की	मन्तर्मुहूर्त	मन्तव काल (वन)
६ निर्देवशी की	"	३५न्य भीर म० कोइ पूर्
७ मनुष्य की	"	" "
८ मनुष्यनी की	"	" "
९ निद्र नमरान् की	शाश्वता	शाश्वता
१० अथवा ना ही की	मन्तर्मुहूर्त	मन्तर्मुहूर्त
११ " देता की	"	"
१२ " देी की	"	"
१३ " निर्देव की	"	"
१४ " निर्देवनी की	"	"

१५	"	मनुष्य की	"	"
१६	"	मनुष्यनी की	"	"
१७	पर्याप्ताना	की	१० हजार वर्ष	३३ सागर में अनन्त में अंतर्मुहूर्त न्यून मुहूर्त न्यून
१८	"	देवता	"	भव स्थिति में "
१९	"	देवी	"	५५ पक्ष में "
२०	"	तिर्यच	अन्तर्मुहूर्त	३ पक्ष में "
२१	"	तिर्यचनी	"	" "
२२	"	मनुष्य	"	" "
२३	"	मनुष्यनी	"	" "
२४	महन्द्रिय		०	अनादि अनन्त अना.सा
२५	एकेन्द्रिय		अंतर्मुहूर्त	अनन्त काल ( वन )
२६	द्वेन्द्रिय		"	संख्यात वर्ष
२७	तेन्द्रिय		"	"
२८	चतुष्टन्द्रिय		"	"
२९	पंचेन्द्रिय		"	१००० सागर साधि
३०	अनिन्द्रिय		०	सादि अनन्त
३१	तत्कार्या		०	अ० अंत०, अ० सां०
३२	पृथ्वी काय		अन्तर्मुहूर्त	असंख्यात काल
३३	अर		"	"
३४	अर		"	"

३५ वाउ काय	अन्तर्मुहूर्त	असंख्यात काल
३६ वनस्पति काय	"	अनन्त काल (वन०)
३७ व्रस काय	"	२००० सागर और सं० वर्ष
३८ अकाय	सादि अनन्त	सादि अनन्त ..
३९ से ४५, ३१ ते ३७ का अर्थात्	अन्तर्मुहूर्त	अन्तर्मुहूर्त ..
४६ से ५० ३२ से ३६ का अर्थात्	"	संख्यात वर्ष
५१ सकाय "	"	प्रत्येक सो सागर
५२ व्रस काय अर्थात्	"	" "
५३ समुच्चय बादर	"	असं० काल असं० वि- तने लोकाकाश प्रदेश
५४ बादर वनस्पति	"	"
५५ समुच्चय निगोद	"	अनन्त काल
५६ बादर व्रस काय	"	२००० सागर जालेरी
५७ से ६२ बादर पृ० अ., ते., वा., प., व., वा. निगोद.	"	७० कौड़ा कौड़ा सागर
६३ से ६९ समुच्चय पृथ्वी पृ०, अ०, ते०, वा०, वन०, निगोद	"	असंख्यात काल



११०	नपुंसक वेद	१ समय	अनन्त काल (वन०)
१११	अवेदी	सादि अनन्त सा. सा., ज. १ स. उ.	अं. मु.
११२	सकपायी सादि	अ. अ., अ.	
	सांत	सां.सादि सांत देश न्यून अर्ध पुद्गत	
११३	क्रोध कपायी	अन्तर्मुहूर्त	अन्तर्मुहूर्ते
११४	मान	"	"
११५	माया	"	"
११६	लोभ	१ समय	"
११७	अकपायी	सा. अ., सा. सां, ज. १ समय, उ. अं. पु.	
११८	सलेशी	०	अ. अ. अ. सां.
११९	कृष्ण लेशी	अन्तर्मुहूर्त	१३ सागर अं. मु. म०
१२०	नील	"	१० " पन्थ असं भाग अधिरु
१२१	कपोत	"	३ " "
१२२	तेजो	"	२ " "
१२३	पद्म	"	१० " अं. मु. अधिरु
१२४	शुक्ल	"	३३ " "
१२५	अलेशी	"	सादि अनन्त
१२६	समकित दृष्टि	"	सा. अं, सा. स' ६६ सा. सा
१२७	विध्या	अ. अ., अ. मां,	अनन्त काल



१२८ मिथ्या दृष्टि सादि सांत	अं. पु.	सा. गां, ( अथ. पु. )
१२९ मिथ्र दृष्टि	,,	अं. पु.
१३० चायक समकित	०	सादि अनन्त
१३१ चयोपशम	अं. पु.	६६ सागर अधिक
१३२ सास्त्रादान	१ समय	६ भावलिका
१३३ उपशम	,,	अन्तर्मुहूर्त
१३४ वेदक	,,	,,
१३५ सनायी	अन्तर्मुहूर्त	सा. अ., सा. सा० ६६ सागर
१३६ मति ज्ञानी	,,	६६ सागर अधिक
१३७ श्रुत	,,	,,
१३८ अवधि	१ समय	,,
१३९ मनःपर्यव	,,	देश न्यून फोड़ पूर्व
१४० केवल	०	सादि अनन्त
१४१ अज्ञानी	अ०अ०, अ०सां, सा०सां०की ज० अं०	{ सा० सांत मु० उ० अर्धपु०
१४२ मति अ.		
१४३ श्रुत		
१४४ विभंग ज्ञानी	१ समय	३३ सागर अधिक
१४५ चक्षु दर्शनी	अन्तर्मुहूर्त	प्रत्येक हजार सागर
१४६ अचक्षु	०	अ० अ, अ० सां०
१४७ अवाधि	१ समय	१३२ सागर साधिक

१४८ केवल	०	सादि अनन्त
१४९ संयती	१ समय	देश न्यून क्रोड पूर्व
१५० असंयती	अ० सु०	अ.अ, आंत्., मा.सां.
१५१ „ सादि सांत	„	अनन्त काल (अर्ध पुः)
१५२ संयता संयत	„	देशन्यून क्रोड पूर्व
१५३ नोसंयत नोअसंयत	०	सादि अनन्त
१५४ सामायिक चारित्र	१ समय	देशन्यून क्रोड पूर्व
१५५ छेदोपस्थानीय	„ अन्तर्मुहूर्त	„
१५६ परिहार विशुद्ध	„ १८ माह	„
१५७ सूक्ष्म संपराय	१ समय	अन्तर्मुहूर्त
१५८ यथाख्यात	„	देशन्यून क्रोड पूर्व
१५९ साकार उपयोग	अन्तर्मुहूर्त	अन्तर्मुहूर्त
१६० अनाकार	„	„
१६१ आहारक छयस्व	२ समय न्यून	असंख्यातो काल
१६२ „ केवली	अन्तर्मुहूर्त	देशन्यून क्रोड पूर्व
१६३ अनाहारी छयस्थ	१ समय	२ समय
१६४ „ केवलीसयोगी ३	„	३ „
१६५ „ „ अयोगी ५	हस्त अक्षर	उच्चारण काल
१६६ सिद्ध	०	सादि अनन्त
१६७ भाषक	१ समय	अन्तर्मुहूर्त
१६८ अभाषक सिद्ध	०	सादि अनन्त
१६९ „ समानी	अन्तर्मुहूर्त	अनन्त काल

१७० काय परत	अन्तर्मुहूर्त असं०काल
१७१ संसार परत	" अर्घ पु०
१७२ काय अपरत	" अन०काल(व)
१७३ संसार "	० अ० अ०, इ
१७४ नो परतापरत	० सादि अनन्त
१७५ पर्याप्ता	अन्तर्मुहूर्त प्रत्येक सो सा०
१७६ अपर्याप्ता	" अन्तर्मुहूर्त
१७७ नो पर्याप्तापर्याप्ता	० सादि अनन्त
१७८ सूचन	अन्तर्मुहूर्त असं०काल ( पुढ०
१७९ वादर	" ( लोकाकाश
१८० नो सूचन वादर	० सादि अनन्त
१८१ संज्ञी	अन्तर्मुहूर्त प्र०सो सागर साधिक
१८२ असंज्ञी	" अनन्त काल (वन०)
१८३ नो संज्ञी-असंज्ञी	० सादि अनन्त
१८४ भव सिद्धिया	० अनादि सां
१८५ अभव सिद्धिया	" अनन्त
१८६ नो भव सिद्धिया अनव.भि०	सादि "
१८७ से १८१ पांच अस्ति	० अनादि अनंत
काय स्थित	" नात
१८२ चन	० अ० अ०, ना० अ०
१८३ अवर्ध	

। इति काय स्थिति सन्वय ।

## ❀ योगों का अल्प बहुत्व ❀

( श्री भगवती सूत्र शतक २५ उद्देश्य १ ला में )

: जीव के आत्म बदेतों में अप्यवसाय उत्पन्न होते हैं । अप्यवसाय से जीव शुभाशुभ कर्म ( पुद्गल ) के ग्रहण करता है यह परिणाम है और यह सूक्ष्म है । परिणामों की प्रेरणा से लेश्या होती है । और लेश्या की प्रेरणा से मन, वचन, काय का योग होता है ।

. योग दो प्रकार का १ जघन्य योग:=१४ जीवों के भेद में सामान्य योग संचार २ उत्कृष्ट योग, (तारत्वयता) अनुभार उनका अल्प बहुत्व नीचे अनुप्रार—

( १ ) सर्व से कम सूक्ष्म एकेन्द्रिय का अपर्याप्ता का जघन्य योग उन से

( २ ) वादर एकेन्द्रिय का अपर्याप्ता का ज०योग असं०गुणा॥

( ३ ) वे इन्द्रिय " " " "

( ४ ) त इन्द्रिय " " " "

( ५ ) चौरिन्द्रिय " " " "

( ६ ) असंज्ञी पंचेन्द्रिय का " " " "

( ७ ) संज्ञी " " " "

( ८ ) सूक्ष्म एकेन्द्रिय का पर्याप्ता का " " " "

( ९ ) वादर " " " "

( १० ) सूक्ष्म " अपर्याप्ता का उ० योग " "

( ११ ) वादर	”	”	”	”	”
( १२ ) सूक्ष्म	”	पर्याप्ता का	”	”	”
( १३ ) वादर	”	”	”	”	”
( १४ ) वे इन्द्रिय का	”	त्र० उ० योग	”	”	”
( १५ ) ते इन्द्रिय	”	”	”	”	”
( १६ ) चौरिन्द्रिय का	”	”	”	”	”
( १७ ) असंज्ञी पंचेन्द्रिय का	”	”	”	”	”
( १८ ) संज्ञी	”	”	”	”	”
( १९ ) वेइन्द्रिय का अपर्याप्ता का उ०	”	उ० योग	”	”	”
( २० ) ते इन्द्रिय	”	”	”	”	”
( २१ ) चौरिन्द्रिय का	”	”	”	”	”
( २२ ) असंज्ञी पंचेन्द्रिय का	”	”	”	”	”
( २३ ) संज्ञी	”	”	”	”	”
( २४ ) वे इन्द्रिय का पर्याप्ता का	”	”	”	”	”
( २५ ) ते इन्द्रिय	”	”	”	”	”
( २६ ) चौरिन्द्रिय का	”	”	”	”	”
( ७ ) असंज्ञी पंचेन्द्रिय का	”	”	”	”	”
( २८ ) संज्ञी	”	”	”	”	”

॥ इति योगों का अल्प बहुत्व ॥

## ॐ पुद्गलों का अल्प बहुत्व ॐ

( श्री भगवती जी सूत्र शतक २५ उद्देशा बोधा )

पुद्गल परमाणु, संख्यात प्रदेशी, असंख्यात प्रदेशी और अनन्त प्रदेशी स्कन्धों का द्रव्य, प्रदेश और द्रव्य प्रदेशों का अल्प बहुत्वः—

- (१) सर्व से कम अनन्त प्रदेशी स्कन्ध का द्रव्य, उनमें
- (२) परमाणु पुद्गल का द्रव्य अनन्त गुणा "
- (३) संख्यात प्रदेशी का " संख्यात " "
- (४) असंख्यात " " असंख्यात "

प्रदेशावेद्या अल्प बहुत्व भी ऊपर के द्रव्यान्तः।

द्रव्य और प्रदेश दोनों का एक साथ अल्प बहुत्वः—

- (१) सर्व से कम अनन्त प्रदेशी स्कन्ध का द्रव्य, उनमें
- (२) अनन्त प्रदेशी स्कन्ध का प्रदेश अनन्त गुणा "
- (३) परमाणु पुद्गल का द्रव्य प्रदेश " "
- (४) संख्यात प्रदेशी स्कन्ध का द्रव्य संख्यात गुणा "
- (५) " " " प्रदेश " "
- (६) असंख्यात " " द्रव्य असंख्यात गुणा "
- (७) " " " प्रदेश " "

⊙ क्षेत्रावेद्या अल्प बहुत्व ⊙

- (१) सर्व से कम एक भागात् प्रदेश अभागात् द्रव्य उनमें
- " संख्यात प्रदेश अभागात् द्रव्य संख्यात गुणा "



- (१) सर्व से कम अनंत गुणा काला का द्रव्य उनसे  
 (२) अनंता गुणा काला प्रदेश अनंत गुणा " "  
 (३) एक गुण काला द्रव्य और प्रदेश अनंत गुणा " "  
 (४) संख्यात प्रदेश काला पृथक् द्रव्य संख्यात " "  
 (५) " " " " प्रदेश " " "  
 (६) असं० " " " द्रव्य असं० " "  
 (७) " " " " प्रदेश " "

एवं ५ वर्ण; २ गन्ध, ५ रस, ४ स्पर्श, ( शीत; उष्ण; स्निग्ध; रुच ) आदि १६ बोलों का विस्तार काले वर्ष अनुसार तीन तीन अल्प बहुत्व करना ।

कर्कश स्पर्श का अल्प बहुत्व ।

- (१) सर्व से कम एक गुण कर्कश का द्रव्य उनसे  
 (२) सं० गुण कर्कश का द्रव्य सं० गुणा " "  
 (३) असं० गु० " " असं० " " "  
 (४) अनंत गु० " " अनंत " "

कर्कश स्पर्श प्रदेशापेक्षा अल्प बहुत्व ।

- (१) सर्व से कम एक गुण कर्कश का प्रदेश उनसे  
 (२) सं० गुणा कर्कश का प्रदेश असंख्यात गुणा " "  
 (३) असं० " " " " " " "  
 (४) अनंत " " " अनंत " "

कर्कश द्रव्य प्रदेशापेक्षा अल्प बहुत्व

(१) सर्व से कम एक गुण कर्कश का द्रव्य प्रदेश उनसे





## \* \* \* आकाश श्रेणी \* \* \*

( श्री 'भगवती सूत्र शतक २५ उ० ३ )

आकाश प्रदेश की पंक्ति को श्रेणी कहते हैं समुच्चय आकाश प्रदेश की द्रव्यापेक्षा श्रेणी अनन्ती है। पूर्वादि ६ दिशाओं की और अलोकाकाश की भी अनन्ती है।

द्रव्यापेक्षा लोकाकाश की तथा ६ दिशाओं की श्रेणी असंख्याती प्रदेशापेक्षा समुच्चय आकाश-प्रदेश तथा ६ दिशा की श्रेणी अनन्ती है।

प्रदेशापेक्षा लोकाकाश आकाश प्रदेश तथा ६ दिशा की श्रेणी असं० है प्रदेशापेक्षा-अलोकाकाश आकाश की श्रेणी संख्याती, असंख्याती, अनन्ती है पूर्वादि ४ दिशा में अनन्ती है और ऊंची नीची दिशा में तीन ही प्रकार की।

समुच्चय श्रेणी तथा ६ दिशा की श्रेणी अनादि अनन्त है। लोकाकाश की श्रेणी तथा ६ दिशा की श्रेणी सादि मान्त है। अलोकाकाश की श्रेणी स्यात् सादि सान्त स्यात् सादि अनन्त स्यात् अनादि सान्त और स्यात् अनादि अनन्त है।

(१) सादि मान्त—लोक के व्याघात में

(२) सादि अनन्त—लोक के अन्तमें अलोक की भाँति है परन्तु अन्त नहीं।



## ❀ बल का अल्प बहुत्व ❀

पूर्वाचार्यों की प्राचीन प्रति के आधार से—

(१)	सर्वे से कम सूक्ष्म निगोद के अपर्याप्तता का बल, उनसे		
(२)	वाटर निगोद के अपर्याप्तता का बल असंबन्धित गुणा		"
(३)	सूक्ष्म " पर्याप्तता " " " "		"
(४)	वाटर " " " " " "		"
(५)	सूक्ष्म पृथ्वी काय के अपर्याप्तता " " " "		"
(६)	" " पर्याप्तता " " " "		"
(७)	वाटर " अपर्याप्तता " " " "		"
(८)	" " पर्याप्तता " " " "		"
(९)	" घनस्फटिक के अपर्याप्तता " " " "		"
(१०)	" " पर्याप्तता " " " "		"
(११)	तनु वायु का " " " "		"
(१२)	घनोदधि " " " "		"
(१३)	घन वायु " " " "		"
(१४)	कुंधवा " " " "		"
(१५)	छाँच " पाँच गुणा " "		"
(१६)	जू " दश " "		"
(१७)	चींटी मकोड़े " बीस " "		"
(१८)	मकली " पाँच " "		"
(१९)	दश मच्छर " दश " "		"
(२०)	भंवर " बीस " "		"
(२१)	तीक्ष्ण " पचास " "		"
(२२)	चकली " साठ " "		"
(२३)	कचूतर " पन्द्रह " "		"
(२४)	काँच " सौ " "		"



- 
- (५१) धैमानिक " " " " "
- (५२) " " इन्द्र " " " "
- (५३) तीनों ही काल के इन्द्रों से भी तीर्थंकर की कनिष्ठ  
अंगुली का बल अनन्त गुणा है । ( तस्य केयली गम्भ )

❀ इति बल का अल्प महत्त्व ❀



## ॐ समकित के ११ द्वार ॐ

१ नाम २ लक्षण ३ आवन ( आगति ) ४ पावन  
 ५ परिणाम ६ उच्छेद ७ स्थिति = अन्तर ८ निरन्तर ९  
 आगेश ११ चत्र स्पर्शना और अन्न बहुत्व ।

१ नाम द्वार-समकित के ४ प्रकार । चायक, उप-  
 शम, चयोपशम और वेदक समकित ।

२ लक्षण द्वार:-७ प्रकृति [ अनंतानुबन्धी क्रोध  
 मान, माया, लोभ और ३ दर्शन मोहनीय ] का मूल  
 से चय करने से चायक समकित व ६ प्रकृति उपशमावे  
 और समकित मोहनीय वेदे तो वेदक समकित होता है  
 अनंतानु० चोक का चय करे और तीन दर्शन मोह को  
 उपशमावे उसे चयोपशम समकित कहते हैं ।

३ आवन द्वार-चायक सम० केवल मनुष्य भव में  
 आवे शेष तीन समकित चार गति में अवे ।

४ पावन द्वार-चार ही समकित गति में पावे ।

५ परिणाम द्वार-जयक समकित अनन्ता [ मिदु  
 क र्थ ] उप शम समकित वाला अनन्त्यात जीव

६ उच्छेद द्वार-जयक समकित का उच्छेद कर्मा  
 त शव । शेष तीन की भजना

७ स्थिति द्वार जयक समकित सादि अनन्त

उपशम समकित ज० उ० श्रं० मृ०, क्षयोप० और वेदक की स्थिति ज० श्रं० मृ०, उ० दक्ष सागर जात्रेरी ।

८ अन्तर द्वार-चायक समकित में अन्तर नहीं पड़े। शेष ३ में अन्तर पड़े तो ज० श्रं० उ० अनन्त काल यावत् देश न्यून [ उष्ण ] अर्ध पुद्गल परावर्त्तन ।

९ निरन्तर द्वार:-चायक समकित निरन्तर आठ समय तक आगे शेष ३ समकित आभलिहा के अक्षं० में भाग जितने समय निरन्तर आवे ।

१० आगरेश द्वार-चायक समकित एक बार ही आवे । उपशम समकित एक भवमें ज० १ बार उ० २ बार आवे और अनेक भव आधी ज० २ बार आवे शेष २ समकित एक भव आधी ज० १ बार उ० अक्षं० वार और अनेक भव आधी ज० २ बार उ० अक्षं० वार आवे ।

११ क्षेत्र स्पर्शना द्वार:-चायक समकित समस्त लोक स्पर्श [ केवली सम० आधी ] शेष ३ सम० देश उष्ण मान गजु लोक स्पर्श ।

१२ अक्षय षड्व्य द्वार:-मय मे कम उपशम सम० वाला, उनमें वेदक समकित वाला अक्षं० वार गुण, उनमें क्षयोप० सम० वाला अक्षं० वार गुणा, उनमें चायक सम० वाला अनन्त गुणा । ( सिद्धिपत्रा ) ।

इति समकित के १० द्वार सम्पूर्ण ॥





४ महा हेमवन्त पर्वत	=	४२१०-१०
५ हरिवास क्षेत्र	१६	=४२१-१
६ निषिध पर्वत	३२	१६=४२-२
७ महा विदेह क्षेत्र	६४	३३६=४४-४
८ नीलवंत पर्वत	३२	१६=४२-२
९ रम्यकु वास क्षेत्र	१६	=४२१-१
१० रूपी पर्वत	=	४२१०-१०
११ हिमश्याम क्षेत्र	४	२१०५-५
१२ शिखरी पर्वत	२	१०५२-१२
१३ ऐरावत क्षेत्र	१	५२६-६
	<u>१६०</u>	<u>१०००००-०</u>

१६ कला का १ योजना समझना

पूर्व पश्चिम का १ जाल्य योजना का माप

नं०	क्षेत्र का नाम	योजना
१	मेठ पर्वत की चौड़ाई	१००००
२	पूर्व मद्रशाल वन	२२०००
३	„ आठ विजय	१७७०२
४	„ चार वचार पर्वत	२०००
५	„ तीन अन्नार नदी	३७५
६	„ सीतागुफा वन	०६२३
७	पश्चिम मद्रशाल वन	२२०००
	आज १३३५	१७७०२



योजन ऊँचा, ५०० धनुष्य चौड़ी है दानों तरफ नीले पत्तों के स्तम्भ हैं जिन पर सुन्दर पुतलियों और मोती की मालाएँ हैं । मध्य भाग के अन्दर पञ्चवर वेदिका के दो भाग किये हुये हैं । [१] अन्दर के विभाग में एक जाति के वृक्षों का वनरुण्ड है जिसमें ५ वर्ण का स्तन मय तृण है । वायुके संचार से जिनमें ६ राग और ३१ रागानिये निकलती हैं । इसमें अन्य वावडिये और पर्वत हैं, अनेक आसन है जहाँ व्यन्तर देवी-देवता फ्रीड़ा करते हैं [२] बाहर के विभाग में तृण नहीं है । शेष रचना अन्दर के विभाग समान है ।

मेरु पर्वत से चार ही दिशा में ४५-४५ हजार योजन पर चार दरवाजे हैं । पूर्व में विजय, दक्षिण में विजय-वन्त, पश्चिम में जयन्त और उत्तर में अपराजित नामक हैं प्रत्येक दरवाजा ८ योजन ऊँचा ४ योजन चौड़ा है । दरवाजे के ऊपर नव भूमि और सफेद पुषट, [सुगन्ध] छत्र, चामर, ध्वजा तथा ८-८ मंगलीक हैं । दरवाजों के दोनों तरफ दो दो चौतरे हैं जो प्रासाद, तोरण चन्दन, बलश, भारी, धूप, बड़िया और मनोहर पुतलियों से सुशोभित हैं ।

### क्षेत्र का विस्तार

[१] भरत क्षेत्र मेरु के दक्षिण में अर्धचन्द्राकार- है मध्य में वैताट्य पर्वत आने से भारत के दो भाग हो



का भद्रशाल बन है । दक्षिण में निपिध तक देव कुरु और उत्तर में नीलवन्त तक उत्तर कुरु है । ये दोनों दो दो गजदन्त के करण अर्धचन्द्राकार हैं । इस चर में युगल मनुष्य ३ गाउ की अवगाहना उल्लेख आहुल के और ३ पन्थ के आयुष्य वाले रहते हैं । देव कुरु में कुड़ शान्मली वृक्ष, चित्र विचित्र पर्वत १०० कंचन गिरि पर्वत और ५ द्रव हैं । इसी प्रकार उत्तर कुरु में भी हैं । परन्तु ये जम्बू सुदर्शन वृक्ष हैं ।

निपिध और महाहिमघन्त पर्वत के मध्य में हरिवास क्षेत्र है । तथा नीलवन्त और रूपी पर्वत के बीच में रम्यरू वास क्षेत्र है । इन दो क्षेत्रों में २ गाउ की अवगाहना और २ पन्थ की स्थिति वाले युगल मनुष्य रहते हैं ।

महाहेमघन्त और चूल हेमघन्त पर्वत के बीच में हेमवाय क्षेत्र और रूपी तथा शिखरी पर्वत के मध्य में द्विगणवाय क्षेत्र है इन दोनों क्षेत्रों में १ गाउ की अवगाहना वाले और १ पन्थ का आयुष्य वाले युगल मनुष्य रहते हैं ।

क्षेत्र	द० उ० बी.वा.हं	घाट	जीवा	धनुष पीठ	
	घो० कला	घो० कला	घो० कला	घो० कला	
दक्षिण	भरत	२३८ ३	०	६७८ १२	६७६६ १
उत्तर	"	"	१८६७ ३१	१४४३१ ६	१४४२८ १३
हेमवाय	क्षेत्र	२१०४ ४	६३४४ ३	३३६३४ १६	३८३४० १०
हरिवास	"	८४३१ १	१३३२१ ६	३३६०१ १३	४४०१६ ४
महाविदेह	"	३३८८४ ४	३३३६३ ३	१०००००	१४८११३ १६

( चूत हेमवन्त, महा हेमवन्त, निषिध, नीलवन्त, रूपी और शिखरी ) पर्वत हैं ।

४ गजदंता पर्वत-देव कुरु उत्तर कुरु और विजय के बीच में आये हुये हैं । नाम-गंधमर्दन, मालवंत, विष्णुप्रभा और सुमानम ।

४ घृतल वैताह्य-हेमराय, दिग्गवाय, हरिवास, सम्यक्वास के मध्य में हैं । नाम-सदावाँई, वयडावाँई गन्धावाँई, मालवंता ।

४ चित विनितादि निषिध पर्वत के पास सीता नदी के दोनों तट पर चित और विचित्र पर्वत हैं । तथा नीलवंत के पास सीतोदा के दो तट पर जमग और समग दो पर्वत हैं ।

१ जम्बू द्वीप के पगपर मध्य में भेरु पर्वत है ।

पर्वत के नाम ऊँचाई गहराई विस्तार

२०० कंचन गिरि पर्वत १०० यो. २५ यो. १०० यो.

३४ दीर्घ वैताह्य " २५ यो. २५ गाउ ५० यो.

१६ वच्चार " ५०० यो. ५०० गाउ ५०० यो.

यो. कला

चूल हेमवंत और शिखरी १०० यो. २५ यो. १०५२-१२

महा हेमवंत और रूपी २०० यो. ५० यो. ४२१० १०

निषिध और नीलवंत ४०० यो. १०० यो. १६८४२-२

४ गजदंता पर्वत ० यो. १२५ यो. ३०२०६ ६





योजन ऊँचा मूल में ५०० यो. मध्य में ३७५ यो. और ऊपर २५० यो. विस्तार वाला है । अनेक शंख, गुच्छा गुमा, बेली, तुण से शोभित है । विद्याधरो और देवताओं का कीड़ा स्थान है ।

२ नन्दन वन-मद्रशाल से ५०० यो. ऊँचे भेरु पर बलयाकार है । ५०० योजन विस्तार है घेदिका वन-गण्ड, ४ मिद्धायतन, १६ बावदिये, ४ प्रामाद पूर्ववत् है । ६ कूट है । नन्दन वन कूट, भेरु कूट, निषिध कूट, हेमवन्त कूट, अजित कूट, रुचित, मागरचित, बन्न और बल कूट, ८ कूट, ५०० यो. ऊँचे हैं आठों ही पर १ पन्थ वाली ८ देवियों के भवन हैं नाम-मेघकला, मेघवती, सुमेधा, हेममालिनी, सुवच्छा, वच्छामिथा, वन्नहेना, पल-हका देवी। वन कूट १००० योजन ऊँचा, मूल में १००० यो. मध्य में ७५० यो. ऊपर ५०० यो. विस्तार है । वन देवता का महल है । शेष मद्रशाल वन समान गुन्दर और विस्तार वाला है ।

(३) मुमानस वन-नन्दन वन में ६०० यो. ऊँचा है ५०० यो. विस्तार वाला मद्र के पार्श्वों का है । घेदिका वनगण्ड, १६ बावदिये, ४ मिद्धायतन, शक-द्र देग-नेन्द्र के महल आदि पुराने हैं ।

४ पाँचक वन-मुमानस वन में ३६००० यो. ऊँचा है ३६००० यो. विस्तार वाला है । ४६०० यो. घेदिका का वन है । मेघ



महा हेमवन्त	॥	॥	॥	॥
निपिघ	॥	॥	॥	॥
नीलवन्त	॥	॥	॥	॥
रूपी	॥	॥	॥	॥
शिवरी	॥	११	॥	॥
वैताड्य ३४×६=	३०६	२५ गाउ	२५ गाउ	१२॥ गाउ
वजार १६×४=	६४	५००	५००	२५०
विद्युत्प्रभा गजदंता पर ६	॥	॥	॥	॥
मालवंता	॥	६	॥	॥
सुमानस	॥	७	॥	॥
गंधमाल	॥	७	॥	॥
मेरु के नंदन वनमें	६		॥	॥
	४६७			
मद्रशाल	॥	॥	॥	॥
देव कुरु में	॥	॥ यो०	॥ यो०	४ यो
उत्तर कुरु में	॥	॥	॥	॥
चक्र यती के विजय में	३४	॥	॥	॥
	५२५			

गज दंता के २ और नंदन वन का १ कूट और १००० यो० ऊंचा, १००० यो० मूल में और ऊंचा ५०० योजन का विस्तार समझना ।

७६ कूट ( १६ वजार, ८ उत्तर कुरु ३४ वैताड्य ) पर जिन गृह हैं ।



सुकच्छ	„ सुवच्छ	„ सुपञ्च	„ सुविषा
महा कच्छ	„ महा वच्छ	„ महा पञ्च	„ महा विषा
कच्छ वती	„ वच्छ वती	„ पञ्चरती	„ विषावती
आग्रता	„ रमा	„ संवा -	„ वग्गु
मंगला	„ रमक	„ कुमुदा	„ सुवग्गु
पुरकला	„ रमणीक	„ निर्लीका	„ गन्धीला
पुष्कलावती	„ मंगलावती	„ सर्लीलावती	„ गंधीलाव

प्रत्येक विजय १६५६२ यो० र कला दक्षिणोत्तर लम्बी और २२२॥ यो. पूर्व पश्चिम में चौड़ी है । ये ३२ तथा १ मरत क्षेत्र, १ ऐरावत क्षेत्र-एवं ३४ चक्रवर्ती हो सकते हैं । इन ३४ विजयों में ३४ दीर्घ वैशाख्य पर्वत, ३४ तमस गुफा, ३४ खण्ड पमा गुफा, ३४ राजधानी ३४-नगरी ३४ कृत माली देव, ३४ नट माली देव, ३४ श्रवण कूट, ३४ गंगा नदी, ३४ सिन्धु नदी ये सब शाश्वत हैं ।

(६) द्रह द्वार-६ वषधर पर्वतों पर छे, छे, ५ देव-कुरु में और ५ उत्तर कुरु में हैं ।

द्रह के नाम इस पर्वत लम्बाई चौड़ाई गहराई  
(कुंड) पर हैं यो. यो. देवी कमल  
पञ्च द्रह चूल हेमवन्त १०००, ५००, १० श्री. १२०५०-१२०  
महा पञ्च, महा हेमवन्त २०००, १०००, १० ल. २४१००-२४०  
तिगच्छ, निषिध ४०००, २०००, १० धृति ४=२००४=०  
शरी, नीलवंत " " " वृद्धि "



प्रत्येक नदी ऊपर बताये हुए पर्वत-तथा कुंडसे निकल कर आगे बढ़ती हुई गंगा प्रमास सिन्धु-प्रमास आदि कुंड में गिरती हैं। यहाँ से आगे जाने पर आधे परिवार जितनी नदियें मिलती हैं जिनके साथ बीच में आये हुए पहाड़ को तोड़ कर आगे बढ़ती हैं जहाँ आधे परिवार की नदियें मिलती हैं जिनके साथ बढ़कर जम्बूद्वीप की जगह से बाहर लवण सपुद्र में मिलती हैं।

गंगा प्रमास आदि कुंड में गंगा द्वीप आदि नामक एकेक द्वीप हैं जिनमें इसी नाम की एकेक देवी सपरिवार रहती हैं इन कुंड, द्वीप और देवियों के नाम शायत हैं।

यन्त्र के अनुसार ७८ मूल नदियें और उन की परिवार की ( मिलने वाली ) १४५६००० नदियें हैं इस उपरान्त महाविदेह के ३२ वित्रियों के २८ अन्त हैं जिन में पहले लिखे हुए १६ वषार पर्वत और शेष १२ अंतर में १२ अंतर नदियें हैं इनके नामः—गृध्रवन्ती, द्रवन्ती, पंचवन्ती, तंत जला, मंत जला, उगमजला श्रीरोदा, सिंह सोठा, अंतो बहनी, उपमालनी, केनमालनी और गंभीर मालनी । ये प्रत्येक नदियें १२५ यो. चौड़ी, २॥ यो. ऊँची ( गहरी ) और १६५६२ यो. २ कला की लम्बी हैं एवं कल नदियें १४५६०६० हैं । विशेष विस्तार जम्बू द्वीप प्रवृत्ति सूत्र में जानना ।

॥ इति स्वर्णहा जायणा ( ना ) सम्पूर्ण ॥





) जिसके पास से धर्म की प्राप्ति हुई-होवे उसका उपकार कभी भी नहीं भूलें और समय आने पर उपकारी के प्रति प्रत्युत्कार करने वाला होवे।

ति धर्म के सम्मुख होने के १५ कारण सम्पूर्ण ॥



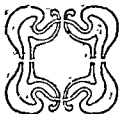
## ॐ मार्गानुसारी के ३५ गुण ॐ

१ न्गाय संपन्न द्रव्य प्राप्त करे २ सात कुव्यमन का त्याग करे ३ अमर्त्य का त्यागी होवे ४ गुण परीक्षा से सम्बन्ध ( लग्न ) जोड़े ५ गःप-भीरु ६ देश हिन कर वर्तन वाला ७ पर निन्दा का त्यागी ८ अति प्रकट, अति गुप्त तथा अनेक द्वार वाले मकान में न रहे ९ सद्गुणी की संगति करे १० बुद्धि के आठ गुणों का धारक ११ कदा-ग्रही न होवे ( सरल हांवे ) १२ सेवाभावी होवे १३ विनयी १४ भय स्थान त्यागे १५ आय-व्यय का हिसाब रखे १६ उचित ( सम्य ) वस्त्राभूषण पहिने १७ स्वाध्याय करे ( नित्य नियमित धार्मिक वाचन, श्रवण करे ) १८ अजीर्ण में भोजन न करे १९ योग्य समय पर ( भूख लगने पर मित, पथ्य नियमित ) भोजन करे २० समय का सदुपयोग करे २१ तीन पुरुषार्थ ( धर्म, अर्थ, काम ) में विवेकी २२ समयज्ञ ( द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव का ज्ञाता ) होवे २३ शान्त प्रकृति वाला २४ ब्रह्मचर्य को ध्येय समझने वाला २५ सत्यव्रत धारी २६ दीर्घदर्शी २७ दयालु २८ परीपकारी २९ कृतघन न होकर कृतज्ञ होवे अपकरी पर भी उपकार करे ३० आन्म प्रशमा न इच्छे, न करे न करे ३१ विवेकी ३२ व्यायोग्य का भेद समझने वाला होवे ३३ अज्ञान होवे ३४ धर्मवान होवे ३५ परमेश्वर के ध,

माया, लोभ, राग, द्वेष) का नाश करे ३५ इन्द्रियों को जीते (जितेन्द्रिय होवे) ।

इन ३५ गुणों को धारण करने वाला ही नैतिक धार्मिक जैन जीवन के योग्य हो सकता है ।

❀ इति मार्गानुसारी के ३५ गुण सम्पूर्ण ❀





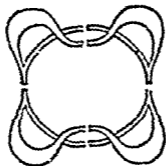
## \* जल्दी मोक्ष जाने के २३ बोल \*

१ मोक्ष की अभिलाषा रखने से २ उग्र तपश्चर्या करने से ३ गुरु मुख द्वारा मंत्र सिद्धान्त सुनने से ४ आंगम सुन कर वैसी ही प्रवृत्ति करने से ५ पाँच इन्द्रियों को दमन करने से ६ छत्राय जीवों की रक्षा करने से ७ भोजन करने के समय साधु भाषियों की भावना-भावने से ८ मद्ब्रजन सीखने व सिखाने से ९ निपाया रहित एक कौटी से व्रत में रहना हुआ नव कौटी से व्रत-प्रत्याख्यान करने में १० दश प्रकार की वैयाचर्य्य करने से ११ कर्पाय को पतले लोके निर्मूल करने से १२ शंके होते हुए क्षमा करने में १३ लगे हुए पापों की तुल्य आलोचना करने में १४ लिये हुए व्रतों को निर्मूल पालने में १५ अमपदान सुपात्र दान देने में १६ शुद्ध मन से शीघ्र ( अन्नवर्ष ) पालने में १७ निर्बय ( पाप रहित ) मधुर वचन बोलने से १८ प्रदण लिये हुए समय मार को अलण्ड पालने में १९ धर्म शुक्र ध्यान ध्यान में २० हर महीने ६-६ वेपथ करने में २१ दोनों समय अक्षरपत्र ( प्रतिक्रमण ) करने में २२ पञ्चनी वृत्ति में धर्म जागृत करते हुए हीन मन गथादि निवृत्त में २३ मृ-पु मन्व्य आलोचनादि में शुद्ध दारु समाधि पण्डित मरण करने में ।

इन २३ बोलों को सम्यक् प्रकार से जान कर सेवन करने से जीव जल्दी मोक्ष में जावे ।

॥ इति जल्दी मोक्ष जाने के २३ बोल सम्पूर्ण ॥

ॐ नमः शिवाय ॐ



## तीर्थंकर गोत्र ( नाम ) वान्धने के २० कारण

( श्री ज्ञाता सूत्र, आठवां अध्यायन )

- १ श्री अग्निहंत भगवान् के गुण कीर्तन करने से-
- २ श्री सिद्ध " " " "
- ३ आठ प्रवचन ( ५ समिति, ३ गुप्ति ) का आराधन करने से ।
- ४ गुणवंत गुरु के गुण कीर्तन करने से ।
- ५ स्थविर ( वृद्ध मुनि ) के गुण कीर्तन करने से ।
- ६ बहुश्रुत के " "
- ७ तपस्वी " " "
- ८ सीखे हुवे ज्ञान को वारंवार चिंतनने से ।
- ९ समकित निर्मल पालने से ।
- १० विनय ( ७-१०-१३४ प्रकारके ) करने से ।
- ११ समय समय पर आवश्यक करने से ।
- १२ लिये हुवे व्रत प्रत्याख्यान निर्मल पालने से ।
- १३ शुभ ( धर्म-शुक्ल ) ध्यान ध्याने से ।
- १४ बारह प्रकार की निर्जरा ( तप ) करने से ।
- १५ दान ( अमय दान-मुपात्र दान ) देने से ।
- १६ त्रयाष्टक्य ( १० प्रकार की भेदा ) करने से ।

- १७ चतुर्विध संघ को शान्ति-समाधि (सेवा-शोभा) देने से  
 १८ नया २ अपूर्व तत्त्व ज्ञान पढ़ने से ।  
 १९ सूत्र सिद्धान्त की भक्ति ( सेवा ) करने से ।  
 २० मिथ्यात्व नाश और समकित उद्योग करने से ।

जीव अनंतानंत कर्मों को खपाते हैं । इन सत्कार्यों को करते हुवे उत्कृष्ट रसायण ( भावना ) भावे तो तीर्थकर गोत्र कर्म बान्धे ।

॥ इति तीर्थकर गोत्र बान्धने के २० कारण ॥





## परम कल्याण के ४० वोल

गुण	दृष्टान्त	सूत्र की साची
१ समकित परम कन्याण धेष्टिक महाराज निर्मल पालने से होवे		ठाणांग सूत्र
२ नियाणा रहित तपश्चर्या से	॥ तामली तापस	मगवती ॥
३ तीन योग निश्चल करने से	॥ गजसुकुमाल मुनि,	अंतगड ॥
४ समभाव सहित क्षमा करने से	॥ अर्जुन माली	॥ ॥
५ पांच महाव्रत निर्मल पालने से	॥ गौतम स्वामी	मगवती ॥
६ प्रमाद छोड़ अप्र- मादी होने से	॥ शैलग राजर्षि	ज्ञाता ॥
७ इन्द्रिय दमन करने से ॥	हरकेशी मुनि	उ. घ्यान ॥
८ मित्रों में माया कपट न करने से ॥	मल्लिनाथ प्रभु	ज्ञाता ॥
९ धर्म चर्चा करने से ॥	केशी गौतम	उ. ध्यान.
१० सत्य धर्म पर अट्टा करने से	वरुण नाग नतुये का, मित्र	मगवती,
११ जीवों पर करुणा करने से	मेघ कुमार (हाथी के) मध में	ज्ञाता ॥

- १२ सत्य वात निशङ्कता ,, ध्यानन्द श्रावक उपाशकद  
पूर्वक कहने से
- १३ कष्ट पढ़ने पर भी ,, अंधड़ और ७०० उववाई  
व्रतों की दृढता से ,, शिष्य
- १४ शुद्ध मन से शीघ्र ,, सुदर्शन श्रेष्ठ सुदर्शन  
पालने से
- १५ परिग्रह की ममता ,, कपिल ब्राह्मण चरित्र  
छोड़ने से
- १६ उदारता से सुपात्र ,, सुमुखं गाथा- उत्तराध्यय.  
दान देने से, पति विपाक सूत्र
- १७ व्रत से डिगते हुवे ,, राजमती उत्तराध्य-  
को स्थिर करने से
- १८ उग्र तपस्या करने से ,, घना मुनि यन सूत्र
- १९ अग्लानि पूर्वक ,, पंथक मुनि अ. सूत्र  
वैयावच्च करने से
- २० सदेव अनित्य ,, भरत चक्रवर्ती जम्बूद्वीप  
भावना भावने से
- २१ अशुभ परिणाम ,, प्रसन्नचन्द्र प्र. ,,  
प्राप्त करने से
- २२ मत्स्य ज्ञान पर ,, राजर्षि श्रेणिक-  
दा रखने में ,, अर्हन्नक चरित्र
- श्रावक ज्ञाता सूत्र

२३ चतुर्विध संघकी वैयावच से,	”	सनतकुमार चक्र० मगवती	”
२४ उत्कृष्ट भावसे मुनि सेवा करने से	”	बाहुबल जी	ऋषभ देव चरित्र
२५ शुद्ध अभिग्रह करने से,	”	पांच पाण्डव	ज्ञाता सुत्र
२६ धर्म दलाली ”	”	श्रीकृष्ण वासुदेव	अंतमड ”
२७ सुत्र ज्ञान की भक्ति ”	”	उदाई राजा	मगवती ”
२८ जीव दया पालने से ”	”	घनरुचि अणुगार	ज्ञाता ”
२९ व्रत से गिरते ही सावधान होने से	”	अराणिक अनगार	अवश्यक
३० आपत्ति आने पर धैर्य रखने से	”	खंदक अणुगार	उत्तरा- ध्ययन ”
३१ जिन राज की भक्ति करने से	”	प्रभावती रानी	” ”
३२ प्राणों का मोह छोड़ कर भी दया पालने से	”	मेघरथ राजा	शान्ति- नाथ चरित्र
३३ शक्ति होने पर भी घमा करने से	”	प्रदेशी राजा	रायप्ररनी- य सुत्र
३४ सहोदर माइयों का भी मोह छोड़ने से	”	राम बलदेव	६३ श्ला पु. चरित्र
३५ देवादि के उपसर्ग सहने से	”	काम देव	उपासक सुत्र



## • तीर्थंकर के ३४ अतिशय •

१ तीर्थंकर के केश, नग न पड़े, सुशोभित रहे २ शरीर निरोग रहे ३ लोही मांस मांस के दूध समान होवे ४ व्यागोष्माम पत्र कमल जैसा सुगन्धित होवे ५ आहार निहार अदरप ६ आकाश में घर्म चक्र चले ७ आकाश में ३ छय शोभे तथा दो चामर उड़े ८ आकाश में पाद पीट सहित मिहामन चले ९ आकाश में इन्द्रध्वज चले १० अगोचर पुत्र रहे ११ मामण्डल होवे १२ विषम भूमि गम होवे १३ कण्टक ऊँचे ( भोषे ) हो जाये १४ छः ही शत्रु अनुहन होवे १५ अनुहन वायु चले १६ पांच वर्ष के कुल प्रगट होवे १७ अशुभ पुत्रों का नाश होवे १८ सुगन्धि वर्षा से भूमि निचिन होवे १९ शुभ पुत्र प्रगट होवे २० योवन मामी वाली श्री ध्वनि होवे २१ अर्ध मागधी माता में देवता देवे २२ गर्भ ममा अगनी २ माता में ममन्ते २३ जन्म वैर, ज्ञानि वैर शान्त होवे २४ अन्धमनी भी दगना गुने व विनय कर २५ प्रोत्साही निरुत्तर कर २६ २७ या नक हिरी ज्ञान का रोग २८ २९ ३० महाभाग ३१ न दार ३२ उग्र ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

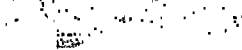
















वान है । जैसे सामान्यतः द्रव्य एक है । विशेषतः ६-६ घर्मास्ति काय का सामान्य गुण चलन सहाय है । अघर्मा का स्थिर सहाय, आका. का अवगाहन, काल का वर्तना, जीव. का चेतन्य, पुद्गल, का जीर्ण गलन विध्वंसन गुण और विशेष गुण छः ही द्रव्यों का अनन्त अनन्त है ।

६ निश्चय व्यवहार द्वार-निश्चय से समस्त द्रव्य अपने २ गुणों में प्रभूत होते हैं । व्यवहार में अन्य द्रव्यों की अपने गुण से सहायता देते हैं । जैसे लोकाकाश में रहने वाले समस्त द्रव्य आकाश अवगाहन में सहायक होते हैं । परन्तु अलोक में अन्य द्रव्य नहीं अतः अवगाहन में सहायक नहीं होते पर्युत अवगाहन में पदगुण हानि वृद्धि सदा होती रहती है । इसी प्रकार सब द्रव्यों के विषय में जानना ।

१० नय द्वार-अंश ज्ञान को नय कहते हैं । नय ७ हैं इनके नाम—१ नैगम २ संग्रह ३ व्यवहार ४ अनुसृष्ट ५ शब्द ६ समभिरूढ और ७ एवं भूत नय, इन सातों नय वालों की मान्यता कैसी है । यह जानने के लिये जीव द्रव्य ऊपर ७ नय उतारे जाते हैं ।

१ नैगम नय वाला-जीव कहने से जीवके सब नामोंको प्र० करे  
 २ संग्रह " - " " जीवके असंख्य प्रदेशों को "  
 ३ व्यवहार " - " " से प्रस स्थावर जीवों की "  
 ४ अनुसृष्ट " - " " सुखदुःख भोगने वाले जी.के."



५ काल द्रव्य में ४ गुण-अरूपी, अचेतन, अक्रिय वर्तमानगुण  
 ६ पुद्गलास्ति० में ४ " -रूपी, अचेतन, सक्रिय, जीर्णगलन

१३ पर्याय द्वार-प्रत्येक द्रव्य की चार २ पर्याय हैं

१ धर्मास्ति० की ४ पर्याय-स्वंध, देश, प्रदेश, अगुरु लघु

२ अधर्मास्ति० " " - " " " "

३ आकाशास्ति० " " - " " " "

४ जीवारित० " " - अद्यानाघ, अनाशगाह,  
 अमूर्त, "

५ पुद्गलास्ति० " " - घर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श

६ काल द्रव्य० " " - भूत, भाविष्य, वर्तमान,  
 अगुरु लघु

१४ साधारण द्वार-साधारण धर्म जो अन्य द्रव्य में भी पावे, जैसे धर्मास्ति० में अगुरु लघु, असाधारण धर्म जो अन्य द्रव्य में न पावे, जैसे धर्मास्ति० में चलन सहाय इत्यादि ।

१५ साधर्म्य द्वार-एक द्रव्यों में प्रति समय उत्पन्न व्यय है । क्योंकि अगुरु लघु पर्याय में एतद् गुण हानि वृद्धि होती है । सो यह छः ही द्रव्यों में समान है ।

१६ परिणामी द्वार-निश्चय नय से छः ही द्रव्य अपने २ गुणों में परिणमते हैं । व्यवहार से जीव और पुद्गल अन्यान्य स्वभाव में परिणमते हैं । जिस प्रकार जीव मनुष्यादि रूपसे और पुद्गल दो प्रदेशी यावत् अनन्त प्रदेशी स्वन्ध रूप से परिणमता है ।





परन्तु जीव किसी के कारण नहीं । जैसे—जीव कर्ता और धर्मा० कारण मिलने से जीव को चलन कार्य की प्राप्ति होवे । इसी प्रकार दूसरे द्रव्य भी समझना ।

२५ कर्ता द्वार-निश्चय से समस्त द्रव्य अपने २ स्वभाव-कार्य के कर्ता हैं । व्यवहार से जीव और पृथक् कर्ता हैं । शेष अकर्ता हैं ।

२६ गति द्वार-आकाश की गति ( व्यापकता ) लोकालोक में है । शेष की लोक में है ।

२७ प्रवेश द्वार-एक २ आकाश प्रदेश पर पाँचों ही द्रव्यों का प्रवेश है । वे अपनी २ क्रिया करते जा रहे हैं । तो भी एक दूसरे से मिलते नहीं जैसे एक नगर में ५ मानस अपने २ कार्य करते रहने पर भी एक रूप नहीं होजाते हैं ।

२८ पृच्छा द्वार-श्री गौतम स्वामी श्री वीर प्रभु को सविनय निम्न लिखित प्रश्न पूछते हैं ।

१ धर्मा०के १ प्रदेश को धर्मा०कहते हैं क्या ? उत्तर नहीं ( एवंभूत नयापेक्षा ) धर्मा० काय के १-२-३, लेकर अन्त्यात अन्त्यात प्रदेश, जहाँ तक धर्मा० का १ भी प्रदेश बर्का १-२-३ तक उसे धर्मा०की कह सकते मत्पूर्ण प्रदेश निम्न श्रुत की है। धर्मा० कहते हैं ।

२ १-२-३ प्रकार के एवंभूत नयापेक्षा पाँचों ही द्रव्यों का १-२-३ नहीं मान, अन्त्यात द्रव्य को







## ॐ चार ध्यान ॐ

ध्यान के ४ भेद-आर्त्त, रौद्र, धर्म और शुक्ल ध्यान  
 (१) आर्त्त ध्यान के ४ पाये-१ मनोऽन्न वस्तु की  
 अभिलाषा करे । २ अमनोऽन्न वस्तु का वियोग चिंतवे । ३  
 रोगादि अनिष्ट का वियोग चिंतवे ४ पर भव के सुख निमित्त  
 निराशा करे ।

आर्त्त ध्यान के ४ लक्षण-१ चिंता शोक करना  
 २ अधुपात करना ३ आक्रन्द ( विलाप ) शब्द करके  
 रोना ४ छाती माथा ( मस्तक ) आदि कूटकर रोना ।

(२) रौद्र ध्यान के ४ पाये-हिंसामें, भूट में,  
 चोरी में, कामगृह में कसाने में आनन्द मानना ( य पाप  
 करके व कराकर के प्रसन्न होना ) ।

रौद्र ध्यान के ४ लक्षण-१ तुच्छ अपराध पर  
 पटुत्त गुस्ता करना, द्वेष करना ४ बड़े अपराध पर अत्यन्त  
 क्रोध-द्वेष करे । ३ अज्ञानता से द्वेष करे और ४ जाव-  
 जीव तक द्वेष रखे ।

(३) धर्म ध्यान के ४ पाये-१ वीतराग की आज्ञा  
 का चिंतन करे २ कर्म आने के कारण ( आश्रय ) का  
 विचार करे ३ शुभाशुभ कर्म विपाक की विचार ४ लोक  
 संस्थान ( आकार ) का विचार करे ।

धर्म ध्यान ४ लक्षण-१ रीतराग आज्ञा की रुचि



शुक्ल ध्यान के ४ अवलम्बन-१ घमा २  
निर्लोभता ३ निष्कपटता ४ मदरहितता ।

शुक्ल ध्यान की ४ अनुमेक्षा-१ इस जीव ने  
अनन्त बार संसार जमण किया है ऐसा विचारे २ संसार  
की समस्त पौद्गलिक वस्तु अनित्य है । शुभ पुद्गल अशुभ  
रूपसे और अशुभ शुभ रूप से परिणमते हैं, अतः शुभा-  
शुभ पुद्गलों में आसक्त बन कर राग द्वेष न करना ३  
संसार परिभ्रमण का मूल कारण शुभ कर्म है कर्म बन्ध  
का मूल कारण ४ हेतु हैं । ऐसा विचारे । ४ कर्म हेतुओं  
को छोड़ कर स्वतन्त्रता में रमण करने का विचार करना-  
ऐसे विचारों में तन्मय ( एक रूप ) हो जाने को शुक्ल  
ध्यान कहते हैं ।

॥ इति ४ ध्यान सम्पूर्ण ॥











हजार वर्ष का और अरिहंत, चक्रवर्ती, वासुदेव, बलदेवों का० ज० ८४ हजार वर्ष का, उ० देश उषा १८ फ़ोड़ा-फ़ोड़ सागरोपम का विरह पड़े ।

❀ इति विरह पद सम्पूर्ण ❀



५८





लोक संज्ञा-अन्य लोगों को देख कर स्वयं वैसा ही कार्य करना ।

भ्रोघ संज्ञा-शून्य चित्त से विहाप करे, घास तोड़े पृथ्वी ( जमीन ) खोदे आदि ।

नरकादि २४ दण्डक में दश दश संज्ञा होंगे । किसी में सामग्री अधिक मिल जाने से प्रकृति रूप से है । किसी में सत्ता रूप से है, संज्ञा का अस्तित्व छोटे गुणस्वान तक है । इनका अर्थ बहुत-  
आहार, मय, भैथुन, और परिग्रह संज्ञा का अर्थ बहुत-  
नारकी में सर्व से कम भैथुन, उस से आहार में  
उस में परिग्रह सं० मय सं०, संख्या० गुणी ।  
निर्यत्न में सर्व से कम परिग्रह उससे भैथुन सं० मय सं०, आहार संख्या० गुणी ।  
मनुष्य में सर्व से कम मय उससे आहार सं०, परिग्रह सं०, भैथुन संख्या० गुणी ।  
देवता में सर्व से कम आहार उस से मय सं०, भैथुन सं०, परिग्रह संख्या० गुणी ।  
क्रोध, मान, माया और लोभ संज्ञाका अर्थ बहुत-  
नारकी में सर्व से कम लोभ, उससे माया सं० मान सं० क्रोध संख्या० गुणी ।  
निर्यत्न में सर्व से कम मान, उस में क्रोध विग्न, माया विग्न नाव विग्न अधिक ।

क्रोध, मान, माया और लोभ संज्ञाका अर्थ बहुत-  
नारकी में सर्व से कम लोभ, उससे माया सं० मान सं० क्रोध संख्या० गुणी ।

निर्यत्न में सर्व से कम मान, उस में क्रोध विग्न, माया विग्न नाव विग्न अधिक ।





11/11/2023 11:11 AM



प्रकार की वेदना । कारण कि दो प्रकार के देवता हैं ।

१ अमायी सम्यक् दृष्टि-निंदा वेदना वेदते हैं ।

२ मायी मिथ्यादृष्टि अनिंदा वेदना वेदते हैं ।

ॐ इति वेदना पत्र सम्पूर्ण ॐ





में कोई करेगा, कोई नहीं करेगा । करे तो १--२--३ वार संख्यात, असंख्यात और अनन्त करेगा ।

साधारणिक समु० २३ दण्डक में एकेक जीव भूत काल में स्यात् करे, स्यात् न करे । यदि करे तो १--२--३ वार, मविष्य में जो करे तो १--२--३--४ वार करेगा । मनुष्य दण्डक के एकेक जीव भूत काल में की होवे तो १--२--३--४ वार की, शेष पूर्व वत् । केवली समु० २३ दण्डक के एकेक जीव भूतकाल में करे तो १ वार करेगा । मनुष्य में की होवे तो भूत में १ वार, व मविष्य में भी एक वार करेगा ।

४ अनेक जीव अवेत्ता २४ दण्डक-पानि ( प्रथम की ) समु० २४ दण्डक के अनेक जीवों ने भूतकाल में अनन्ती करी मविष्य में अनन्ती करेगा ।

साधारणिक समु० २२ दण्डक के अनेक जीव आधी भूतकाल में असंख्याती करी और मविष्य में असंख्याती करेगा वनस्पति में भूत मविष्य की अनन्ती कहनी मनुष्य में भूत-मविष्य की स्यात् संख्याती, स्यात् असंख्याती कहनी ।

केवली समु० २२ दण्डक में भूतकाल में नहीं मविष्य में असंख्याती करेगा, वन-पानि में भूतकाल में नहीं करेगा व मविष्य में अनन्त करेगा मनुष्य के अनन्त में व न न में करी इति । १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००



एकैक पृथ्वी काय के जीव भारकी रूप से कषाय समु० भूत काल में अनंती करी और भविष्य में करेगा तो स्यात् संख्याती, असंख्याती, अनंती करेगा एवं मवन पति, व्यन्तर, ज्योतिषी और वैमानिक रूप से भी भविष्य में असंख्याती, अनंती करेगा उदारिक के १० दण्डक में भविष्य में स्यात् १-२-३ जाव संख्याती, असंख्याती, अनंती करेगा । एवं उदारिक के १० दण्डक, व्यन्तर, ज्योतिषी, वैमानिक असुर-कुमार के समान समझना !

एकैक नेरिया नेरिये रूप से मरणांतिक समु० भूत में अनंती करी, भविष्य में जो करे तो १-२-३ संख्याती जाव अनंती करेगा एवं २४ दण्डक कहना परन्तु स्वस्थान परस्थान सर्वत्र १-२-३ कहना, कारण मरणांतिक समु० एक भव में एक ही बार होती है ।

एकैक नेरिया नेरिये रूप से वैक्रिय समु० भूत काल में अनंती करी, भविष्य में जो करे तो १-२-३ जाव अनंती करेगा । ऐसे ही २४ दण्डक, १७ दण्डक पने कषाय समु० समान करे सात दण्डक (४ स्थावर इन्द्रिय-न्द्रिय) में वैक्रिय समु० नहीं ।

एकैक नेरिया नेरिये रूप से तैजस समु० भूत में नहीं करी, भविष्य में नहीं करेगा ।

एकैक नेरिया असुर-कुमार रूप से भूत काल में



अनेक नेरिये २३ दण्डक ( मनुष्य सिवाय ) रूप से आहा० समु० न की, न करेगें, मनुष्य रूप से भूतकाल में असं० की, मविष्य में असं० करेगें । एवं २३ दण्डक ( वनस्पति सिवाय ) रूप से भी समझना । वनस्पति में अनंती कहनी ।

एकेक मनुष्य २३ रूप से आहा० समु० की नहीं और करेगें भी नहीं । मनुष्य रूप से भूत काल में स्यात् संख्याती, स्यात् अमंख्याती की और मविष्य में भी करे तो स्यात् संख्या०, स्यात् असं० करेगें ।

अनेक नरकादि २३ दण्डक के जीवों ने अनेक नरकादि २३ दण्डक रूप से केवली समु० की नहीं और करेगें भी नहीं मनुष्य रूप से की नहीं, जो करे तो संख्या० असं० करेगें ।

अनेक मनुष्यों ने २३ दण्डक रूप से केवली समु० की नहीं, व करेगें भी नहीं । और मनुष्य रूप से की होने तो स्यात् संख्याती की । मविष्य में करे तो स्यात् संख्याती, स्यात् असंख्याती करेगें ।

( ७ ) अल्प बहुत्व द्वार ।

समुच्चय अल्प बहुत्व

नरक का अल्प बहुत्व

१ सर्व से कम मर०स,वाले

१ सर्व से कम आहा. समु. वाले २ उनसे वैक्रिय समु.अ.गु

२ केवली समु. वाले संख्या. गुणा ३ ,, कपाय ,, संख्या. ,,





### वायु काय का अल्प बहुत्व

- १ सर्व से कम वैक्रिय समू० वाले
- २ उनमें भाग्यांतिक समू० वाले असं. गुणा
- ३ " कषाय० " संख्या० "
- ४ " वेदनी " विशेष्य
- ५ " अममोदिया " अमं० गुणा

### विकलेन्द्रिय का अल्प बहुत्व

- १ सर्व में कम भाग्यांतिक समुद्र्यात वाले
- २ उनमें वेदनी गहन्यात वाले असंख्यात गुणा
- ३ " कषाय " " संख्यात "
- ४ " अममोदिया " " असंख्यात "

॥ इति समुद्र्यात पद सम्पूर्णं ॥









## ❧ नियंठा ❧

नियंत्रणों पर ३६ द्वार-भगवती सूत्र शतक  
 २५ उद्देशा छटा-१ पञ्चवणा ( प्ररूपणा ) २ वेद ३ राग  
 ( सगर्भा ) ४ कन्ध ५ चारित्र ६ पडिभेवन ( दोष मेवन )  
 ७ ज्ञान ८ तीर्थ ९ लिग १० शरीर ११ क्षेत्र १२ काल  
 १३ गति १४ मंथम स्थान १५ ( निकामे ) चारित्र पर्याप  
 १६ योग १७ उपयोग १८ कषाय १९ लेश्या २० परि-  
 णाम (३) २१ बन्ध २२ वेद २३ उदीरणा २४ उपसंप-  
 ञ्कार ( कहाँ जावे ? ) २५ संघ्रायदृत्ता २६ आहार  
 २७ भव २८ आग्रेस ( कितनी बार आवे ? ) २९ काल  
 स्थिति ३० आन्तरा ३१ समुद्र्यात ३२ क्षेत्र ( विस्तार )  
 ३३ स्पर्शना ३४ भाव ३५ परिणाम ( कितने पावे ? )  
 औ० ३६ अलर बहुत्व द्वार ।

१ पञ्चवणा द्वार-नियंत्रण ( साधु ) ६ प्रकार के  
 रूपे गये हैं यथा—१ पुलाक २ चक्र ३ पडिभेवणा  
 ( ना ) ४ कषाय कुशील ५ नियंत्रण ६ स्नातक ।

१ पुलाक-चावज की शाल समान जिनमें सार वस्तु  
 कम और भूसा विशेष होता है । इसके दो भेद—१ लब्धि  
 पुलाक कोई चक्रवाँ आदि किसी जैन मुनि की अथवा  
 जिन शामन आदि की अशातना करे तो उसकी भेना  
 आदि को चक्रवाँ करने के लिये लब्धि का प्रयोग करे





एवं १० कल्पों में से प्रथम का और अन्तका तीर्थ-  
कर के शासन में स्थित कल्प होते हैं शेष २२ तीर्थकर  
के शासन में अस्थित कल्प हैं उक्त १० कल्पों में से ४-७  
६-१० एवं ४ स्थित कल्प हैं और १ २-३-५-६-८ अस्थित  
कल्प हैं ।

स्थिवर कल्प=शास्त्रोक्त वस्त्र-पात्रादि रखे ।

जिन कल्प=अ. २ उ. १२ उपकरण रखे ।

कल्पातीत=केवली, मनः पर्यव, अवधि ज्ञानी, १४  
पूर्व घाटी, १० पूर्व घाटी, श्रुत केवली और जातिस्मरण  
ज्ञानी ।

पुलाक.=स्थित, अस्थित और स्थिवर कल्पी होवे ।

वकुश और पहिसेवया नियंता में कल्प ४, स्थित,  
अस्थित, स्थिवर और जिन कल्पी ।

कपाय कुशील में ५ कल्प-ऊपर के ४ और कल्पा-  
तीत निर्ग्रथ और स्नातक-स्थित, अस्थित और कल्पातीत  
में होवे ।

५ चरित्र द्वार-चारित्र ५ हैं । सामाजिक २ छेदीप-  
स्थापनीय २ पहिहार विशुद्ध ४ कल्प संपराय ५ यथा-  
न्याय पुलाक, वकुश, पहिसेवया में प्रथम दो चारित्र ।  
कपाय-कुशील में ४ चरित्र और निर्ग्रथ, स्नातक में  
पथ तय चरित्र होवे ।

६ पहिसेवया द्वार-मूल गुण पट । । महावन में



दोष) और उत्तर गुणपडि । ( गोचरी आदि में दोष ); पुलाक, वकुश, पडिसेवण में मूल गुण, उत्तर गुण दोनों की पडि० शेष तीन नियंठा अपडिसेवी । ( ब्रतों में दोष न लगावे ) ।

७ ज्ञान द्वार-पुलाक, वकुश, पडिसेवण नियंठा में दो ज्ञान तथा तीन ज्ञान, कपाय कुशील और निर्ग्रय में २-३-४ज्ञान और स्नातक में केवल ज्ञान । श्रुत ज्ञान आधीपुलाक के ज० ६ पूर्व न्यून, उ० ६ पूर्व पूर्ण, वकुश और पडिसेवण के ज० ८ प्रवचन । उ० दश पूर्व० कपाय कुशील तथा निर्ग्रय के ज० ८ प्रवचन, उ० १४ पूर्व स्नातक एवं व्यतिरिक्त ।

८ तीर्थ द्वार-पुलाक, वकुश, पडिसेवण तीर्थ में होवे । शेष तीन तीर्थ में और अतीर्थ में होवे । अतीर्थ में प्रत्येक पुढ आदि होवे ।

९ लिंग द्वार-यं ६ नियंठा ( माघु ) द्रव्य लिंग अपेक्षा मल्लिंग, अन्य लिंग अपेक्षा गृहस्थ लिंग में होवे । मावापेक्षा मल्लिंग ही होवे ।

१० शरीर द्वार-पुलाक, निर्ग्रय, और स्नातक में ३ ( औ० ने० का० ), वकुश, पडिसे० में ४ ( औ० वै० ने० का० ), कपाय कुशील में ५ शरीर ।

११ क्षेत्र द्वार-६ नियंठा जन्म अपेक्षा १५ कर्म-  
लिंग में होवे । संज्ञान अपेक्षा । ५ नियंठा ( पुलाक



प्रयत्निराक ४ सामानिक ५ अक्षमिन्द्र । पुत्राक. वक्रश, पदि सेवण, प्रथम ४ पदवी में से १ पदवी पावे । कपाय कुशील ५ पदवी में से १ पावे, निर्ग्रय अक्षमिन्द्र होवे- स्नातक आराधक अक्षमिन्द्र होवे तथा मोक्ष जावे. विराधक ज० विरा० होवे तो ४ पदवी में से १ पदवी पावे० उ० वि० २४ ऽण्ड. में क्रमण करे ।

१४ संयम द्वार-संख्याता स्थान असंख्याता है । चार नियंठा में असंख्याता संयम स्थान नौ निर्ग्रय, स्नातक में संयम स्थान एक ही होवे । सर्व से कम नि० स्ना०के सं० स्था० । उनसे पुत्राक के सं० स्था० असंख्यात गुणा० उनसे वक्रश के सं० स्था० असंख्यात गुणा, उनसे पदि सेवण सं० स्था० असंख्यात गुणा० उनसे कपाय कुशील का सं० स्था० असंख्यात गुणा ।

१५ निकासे-( संयम का पर्याय ) द्वार-सर्षों का चारित्र पर्याय अनन्ता अनन्ता, पुत्राक से पुत्राक का चारित्र पर्याय परस्पर छठाणवलिषा । यथा -

१ अनन्त भाग हानि, २ असंख्य भाग हानि,  
३ संख्यात भाग हानि ।

४ संख्यात भाग हानि ५ असंख्य भाग हानि ६  
अनन्त भाग हानि ।

१ अनन्त ,, वृद्धि २ ,, ,, वृद्धि ३ संख्यात ,, वृद्धि  
४ संख्यात ,, ,, ५ ,, ,, ,, ६ अनन्त ,, ,,



१८ कपाय द्वार-प्रथम ३ नियंठा में सकपायी ( संज्वलन का चोक ) कपाय कुशील में सज्वलन ४ ३-२ १ निर्ग्रन्थ अकपायी ( उपशम तथा चीण ) और स्नातक अकपायी ( चीण )

१९ लेख्या द्वार-पुलाक, वकृश, पडिसेण में ३ शुभ लेख्या, कपाय कुशील में ६ लेख्या, निर्ग्रन्थ में शुक्ल लेख्या स्नातक में शुक्ल लेख्या अथवा अलेशी ।

२० परिणाम द्वार-प्रथम नियंठा में तीन परिणाम १ हायमान २ वर्धमान ३ अवस्थित-१ घटता २ बढ़ता ३ समान ) हाय वर्ध की स्थिति ज० १ समयकी उ० अं० मु० अवस्थित की ज० १ समय उ० ७ समय की, निर्ग्रन्थ में वर्धमान परिणाम अवस्थित में २ परिणाम स्थिति ज० १ समय, उ० अं० मु० स्नातक में २ ( वर्ध० अव० ) वर्ध की स्थिति ज० १ समय, उ० अं० मु० अव० की स्थिति ज० अं० मु० उ० देश उणी पूर्ण कोइ की ।

२१ बन्ध द्वार-पुलाक ७ कर्म ( आयुष्य सिद्धय ) बान्ध, वकृश आर पडिमवण ७ ८ कर्म बान्धे, कपाय कुशील ६-७ तथा ८ कर्म ( आयु-माह निराय ) बान्धे निर्ग्रन्थ १ शान्त वेदनीय बान्ध और स्नातक शान्त वेदनीय बान्ध अथवा अवन्ध । नदी बन्ध ।

२२ बन्ध द्वार-प्रथम नियंठा ८ कर्म वेद निर्ग्रन्थ ७ कर्म वेद निराय १८ स्नातक ८ कर्म अघाती) वेदे ।

२३ उद्गारण द्वार-पुलाक ६ कर्म ( आघु-मोह सिषाय ) को उद्गो करे वक्षुश पडिसेवण ६-७ तथा = कर्म उदेरे कपाय कुशील ५-६-७-८ कर्म उदेरे ( ५ होवे तो आघु, मोह वेदनीय छोडकर ), निर्ग्रन्थ २ तथा ५ कर्म उदेरे ( नाम-गोत्र ) और स्नातक अनुदारिक ।

२४ उपसंपभरण द्वार-पुलाक, पुलाक को छोडकर कपाय कुशील में अथवा असंयम में जावे, वक्षुश वक्षुश को छोड कर पडिसेवण में, कपाय कुशील में असंयम में तथा संयमासंयम में जावे । इसी प्रकार चार स्थान पर पडिसेवण नियंता जावे कपाय कुशील ६ स्थान पर ( पु०, व०, पडि०, असंय०, संयमामं० तथा निर्ग्रन्थ में ) जावे निर्ग्रन्थ निर्ग्रन्थ पने को छोड कर कपाय कुशील स्नातक तथा असंयम में जावे और स्नातक मोक्ष में जावे ।

२५ संज्ञा द्वार-पुलाक, निर्ग्रन्थ और स्नातक नो-संज्ञा वक्षुता । वक्षुश, पडिसेवण और कपाय कुशील संज्ञा वक्षुता और नो-संज्ञा वक्षुता ।

२६ आहारिक द्वार-पानयट्टा अहारिक और स्नातक आहारिक तथा अनाहारिक ।

२७ भव द्वार-पुलाक और निर्ग्रन्थ भव कर ज० ?  
 २८ उ वक्षुग. पडि०, कपाय कु० ज० ? उ० १५ या  
 २९ उ और स्नातक उर्मा भव में मोक्ष जावे

२८ आगरेस द्वार-पुलाक एक भव में ज० १ वार उ० ३ वार आवे अनेक भव आधी ज० २ वार उ० ७ वार आवे वक्रुश पडि० और कपाय कु० एक भव में ज० १ वार उ० प्रत्येक १०० वार आवे अनेक भव आधी ज० २ वार उ० प्रत्येक हजार वार, निर्ग्रन्थ एक भव आधी ज० १ वार उ० २ वार आवे अनेक भव आधी ज० २ उ० ५ वार आवे स्नातक पना ज० उ० १ ही वार आवे ।

२९ काल द्वार-( स्थिति ) पुलाक एक जीव अपेक्षा ज० १ समय उ० अं० मु०, अनेक जीव अपेक्षा ज० उ० अन्तर्मुहूर्त की वक्रुश एक जीव अपेक्षा ज० १ समय उ० देश उणा पूर्व क्रोड, अनेक जीवापेक्षा शाश्वता पडिसे०, कपाय कु० वक्रुश वत् निर्ग्रन्थ एक तथा अनेक जीवापेक्षा ज० १ समय उ० अन्तर्मुहूर्त स्नातक एक जीवाधी ज० अं० मु०, उ० देश उणा पूर्व क्रोड, अनेक जीवापेक्षा शाश्वता है ।

३० आन्तरा ( अन्तर ) द्वारः-प्रथम ५ नियंठा में आन्तरा पड़े तो १ जीव अपेक्षा ज० अं० मु०, उ० देश उणा अर्ध पुद्गल परावर्तन काल तक स्नातक में एक जीवापेक्षा अन्तर न पड़े अनेक जीवापेक्षा अ तर पड़े तो पुलाक ज० १ समय, उ० संख्यात काल, निर्ग्रन्थ में ज० १ मय उ० ६ माह शेष ४ में अन्तर न पड़े ।

३१ मसुद्घान द्वार पुलाक में ३ समु० ( वेदनी,





निर्ग्रन्थ	,, १६२	१-२-३ प्रत्येक सौ ०
स्नातक	,, १०८	प्रत्येक श्रोत्र नियमा

३६ अल्प बहुत्व द्वार-सर्व से कम निर्ग्रन्थ नियंठा, उनसे पुलाक वाले संख्यात गुणा । उनसे स्नातक संख्यात गुणा । उनसे वदुश सं०, उनसे पडिसेवण संख्यात गुणा, और उनसे कषाय कुशील का जीव संख्यात गुणा ।

॥ इति नियंठा सम्पूर्ण ॥





साधु परिहार विशुद्ध चारित्र्य ले । जिनमें से ४ मुनि ६ माह तप करे, ४ मुनि वैयावच्य करे और १ मुनि ध्यास्थान देवे । दूसरे ६ माह में ४ वैयावच्यी मुनि तप करे, ४ तप करने वाले वैयावच्य करे और १ मुनि ध्यास्थान देवे । तीसरे ६ माह में १ ध्यास्थान देने वाला तप करे, १ ध्यास्थान देवे और ७ मुनि वैयावच्य करे । तपार्थी उनाले में एकान्तर उपवास, शिवालै दृढ हउ पारणा, सोमागे अठम २ पारणा करे एवं १८ माह तप कर के जिन कर्त्वी होवे अथवा पुनः गुरुकुल वास स्वीकारे ।

सूदम संपराय चारित्री के २ भेद-संपत्तेशु परिणाम-उपशम भेरी मे गिरने वाले ( २ ) विशुद्ध परिणाम-व्यक्त भेरी पर चढ़ने वाले ।

५ गद्यास्थान चारित्री के २ भेद-(१) उपशान्त धीतगामी ११ वे गुणस्थान वाले (२) क्षीण धीतगामी के २ भेद हृदय और केवली ( सयोगी तथा अयोगी ) ।

२ चंद्र द्वार-नामा०, हृदोप० वाले मंदि ( ३ वेद ) देवा अर्वादी नववैदिक अथवा ) परि० वि०, पुरुष वा पुरुष नृमक वी० पुत्रम म० अ० देवा० अर्वादी ।

३ राग द्वार-४ मयनी मरुती और गद्यास्थान मयनी व मरुती ।

४ चंद्र द्वार ३०४ क १ वेद नाथ अनुगा-



६ पाण्डिसेवण द्वार-सामा०, छेदो०, संयति मूल गुण प्रति सेवी ( ५ महाव्रत में दोष लगावे ) तथा उत्तर गुण प्रति सेवी ( दोष लगावे ) तथा अप्रति सेवी ( दोष नहीं भी लगावे ) शेष ३ संयति अप्रति सेवी ( दोष नहीं लगावे )

७ ज्ञान द्वार—४ संयति में ४ ज्ञान ( २-३-४ ) की मजना और यथाख्यात में ५ ज्ञान की मजना ज्ञानाभ्यास अपेक्षा—सामा०, छेदो०, में ज० अष्ट प्रवचन ( ५ समिति, ३ गुप्ति ) उ० १४ पूर्व तक परि० में ज० ६ वे पूर्व की तीसरी आचार वन्धु तक उ० ६ पूर्व सम्पूर्ण सूक्ष्म सं० और यथा० ज० अष्ट प्रवचन तक उ० १४ पूर्व तथा सूत्र व्यतिरिक्त ।

८ तीर्थ द्वार—सामादिक और यथाख्यात संयति तीर्थ में, अतीर्थ में, तीर्थकर में और इत्येक बुद्ध में होवे छेदो०, परि०, सूक्ष्म० तीर्थ में ही होवे ।

९ लिंग द्वार-परि० द्रव्ये भावे स्वर्लिगी होवे शेष चार संयति द्रव्ये स्वर्लिगी, अःस्वर्लिगी तथा गृहस्थ लिगी होवे परन्तु भावे स्वर्लिगी होवे ।

१० शरीर द्वार—सामा०, छेदो०, में ३-४-५ शरीर होवे शेष तीन में ३ शरीर ।

११ छेद द्वार—सामा०, सूक्ष्म०, तथा०, १५ कर्म भूमि में और छेदो०, परि० ५ मन्त ५ ऐगवर्त में होवे



तो पांच में से १ पदवी पावे, परि० प्रथम ४ में से १ पदवी पावे । सूक्ष्म० यथा० वाले अहमेन्द्र पद पावे, ज० विराघक होवे तो ४ प्रकार के देवों में उपजे, उ० विराघक होवे तो संसार भ्रमण करे ।

१४ संयम स्थान--सामा० छेदो० परि० में असंख्यासं० स्थान होवे० सूक्ष्म० में अं० म० के जितने असंख्य और यथा० का सं० स्थान एक ही है । इनका अन्व बहुत्व ।

सर्व से कम यथा० संयति के संयम स्थान

उनमें सूक्ष्म संपराय के सं० स्थान असंख्यात गुणा

॥ परि हार वि० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ सामा० छेदो० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ परस्पर तुल्य

१५ निकासे द्वार-एकेक संयम क पर्यव ( पर्यव )

अनन्ता अनन्त हैं प्रथम तीन संयति के पर्यव परस्पर तुल्य

तथा पद गुण हानि वृद्धि सूक्ष्म० यथा० से ३ संयम अनन्त

गुणा न्यून हैं सूक्ष्म० तीनों ही से अनन्त गुणा अधिक है

परस्पर पद गुण हानि वृद्धि और यथा० से अनन्त गुणा

न्यून है यथा० चारों ही से अनन्त गुणा अधिक है परस्पर

तुल्य है ।

अन्व बहुत्व ।

सर्व से कम सामा० छेदो० के ज० संयम पर्यव ( परस्पर तुल्य )

उत्तम ।

२ परिवार विगृह के	"	"	"	अनन्त गुणा	"
३ " " "	उत्कृष्ट	"	"	"	"
४ सामा० हेतु०	"	"	"	"	"
५ अर्थन संवसार	"	उत्कृष्ट	"	"	"
६ " " "	"	उत्कृष्ट	"	"	"
७ तथा अर्थवत्	"	उ० उ०	"	"	"

१६ योग द्वार-४ संज्ञा, अर्थोमी और तथा० अर्थोमी और अर्थोमी ।

१७ उपयोग द्वार-अर्थन में साकार उपयोगी होने से या में साकार-निर्गकार दोनों ही उपयोग वाले होते ।

१८ अर्थवत् द्वार-३ संज्ञा संज्ञात्वन का चोक ( यही ही अर्थवत् ) में होने अर्थन० अर्थवत्० ही होने और तथा० अर्थवत् ( उपलान्त तथा ही ) होने

१९ अर्थवत् द्वार-सामा० हेतु० में ६ अर्थवत् अर्थवत् में ३ अर्थवत् अर्थवत् में अर्थवत् अर्थवत् तथा० में १ अर्थवत् अर्थवत् तथा अर्थवत् ही होने ।



२१ घन्घ द्वार-तीन संयति ७-८ कर्मे चांघे-सूक्ष्म-  
६ कर्म चांघे, ( मोह, आयु, छोड़ कर ), यथा० चांघे तो  
शाता वेदनी अथवा अघन्घ ( नहीं चांघे )

२२ वेदे द्वार-चार संयति ८-कर्म वेदे यथा० ७ कर्म  
( मोह सिवाय ) तथा ४ कर्म ( अघातिक ) वेदे ।

२३ उदीरणा-द्वार-उमा० छेदो० परि० ७-८ कर्म  
उदेरे ( उदीरणा करे ) सूक्ष्म० ५-६ कर्म-उदेरे ( ६-होवे हो  
आयु, मोह सिवाय ) ५ होवे तो आयु, मोह, वेदनी सिवाय  
यथा० ५ कर्म तथा २-कर्म ( नाम-गोत्र ) उदेरे तथा  
उदि० नहीं करे

२४ उपसंपज्भाणं द्वार-सामा० वाले सामा०  
संयम छोड़े तो ५-स्थान पर ( छेदो० सूक्ष्म० संयम० तथा  
असंयम में ) जावे, छेदो० वाले छोड़े तो ५-स्थान पर  
( सामा० परि० सूक्ष्म० संयमा० तथा असंयम में ) जावे परि०  
वाले छोड़े तो २ स्थान पर ( छेदो० असंयम में ) जावे, सूक्ष्म०  
वाले छोड़े तो ४ स्थान पर ( सामा० छेदो० यथा० असंयम  
में ) जावे, यथा० वाले छोड़े तो ३ स्थान पर ( सूक्ष्म०  
असंयम तथा मोक्ष में ) जावे ।

२५ संज्ञा द्वार-३ चारित्र्य में ४ संज्ञावाला तथा संज्ञा  
रहित शेष में संज्ञा नहीं ।

२६ आहार द्वार-४ संयम में आहारिक और यथा०  
और अनाहारिक दोनों होवे ।

२७ भव द्वार-इ संयति ज० १ भव को उ० ८ भव ( = मनुष्य का, ७ देवता का एवं १५ भव ) करके मोक्ष जावे सूक्ष्म ज० १ भव उ० ३ भव को यथा० ज० १ उ० ३ भव करके तथा उसी भव में मोक्ष जावे ।

२८ आगरेस द्वार-संयम कितनी वार आवे १

नाम	एक भव अपेक्षा	अनेक भव अपेक्षा
	ज. उत्कृष्ट	ज. उत्कृष्ट
सामायिक	१ प्रत्येक सौ वार	२ प्रत्येक हजार वार
छेदोपस्था०	१ " "	२ नवसो वार से अधिक
परिहार वि०	१ तीन वार	२ " "
सूक्ष्म सं०	१ चार " "	२ नव वार
यथा ख्यात	१ दो " "	२ पांच " "

२९ स्थिति द्वार-संयम कितने समय रहे ?

एक जीवापेक्षा      अनेक जीवापेक्षा

नाम	ज० उत्कृष्ट	जयन्त्य उत्कृष्ट
सामायिक	१ स. देश उ. क्रो. पृ०	शाश्वता शाश्वता
छेदोपस्थ०	" " "	२० वर्ष ५० क्रोड सागर
परिहार वि०	" २६ वर्ष उद्या	" देश उद्या. देश उ. क्रो. पृ. २५० वर्ष

संयम संप्रदाय .. अन्नमहत् अन्नमहत् अन्नमहत्  
 यथा ख्यात .. देश उद्या क. पृ. शाश्वता शाश्वता

३० अन्तर द्वार-एक जीवापेक्षा ५ भवति वा अन्तर

ज० अ० मु० उ० देश उणा अघे पुद्गल परावर्तन काल, अनेक जीवापेक्षा-सामा०, यथा० में अन्तर नहीं पड़े, छेदो० में ज० ६३००० वर्ष, परि० में ज० ८४००० वर्ष का, दोनों में उ० देश उणा १८ कौड़ाकौड़ सागर का, और सूक्ष्म० में ज० १ समय उ० ६ माह का अन्तर पड़े।

३१ मसुद्घात द्वार-सामा० छेदो० में ६ सप्त० (केवली सप्त० छोड़ कर) परि० में ३ प्रथम की, सूक्ष्म० में नहीं और यथा० में १ केवली सप्त०।

३२ क्षेत्र द्वार-पाँचों ही संयति लोक के समंख्या-तयें माग होयें, यथा० वाले केवली सप्त० करे तो समस्त लोक प्रमाण होयें।

३३ स्पर्शना द्वार-क्षेत्र द्वार समान।

३४ भाय द्वार-४ संयति क्षयोपशम भाव में होयें और यथाव्याप्त उपशम तथा क्षायिक भाव में होयें।

३५ पणिनाम द्वार-स्यात् पावे तो-

नाम	वर्तमान अपेक्षा	पूर्व पर्याय अपेक्षा
	जघन्य उत्कृष्ट	जघन्य उत्कृष्ट
सामायिक	१ २-३ प्रत्येक हजार नियममें प्रत्येक ६० कौड़	
छेदावस्था०	॥ ॥ मो प्र.मो क ६ ॥ मो ॥	
वांदा वि०	॥ ॥ ॥ १-२-३ ॥ ॥ हजार	
सूक्ष्म सपराय	॥ १६२ (१०८५६६ ॥ ॥	॥ मो

(४ उपशम)



( ४ ) मात्र से ममता रहित संयम साधन समक कर भोगवे ।

५ उद्यम पासवण भ्वेल जल संघाण परिठावणिया समिति के ४ भेद—( १ ) द्रव्य मलमूत्रादे १० प्रकार के स्थान पर बैठे नहीं ( १ जहां मनुष्यों का आवन जावन हो २ जीवों की जहां घात होवे ३ विषम-ऊँची नीची भूमि पर ४ पोलो भूमि पर ५ सचित भूमि पर ६ संकड़ी ( विशाल नहीं ) भूमि पर ७ तुरन्त की ( अभी की ) अचित्त भूमि पर ८ नगर गाँव के समीप में ६ लीन फूलन हावे वहां १० जीवों के बिल ( दर ) होवे वहां न बैठे ) ( २ ) क्षेत्र से वस्ती को दुर्गन्ध होवे वहां तथा आने रास्ते पर न बैठे ( ३ ) काल से बैठने की भूमि को कालो काल पहिलेहण करे व पूजे ( ४ ) मात्र से बैठने को निकले तब आवस्तही ३ वार कहे बैठने के पहिले शकेन्द्र महाराज की आज्ञा मागे बैठते समय बौसिरे ३ वार कहे और बैठ कर आने समय निम्सही ३ वार कहे जन्दी सुख जावे इस तरह बैठे ।

३ गुप्ति के चार चार भेद ।

१ मन गुप्ति के ४ भेद—( १ ) द्रव्य से आरंभ समारंभ में मन न प्रवर्तावे ( २ ) क्षेत्र से ममस्त लोक में ( ३ ) काल में जाव जीव नक ( ४ ) मात्र से विषय









(३१) सचित्त पदार्थ ( लीलोत्री, कच्चा पानी आदि )  
मोगवे तो ॥ ११

(३२) शरीर में रोगादि होने पर गृहस्थों की सहायता  
लेवे तो ॥ ११

(३३) मूला आदि सचित्त लिलोत्री, (३४) भेलड़ी के  
डुकड़े (३५) सचित्त कंद (३६) सचित्त मूल, (३७) सचित्त  
फल कूल (३८) सचित्त बीजआदि ( ३९ ) सचित्त जमक  
(४०) मेधा नमक (४१) सामर नमक ( ४२ ) धूलखारा  
का नमक (४३) समुद्रका नमक (४४) काला नमक ये सर्व  
सचित्त नमक मोगवे ( म्नावे व वापरे ) तो अनाचार लगें ।

(४५) कपड़े को घूर आदि से सुगन्ध मय बनावे तो  
॥ ११

(४६) मोजन करके वसन करे तो ॥ ११

(४७) विना कर्मण रेचं [ जुलाब ] आदि लेवे तो ॥ ११

[४८] गुण स्थानों को घेवे, माक करे तो ॥ ११

[४९] आंग में अजन, सुग्मा आदि लगावे तो ॥ ११

[५०] दांतों को रंगावे तो ॥ ११

[५१] शरीर को तेज आदि लगा कर सुन्दर बनावे  
तो ॥ ११

(५२) शरीर की गोमा के निचे बाल, नग आदि  
उतारे ता अनाचार लगें ।







■

■



भी सरस आहार निमित्त निमंत्रण आने पर रस लोलुपता से सरस आहार ले लेंगे तो ।

श्री उत्तराध्ययन सूत्र में बताया है २ दोष ।

[१] अन्य कुल में से गोचरी नहीं करते हुए अपने सजन सम्बन्धियों के यहाँ से गोचरी करे तो ।

[२] बिना कारण आहार ले और बिना कारण आहार त्यागे ।

६ कारण से आहार लेवे

घुषा वेदनी सहन नहीं होनेसे

आचार्यादि की वैयावच हेतुमे

ईर्ष्या शोषने के लिए

संयम निर्वाह निमित्त

जीवों की रक्षा करने के लिए

धर्म कथादि कहने के लिए

६ कारण से आहार छोड़े

रोगादि होजाने से

उपसर्ग आने से

मद्यपर्ये के नहीं पलने पर

जीवों की रक्षा के लिए

तपश्चर्या के लिए

अनशन[संयम] करने के लिए

श्री दशयुक्तकालिक सूत्र में बताया है २३ दोष ।

[१] जहाँ नीचे दरवाजे में से होकर जाना पड़े वहाँ गोचरी करने में

[२] जहाँ शंभिरा गिनाता होवे उम स्थान पर " "

[३] गृहस्थों के द्वार पर बैठ दूरे चले बकरी ।

[४] बसे बन्नी ।

[५] कुम्भ ।

[६] गाय के बच्चे आदि को उलाप कर भावे लो ।





[५] मधुरवचन बोल कर [ खुशामद करके ] आहार का याचना करके लेवे तो ।

श्री निशीथ सूत्र में बताया हुये ६ दोष ।

[ १ ] गृहस्थ के यहां जाकर ' इम वर्तन में क्या है ' इस प्रकार पूछ २ कर याचना करे तो ।

(२) अनाथ, रुजू के पास से दीनतापूर्वक याचना करके आहार ले तो ।

(३) अन्य तीर्थी ( चाचा-साधु ) की मित्रता में से याचकर आहार लेवे तो ।

(४) पासत्या ( शिथिलाचारी ) के पास से याचकर लेवे तो ।

(५) जैन मुनियों की दुर्गन्धा करने वाले कुल में से आहार लेवे तो ।

(६) मकान की आज्ञा देने वाले को ( शठपातर ) साथ लेकर उसकी दलाली से आहार लेवे तो ।

श्री दशा धृत स्कन्ध सूत्र में बताया हुये २ दोष

(१) बालक निमित्त बनाया हुआ आहार लेवे तो

(२) गर्भवन्ती " " " " " "

श्री गृहत्करूप सूत्र में बताया हुआ १ दोष

(१) चार प्रकार का आहार रात्रि को वामी रत्नकर दूसरे रोज भोगवे तो दोष ।



# ॐ साधु-समाचारी ॐ

तथा

साधुओं के दिन कृत्य और रात्रि कृत्य  
भी उत्तराध्ययन सूत्र अध्ययन २६

समाचारी १० प्रकार की:-(१) आयस्मिन् (२) निमित्तिन् (३) आपुच्छन् (४) पण्डि पुच्छन् (५) छंदना (६) इच्छा कार (७) मिच्छा कार (८) तदकार (९) आह-टणा और (१०) उप-भंगया समाचारी ।

(१) आयस्मिन्-गाधु आवरषह-त्ररुगी ( आहार निहार, विहार ) कारण से उपाधय से पादर जाये तब 'आयस्मिन्' शब्द बोल कर निकले ।

(२) निमित्तिन्-कार्य समाप्त होने पर लोट कर त्रर पुनः उपाधय में आये तब 'निमित्तिन्' शब्द बोल कर भावे ।

(३) आपुच्छन्-गोपनी, परिभेदण आदि भावे सर्वे कार्य गुरु की आज्ञा लेकर करे ।

(४) पण्डपुच्छन्-अन्य गाधुओं का प्रत्येक कार्य गुरु की आज्ञा ल कर करना ।

• छंदना-स ह र गानी तद ही आज्ञा नुसार दे द र स र सान प्राण ल स व दू र आहार की



(५) चौथे पहर के ३ भाग तक स्वाध्याय करे (६) चौथे भाग में उपकरणों का पडिलेहण करे तथा पठाने की भूमि भी पडिलेहरे; तत्पश्चात् (७) देवसी प्रतिक्रमण करे ( ६ आवश्यक करे ) ।

### रात्रि कृत्य

देवसी प्रति क्रमण करने के बाद प्रथम पहर में अम्-ज्झाय टाल कर स्वाध्याय करे दूसरे पहर में ध्यान करे. स्वाध्याय का अर्थ चित्तवे तत्पश्चात् निद्राभावे तो तीसरे पहर में सविध यत्ना पूर्वक संधारा संस्तरी कर स्वन्न निद्रा लेकर चौथे पहर की शुरुआत में उठे, निद्रा के दोष टालने के निमित्त काउसग्य करे, पौन पहर तक स्वाध्याय सज्झाय करे. चौथे पहर में चौथे ( अंतिम ) भाग में रायसि प्रति-क्रमण करे पश्चात् गुरु बंदन करके पचछाण करे ।

॥ इति साधु समाचारी सम्पूर्ण ॥





## दिन पहर माप का यन्त्र

( श्री उत्तराख्ययन सूत्र अध्ययन २६ )

दिन में प्रथम दो पहर में माप उत्तर तरफ मुंह रखकर लेवे और पीछले दो पहर में माप दक्षिण तरफ मुंह रखकर लेवे दाहिने पैर के घुटने तक की छाया को अपने पगले ( पावने ) और अङ्गुल से मापे इस प्रकार पोरसी तथा पोन पोरसी का माप पैर और आङ्गुल बनाने वाला यन्त्र—

१ ली	और	४ थी	१ पौरसी	पोन	पोरसी				
माह	विदि७	अ	शुदि ७	पू.	विदि ७	अ.	शुदि ७	पूर्णिमा	
अपाठ	१,	आं.प.	आं.प.	मां.प.	आ.प.	आं.प.	आं.प.	मां.प.	मां.प.
२-३	२-२	२-१	२-०	२-६	२-८	२-७	२-६		
अवग	२-१	२-२	२-३	२-४	२-७	२-८	२-६	२-१०	
माह	१६२-५	२-६	२-७	२-८	३-१	३-२	३-३	३-४	
आश्विन	२-६	२-१०	२-११	३-०	३-५	३-६	३-७	३-८	
कार्तिक	३-१	३-२	३-३	३-४	३-६	३-१०	३-११	४-०	
मा.गर्ज.	३-५	३-६	३-७	३-८	४-३	४-४	४-५	४-६	
पौष	३-६	३-१०	३-११	४-०	४-७	४-८	४-९	४-१०	
माघ	३-११	३-१०	३-६	३-८	४-६	४-८	४-७	४-६	
फाल्गुन	४-७	३-६	३-५	३-४	४-२	४-१	४-०		
	३	३-२	३-१	३-०	३-१	३-०	३-६	३-८	





# रात्रि पहर देखने [जानने]की विधि

( भी उत्तराध्ययन सूत्र अध्ययन २६ )

जिस काल के अन्दर जो जो नक्षत्र समस्त रात्रिपूर्व करता होवे वो नक्षत्र के चौथे भाग में आता हो । उस समय ही पौरसी आती है रात्रि की चौथी पौरसी चरम ( अन्तिम ) चौथे भाग को ( दो घटी रात्रिको ) पाउस ( प्रभात ) काल कहते हैं । इस समय सज्झाय से निवृत्त हो कर प्रति क्रमण करे । नक्षत्र निम्न लिखित अनुसार है ।

थावण में--१४ दिन उत्तरापादा, ७ दिन अभिष, ८ दिन श्रवण १ धनिष्ठा

भाद्रपद में--१४दिन धनिष्ठा, ७दिन शतभिषा, ८ दिन पूर्वा भाद्रपद, १ दिन उत्तरा भाद्रपद

आश्विन में--१४ दिन उत्तरा भाद्रपद, १५ दिन रेवती १ दिन अश्वनी

कार्तिक में--१४ दिन अश्वनी, १५ दिन मारुती, १ दिन कृत्तिका

मगशर में--१४ दिन कृत्तिका, १५ दिन रोहिणी, १ दिन मृगशर

षोड में- १४ दिन मृगशर, ८ दिन आर्द्रा, ७ दिन पुनर्वसु १ दिन पुष्य ।



## १४ पूर्व का यन्त्र

१४ पूर्व के नाम	पद संख्या	क	ख	ग	घ	डांस्	विषय-वर्णन
उत्पाद	कोड़	१०	४	१			सर्वे द्रव्य, गुण पदार्थ की उत्पत्ति और नाश
अमर्णिय	७० लाख	१३	१२	२			संज्ञागुण्य का ज्ञान
वीर्य	६० "	"	"	४			जीवों के वीर्य का वर्णन
आस्ति	१ कोड़	१८	१०	"			आस्ति नास्ति का स्वरूप
नास्ति							और म्याद्वाद
ज्ञान प्रमाद्	२ "	१२	०	१६			पांच ज्ञान का व्याख्यान
सत्य "	२६ "	२	०	३२			सत्य संयम का "
आत्मा "	१ " ८० लाख	१६	०	६४			नव प्रमाण, दर्शन सहित
							आत्म स्वरूप
कर्म "	८४ लाख	३०	०	१२०			कर्म प्रकृति, स्थिति अनु-
							भाग, मूल उत्तर प्रकृति
प्रत्याख्यान	१ को १६०	२०	०	२५६			प्रत्याख्यान का प्रति-
प्रमाद्							पादन
विद्या प्रमाद्	२६ कोड़	१५	०	५१२			विद्या के अतिशय का
							व्याख्यान
कल्याणक "	१ "	१२	०	१०२४			भगवान के कल्याणक
प्रलायाय "	६ "	१५	०	२०४८			वेदस, इतिहास के वि. का
क्रियायशा	० को १० लाख	३०	०	४०६६			क्रिया का व्याख्यान
लोक विदु-	६६ लाख	२५	०	८१६२			विन्दु में लोक स्वरूप,
सार							सर्वे अक्षर सविषात

अम्बाही महिन हाथी के समान स्याही के ढगले से १४ पूर्व लिखाया जाता है एवं १४ लिपन के लिये कुन १६३८३ हाथी प्रमाण स्याही की जरूरत होती है इतनी स्याही से जा लिखा जाता है उम ज्ञान को १४ पूर्व का ज्ञान कहते हैं ।

॥ इति १४ पूर्व का यन्त्र सम्पूर्ण ॥



मन की स्थापना करे (२६) सतरह भेद से संयम पाले (२७)  
 बारह प्रकार का टप करे (२८) कर्म टाले (२९) विषय मुख टाले  
 (३०) अप्रतिबन्धपना करे (३१) स्त्री पुरुष नपुंसक रहित  
 स्थान भोगवे (३२) विशेषतः विषय आदि से निवर्ते (३३)  
 अपना तथा अन्य का लाया हुआ आहार वस्त्रादि इकट्ठे  
 करके शॉट लेवे इस प्रकार के संभोग का पञ्चखाण करे  
 (३४) उपकरण का पञ्चखाण करे (३५) सदोष आहार  
 लेने का पञ्चखाण करे (३६) कषाय का पञ्चखाण करे  
 करे (३७) अशुभ योग का पञ्च० (३८) शरीर शुद्धि का  
 पञ्च० (३९) शिष्य का पञ्च० (४०) आहार पानी का  
 पञ्च० (४१) दिशा रूप अनादि स्वभाव का पञ्च० (४२)  
 कपट रहित यति के वेप आचार में प्रवर्ते (४३) गुण-  
 वन्त साधु की सेवा करे (४४) ज्ञानादि सर्व गुण संयम  
 होवे (४५) राग द्वेष रहित प्रवर्ते (४६) क्षमा सहित प्रवर्ते  
 (४७) लोभ रहित प्रवर्ते (४८) अहङ्कार रहित प्रवर्ते (४९)  
 कपट रहित ( सरल-निष्कपट ) प्रवर्ते (५०) शुद्ध अन्तः-  
 करण ( सत्यता ) से प्रवर्ते (५१) करण सत्य ( सविधि  
 क्रिया काण्ड करता हुआ ) प्रवर्ते (५२) योग ( मन, वचन,  
 काया ) सत्य प्रवर्ते (५३) पाप से मन निवृत्त कर मनगुप्ति  
 से प्रवर्ते (५४) काम-गुप्ति से प्रवर्ते ( ५५ ) सत्य भाव  
 करके प्रवर्ते (५६) वचन ( ५७ ) सत्य भाव  
 पित करके प्रवर्ते (५८) क.



मन की स्थापना करे (२६) सतरह भेद से संपन्न पाले (२७)  
 पारह प्रकार का टप करे (२८) कर्म टाले (२९) विषय मूल टाले  
 (३०) अप्रतिबन्धना करे (३१) स्त्री पुरुष नपुंसक रहित  
 स्थान भोगवे (३२) विशेषतः विषय आदि से निवर्ते (३३)  
 अपना तथा अन्य का स्नाया हुआ आहार वस्त्रादि इकट्ठे  
 करके खाँटे लेवे इस प्रकार के संभोग का पञ्चखाण्य करे  
 (३४) उपकरण का पञ्चखाण्य करे (३५) सदोष आहार  
 लेने का पञ्चखाण्य करे (३६) कषाय का पञ्चखाण्य करे  
 करे (३७) अशुभ योग का पञ्च० (३८) शरीर शुश्रूषा का  
 पञ्च० (३९) शिष्य का पञ्च० (४०) आहार पानी का  
 पञ्च० (४१) दिशा रूप अनादि स्वभाव का पञ्च० (४२)  
 कपट रहित यति के वेप और आचार में प्रवर्ते (४३) गुण-  
 वन्त साधु की सेवा करे (४४) ज्ञानादि सर्व गुण संपन्न  
 होवे (४५) राग द्वेष रहित प्रवर्ते (४६) क्षमा सहित प्रवर्ते  
 (४७) लोभ रहित प्रवर्ते (४८) अहङ्कार रहित प्रवर्ते (४९)  
 कपट रहित ( सरल-निष्कपट ) प्रवर्ते (५०) शुद्ध अन्तः-  
 करण ( सत्यता ) से प्रवर्ते (५१) करण सत्य ( सर्वाधि-  
 क्रिया काण्ड करता हुआ ) प्रवर्ते (५२) योग ( मन, वचन,  
 काया ) सत्य प्रवर्ते (५३) पाप से मन निवृत्त कर मनगुप्ति  
 से प्रवर्ते (५४) काय-गुप्ति से प्रवर्ते (५५) मन में सत्य भाव  
 स्थापित करके प्रवर्ते (५६) वचन ( स्वाध्यादि ) पर सत्य  
 स्थापित करके प्रवर्ते (५७) काया को सत्य भाव से





१-२ देवलोकसे०	२॥	१॥ <sup>३</sup> / <sub>१९</sub>	६॥	२५	१००
यहां से	०॥ ३	४॥	१८	७२	२८८
३-४ देवलोकसे०	४	८	३२	१२८	५१२
५ यां ,,	०॥॥ ५	१८॥॥	७५	३००	१२००
६ हा ,,	० ५	६॥	२५	१००	४००
७ याँ ,,	० ४	४	१६	६४	२५६
८ याँ ,,	० ४	४	१६	६४	२५६
९-१० ,,	०॥ ३	४॥	१८	७२	२८८
११-१२ ,,	०॥ २॥	३ <sup>३</sup> / <sub>८</sub>	१२॥	४०	२००
यहां से	० २॥	१॥ <sup>३</sup> / <sub>१९</sub>	६॥	२५	१००
नय प्रीयवेक	०॥॥ २	३	१२	४८	१९२
यहां से	०॥ १॥	१ <sup>३</sup> / <sub>८</sub>	४॥	१८	७२
५ अनु. वि.	०॥ १	०॥	२	८	३२

कुल ऊर्ध्व लोक के ६३॥ पन राज हुवे और सम लोक के २३६ पन राज हुवे ।

॥ इति १४ राजलोक सम्पूर्ण ॥



योजन की है परंतु पृथ्वी पिण्ड १ ली नरक का १८०००० यो०, दूसरी का १३२००० यो०, तीसरी का १२८००० यो०, चौथी का १२०००० यो०, पांचवीं का ११८००० यो०, छठी का ११६००० यो०, और सातवीं का १०८००० योजन का पृथ्वी पिण्ड है ।

(६) करण्ड द्वार-पहेली नरक में ३ करण्ड हैं (१) खरकरण्ड १६ जात का रत्न मय १६ हजार. योजन का (२) आयुल बहुल पानी (जल) मय ८० हजार योजन का (३) पंक बहुल कर्दम मय ८४ हजार योजन का कुल १८०००० योजन है शेष ६ नरकों में करण्ड नहीं ।

७ पाथड़ा ८ आन्तरा द्वार-पृथ्वी पिण्ड में से १००० योजन ऊपर और १००० योजन नीचे छोड़ कर शेष पोलार में आन्तरा और पाथड़ा है । केवल ७ वीं नरक में ५२५०० यो० नीचे छोड़ कर ३००० योजन का एक पाथड़ा है ।

पहेली नरक में	१३	पाथड़ा,	१२	आन्तरा	है
दूसरी	"	"	११	"	"
तीसरी	"	"	६	"	"
चौथी	"	"	७	"	"
पांचवीं	"	"	५	"	"
छठी	"	"	३	"	"

पहेली नरक के १२ आन्तरा में से २ ऊपर के छोड़



१५ नरक वासा द्वार-पहेली नरक में ३० लाख, दूसरी में २५ लाख, तीसरी में १५ लाख, चौथी में १० लाख, पांचवीं में ३ लाख, छठी में ६६६६५ और सातवीं नरक में ५ नरक वासा हैं। इनमें ५ नरकवासा असंख्यव योजन का है जिनमें असंख्यव नेरिये हैं। १ नरक वासा संख्यव योजन का है और उनमें संख्यव नेरिया हैं।

तीन चिमटी बजाने में जम्बूद्वीप की २१ वार प्रद-चिणा करने की गति वाले देवों को ज. १-२-३ दिन० उ० ६ माह लगे कितनों का अन्त आवे और कितनों का नहीं आवे, एवं विस्तार वाला असंख्य योजन का कोई २ नरक वासा है।

१६ मलोक अन्तर-१७ बलीया द्वार-मलोक और नरक में अन्तर है, जिसमें घनोदधि, घनवायु और तनुवायु का तीन बलय ( चूड़ी कड़ा ) के आकार समान आकार है—

नरक	रव प्र०	शंका प्र०	वास्तु प्र०	पंक प्र०	धूम प्र०	तन प्र०	तमनमा प्र०
मलोक सं०	१२ यो०	१२ $\frac{१}{२}$ यो०	१२ $\frac{१}{२}$ यो०	१४ यो०	१४ $\frac{३}{२}$ यो०	१२ $\frac{३}{२}$ यो०	१२ यो०
बलय सं०	३	३	३	३	३	३	३
घनोदधि	६ यो०	६ $\frac{१}{२}$ यो०	६ $\frac{३}{२}$ यो०	० यो०	० $\frac{१}{२}$ यो०	० $\frac{३}{२}$	८ यो०
घनवायु	४१ यो०	४१	४१	४१	४१	४१	६ ११
तनुवायु	४१	४१ $\frac{१}{२}$	४१ $\frac{३}{२}$	४१	४१ $\frac{१}{२}$	४१ $\frac{३}{२}$	२ ११



## ❀ भवनपति विस्तार ❀

भवनपति देवों के २१ द्वार—१ नाम २ राम  
३ राजधानी ४ ममा ५ मान संख्या ६ वर्ण ७ वर  
८ चिन्ह ९ इन्द्र १० सामानिक ११ लोकपाल १२ प्रथम  
स्त्रिया १३ आत्म रक्षक १४ अनीका १५ देवी १६ परिष  
१७ परिचारणा १८ वैश्विष १९ अवधि २० मि  
२१ उत्पन्न द्वार ।

१ नाम द्वार—१० भेद—१ अमुर कुमार २ ना  
कुमार ३ सुवर्ण कुमार ४ विष्णु कुमार ५ अग्नि कुमा  
६ द्वीप कुमार ७ दिशा कुमार ८ उदधि कुमार ९ वा  
कुमार १० स्तनिवृ कुमार ।

२ यासा द्वार—पहली नरक के १२ आन्तराश्रमों  
में नीचे के १० आन्तराश्रमों में दश जाते हैं भवनपति  
रहते हैं ।

३ राजधानी द्वार—भवनपति की राजधानी नि  
लोक के अक्षय वर द्वीप—मगदूरी में उत्तर दिशा के अन्द  
' अमर संघा ' बलेन्द्र की राजधानी है और दूमेर नर  
निष्क'य के देवों की भी राजधानियाँ हैं । दक्षिण दिशा में  
' अमर संघा ' समेन्द्र की और नर निष्क'य के देवों की  
भी राजधानियाँ हैं ।

४ ममा द्वार एक ही १-१ क. वायव ममा है-





सामानिक देव—( इन्द्र के उमराव समान देव )  
चमरेन्द्र ६४०००, वलेन्द्र के ६०००० और शेष १८  
इन्द्रों के छः २ हजार सामानिक देव हैं।

११ लोक पाल देव—( कोठ बाल समान ) प्रत्येक  
इन्द्र के चार २ लोक पाल हैं।

१२ त्रयस्त्रिंश देव—( राज गुरु समान ) प्रत्येक  
इन्द्र के तैंतीश २ त्रयस्त्रिंश देव हैं।

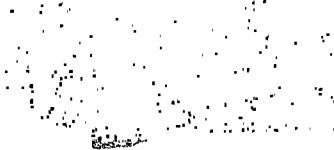
१३ आत्म रक्षक देव—चमरेन्द्र के २५६००० देव,  
वलेन्द्र के २४०००० देव और शेष इन्द्रों के २४-२४  
हजार देव हैं।

१४ अनीका द्वार-हार्थी, घोड़े, रथ, मोष, पैदल,  
गंधर्व, नृत्यकार एवं ७ प्रकार की अनीका है प्रत्येक  
अनीका की देव संख्या—चमरेन्द्र के ८१२८०००, वलेन्द्र  
के ७६२०००० और १८ इन्द्रों के ३५५६००० देव  
होते हैं।

१५ देवी द्वार—चमरेन्द्र तथा वलेन्द्र की ५-५  
अग्रमहिषी (पटरानी) हैं प्रत्येक पटरानी के आठ हजार  
देवियों का परिवार है एकेक देवी आठ हजार वैक्रिय कर  
अर्थात् ३२ फोड वैक्रिय रूप होते हैं शेष १८ इन्द्रों की  
६-६ अग्रमहिषी हैं एकेक के ६ ६ हजार देवियों का  
परिवार है योग सर्व ६-६ हजार वैक्रिय कर एवं २१  
६० लाख वैक्रिय रूप होते हैं।











किन्नर	किन्नर	किंपुरुष	अशोक वृष
किंपुरुष	सापुरुष	महापुरुष	चंपक "
महोरग	अतिक्राय	महाक्राय	नाग "
गंधर्व	गति रति	गति यश	तुंबरु "
जागपन्नो	सनिहि	सामानो	कदम्बा "
पाण पन्नो	धार्ई	विधार्ई	सुलग्न "
ईसी वाय	श्यापि	श्यापि पाल	षड् "
भूय वाय	ईश्वर	महेश्वर	सर्तक उपकर
कन्दिय	सुविच्छ	विशाल	अशोक वृष
महाकान्देय	हास्य	हास्यगति	चंपक "
कोदण्ड	श्वेत	महाश्वेत	नाग "
पयंग देव	पयंग	पयंग पति	तुंबरु "

१० सामानिक द्वार—गर्भे इन्द्रों के चार चार हजार सामानिक हैं ।

११ आत्म रक्षक द्वार—गर्भे इन्द्रों के सोलह सोलह हजार आत्म रक्षक देव हैं ।

१२ परिपत्रा द्वार—मरुत पनि समान इनके भी तीन प्रकार की मवा हैं । ( १ ) आभ्यन्तर ( २ ) मध्यम ( ३ ) बाह्य ।

मवा	देव मन्त्रा	स्थिति	दही मन्त्रा	स्थिति
आभ्यन्तर	२०००	॥ पश्य	३००	॥ पश्य जात्रेरी
मध्यम	१०००	॥ "मन्त्र	१०००	"
बाह्य	३००	॥ पश्य	१०००	" मन्त्र





## ❧ ज्योतिषी देव विस्तार ❧

ज्योतिषी देव २॥ द्वीप में ( वा चलने वाले ) और २॥ द्वीप बाह्य विर हैं ये पकी ईंट के आकारवत् हैं सूर्य-सूर्य के और चन्द्र-चन्द्र के एक-एक लाख योजन का अन्तर है चर ज्योतिषी से स्थिर ज्यो० आधी क्रान्ति बलि है चन्द्र के साथ क्रमिक नक्षत्र और सूर्य के साथ पुष्य नक्षत्र का सदा योग है मानुषोत्तर पर्वत से आगे और अलोक से ११११ योजन इस तरह उसके बीच में स्थिर ज्यो० देव-विमान हैं परिवार चर ज्यो० समान जानना ।

ज्यो० के ३१ द्वार-१ नाम २ वासा ३ राजधानी ४ समा ५ वर्ण ६ वस्त्र ७ चिन्ह ८ विमान चौड़ाई ९ विमान जाड़ाई १० विमान बाइक ११ मांडला १२ गति १३ ताप क्षेत्र १४ अन्तर १५ संख्या १६ परिवार १७ इन्द्र १८ सामानिक १९ आत्म रक्षक २० परिपदा २१ अनीका २२ देवी २३ गति २४ श्रद्धि २५ वैक्रिय २६ अवधि २७ परिवारण २८ सिद्ध २९ भव ३० अन्न महत्त्व ३१ उत्पन्न द्वार।

१ नाम द्वार-१ चन्द्र २ सूर्य ३ ग्रह ४ नक्षत्र और ५ तारा

२ वासा द्वार-तीर्थ लोक में समभूमि में ७६०





ग्रह वि० की, १ गाउ नक्षत्र वि० की और ०॥ गाउ तारा वि० की चौड़ाई है। जाड़ाई इस से आधी २ जानना सर्व विमान स्फटिक स्तन मय हैं।

१० विमान वाहक-ज्योतिषी विमान आकाश के आधार पर स्थित रह संकते हैं परन्तु स्वामी के बहुमान के लिये जो देव विमान उठाकर फाते हैं उनकी संख्या-चन्द्र सूर्य के विमान के १६-१६ हजार देव, ग्रह के विमान के ८-८ हजार देव, नक्षत्र विमान के ४-४ हजार और तारा विमान के २-२ हजार देव वाहक हैं। ये समान २ संख्या में चारों ही दिशाओं में मुँह करके-पूर्व में सिंह रूप से, पश्चिम में शृषभ रूप से, उत्तर में अश्व रूप से, और दक्षिण में हस्ति रूप से, देव रहते हैं।

११ मांडला द्वार-चन्द्र सूर्य आदि की प्रदक्षिणा ( चारों ओर चकर लगाना )-दक्षिणायन में उत्तरायण जाने के मार्ग को ' मांडला ' कहते हैं। मांडले का क्षेत्र ५१० यो० का है। जिसमें ३३० यो० लवण समुद्र में और १८० यो० जंबूद्वीप में है। चन्द्र के १५ मांडले हैं। जिनमें से १० लवण में, ५ जंबू द्वीप में हैं। सूर्य के ८४ मांडलों में से ११६ लवण में और ६५ जंबू द्वीप में हैं। ग्रह के ८ मांडलों में से ६ लवण में और २ जंबू द्वीप में हैं। जंबू द्वीप में ज्योतिषी के मांडले हैं वे निषिद्ध आर नील रत्न परत के ऊपर हैं। चन्द्र के मांडलों का



से ११२१ यो० दूर ज्यो० विमान फिरते हैं । अर्थात्  $१०००० + ११२१ + ११२१ = १२२४२$  यो० का अन्तर है । अलोक और ज्यो० देवों का अन्तर ११११ यो० का, मांडलापेक्षा अन्तर मेरु पर्वत से  $४४ = ८०$  यो० अन्दर के मांडल का और  $४५३३०$  यो० बाहर के मांडल का अन्तर है । चन्द्र चन्द्र के मांडल का  $३५ \frac{३०४}{६१७}$  यो० का और सूर्य सूर्य का मांडल का दो यो० का अन्तर है निर्व्याप्त अपेक्षा ज० ५०० धनुष्य का और उ० २ गाड का अन्तर है ।

१५ संख्या द्वार-जम्बू द्वीप में ८ चंद्र, २ सूर्य हैं लरण समुद्र में ४ चंद्र, ४ सूर्य हैं घातकी समुद्र में १२ चंद्र, १२ सूर्य हैं कालोदधि समुद्र में ४२ चंद्र, ४२ सूर्य हैं पुष्करिणी द्वीप में ७२ चंद्र, ७२ सूर्य हैं एवं मनुष्य क्षेत्र में १३२ चंद्र १३२ सूर्य हैं आगे इसी विधाव से समझना अर्थात् पहले द्वीप व समुद्र में जितने चंद्र तथा सूर्य हों उनका तीन से गुणा करके पाँचों की संख्या गिनना ( जोड़ना ) ।

दृष्टांत—कालोदधि में चंद्र सूर्य जानने के लिये उम-  
में पहले घातकी समुद्र में १२ चंद्र १२ सूर्य हैं उन्हें  
 $१२ \times ३ = ३६$  से पाँचों की संख्या ( लरण समुद्र के ४  
चंद्र ४ सूर्य का  $४ \times ३ = १२$  जोड़ना में  $४८$  हुए ।  
१५ पवित्र द्वार परक चंद्र और सूर्य के



२४ ऋद्ध द्वार-मवे न कम ऋद्धि तारा की उमसे उत्तरांचर महा ऋद्धि ।

२५ वैक्रिय द्वार-वैक्रिय रूप मे सम्पूर्ण जम्बू द्वीप मंगते हैं मख्याता जम्बू द्वीप मंगे की शक्ति चंद्र सूर्य, सामानिक और देवियों में भी है ।

२६ अघधि द्वार-तीर्था ज० उ० संख्यात द्वीप समुद्र ऊंचा अपनी घ्यजा पताका तक और नीचे पहली नरक तक जाने-देखे ।

२७ परिचारणा-पाचों ही मनुष्य वत् ) प्रकार से भोग करे ।

२८ सिद्ध द्वार-ज्योतिषी देव से निकल कर १ समय में १० जीव और ज्योतिषी देवियों से निकल कर १ समय में २० जीव मोक्ष जा सकते हैं ।

२९ भव द्वार-भव करे तो ज० १ २-३ उ० अनन्त भव करे ।

३० अल्प बहुत्य द्वार-सर्व से कम चंद्र सूर्य, उन से नक्षत्र, उन से ग्रह और उन से तारे (देव) संख्यात संख्यात गुणा हैं ।

३१ उत्पन्न द्वार-ज्योतिषी देव रूप से यह जीव अनन्त अनन्त बार उत्पन्न हुआ परन्तु वीतराग आज्ञा का आराधन किये बिना आत्मिक सुख नहीं प्राप्त कर सका ।

॥ इति ज्योतिषी देव विस्तार सम्पूर्ण ॥





३ संठाण द्वार-१, २, ३, ४, और ६, १०, ११, १२, एवं ८ देव लोक अर्ध चंद्राकार हैं । ५, ६, ७, ८ देव लोक और ६ ग्रीयवक पूर्ण चन्द्राकार हैं । चार अनु-क्षर विमान त्रिकोन चारों ही तरफ हैं और बीच में सर्वार्थ सिद्ध विमान गोल चन्द्राकार है ।

४ आधार द्वार-विमान और पृथ्वी पिण्ड रत्न मय है । १-२ देव लोक घनोदधि के आधार पर है । ३-४-५ देव घन वायु के आधार से है । ६-७-८ देव० घनोदधि घनवायु के आधार से है । शेष विमान आकाश के आधार पर स्थित हैं ।

५ पृथ्वी पिण्ड ६ विमान ऊंचाई, ७ विमान और परस्पर, ८ वर्ण द्वार—

विमान	पृथ्वी पिण्ड	वि० ऊंचाई	वि० संख्या	परस्पर वर्ण
१	२३०० यो०	३०० यो०	३२ लाख	१३ ५ वर्ण
२	३३०० "	४०० "	२८ "	१३ ५ "
३	२६०० "	६०० "	१२ "	१२ ४ "
४	२६०० "	६०० "	८ "	१२ ४ "
५	२३०० "	३०० "	४ "	६ ३ "
६	२२०० "	३०० "	४० हजार	२ ३ "
७	२४०० "	२०० "	५० "	४ २ "
८	२३०० "	८०० "	३ "	४ २ "
९	२३०० "	८०० "	३०० "	४ २ "
१०	२३०० "	८०० "	३०० "	४ २ "
११	२३०० "	८०० "	३०० "	४ २ "
१२	२३०० "	८०० "	३०० "	४ २ "



संतकेन्द्र	मंडूक(मोडक)	५०	"	४	३३	२०००००
महाशुक्रकेन्द्र	अश्व	४०	"	४	३३	१६००००
सहस्रकेन्द्र	हस्ति	३०	"	४	३३	१२००००
प्राणकेन्द्र	सर्प	२०	"	४	३३	८००००
अच्युतेन्द्र	गरुड	१०	"	४	३३	४००००

१७ अनीका-प्रत्येक इंद्र की अनीका ७-७ प्रकार की है प्रत्येक अनीका में देवता उन इंद्रों के सामानिक से १२७ गुणा होते हैं ।

१८ परिपदा द्वार-प्रत्येक इंद्र के तीन २ प्रकार की परिपदा होती हैं ।

इन्द्र	अभ्यन्तर देव	मध्यम देव	बाह्य प० देव	देवियों
१	१२ हजार	१४ हजार	१६ हजार	शुक्रकेन्द्र
२	१० "	१२ "	१४ "	७००
३	८ "	१० "	१२ "	६००
४	६ "	८ "	१० "	५००
५	४ "	६ "	८ "	ईशानकेन्द्र
६	२ "	४ "	६ "	४००
७	१ "	२ "	४ "	३००
८	५००	१ "	२ "	७००
९	२५०	२००	१ "	शेष ८ इंद्रों के
१०	१२५	२५०	५००	देवियों नहीं

१९ देवी द्वार-शुक्रकेन्द्र के आठ अप्रमहिषी देवियों हैं एक देवी के १६-१६ हजार देवियों का परिवार है ।

प्रत्येक देवी १६-१६ हजार वैक्रिय करे इसी प्रकार ईशा-  
की भी  $८ \times १६००० - १२००० \times १६००० = २०$



परि०, ५-६ देव-में रूप परि०, ७-८ देव-में शब्द परि०  
 ६ से १२ देव० में मन परि०, आगे नहीं ।

२३ पुण्य द्वार-जितने पुण्य व्यंत्तर देव १०० वर्ष  
 में क्षय करते हैं उतने पुण्य नागादि ६ देव २०० वर्ष में,  
 असुर० ३०० वर्ष में, ब्रह्म-नक्षत्र-तारा ४०० वर्ष में, चंद्र  
 सूर्य ५०० वर्ष में, सौधर्म-ईशान १००० वर्ष में, ३-४  
 देव० २००० वर्ष में, ५-६ देव. ३००० वर्ष में, ७-८  
 देव. ४००० वर्ष में, ६ से १२ दे. ५००० वर्ष में, १ लो.  
 त्रिक १ लाख वर्ष में दूमरी त्रिक २ लाख वर्ष में, तीसरी  
 त्रिक ३ लाख वर्ष में, ४ अनु. वि. ४ लाख वर्ष में और  
 सर्वार्थ सिद्ध के देवता ५ लाख वर्ष में इतने पुण्य क्षय करते  
 हैं ।

२४ सिद्ध द्वार-वैमानिक देव में से निकले हुए  
 मनुष्य में आकर एक समय में १०८ सिद्ध हो सके हैं देवी  
 में से निकल कर २० सिद्ध हो सके हैं ।

२५ भव द्वार-वैमानिक देव होने के बाद भव करे  
 तो अ० १-२-३ संख्यात, असंख्यात यावत् अनन्त सर  
 भी करे ।

२६ उन्वन्न द्वार-नव प्रीयवेक वैमानिक देव रूप  
 में अनन्ता वाग यद्गी त्रीः उन्वन्न श। वृक्षा द्वे ४ अनु० वि०  
 में ज्ञान के बाद मन्वन्त २४ ) नव में और सर्वार्थ  
 सिद्ध में भव प माय जाव ।



# संख्यादि २१ बोल अथवा डालापाला

संख्या के ०१ बोल हैं:- १ जघन्य संख्याता २ मध्यम संख्याता ३ उत्कृष्ट संख्याता असंख्याता के नव भेद  
 १ ज० १० असंख्यात ४ ज० युक्ता अ० ७ ल० अ० अ०  
 २ म० " " ५ म० " " ८ म० " "  
 ३ उ० " " ६ उ० " " ९ उ० " "  
 अनंता के ६ भेद

१ ज० प्रत्येक अनंता ४ ज० युक्ता अनंता ७ ज० अनंता अ-  
 २ म० " " ५ म० " " ८ म० " "  
 ३ उ० " " ६ उ० " " ९ उ० " "

ज० संख्याता में एक दो तक गिनना म० संख्याता में तिन से आगे यावत् उ० संख्याता में एक न्यून उ० संख्याता के लिये माप बताते हैं-

चार पाला-( १ ) शीलाक ( २ ) प्रति शीलाक ( ३ ) महा शीलाक ( ४ ) अनवस्थित इनमें से प्रत्येक पाला धान्य मापने की पाली के आकार वत् है किन्तु प्रमाण में १ लघु योजन लम्बे चौड़े ३१६२२७ यो० अधिक की परिधि वाला, १० हजार यो० गद्गम ८ यो० की जगती कोट त्रिमके ऊपर ०॥ यो० की वेदिका इस प्रकार पाला की कल्पना करना तथा इनमें से अनवस्थित पाला को न के दानों से सम्पूर्ण भर कर कोई देव उठावे,





और अनवस्थित को क्रम से भर देवे ।

इस तरह चार ही पाले भर देवे अन्तिम दाना जिम द्वीप व समुद्र में पड़ा होवे वहाँ से प्रथम द्वीप तक डाले हुये सब दानों को एकत्रित करे और चार ही पालों के एकत्रित किये हुये दानों का एक ढेर करे इस में से एक दाना निकाल ले तो उत्कृष्ट संख्याता, निकाला हुआ एक दाना डाल दे तो जघन्य प्रत्येक असंख्याता जानना इस दाने की संख्या को परस्पर गुणाकार ( अभ्यास ) करे और जो संख्या आये वो जघन्य युक्ता असंख्याता कहलाती है इस में से एक दाना न्यून वां उ० प्र० असंख्याता दो दाना न्यून वां मध्यम प्र० असंख्याता ( १ आवलिका का समप ज० युक्ता असंख्याता जानना ) ।

जघन्य युक्ता असंख्याता की राशि ( ढेर ) को परस्पर गुणा करने से ज० असंख्याता असंख्याता मंडा निरुचनी है इस में से १ न्यून वां उ० युक्ता असंख्याता दो न्यून वां म० युक्ता असंख्याता जानना ।

म० अम० असंख्याता की राशि को परस्पर गुणित करने से ज० प्रत्येक अनता संख्या आती है इस में से २ न्यून वां म० संख्या म० अम० असंख्याता और १ न्यून

उ० अम० असंख्याता जानना ।





१० परम-भाव-द्रव्यास्तिक नय-पर्यायास्तिक नय  
 ६ भेद-१ द्रव्य २ द्रव्य व्यञ्ज ३ गुण ४ गुण व्यञ्जन  
 स्वभाव ६ विभाव-पर्यायास्तिक नय । इन दोनों बयों के  
 ७०० भेद हो सकते हैं ।

नय सात-१ नैगम २ संग्रह ३ व्यवहार ४ ऋजु-  
 सूत्र ५ शब्द ६ समभिरुड ७ एवं भूत नय इनमें से प्रथम  
 ४ नयों को द्रव्यास्तिक, अर्थ तथा क्रिया नय कहते हैं  
 और अन्तिम तीन को पर्यायास्तिक शब्द तथा ज्ञान नय  
 कहते हैं ।

१ नैगम नय-विभक्ता स्वभाव एक नहीं, अनेक  
 मान, उन्मान, प्रमाण से वस्तु माने तीन काल, ४ निषेप  
 सामान्य-विशेष आदि माने इसके तीन भेद—

(१) अंश-वस्तु के अंश को ग्रहण करके माने जैसे  
 निगोद को सिद्ध समान माने ।

(२) आरोप—भूत, भविष्य और वर्तमान, तीनों  
 कालों को वर्तमान में आरोप करे ।

(३) विकल्प—अध्वसाय का उन्मत्त होना एवं ७००  
 विकल्प हो सकते हैं ।

शुद्ध नैगम नय और अशुद्ध नैगम एवं दो भेद भी हैं ।

२ संग्रह नय-वस्तु की मूल मत्ता को ग्रहण करे  
 जैसे सर्व जीवों को सिद्ध समान माने, जैसे एगं आया

७ निश्चय व्यवहार-निश्चय को प्रगट करानेवाला व्यवहार है । व्यवहार बलवान है व्यवहार से ही निश्चय तक पहुँच सकते हैं जैसे निश्चय में कर्म का कर्ता कर्म है व्यवहार से जीव कर्मों का कर्ता माना जाता है जैसे निश्चय से हम चलते हैं । किन्तु व्यवहार से कहा जाता है कि गाँव आया; जल चूता है परन्तु कहा जाता है कि छत चूती इत्यादि है

८ उपादान-निमित्त-उपादान यह मूल कारण हैं जो स्वयं कार्य रूप में परिणमता है । जैसे घट का उपादान कारण मिट्टी और निमित्त यह सहकारी कारण जैसे घट बनाने में कुम्हार, पावडा, चाक आदि । शुद्ध निमित्त कारण होने तो उपादान को साधक होता है और अशुद्ध निमित्त होने तो उपादान को बाधक भी होता है ।

९ चारप्रमाण-प्रत्यक्ष, आगम, अनुमान उदमा, प्रमाण । प्रत्यक्ष के दो भेद- १ इन्द्रिय प्रत्यक्ष ( पांच इन्द्रियों से होने वाला प्रत्यक्ष ज्ञान ) और २ नो इन्द्रिय प्रत्यक्ष ( इन्द्रियों की सहायता के बिना केवल आत्म-शुद्धता से होने वाला प्रत्यक्ष ज्ञान ) इसके २ भेद- १ देस से ( अवधि और मनः पर्यव ) और २ मर्ब से ( केवल ज्ञान )

आगम प्रमाण-शास्त्र वचन, आगमों के कथन को मानना ।



भेद से जानना सो विशेष । जैसे द्रव्य सामान्य जीव अजीव, ये विशेष । जीव द्रव्य सामान्य, संसारी सिद्ध विशेष इत्यादि ।

११ गुण गुणी-पदार्थ में जो खास वस्तु ( स्वभाव ) है वो गुण और जो गुण जिसमें होता वो वस्तु ( गुण धारक ) गुणी है । जैसे ज्ञान यह गुण और जीव गुणी, सुगन्ध गुण और पुष्प गुणी । गुण और गुणी अमेद ( अभिन्न ) रूप से रहते हैं ।

१२ ज्ञेय ज्ञान ज्ञानी-- जानने योग्य ( ज्ञान के विषय भूत ) सर्व द्रव्य ज्ञेय । द्रव्य का जानना सो ज्ञान है और पदार्थों का जानने वाला वो ज्ञानी । ऐसे ही ज्ञेय ज्ञान ज्ञानी आदि समझना ।

१३ उपजेवा, विद्वेषेवा, धूवेवा- उत्पन्न होना, नष्ट होना और निश्चल रूप से रहना जैसे जन्म लेना मरना व जीव याने कायम ( अमर ) रहना ।

१४ आधेय-आधार-धारण करने वाला आधार और जिसके आधार से ( स्थित ) रहे वो आधेय । जैसे- पृथ्वी आधार, पटादि पदार्थ आधेय, जीव आधार, ज्ञानादि आधेय ।

१५ आविर्भाव-निरोभाव-जो पदार्थ गुण दूर है वो निरो भाव और जो पदार्थ गुण समीप में है वो आविर्भाव । जैसे दूध में घी का निरोभाव है और मक्खन में घी का आविर्भाव है ।





२ पिंडस्थ-शरीर में रहे हुवे अनन्त गुण युक्त चैतन्य का अध्यात्म-ध्यान करना ।

३ रूपस्थ-इरूपी होते हुवे माँ कर्म योग से आत्मा संसार में अनेक रूप धारण करती है । एवं विविध संसार अवस्था का ध्यान करना व उससे छूटने का उपाय सोचना ।

४ रूपातीत-सच्चिदानन्द, अगम्य, निराकार, निरंजन सिद्ध प्रभु का ध्यान करना ।

२० चार अनुयोग-१ द्रव्यानुयोग-जोव, अजोव, चैतन्य जड़ ( कर्म ) आदि द्रव्यों का स्वरूप का जिनमें वर्णन होवे २ गणितानुयोग-जिसमें क्षेत्र, पहाड़, नदी, देवलोक, नारकी, ज्योतिषी आदि के गणित-माप का वर्णन होवे ३ चरण करणानुयोग-जिसमें साधु-भावक का आचार, क्रिया का वर्णन होवे ४ धर्म कथानुयोग-जिसमें साधु भावक, राजा रंक, आदि के वैराग्य मय बोध दायक जीवन प्रसंगों का वर्णन होवे

२१ जागरण तीन-(१) युध जाग्रिका-तीर्थकर और केवलियों की दशा (२) अयुध जाग्रिका-छत्रस्थ मुनियोंकी और (३) सुदासु जाग्रिका-भावकों की ( अवस्था ) ।

२२ व्याख्या नव—एकैक वस्तु की उपचार नय से ६-६ प्रकार से व्याख्या हो सकती है ।

( १ ) द्रव्य में द्रव्य का उपचार—जैसे काष्ठ में वंशलोचन

( २ ) द्रव्य में गुण का " - " जीव ज्ञानवन्त है

- ( ३ ) " " पर्याय का " - " " स्वरूपवान है  
 ( ४ ) गुण में द्रव्य का " - " अज्ञानी जीव है  
 ( ५ ) " " गुण " " - " ज्ञानी होने पर भी  
 क्षमावंत है ।  
 ( ६ ) गुण में पर्याय का " - " यह तपस्वी बहुत  
 स्वरूपवान है ।  
 ( ७ ) पर्याय में द्रव्य का " - " यह प्राणी देवता  
 का जीव है ।  
 ( ८ ) " " गुण का " - " यह मनुष्य बहुत  
 ज्ञानी है ।  
 ( ९ ) " " पर्याय का " - " यह मनुष्य श्याम  
 वर्ण का है इत्यादि ।

२३ पक्ष आठ-एक वस्तु की अपेक्षा से अनेक  
 व्याख्या हो सकती है । इस में मुख्यतया आठ पक्ष लिये  
 जा सकते हैं । नित्य, अनित्य, एक, अनेक, सत्, असत्,  
 वस्तुव्य और अवस्तुव्य ये आठ पक्ष निश्चय व्यवहार से  
 उतारे जाते हैं ।

पक्ष	वस्तुव्य	अवस्तुव्य	नित्य	अनित्य
एक	अनेक	सत्	असत्	वस्तुव्य
अवस्तुव्य	वस्तुव्य	अवस्तुव्य	वस्तुव्य	अवस्तुव्य
वस्तुव्य	अवस्तुव्य	वस्तुव्य	अवस्तुव्य	वस्तुव्य
अवस्तुव्य	वस्तुव्य	अवस्तुव्य	वस्तुव्य	अवस्तुव्य
वस्तुव्य	अवस्तुव्य	वस्तुव्य	अवस्तुव्य	वस्तुव्य
अवस्तुव्य	वस्तुव्य	अवस्तुव्य	वस्तुव्य	अवस्तुव्य
वस्तुव्य	अवस्तुव्य	वस्तुव्य	अवस्तुव्य	वस्तुव्य
अवस्तुव्य	वस्तुव्य	अवस्तुव्य	वस्तुव्य	अवस्तुव्य
वस्तुव्य	अवस्तुव्य	वस्तुव्य	अवस्तुव्य	वस्तुव्य
अवस्तुव्य	वस्तुव्य	अवस्तुव्य	वस्तुव्य	अवस्तुव्य

असत् पर गति पर अपेक्षा असत् है - पर गुण अपेक्षा असत् है  
 वस्तुव्य गुणस्थान आदि की व्याख्या हो सिद्ध के गुणों की जो व्या-  
 सकती से ( क्यो हो सके  
 अव्यक्तव्य जो व्याख्या केवली भी नहीं - सिद्ध के गुणों की जो व्या-  
 कर सके तथा नहीं हो सके

२४ सप्त भंगी-१ स्यात्-अस्ति, २ स्यात् नास्ति  
 ३ स्यात् अस्ति-नास्ति ४ स्यात् अव्यक्तव्य ५ स्यात् अस्ति  
 अव्यक्तव्य ६ स्यात् नास्ति अव्यक्तव्य ७ स्यात् अस्ति नास्ति  
 अव्यक्तव्य । ( ७ )

यह सप्त भंगी प्रत्येक पदार्थ ( द्रव्य ) पर उतारी जा  
 सकती है । इसमें ही स्यादाद का 'रहस्य' मरा-दुषा' है ।  
 एकेक पदार्थ के अनेक अपेक्षा से देखने वाला सदा सम-  
 भावी होता है ।

दृष्टान्त के लिये सिद्ध परमात्मा के ऊपर सप्त भंगी  
 उतारी जाती है ।

१ स्यात् अस्ति-सिद्ध स्वगुण अपेक्षा है ।

२ स्यात् नास्ति-सिद्ध पर गुण अपेक्षा नहीं ( पर-  
 गुणों का अभाव है )

( ३ ) स्यादास्ति नास्ति-मिथों में स्वगुणों की अस्ति  
 और परगुणों की नास्ति है ।

( ४ ) स्यादव्यक्तव्य-आस्ति-नास्ति सुगपत्तु है ना  
 की एक समय में नहीं कही जा सकती है ।

( ५ ) स्यादास्ति अव्यक्तव्य-स्वगुणों की अस्ति  
 है ना की ? समय में नहीं कही जा सकती है ।

( ६ ) स्यान्नास्त्यवक्तव्य—यः गुणों की नास्ति है और १ समय में नहीं कहे जा सकते हैं ।

( ७ ) स्यादस्ति नास्त्य वक्तव्य—अस्ति नास्ति दोनों हैं परन्तु एक समय में कहे नहीं जा सकते

इस स्याद्वाद् स्वरूप को समझ कर मुदा समझावी बन कर रहना जिससे आत्म-कल्याण होवे ।

॥ इति नय प्रमाण विस्तार सम्पूर्ण ॥



## भाषा—पद

( श्रीपद्मयणा सूत्र के ११ वें पद का अधिकार )

( १ ) भाषा जीव को ही होती है । अजीव को नहीं होती किसी प्रयोग से ( कारण से ) अजीव में भी भाषा निकलती हुई सुनी जाती है । परन्तु यह जीव की ही सत्ता है ।

( २ ) भाषा की उत्पत्ति—श्रीदारिक, वैक्रिय, और आहारिक इन तीन शरीर द्वारा ही हो सकती है ।

( ३ ) भाषा का संस्थान—वज्र समान है भाषा के पुद्गल वज्र संस्थान वाले हैं ।

( ४ ) भाषा के पुद्गल उत्कृष्ट लोक के अन्त ( लोकान्त ) तक जाते हैं ।

( ५ ) भाषा दो प्रकार की है—पर्याप्त भाषा ( सत्य असत्य ) और अपर्याप्त भाषा ( मिथ और व्यवहार भाषा )

( ६ ) भाषक—समुच्चय जीव और व्रस के १६ दण्डक में भाषा बोली जाती है । ५ स्थावर और सिद्ध भगवान् अभाषक हैं । भाषक अन्न हैं । अभाषक इनसे अनन्त हैं ।

( ७ ) भाषा चार प्रकार की है—सत्य, असत्य, मिथ और व्यवहार भाषा १६ दण्डकों में चार ही भाषा तीन दण्डकों ( विकलेन्द्रिय ) में व्यवहार भाषा है ५ स्था-  
भाषा नहीं ।





लोक के अन्त मग तक चले जाते हैं, जो अमेदाते पृष्ठत निकले तो संख्यात योजन जाकर [ विषंती ] लय पा जाते हैं ॥

(११) मपा के मेदाते पृष्ठत निकले । जो ५ प्रकार से (१) लण्डा मेद-रत्न, लोहा, काट आदि के लुक्के वद (२) परतर मेद-धरतर के पृष्ठवद् (३) चूर्ण मेद-धान्य कठोल वद् (४) अगुनदिया मेद-जलाव की सूती निहो वद् (५) उक्किया मेद-कठोल आदि की फलीया फटने के मनात इन पांचों का अन्त बहुत्व-सर्व से कम उक्किया, उनसे अरुदिया अन्तगुया, उनसे चूर्णय अन्तगुया, उनसे परतर अन्तगुया, उनसे लण्डा-मेद मेदाते पृष्ठत अन्तगुया ।

(१२) मपा पृष्ठत की स्थिति ३० अं० ६० की

(१३) मपा का आन्तरा ३० अं० ६०; अन्तगत का ( वनस्थिति में जाने पर ) ।

(१४) मपा पृष्ठत काया योग में प्रहय किये जाते हैं ।

(१५) मपा पृष्ठत वचन योग में लोहे जाते हैं ।

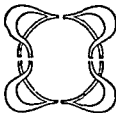
(१६) काग्य-मेद और अन्तगत कम के दयोद-रुत और वचन योग में मपा और अन्तगत मपा दोली जाती है । आन्तगत और मपा के उदय में और वचन योग में अन्तगत और मपा दोली जाती है ।



और संपूर्ण या निक्षेप सत्य न होवे तो उभे व्यवहार  
भाषा जानना ।

२१ अन्य पदत्व-सर्व से कम अन्य भाषक, उनसे  
मिथ भाषक असंख्यात गुणा, उनसे असत्य भाषक असं-  
ख्यात गुणा, उनसे व्यवहार भाषक असंख्यात गुणा और  
उनसे अभाषक ( सिद्ध तयः एक-द्रव्य ) अनन्त गुणा ।

॥ इति भाषा पद सम्पूर्ण ॥





के ६ बालों का बन्ध करे (  $२५ \times ६ = १५०$  ), एम ही अनेक जोव बन्ध करे ।  $१५० + १५० = ३००$ , ३०० निद्रस और ३०० निकांचित बन्ध होंगे । एवं ६०० मांगा (प्रकार) नाम कर्म के साथ, ६०० गोत्र कर्म के साथ और ६०० नाम गोत्र के साथ ( एकट्ठा साथ लगाने से आयुष्य कर्म के १८०० भांगे हुवे ) ।

जीव जाति निद्रस आयुष्य बान्धते हैं, गाय जैसे पानी को खेचकर पीवे जैसे ही वे आकर्षित करते हैं, कितने आकर्षण से पुद्गत ग्रहण करते हैं । उस समय १-२-३ उत्कृष्ट ८ कर्म खेचते हैं उसका अन्व बहुत्व सर्व से कर्म ८ कर्म का आकर्षण करने वाले जीव, उनसे ७ कर्म का आकर्षण करने वाले जीव संख्यात गुणा, उनसे ६ कर्म का आकर्षण करने वाले जीव संख्यात गुणा, उनसे ५-४-३ २ और १ कर्म का आकर्षण करने वाले जीव क्रमशः संख्यात संख्यात गुणा ।

जैसे जति नाम निद्रस का समुच्चय जीव अपेक्षा अल्प बहुत्व बताया है वैसे ही गति आदि ६ बालों का अन्व बहुत्व २४ दण्डरू पर होता है । एवं १५० का अन्व बहुत्व यावन् ऊपर के १८०० भांगों का अन्व बहुत्व कर लेवे ।

॥ इति आयुष्य के १८०० भांगों सम्पूर्ण ॥



## ❀ सोपक्रम-निरुपक्रम ❀

( श्री भगवती जी सूत्र शतक २० उद्देश्य )

सोपक्रम आयुष्य ७ कारण से टूट सकता है-१ जल से २ अग्नि से ३ विप से ४ शस्त्र से ५ अति-हर्ष ६ शोक-से ७ भय से ( बहुत चलना बहुत खाना, मैथुन का सेवन करना आदि वाय से ) ।

निरुपक्रम आयुष्य बन्वा हुआ पूरा आयुष्य भोगने की च में टूट नहीं जीव दोनों प्रकार के आयुष्य वाले होते हैं ।

१ नारकी, देवता, युगल मनुष्य, तीर्थहर, चक्रवर्ती, वासुदेव, प्रति वासुदेव, बलदेव इन के आयुष्य निरुपक्रमी होते हैं शेष सर्व जीवों के दोनों प्रकार का प्रायुष्य होता है ।

२ नारकी सोपक्रम ( स्वइस्ते शस्त्रादि से ) से उपजे, पर उपक्रम से तथा बिना उपक्रम से ? तीनों प्रकार से । तात्पर्य कि मनुष्य निर्यच पने जीव नरक का आयुष्य बान्ध होने तो मरने समय अपने हाथों में दमरों के हाथों में अथवा आयुष्य पूर्ण होने के बाद मरे, एवं २४ दण्डक जानना ।

३ नेत्रिये नरक में निकले तो स्वंपक्रम से परासक्रम से तथा उपक्रम से ? बिना उपक्रम से, एवं १३ देवता



## \* हियमाण-वृद्धमाण \*

श्री भगवती सूत्र, शतक ५ उ० =

( १ ) जीव हियमान ( घटना ) है या वर्द्धमान ( वृद्धना ) ? न तो हियमान है और न वर्द्धमान परन्तु अवस्थित ( वध-घट विना जैसे का वैसा रहे ) है ।

( २ ) नेरिया हियमान, वर्द्धमान और, अवस्थित भी हैं एवं २४ दण्डक, सिद्ध भगवान वर्द्धमान और अवस्थित हैं ।

( ३ ) समुच्चय जीव अवस्थित रहे तो शाश्वता नेरिया हियमान, वर्द्धमान रहे तो ज० १ समय उ० आदितिका के असंख्यातवै भाग और अवस्थित रहे तो विरह काल से दुगुणा ( देखो विरह पद का थोकड़ा ) एवं २४ दण्डक में अवस्थित काल विरह काल से दूना, परन्तु ५ स्थावर में अवस्थित काल हियमान वृत्त जानना । सिद्धों में वर्द्धमान ज० १ समय, उ० = समय और अवस्थित काल ज० १ समय उच्छृष्ट ६ माह ।

॥ इति हियमाय वृद्धमाण सम्पूर्ण ॥

## ❀ सावचया सोवचया ❀

( श्री भगवतो मृग, शतक ५, उ० ८ )

१ सावचया [ वृद्धि ] २ सोवचया [ हानि ] ३ सावचया सोवचया [ वृद्धि-हानि ] और ४ निरुवचया [ न तो वृद्धि और न हानि ] इन चार भागों पर प्ररनोतर समुच्चय जीदों में चौथा भांगा पावे, शेष तीन नहीं. २४ दण्डक में चार ही भांगा पावे । सिद्ध में भागा २ ( सावचया-और निरुवचया-निरवचया ) .

समुच्चय जीवों में जो निरुवचया-निरवचया है वो सर्वार्थ है । और नारकी में निरुवचया-निरवचया सिवाय तीन भागों की स्थिति ज० १ समय की उ० आबालिका के असंख्यात भाग की तथा निरुवचया-निरवचया की स्थिति विरह द्वार वत्, परन्तु पांच स्थावर में निरुवचया-निरवचया भी ज० १ समय, उ० आबालिका के असंख्यातवें भाग सिद्ध में सावचया ज० १ समय उ० ८ समय की और निरुवचया-निरवचया की ज० १ समय की उ० ६ माह की स्थिति जानना ।

नोट — पांच स्थावर में अवस्थित काल तथा निरुवचया निरवचया काल आबालिका के असंख्यातवें भाग कहीं हुई है यह परकायापेक्षा है । स्वकाय का विरह नहीं पड़ता ।

॥ इति सावचया सोवचया सम्पूर्णं ॥

## शुद्ध क्रतु संवत् शुद्ध

( श्री भगवती सूत्र, शतक २०, उद्देश्या १० )

(१) क्रतु संवत्-जो एक समय में दो जीवों से संख्याता जीव उत्पन्न होते हैं ।

(२) अक्रतु संवत्-जो एक समय में असंख्याता अनन्ता जीव उत्पन्न होते हैं

(३) अवकृतव्य संवत्-एक समय में एक जीव उत्पन्न होता है ।

१ नारकी (७), १० मवन पति, ३ विकलेन्द्रिय, १ विषैव पंचेन्द्रिय, १ मनुष्य, १ व्यंतर, १ ज्योतिषी और १ वैमानिक एवं १६ दण्डक में तीनों ही प्रकार के संवत् ।

पृथ्वी काय आदि ५ स्थावर में अक्रतु संवत् होता है । शेष दो संवत् नहीं होते कारण समय समय असंख्य जीव उत्पन्न होते हैं । यदि किसी स्थान पर १-२-३ आदि संख्याता रहे हों तो वो परकायापेक्षा समझना ।

शुद्ध क्रतु संवत् तथा अवकृतव्य संवत् है, अक्रतु संवत् नहीं ।

अल्प बहुत्व

नारकी में सर्व से कम अवकृतव्य संवत् उनमें क्रतु संवत् संख्यात गुणा उनमें अक्रतु संवत् असंख्य त गुणा एवं १६ दण्डक का अन्य बहुत जानना



५ स्थावर में अल्प बहुत्व नहीं ।

सिद्ध में सर्व से कम कृत संचय, उनसे अवरतव्य  
संचय संख्यात गुणा ।

॥ इति कृत संचय संपूर्ण ॥



## ॐ द्रव्य-(जीवा जीव) ॐ

( श्री भगवती सूत्र, शतक २१ उ० २ )

द्रव्य दो प्रकार का है-जीव द्रव्य और अजीव द्रव्य ।

जब जीव द्रव्य भंगलयाता, अनंगलयाता तथा अनन्ता है ? अनन्ता है कारण कि जीव अनन्त है ।

अजीव द्रव्य भंगलयाता, अनंगलयाता तथा जब अनन्ता है ? अनन्त है । कारण कि अजीव द्रव्य पांच है-धर्मणि काय अधर्मणि काय, अंगलयाता प्रदेश है आकाश और पृथ्वी के अनन्त प्रदेश हैं । और काल वर्तमान एक समय है भूतनविश्रायणा अनन्त समय है इत्य कारण अजीव द्रव्य अनन्ता है ।

३०-जीव द्रव्य, अजीव द्रव्य के काम में आते हैं कि अजीव द्रव्य जीव द्रव्य के काम में आते हैं !

उ०-जीव द्रव्य अजीव द्रव्य के काम में नहीं आते, परन्तु अजीव द्रव्य जीव द्रव्य के काम में आते हैं । कारण

कि-जीव अजीव द्रव्य को ग्रहण करके १४ वांत्त उत्पन्न करते हैं यथा-१ आहारिक २ वैश्विक ३ आहारिक ४ वेचन ५ कामस्यु शरीर, ६ उन्मिष, ७ मन, ८ वचन, ९ काया और १४ आत्मा आन

हैं कि नेरिये के अजीव द्रव्य काम आते हैं ?

उ०—अजीव द्रव्य के नेरिये कान नहीं आते, परन्तु नेरिये के अजीव द्रव्य काम आते हैं । अजीव का प्रद्वय करके नेरिये १२ बोल उत्पन्न करते हैं ।

( ३ शरीर, इन्द्रिय, मन, वचन और आसोश्वास )

देवता के १३ दण्डक के प्रद्वय भी नारकीवत् ( १२ बोल उपजावे )

चार स्थावर के जीव ६ बोल ( ३ शरीर स्पर्शेन्द्रिय काय और आसोश्वास ) उपजावे वायु काय के जीव ७ बोल ऊार के ६ और वैक्रिय ) उपजावे ।

पेइन्द्रिय जीव ८ बोल उपजावे ( ३ शरीर, २ इन्द्रिय, २ योग, आसो आस । )

त्रि-इन्द्रिय जीव ९ बोल उपजावे ( ३ शरीर, ३ इन्द्रिय २ योग, आसो आस ) ।

चौरिन्द्रिय जीव १० बोल उपजावे ( ३ शरीर, ४ इन्द्रिय २ योग, आसो आस ) ।

तिर्यक् पंचेन्द्रिय १३ बोल उपजावे ( ४ शरीर, ५ इन्द्रिय, ३ योग, आसो आस । )

मनुष्य सम्पूर्ण १४ बोल उपजावे ।

॥ इति द्रव्य-जीवाजीव सम्पूर्ण ॥

## ॐ संस्थान-द्वार ॐ

( श्री भगवतांजी सूत्र, शतक २५ उद्देशा ३ )

संस्थान=प्राकृति इसके दो भेद १ जीव संस्थान और २ अजीव संस्थान जीव संस्थान के ६ भेद— १ समचौरस २ स्रादि ३ निग्रोध परिमण्डल ४ वामन ५ कुञ्जक ६ वृण्ड संस्थान । अजीव संस्थान के ६ भेद— १ परिमंडल ( चूड़ी के समान गोल ) २ वट्ट ( लड्डू समान गोल ) ३ त्रंस ( त्रिकोन ) ४ चौरस ( चौरस ) ५ आयतन ( लकड़ी समान लम्बा ) ६ अनवस्थित ( इन पांचों से विपरीत ) ।

परिमण्डल आदि छः ही संस्थानों के द्रव्य अनन्त हैं संख्याता या असंख्याता या असंख्याता नहीं ।

इन संस्थानों के प्रदेश भी अनन्त हैं, संख्याता असंख्याता नहीं ।

६ संस्थानों का द्रव्यापेक्षा अल्प बहुत्व

मर्थ में कम परिमंडल संस्थान के द्रव्य । उनमें वट्ट के द्रव्य संख्यात गुणा । उनमें चौरस के द्रव्य संख्यात गुणा । उनमें त्रंस के द्रव्य संख्यात गुणा । उनमें आयतन के द्रव्य संख्यात गुणा, उनमें अनवस्थित के द्रव्य असंख्यात गुणा ।

प्रदेशापेक्षा अल्प बहुत्व भी द्रव्यापेक्षावत्  
जानना ।

द्रव्य-प्रदेशापेक्षा का एक साथ अल्प बहुत्व

सर्व मे कम परिमंडल द्रव्य, उनसे बड़ द्रव्य संख्यात  
गुणी उनमे चौरस द्रव्य संख्यात गुणा उनमे प्रेम द्रव्य "

" " आयतन " " " " अनवस्थित "

अमं. गुणा. " परिमंडल प्रदेश अमंख्यात " बड़ प्रदेश

मं० " " चौरस " संख्यात " प्रेम "

" " " आयतन " " " अनवस्थित

अमंख्यात गुणा ।

॥ इति संस्थान द्वार सम्पूर्ण ॥











१ अपर्याप्ता एवं ३ देवी के ) सर्व से कम ऊर्ध्व लोक में असंख्यात गुणा, उनसे ऊर्ध्व तीर्थे लोक में असंख्यात गुणा, उनसे लोक में संख्यात गुणा उनसे अधो-तीर्थे लोक में असंख्यात गुणा उनसे तीर्थे लोक में असंख्यात गुणा उनसे तीर्थे लोक में असंख्यात गुणा ।

४ बोल ( त्रिपंचनी, समुच्चय देव, समुच्चय पंचेन्द्रिय, के पर्याप्ता ) का अन्य बहुत्व सर्व से कम लोक में उनसे ऊर्ध्व-तीर्थे लोक में असंख्यात गुणा तीनों लोक में संख्यात गुणा उनसे अधो-तीर्थे लोक में संख्यात गुणा उनसे अधो लोक में संख्यात गुणा तीर्थे लोक में ३ बोल संख्यात गुणा और पंचेन्द्रिय पर्याप्ता असंख्यात गुणा ।

एवं तीन मनुष्यनी के ) बोल-उर्ध्व से कम तीनों लोक में उनसे ऊर्ध्व-तीर्थे लोक में मनुष्य असंख्यात गुणा मनुष्यनी संख्यात गुणी उनसे अधो-तीर्थे लोक में संख्यात गुणा उनसे ऊर्ध्व लोक में संख्यात गुणा उनसे अधो लोक में संख्यात गुणा उनसे तीर्थे लोक में संख्यात गुणा ।

६ बोल-व्यन्तर के ( समु० व्यन्तर देव पर्याप्ता एवं ३ देवी के ) बोल-सर्व से कम ऊर्ध्व लोक में, उनसे ऊर्ध्व तीर्थे लोक में असंख्यात गुणा उनसे तीर्थे लोक में संख्यात गुणा उनसे अधो-तीर्थे लोक में असंख्यात गुणा उनसे अधो लोक में संख्यात गुणा तीर्थे लोक में संख्यात गुणा ।



### पुद्गल क्षेत्रापेक्षा

सर्व मे कम तीन लोक में उनमे ऊर्ध्व-तीर्छे लोक में अनंत गुणा उनमे अधो-तीर्छे लोक मे विशेष लोक में उनसे तीर्छे " " असं० उन मे ऊर्ध्व लोक में असं० गुणा उन से अधो लोक में विशेष ।

### द्रव्य क्षेत्रापेक्षा

सर्व से कम तीन लोक में उनमे ऊर्ध्व-तीर्छे लोक में अनंत गुणा उनसे अधो तीर्छे लोक में विशेष उनमे ऊर्ध्व लोक में अनंत गुणा उन से अधो तीर्छे लोक में अनंत गुणा उनसे ऊर्ध्व तीर्छे लोक में अनंत गुणा ।

### पुद्गल दिशापेक्षा

सर्व से कम ऊर्ध्व दिशा में उनसे अधो दिशा में विशेष उनसे ईशान नैऋत्य कोन में असं० गुणा उनमे अग्नि कायव्य कोन में विशेष उनसे पूर्व दिशा में असं० गुणा उनसे पश्चिम दिशा में विशेष । उनसे दक्षिण दिशा में विशेष और उनसे उत्तर दिशा में विशेष पुद्गल जानना ।

### द्रव्य क्षेत्रापेक्षा

सर्व से कम द्रव्य अधो दिशा में उनमे ऊर्ध्व दिशा में अनन्तगुणा उन मे ईशान नैऋत्य कोन में अनन्तगुणा उन मे अग्नि वायु कोन में विशेष उन मे पूर्व दिशा में अमरुषान गुणा उन मे पश्चिम दिशा में विशेष उन मे दक्षिण दिशा में विशेष उन मे उत्तर दिशा में विशेष ।

॥ इति खेताणु चाट मङ्गल ॥



२६	"	"	"	"	पर्योता	"	"	"	"
२७	दादर	वा.	"	"	"	"	ज.	"	अवं. गुणी
२८	"	"	"	"	अपर्योता.	"	उ.	"	विशेष
२९	"	"	"	"	पर्योता	"	उ.	"	"
३०	"	तेऊ.	"	"	"	"	ज.	"	असं. गुणी
३१	"	"	"	"	अपर्यो.	"	उ.	"	विशेष
३२	"	"	"	"	पर्यो.	"	"	"	"
३३	"	अप	"	"	"	"	ज.	"	अवं. गुणी
३४	"	"	"	"	अपर्यो.	"	उ.	"	विशेष
३५	"	"	"	"	पर्यो.	"	उ.	"	"
३६	दादर	गृ.	"	"	"	"	ज.	"	अवं. गुणी
३७	"	"	"	"	अपर्यो.	"	उ.	"	विशेष
३८	"	"	"	"	पर्यो.	"	"	"	"
३९	"	निर्गोद	"	"	पर्यो.	"	ज.	"	असं. गुणी
४०	"	"	"	"	अपर्यो.	"	उ.	"	विशेष
४१	"	"	"	"	पर्यो.	"	"	"	"
४२	मन्थे	ह	शरीरी	कादर	वन	पर्यो का	ज.	"	असं. गुणी
४३	"	"	"	"	"	अपर्यो.	उ.	"	"
४४	"	"	"	"	पर्यो.	"	"	"	"

॥ इति अथग. दना अथग बहुत्रय ॥





रम प्रदेश है । कारण कि अन्त प्रदेशापेक्षा मध्य का प्रदेश अचरम है ।

रत्नप्रभा के समान ही नीचे के ३६ बोलों को चार चार बोल लगाये जा सकते हैं । ७ नारकी, १२ देव लोह, ६ प्रीयवेक, ४ अनुत्तर विमान, १ मिट्ट शिना, १ लोक और १ अलोक एवं  $३६ \times ४ = १४४$  बोल होने हैं ।

इन ३६ बोलों की चरम प्रदेश में तारतम्यता है । इसका अन्व पदुत्व—

रत्न प्रभा के चरमाचरम द्रव्य और प्रदेशों का अन्व पदुत्व-मर्ब से कम अचरम द्रव्य, उनमें चरम द्रव्य अमं-ख्यात गुणा, उनमें चरमाचरम द्रव्य विशेष, सर्व से कम चरम प्रदेश, उनमें अचरम प्रदेश अमंख्यात गुणा, उनमें चरमाचरम प्रदेश विशेष ।

द्रव्य और प्रदेश का एक साथ अन्व पदुत्व, सर्व में कम अचरम द्रव्य, उनमें चरम द्रव्य अमंख्यात गुणा, उनमें चरमाचरम द्रव्य विशेष, उनमें चरम प्रदेश अम-ख्यात गुणा, उनमें अचरम प्रदेश अमंख्यात गुणा, उनमें चरमाचरम प्रदेश विशेष, इसी प्रकार लोक निराय ३६ बोलों का अन्व पदुत्व जानना ।

अन्व पदुत्व

३६ १ अन्व पदुत्व—१११ । कम अचरम द्रव्य, उन





के चरम द्रव्य विशेष, उनसे लोकालोक के चामाचाम द्रव्य विशेष, उनसे लोक के चरम प्रदेश असंख्य गुणा, उनसे अलोक के चरम प्रदेश विशेष, उनसे लोक के अचरम प्रदेश असंख्य गुणा, उनसे अलोक के अचरम प्रदेश अनन्त गुणा, नसे लोकालोक के चरमाचरम प्रदेश विशेष ।

एवं ह चोल, सर्व द्रव्य प्रदेश और पर्याय १२ वे लोक का अन्त बहुत्र—

सर्व मे कम लोकालोक के चरम द्रव्य, उनसे लोक के चरम द्रव्य असंख्य गुणा, उनसे अलोक के चरम द्रव्य विशेष, उनसे लोकालोक के चरमाचरम द्रव्य विशेष, उनसे लोक के चरम प्रदेश असंख्य गुणा, उनसे अलोक के चरम प्रदेश विशेष, उनसे लोक के अचरम प्रदेश असंख्य गुणा, उनसे अलोक के अचरम प्रदेश अनन्त गुणा, उनसे लोकालोक के चरम चरम प्रदेश विशेष, उनसे सर्व द्रव्य विशेष, उनसे सर्व प्रदेश अनन्त गुणा, उनसे सर्व पर्याय अनन्त गुणी ।

॥ इति चरम पद सम्पूर्ण ॥



५ श्वासोश्वास द्वार-श्वासोश्वास अपेक्षा संवत्  
परम भी है, अचरम भी है ।

६ आहार-अपेक्षा यावत् २४ दण्डक के जीव परम  
भी है, अचरम भी है ।

७ भाव-( औदयिक आदि ) अपेक्षा यावत् २४  
दण्डक के जीव परम भी है, अचरम भी है ।

८ से-११ वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श के २० बोल अपेक्षा  
यावत् २४ दण्डक के एकैक और अनेक जीव परम  
भी है, अचरम भी है ।

॥ इति चरमाचरम सम्पूर्णं ॥





२ उपयोग, ६ ज्ञान ( ३ ज्ञान, ३ अज्ञान ) ३ दर्शन,  
१ अमंथम-चारित्र्य, १ वेद नपुमं क एवं २६ बोल ।

( ११ ) १० भवन पति १ व्यन्त एव ११ दण्डक में  
३१ बोल पावे-नारकी के २६ बोलों में १ स्त्री वेद और  
१ तेजो लेश्या घटाना ।

( ३ ) ज्योतिषी और १-२ देवलोक में २८ बोल;  
ऊपर में से ३ अशुभ लेश्या घटाना ।

( १० ) तीसरे से बारहवें देव लोक तक २७ बोल-  
ऊपर में से १ स्त्री वेद घटाना ।

( १ ) नव श्रायवेक में २६ बोल-ऊपर में से १ मिथ  
दृष्टि घटानी ।

( १ ) पांच अनुत्तर विमान में २२ बोल । १ दृष्टि  
और ३ अज्ञान घटाना ।

( ३ ) पृथ्वी, अप, वनस्पति में १८ बोल । १ गति,  
१ इन्द्रिय, ४ कषाय, ४ लेश्या, १ योग, २ उपयोग,  
२ अज्ञान, १ दर्शन, १ चारित्र्य, १ वेद एवं १८ ।

( २ ) तेज-वायु में १७ बोल-ऊपर में से १ तेजो  
लेश्या घटाना ।

( १ ) चेहन्ड्रिय में २२ बोल-ऊपर के १७ बोलों में  
से १ इन्द्रिय १ वचन योग २ ज्ञान, १ दृष्टि एवं  
४ ब्रह्म में २२ हवे ।



# ॐ वारह प्रकार का तप ॐ

( श्री उचवाईजी सूत्र )

तप १२ प्रकार का है । ६ वाद्य तप ( १ अनशन २ उनोदरी ३ वृत्तिसंक्षेप ४ रस परित्याग ५ काय श्लेश ६ प्रति संलिनता ) और ६ आभ्यन्तर तप ( १ प्रायश्चित २ विनय ३ वैयावच ४ स्वाध्याय ५ ध्या ६ काउसगग । )

१ अनशन के २ भेद-१ इत्थरीक अल्प का का तप २ अथकालिक-जावजीव का तप । इत्थरीक तप के अनेक भेद हैं-एक उपवास, दो उपवास या वर्षी तप ( १ वर्ष तक के उपवास ) । वर्षी तप प्रथम तीर्थकर के शासन में हो सकता है । २२ तीर्थकर के शासन में ८ माह और चरम ( अन्तिम ) तीर्थकर के समय में १ माह उपवास करने का सामर्थ्य रहता है ।

अथकालिक-( जावजीव का ) अनशन व्रत के भेद १ एक भक्त प्रत्याख्यान और २ पादोपगमन प्रत्याख्यान । एक भक्त प्रत्या० के २ भेद-( १ ) व्याघात उपद्रव आने पर अमुक अवाधि तक ४ आहार का पचत्वार करे जेमे अर्जुनमाली के भय मे सुदर्शन शंठ ने किया था । ( २ ) निव्यघात-( उपद्रव रहित ) के दो भेद ( १ ) जावजीव तक ४ आहार का त्याग करे ( २





मान, अल्प माया, अल्प लोभ, अल्प राग, अल्प  
अल्प सोचे, अल्प बोले आदि ।

३ वृत्ति संक्षेप ( मित्रादयो ) के अनेक भेद  
अनेक प्रकार के अभिग्रह धारण करे । जैसे द्रव्य से  
वस्तु ही लेना, अमुक नहीं लेना । क्षेत्र से अमुक घर  
के स्थान में ही लेने का अभिग्रह । काल से अमुक  
दिन को व मदिने में ही लेने का अभिग्रह । भाव में  
प्रकार के अभिग्रह करे जैसे वर्तन में से निकालता दे  
कल्पे, वर्तन में डालता देवे तो कल्पे, अन्य को  
पीछे फिरता देवे तो कल्पे, अमुक वस्तु आदि वाले  
अमुक प्रकार से तथा अमुक भाव में देवे तो कल्पे ।  
अनेक प्रकार के अभिग्रह धारण करे ।

४ रस परित्याग तप के अनेक प्रकार हैं-  
( दूध, दही, घी, गुड़, शकर, तेल, शहद, म  
आदि ) का त्याग करे । प्रणीत रस ( रस भरता  
आहार ) का त्याग करे, निवि करे, एकामन करे,  
विल करे, पुगनी वस्तु, विगड़ा हुवा अन्न, लूधा  
आदि का आहार करे । इत्यादि रस वाले आह  
होदे ।

५ काया क्लेश तप के अनेक भेद हैं ए  
स्व न पर स्थि ह कर रहे, उकट-ग दह मपुरामन  
न अ ह उद प्रक र ता वाड म आसन कर के

साधु की १२ पद्धिमा पालना, आतापना लेना वस्त्र रोहित रहना, शीत-उष्णता ( तड़का ) सहन करना परिपह सहना । धूंकना नहीं, कुछ्छा करना नहीं, दान्त धोने नहीं, शरीर की सार संभाल करना नहीं । सुन्दर वस्त्र पहिरना नहीं, बठोर वचन गाली, मार प्रहार सहना, लोचं करना नंगे पैर चलना आदि ।

६ प्रति संलिनता तप के चार भेद—? इन्द्रिय संलिनता २ कषाय संलिनता, ३ योग संलि० ४ विविध शयनासन संलि० (१) इन्द्रिय संलिनता के ५ भेद— ( पांचों इन्द्रियों को अपने २ विषय में राग द्वेष करते रोकना ) (२) कषाय संलि० के चार भेद—१ क्रोध घटा कर क्षमा करना । २ मान घटा कर विनीत बनना ३ माया को घटा कर सरलता धारण करना ४ लोभ को घटा कर संतोष धारण करना । (३) योग प्रति संलिनता के तीन भेद—मन, वचन, काया को दुरे कामों से रोक कर सन्मार्ग में प्रवर्तवना । (४) विविध शयासन सेवन प्रति संलि० के अनेक भेद हैं—उद्यान चैत्य, देवालय, दुकान, वस्त्रार, श्मशान, उपाश्रय आदि स्थानों पर रह कर पाट, पाटले, बाजौट, पाटिये, विद्याने, वस्त्र-पात्रादि फ्लासुक स्थान अंगीकार करके विचरे ।

## आभ्यन्तर तप का अधिकार

१ प्रायश्चित्त के १० भेद—१ गुवादि ५

पाप प्रकाशे २ गुरु के बताये हुये दोष और पुनः ये दोष नहीं लगाने की प्रतिज्ञा करे ३ प्रायश्चित्त प्रतिक्रमण करे ४ दोषित वस्तु का त्याग करे ५ दश, घीरा, तीरा, चालीश लोगसस का काउमग्ग करे ६ एकाशन, आयंबैल यावत् छमामी तप करावे, (७) ६ छमाम तक की दीचा घट वे = दीचा घटा कर सब से छोटा बनावे ६ समुदाय से पाहर रख कर मस्तक पर श्वेत कपड़ा ( पाटा ) बन्वशा कर साधुजी के साथ दिया हुआ तप करे १० साधु वेप उतरवा कर गृहस्थ वेप में छमाइ तक साथ फेर कर पुनः दीचा देवे ।

२ विनय के भेद—मति ज्ञानी, श्रुत ज्ञानी अथवा ज्ञानी, मनः पर्यव ज्ञानी, बेवल ज्ञानी आदि की मशातना करे नहीं, इनका बहुमान करे, इनका गुण कीर्तन कर के लाम लेना । यह ज्ञान विनय जानना ।

चाग्नि विनय के ५ भेद—पांच प्रकार के चाग्नि वालों का विनय करना ।

योग विनय के ६ भेद—मन, वचन, काया ये तीनों प्रशस्त और अप्रशस्त एवं ६ भेद है । अप्रशस्त काय विनय के ७ प्रकार—अयत्ना में चले, बोले, खडा रहे, बैठे, सोवे, इन्द्रिय म्वनन्व रखे, तथा अंगोपांग का दुरुपयोग करे ये मातो अयत्ना में करे तो अप्रशस्त विनय १२ यत्ना पूर्वक प्रवर्ताने में प्रशस्त विनय ।



रौद्र ध्यान के चार भेद-द्विगों में, अमल्य मोरी में, और मोरीरोग में आनन्द माने। चार लक्ष १ जीव द्विग का २ अमल्य का ३ मोरी का चोड़ा व दोग लगाते ४ मृग्यु-शय्या पर भी चार का पधात नहीं को ।

धर्म ध्यान के भेद-चार पाये-१ त्रिनाशा विचार २ रामदेव उरगति के कारणों का विचार ३ क विचार का विचार ४ लोह संस्थान का विचार ।

चार रुचि-१ तीर्थहर की आशा आराधन का की रुचि २ शारा धरण की रुचि ३ तपार्थ अदा की रुचि ४ एव सिद्धान्त पढ़ने की रुचि ।

चार अवलम्बन-१ एव सिद्धान्त की वाचनाले व देना २ प्ररनादि पृथना ३ पढ़े हुवे ज्ञान की कोण ४ धर्म कथा करना चार अनुपेक्षा-१ पुद्गल को अनित नाशयन्त जाने २ संसार में कोई किसी को शरण दे वाला नहीं ऐसा चितवे ४ मैं अकेला हूं ऐसा सो ४ संसार स्वरुप विचारे एवं धर्म ध्यान के १६ भेद हुवे

शुफल ध्यान के १६ भेद-१ पदार्थों में द्रव्य गुण पर्याय का विविध प्रकार से विचार करे २ एक पुद्गल व उन्मादादि विचार बदले नहीं ३ सूक्ष्म ईर्ष्यावहि क्रिय परन्तु अकपायी होने से बन्ध न पड़े ४ सर्व क्रिय



# अवश्य पढ़िये

ज्ञान वृद्धि के लिए पुस्तकें संग्रह कर वितरण कीजिये.

- भगवान् महावीर सजिहद २॥)
- ( बही सादर के १४० पृष्ठ )
- आदर्श मुनि हिंदी ॥ गुजराती ॥)
- जैन सुबोध गुटका ॥)
- उमकितसार ॥) जैयू चरित्र -) ॥
- निर्मल प्रवचन सजिहद ॥ मूल २
- वदोषण ॥) मोहनमाला ॥-
- गदाधर स्तोत्र सार्थ ॥-
- सुखगाधन ॥) घमोपदेश ३ ॥
- वदयपुर में अपूर्व उपकार ॥)
- सुखगाधन सचित्र ॥)
- मुपाव.सिका निर्णय सचित्र ॥)
- महाभक्त मलिया चरित्र ॥-
- त्या. की प्राचीनता सिद्धि ॥)
- श्याक्यान मैट्रिडम ला ॥)
- भग. महावीर का दिव्यसंदेश ३) ॥
- मनोहर माला ३) दि० भ ग ३)
- आदर्श तार्किक ३) पार्थनाथ च ३)
- पुणवसिष्ठ की ज्ञान-सिद्धि ३
- भीतकनकच सार्थ ३) मूल ॥)
- वेदवा संसद भा. १-२) २-१)
- १-१) ४-१) अट्ठारें १) म.
- वेदवेद मन्त्रमात्र २३
- वेदवेद मन्त्रमात्र -)

- जैनस्तवन काटिह २३)
- मनुष्य प्रदीप २. तजन्तु विवेक
- जैन सुचिन्तन बहार भा. १ २)
- जैन मन्त्र मन्त्र २१
- मनोरंजन गुच्छा २) अगद व. -)
- सुभाषक आराधनी २)
- अष्टदश पापनिषेध २. मूल ॥)
- अननिरुद्धन ॥) सुभाषनाथ २)
- मन्त्र मन्त्र धरा चरित्र -) ॥
- धर्मवृद्धि चरित्र -) ३
- भुवनेश्वर कामदेवकी -) ३
- काव्य विलास -) ३
- सामयिक सूत्र -)
- भक्तमरदि स्तोत्र -)
- जैन मनमें इन माला -)
- तपु नैमम पुच्छा -
- सचित्र प्रतिक्रमा -)
- मोक्षियों की रागावृत्ति ३)
- प्रदेशी चरित्र '३' मेरी भावना ॥
- नवरात्र-सूत्र - विवेक सुंदरी -)
- शुद्धे चरित्र मीमांसा १
- सर्वगोरतम् -) पूनरग ३
- ममसूत्र सुवननाथ ३)
- संक्षेप -) इन सर्व -)

ता:- श्रीजैनोदय पुस्तक प्रकाशक समिति, राभलाम

